विषय पृष्ठ

(ग)

बसन्त

विषय	पृष्ठ

पावस

मीजान २२

शरद

विषय पृष्ठ

शिशिर

(झ)

बसन्त

ग्रीषम

पावस

विषय पृष्ठ

(ठ)

बसन्त

(ड)

बसन्त

ग्रीषम

पावस

शरद

शरद्

हेमन्त

शिशिर

(ध)

बसन्त

ग्रीषम

पावस

शिशिर

(प)

वसन्त

ग्रीषम

पावस

शरद्

हेमन्त

बिषय	पृष्ठ

हेमन्त

(ब + व)

बसन्त

शरद

विषय	पृष्ठ

हेमंत

शिशिर

(भ)

बसन्त

ग्रीष्म

पावस

विषय	पृष्ठ

पावस

शरद

हेमन्त

विषय पृष्ठ

(र)

बसन्त

ग्रीष्म

पावस

बिषय	पृष्ठ

शरद्

हेमन्त

शिशिर

(ल)

बसन्त

ग्रीषम

पावस

विषय	पृष्ठ

ग्रीषम

पावस

शरद्

हेमन्त

शिशिर

(कुल-ह-का मीजान ४०)

(क्ष)

ग्रीष्म

इतिश्रीषट्ऋतुहजाराकासूचीपत्रकवित्तसवैयोंकाअक्षरोंके क्रमसेपरमानन्दसुहानेसंग्रहीतसम्पूर्णम् ॥

भूमिका ॥

विदितहो कि इस समय काव्यके अनेकानेक संग्रह प्रकाशित हुयेहैं वा होतेजाते हैं परन्तु ऐसा कोई ग्रन्थ देखनेमें न आया कि जिसमें हर एक कविकी कविता अलग अलग होती कई एक संग्रह कर्तोंने कवियों के नाम ग्रन्थकी आदिमें दिये और यह प्रकाश किया कि इसमें इतने कविकी कविता मौजूद है परन्तु यदि देखने वाला चाहै कि मैं इसी समय किसी कविकी कविता देखूं तो देखना असम्भवहै क्योंकि उनमें यह नहीं मालूमहोता कि इस कविकी कविता कहां पै है जब तक कि समस्त ग्रन्थ अवलोकन न किया जावै कदापि दृष्टि गोचर न होगी ऐसी गड़बड़ देखकर मैंने यह बिचार किया कि एक ग्रन्थ (षट्ऋतु हज़ारा) संग्रहकरूं कि जिसमें एक हजार कवित्त सवैया हर एक कविके जुदे जुदे व ऋतुभी जुदी जुदी रहैं परन्तु सूचीपत्र ऐसा बनाया जाय कि जब जिस महाशय की लालसा किसी कविकी कविता देखने की होवै तो तुरन्त इच्छानुसार देखले यह विचारकर मैंने इस ग्रन्थको संग्रह करना आरम्भ किया और धीरे धीरे २२१ कवियों के १२५२ क़वित्त सवैया ऐकत्रित किये मुझे विश्वास न था कि इतनी जल्दी एक हजार कवित्त सवैया इसग्रन्थमें होजावैंगे तदपि ईश्वरकीकृपासे साढ़ेबारहसौ होगये वा छः सातसौ और भी बाक़ी रहगये सो भी आपलोगोंकी कृपासे वह दूसरे (ऋतुषट्सतसयी) ग्रन्थमें प्रकाशित किये जायँगे ॥

इसमें जो मैंने सिर्फ कवियोंकी कविताहीदी है जीवन चरित्र नहीं दिये उसका यह कारणहै कि ग्रन्थ बहुत भारी होजाता और कुछ फायदा न होता क्योंकि श्रीसेंगरवंशावतंस श्रीमन्महाराज कुमार ठाकुरशिवसिंह सेंगर ताल्लुकेदार कांथा ज़िले

उन्नावके पुत्रशिवसिंहजीनें अपनेशिवसिंह सरोजनामग्रंथमें एक हजार कबियोंके जीवनचरित्र सन् संवत् कवितासमेत दियेहैं जिनमहाशयों को इनकवियों के जीवनचरित्र देखनेकी इच्छा होवे तोवे उक्त महाशय के ग्रन्थको अवलोकन करैं आजतक ऐसा चमत्कारिक ग्रंथदूसरा देखने में नहीं आयाऔर न आवेगा मुझे इसग्रन्थ से प्राचीन कवियों के ग्रंथ खोजनेमें वा संग्रह करनेमें बहुतही सहायता मिलती है ॥

मेरेपिता स्वर्गवासी बंगालीलाल सुहाने जोकि इसकविता कहनेमें प्रसिद्धथे सो उनके हाथके लिखेहुये प्राचीन कवियोंके अनुमान पांचसौ कवित्त मेरेपास मौजूदथे वह मैंने सब इसी ग्रंथमें शामिलकरदियेहैं वा औरभी कईएक बिषयकेकवित्त मौजूद हैं वह दूसरे संग्रहमें दिये जायँगे ॥

मेरी सबसज्जनोंसे यहप्रार्थनाहै कि जो कहीं इसग्रंथमें कोई बिषय भूलसे रहगया होवे वा अशुद्धता पाईजावै तो उसे क्षमा करैंगे क्योंकिमैं अल्पबुद्धिवाला हूं ॥

मुझे इसग्रंथसंग्रह करनेमें दोमित्रोंसे अत्यंतही सहायता मिली है उनको मैं कोटान कोट धन्यबाद देकर नीचे नाम प्रकाशित करता हूं ॥

मित्रवरगणेशप्रसाद कुरेले जबलपुर
मिती कार्तिकसुदी एकादशी
संवत् १९५०

मित्रवर नाथूरामपाठक जबलपुर
आपका शुभचिंतक श्रीमद्बल्लभ कुलसेवक
परमानंदवल्द बंगालीलाल सुहाने
ज़िला जबलपुर मध्य प्रदेश ॥

षट्ऋतु हजारा ॥

हजारनहीं सवाहजार ॥

परमानंद सुहाने संग्रहीत ॥

बन्दना—दोहा ॥

सुमिरिशम्भु गिरिजासुमिरि गणपति सदा मनाय ॥
बिघन बिनाशन एक रद हूजे सदा सहाय १
गजमुख सुखकर दुखहरण ताहिंकहौं शिरनाय ॥
कीजैयश लीजे बिनय दीजे ग्रन्थ बनाय २

स० ॥ देश बिदेशके देखे नरेशन रीझिकी कोउन बूझ करैगो । तातेतिन्हैं तजि जानगिरयो गुन सोगुन औगुनगांठि परैगो ॥ बांसुरीवारो बड़ो रिझवारहै श्याम जोनेकु सुढार ढरैगो । लाड़लो छैलवही तो अहीर को पीर हमारे हियेकी हरैगो ३ ॥

क० ॥ पीतपटओढ़े कटिकाछिनीको काछिवरगुंजमाल धारिधास्यो माथेमोरको परों । केसरकीखौरि करि कुंडल मकरडोर कानमें पहिरि कान्हबंशी अधरा धरों ॥ वृष

भाननंदिनी समेतह्वै सुचित्त सब गोपिकानि युत हित
रासमण्डलै खरौं । यहै ठानठानि बसो मेरेहिये आनि
तुम्हैंनंदजूकी आनि अनाकनी नेकु नाकरौं ४ ॥
दो० षट्ऋतु मैंसंग्रह करत नानाग्रंथ निचोर ॥
ताकोतुम पूरणकरो यशुमति नंदकिशोर ५

अथ ऋतुलक्षण वर्णन ॥

दो० मधु माधवहि बसंतगनि ग्रीषम जेठ असाढ़ ॥
पावस सावन भाद्रपद बरसत जोरस गाढ़ १
आश्विनकातिक शरदऋतु अगहनपूसहिमंत ॥
शिशिर माघ अरु फालगुन यहैकहत गुणवंत २
जौने जौने ऋतुनमें जो जो वस्तु प्रधान ॥
सोऋतु बरणतही सकल जानि लीजिये जान ३

अथ बसन्तऋतु बर्णन ॥

दो० ढकिरसाल सौरभ सने मधुर माधुरी गंध ॥
ठौर ठौर झौरत झपत भौंर झौंर मधुअंध १
फूलेकुंजन अलिभ्रमत शीतल बहत समीर ॥
भानजात काको नमन जातभानुजातीर २
दलबिहीन फूलनिबनो सेमरुलसत बिशाल ॥
मैनमहीप खड़ोकियो मानहुँ झंडा लाल ३
यह मधुऋतुमें कौनके बढ़त न मोद अनंत ॥
कोकिल गावतिहैं कुहुकि मधुप गुंजरत तंत ४
दिशिदिशिकुसुमितदेखियतउपबनबिपिनसमाज॥
मनो बियोगिनि कोकियो शरपंजर ऋतुराज ५

कहुँलावति बिकसित कुसुमकहूँ डोलावतिबाय॥
कहूँ बिछावति चांदनी मधुऋतु दासी आय ६
सरवर माहिँ अन्हाय अरु बाग बाग बिरमाइ॥
मंद मंद आवत पवन राजहंस के भाइ ७
ललित भृंग घंटावली झरतदान मधुनीर॥
मन्द मन्द आवतचल्यो कुंजर कुंज समीर ८
चुवतस्वेदमकरन्दकन तरुतरुतर बिरमाय॥
आवत दक्षिणते चल्यो थक्योबटोही वाय ९
लपटीपुहुप पराग पट सनी स्वेद मकरन्द॥
आवत नारिनवोढ़लौं सुखद बायुगति मन्द १०
अली मानतजि सेइये हिलि मिलि प्यारेकन्त॥
सबजग मनभायो भयो हाकिम नयो बसन्त ११
अलिगुंजत कूजतबिहंग प्रफुलित कुसुमअनन्त॥
शीतल मंद सुगंधबह पौन बखानि बसन्त १२

आनन्दकबि॥

क०॥ पांखुरी लै साजी सेज सेवतीकी बेलिन चमेलिनहूं सरस बितान छबि छाई है। फैल्यो चहुंओरन गुलाबनको गंध धूर धुंधुरित सौरभी समीर सुखदाई है॥ चारों ओर कोकिल चकोर मोर शोरन सों ओर क्षिति छोरन अनन्द अधिकाई है। आज ऋतुराजके समागमकेकाज होतधाम धाम बेलिनके आनँदबधाई है १॥

क०॥ गुंजरन लागे भौंर ठौरठौर कुंजन में लाग्यो बेलि पुंजन दवासो काम जुरको। बोलन लगे हैं पिक चातक चकोर मोर बँधिगयो सरससनाको एकसुरको॥

काम बन बानिक विलोकि इहि भांति वह दुरि दुरि जात दुखकोनके न उरको । बन्द भयो चाहत सुरेशको समाज आज मन्द भयो चाहत आनँद सुरपुर को २ ॥

क० ॥ होरी आज चोरी की कहोंरी कहा मोरी दई लाड़िली पठाई भुजगहन सहेली को । भोरेभाय भावतो गहाय गयो जान बूझि आयगयो संग में मचाय रंग रेलीको ॥ ललितालचायो लङ्क बाहँदै बिशाखागरे डारि हियहार हरि आनँद चमेली को । प्यारीलै गुलाल नंद-लाल मुख मीडै जौलौं तौलौं छैल छ्वैगयो कपोल अलबेली को ३ ॥

अवधेशकबि ॥

स० ॥ मोतिन चौक पुराइ घनी गनी गायनैवार बधून बोलाइहौं । रंग बिरंगके लैलै कुसुम्भ उमंगसों मालिनि सों गुँधवाइ हौं ॥ दै अवधेश द्विजेशन को धन कंचनके घट दीपधराइहौं । साजिकै साज समाज भली बिधि आजु ललाके बसंत बधाइ हौं १ ॥

ईशकबि ॥

क० ॥ एकै करैं ओट पट ओट कर ओट करि एकै जे निघरघट चोटहि बचावतीं । एकै निरशंक अंकलाग तीं सुबंक तजि एकै जे मयंकमुखी लंकहि लचावतीं ॥ ईश कहैकेसरि गुलाब नीर घोरिघोरि जोरि जोरि मुण्ड रंग धूमहि मचावतीं । देतींगालगुलचा गुलालहि लपे-टिमुख दैकै करताली नंदलालहि नचावतीं १ ॥

कालिदासकवि ॥

क० ॥ कंतहैं दुरंत सखी अंतके समय बसंत नानारंग द्रुम देखि मन माहियतु हैं। कोकिल कलोल औ कलाप की अलाप सुनि चातक चपल बोल सुनि दहियतु हैं ॥ चैन न रहत चित चन्द्रमा की चाँदनी ते ताइन तपत दंत तृण गाहियतु हैं। कालिदास दक्षिण समीरहू ते वरतन जारौंरी जवानी जामें एतो साहियतु हैं १ ॥

क० ॥ मधुकर माल वनबेलिनके जालपर कोकिल रसालपर कुहुक अमन्द की। मन्दपवन शीतल सुवास भई बागन बिलासमई कालिदास रास मकरन्दकी ॥ देखिये सयान बैशाखमें पयानकरै कान्ह को दयान होत गोपिन के वृन्दकी। कैसे देखिजीहै चढ़ि चाँदनी महल पर सुधाकी चहल बसुधाकी चारु चन्द की २ ॥

क० ॥ सौगुण करैंगी हम सांवरे सुजान मन जान तुम कहो हम क्योंहू ना चलायहैं। कालिदास बाग बन पवन सुमन मधु मधुकर कोकिल समेत लिखवायहैं ॥ क्योंकरि चलोगे हमैं छांड़िकै छबीले लाल चतुर चितेरनके हाथ दै पठायहैं। यमुना समेत ब्रजमण्डल समेत चंद चाँदनी समेत चैत चित्रमें लिखायहैं ३ ॥

क० ॥ बागके बगर अनुराग भरी खेलै फाग बाल अलबेली मनमोहनी गोपाल की। कालिदास ललित ललौंही छबि छलकति नथ मुकतान की कपोलन की भालकी ॥ राजकरो चंद अरबिन्दते न काजआज देखिबेकोवाकीछबि बदनरसालकी। बरुनी पलकपर भृकुटी

तिलक पर बिथुरी अलकपर झलक गुलालकी ४ ॥

कबिन्द्रकबि ॥

क० ॥ तारे जहां सुभट नगारे पिकनादजहां पैदल चकोरकोरबाँधे बंदबेशकी । गुंजरतभौंर पुंजकुंजरत मोर जहां पौन झकझकोरघोर घमक हमेशकी ॥ भनत कबिन्द्र शर फौजहै बसंत आली मिलै तंत कंतसो मनोज मान येशकी । मानवारी गढ़ीपै गुमान ढाइबेको आज चढ़ी है सवारीया निशाकर नरेशकी १ ॥

केशवदासकबि ॥

स० ॥ फूले पलास बिलास थली बहु केशवदास प्रकाशन थोरे । शेष अशेष मखानल की जनु ज्वाल-बिशाल चली दिशि ओरे ॥ किंशुक श्रीशुकतुण्डन की रुचि राचे रसातलमें चितचोरे । चंचुन चापि चहूं-दिशि डोलत चारु चकोर अँगारन भोरे १ ॥

क० ॥ शीतल समीर शुभ गंगाके तरंग युत अम्बर बिहीन बपु बासुकीलसंतहैं । सेवत मधुप गण गजमुख परभृत बोल सुनि होत सुखी संत औ असंतहैं ॥ अ-मल अदल रूप मंजरी सुपदरज रंजित अशोक दुख देखत न सन्तहैं । जाके राज दिशि दिशि फूले हैं सुमन सब शिव को समाज कैधों केशव बसन्तहैं २ ॥

किशोर कबि ॥

क० ॥ कोकिला कलापी कूजैं यमुना के नीर तीरबीर

ऋतुराजको समाज दरस्योपरै। ननत किशोर जोर अवनि कदम्बनि ते मंजु मंजरीन ते सुगंध सरस्यो परै॥ काम व्यथा मेटन को सुखद समेटनको भेटनको प्रीतमको प्राण तरस्यो परै। अवनि ते अम्बर ते द्रुमनि दिगम्बर ते बेहरते बन ते बसन्त बरस्यो परै १॥

क०॥ मलयगिरि मारुतके मिसि विरहाकुलनि दिशि दिशि व्यालन को बिष बगरायोरी। तापर किशोर तैसो पंचम नवलराग कोक की कलान भीनो कोकिलन गायोरी॥ कौन सुनि मोचै मान लोचै कौन मिलन को शोचै कौन श्याम देखि नेह सरसायोरी। आमनके भौरलागे अंकुरन मौरलागे भौंरलागे भ्रमन वसन्त अब आयोरी २॥

क०॥ मन्दगति मारुत मदंध पुंजगुंजरत अलि कुसुमावलि रहीहै खुलि खिलिकै। कहत किशोर ऋतुराज जानि आगमन लागन की कोकिला रसालन पै किलकै। ऐसेमें कहोजू कैसे आनँद न लेती मान मानत-जमान यो पियाकेहिये हिलकै। कंठ कितभई बेलिवल्लभ कतिन मिस नवदल मालन तमालन सों मिलकै ३॥

क०॥ मलय जगीरितरु कोषते कढ़ी है चढ़ी मंजु मकरन्द पुंज पानिप अपारसी। अलिबिष बूड़ी बलि करति कहाहै जापै सौरभकी लहरि धरीहै खरीधारसी॥ कहत किशोर चारोंओरन बिषम वेष प्रवल प्रचण्ड पेख झरपन झारसी। रहत न रोकीबरै चाहति बियोगिनपै बैहर बसंत की तिरीछी तरवारसी ४॥

क०॥ अवनि अकाश अम्बु अनिल अनल आभा

औरै भांति भई जो मनोज महिमन्तकी। करंजनि मान या दिशान कै गईहै मन्द मति ह्वैगईहै सब जानु जग जन्तकी॥ कहत किशोर जोर जरब कुयोगिन को भोगिनको भावती बियोगिनके अन्तकी। उलही उमंगते लखि लसिरही तैसी लहलही लौदनपै लहरिबसन्तकी ५॥

क०॥ अम्बनिते अम्बरते द्रुमनि दिगम्बरते अपर अडम्बरते सखि सरसो परै। कोकिलकी कूकनते हियन की हूकनते अतन भभूकन ते तन तरसो परै॥ कहत किशोर कंज पुंजनते कुंजनते मंजु अलि गुंजनते देखु दरसोपरै। बसनते बासन ते सुमन सुबासनते बेहर ते बनते बसन्त बरसो परै ६॥

क०॥ आयो ऋतुराज फूल्यो सुमन समाज भयो अमल अकाश बहै पवन हरैं हरैं। लपटे लतान सों तमालनके जाल मौरे अमित रसाल ते बिशाल मन कों हरैं॥ कहत किशोरकीर कोकिला चकोरनहीं गनैसाँझ भोर चारोंओर शोरको करैं। आनँद मगन कैसीलगन लगाई देव मन्दिरन कुंज कुंज अलि पुंज गुंजरैं ७॥

क०॥ धावै तकि धाव निशि बैर तजि काम काम धायो कर धनुष सुधाकन धरा भरी। हहलि उठेहैं सब लोग लोक शोर करि कल बिरहीन को न परति जराभरी॥ कहत किशोर भौंर भौर ठौर ठौरनमें दौरनि मची है अन्त मौरन तराभरी। गेहवन्त तरुण गुमान गुण गेहवन्त बेहवन्त निरखि बसन्तकी भराभरी ८॥

स०॥ फूलनदे अबै टेसू कदम्बन अम्बन बौरन छावन देरी। री मधुमत्त मधूकन पुंजन कुंजन शोर

मचावनदेरी ॥ क्यों सहिहै सुकुमारि किशोर अरीकल कोकिल गावनदेरी। आवतहो बनिहै घरकंतहि बीर बसंतहि आवनदेरी ९ ॥

स० ॥ सुंदर सोहै सुगंधित अंग अभंग अनंगकला ललिताहे। तैसी किशोर सुहात संयोगिन भोगिनहू को मनोहरताहै॥ संगअली अवली रवि राजित अंगरसी-ली वशीकरताहै। कोमलता युत बीर बसंतकी बैहरकै वनिताकी लताहे १० ॥

स० ॥ लिये कर कंजन कंचन थार सजे तिनमें नव मंगल साज। उड़ावहि बीर अबीर गुलाल बिशाल रहे बहु बाजन बाज॥ जमाये किशोर मनोहर राग भरी अनुराग समारि समाज। अली अलबेली नबेली चली ब्रजराजे बसंत बधावन आज ११ ॥

स० ॥ सज साज समाज सुहायो किये रही राजि मनोहरता में भली। निकसी निज मंदिर मंदिर तें बिकसी जनु कंचन कंजकली॥ कलगावे किशोर बहावे सुरंग रसावती गोकुलहू की गली। ब्रजवामें घनी रचना में सनी घनश्यामै बसंत बधावै चली १२ ॥

स० ॥ ताकि छकी छबि सोंरी चली कहि होरी है पैन सगोरी गोपालपैसांवरो छैल छबीलो किशोर रह्योरुचि लोभ नुनाइकै जालपै॥ आली सभोउर मूठि गुलालकी घाली लगी सो जगी पिय भालपै। कंचन बेलकी लौद पै लाल सो बैठो मनो उड़ि मंजु तमालपै १३ ॥

क० ॥ लोलदृग लोलक अलक झलकत छबि छलकति श्रुति मनि करण कपोल में। दीपति लिलाट ते

छुटत बिघटत पट नटत किशोर भृकुटी तट कलोलमैं॥ आजु ब्रजराज संग नवल किशोरी होरी खेलति लसति बिहँसलि बरबोलमैं। रंग झरि झेलत पठेलत अलीन चलि मेलति गुलाल मिलि जात फिर गोलमैं १४॥

क०॥ लसैशिर सूहीपाग आंखिन में अनुराग बांधे अति सुलफही जुलफ को जारीहै। लसत किशोर बड़े कानन में मोती फैली द्युतिराज आनन की द्युति उजियारीहै॥ गुंजागरे मालखोलै छबिनके जालबोलै लेत मन मोलै डोलै गैल गिरिधारीहै। छैल छलकारीहै अनारीहै बरक वातै करपिचकारीहै अधरपरगारीहै १५॥

क०॥ मंजु मृग अंजन सों रंजित नयन कंज गज मद गंजित किशोर बर चाल सों। उफनात आननपै अमल उदोत जोत जगमग होत मग आभरण जाल सों॥ मोती मांग माल साजि गोरी आड़ भाल रचि गोरी चली होरीखेलिबेको नन्दलालसों। रंगबोरे बसनप्रस्वेद कन थोरेथोरे गोरेगोरे गण्डयुत मण्डित गुलालसों १६॥

क०॥ गारीदेत ग्वाल किलकारीदेत तारी देतनारी देखि पावन अमारी अनयास मैं। दौरी गहि ल्यावत भिजावत किशोर गुलचावत नचावत लचावति बिशाल मैं॥ बैठिघर ऐंठत फिरत कित रकत बात मनमेरी तै किशोरी जात कासमैं। मण्डि दृगमण्डल उमण्डिहै घमण्डि मण्डि घरतैं लगाई धूरिधूधरी अकाशमैं १७॥

क०॥ आई फाग खेलिकैं सकेलि सुख साँवरे सों सुंदरि सुघर जो सनेह सरसावै है। केसरि के रंग भीनी चूनरि सुरंग रंग अंगन अनंग रंग रंग दरशावै है॥

लसत किशोर आधो वदन गुलाल मढ़्यो सुंदर स्वरूप सों अनूप छबिछावैहै। अमल अभंग अछो उतसाह सानो मानो अरुण घटा तें शशि निकसत आवैहै १८॥

क०॥ कंचन पिचक लिये रंगसों हिचकमारै मुखपै दुचक प्यारो नवल नवेलीके। सुंदर गुलालके उड़ावै धुंध मेरी वीर रुचिसों लगावै चोवा कुचसों सहेलीके॥ कहत किशोर हल्ला करिकै रिझौर धावै मुरक बचावै बाग गहै वन हेलीके। जौलौं वे बचावे को बिचार करैं मेरीबीर तौलौंछैल चूमगोकपोल अलबेलीके १६॥

क०॥ कज्जल कलित मुकुलित दृगलोल स्वेद स-लिल कपोल अलकावलि सनत है। ललित गुलाल मंजु मण्डित बदनमणि कुण्डन दीपति जो बितान सो तनतहै॥ कहत किशोरकबि शिथिलत अंग अंग भीजे मनसिज ओजआभा उफनत है। आवत भुकत गज गति मतिधीरबीर आजबलबीरदेखिं देखतबनतहै२०॥

कमाल कबि॥

क०॥ आयोहै बसंतकंत बासकियो अंतलाग्यो मैन शरतंत सुधिनेको नहीं अंगकी। गावत धमारैते अधिक उपचारै आइकोकिल पुकारै मनोनैनभट जंगकी॥ होली के जरत धीरकैस्यो न धरतबनै ताहीमें परतहै व्यथाको मनों संगकी। औरनहिं चारसबथाकीकै कमाल बाल लीन तेहिकालगति पंजर पतंगकी १॥

कमनीय कबि॥

क०॥ माघसुदी पञ्चमीके द्योस जेअबाल खेलैंलाल भयेधारिकै गुलाल बर बेशको। कहै कमनीयकबि जोहि कै युगुल ऐसी मणिदेव बिमल बिलोकि बुधि देशको॥ आगिमैं अधूमभुंजे तिनको तेहाय भनिकीबे फिरियाद महापायकै कलेशको। प्रबल पलाशगनै अमित अ-संग जानि खोजिरहे बिरही बसंत बसुधेशको १॥

कृष्णलाल कबि॥

क०॥आगे आगेदौरत वकील गंधबाहऐसे पाछेपाछे भौंरनकी भीरभट भीमहै। बाजेराजे किंकिणी मजीठ क-लगाजे जबै घूँघट ध्वजामें मैनसीम धुजसीमहै॥ कृष्ण-लाल सौरभ पै चंदन पै जाकीजीत ऐसोकौन भूतलमें गङ्कर गनीमहै। मदन महीपबाज सदन शिशिरताज मदन बहादुरकी कापर मुहीमहै १॥

क०॥उमही किशोरी बृषभानकी हरषहोरी सोहैं संग गोरीबोरी केसर मई मई। पिचकी जरावजरी भरीलाल रंगनते मोहनके मुखदई छबिसों छई छई॥ कृष्णलाल ग्वालपै गुलालकी चलाई मूठि ताते नभलालीभई चं-चला नई नई। बादलाके चूर परिपूरकै लसत मानो रबिचंद्र जीतकरि डार्योहै रई रई २॥

गंग कबि॥

स०॥गुंजतभृंग निकुंजकेपुंज सरोजनसौरभकी सर-

साई। गंगहि प्राणपतीको पयान भरो केहिभांति बियोग दशाई॥ बोलत कोकिलबाद बसंत बसंतके बासर सोन बसाई। चैतकी चांदनीके चितये कहु कैसेकै छोड़ैगो कास कसाई १॥

गोकुल कबि॥

क०॥घनबन वीथिनते घरघर घेरिरहे लालपीरे लागत नजानिपरै कारेसे। गावत समाजकरै आवत नवाज राज करोये निलज छकेछाक मतवारेसे॥ गोकुल बसंत में बियोगिनके जारिबेको होरीसीहियेमें हरषित निरधारे से। भीजे मकरंदसों पराग लपटानेदेखो मधुकर डोलत फिरत फगुहारेसे १॥

क०॥बागनमें चारु चटकाहट गुलाबनकी तालदेत तालिया तुलै न तुक तंतकी। गुंजत मलिंदवृंद तानसी उपजपुंज कलरवगान कोकिलान किलकंतकी॥ गोकुल अनेकफूल फूलेहैं रँगेदुकूल भूमै आमबौर हावभाव रसवंतकी। लहरै तरुणतरु छहरै सुगंध मंद नाचत नटीसी आवै बेहर बसंतकी २॥

गुरदीन पांड़े॥

स०॥ कलगुंजत्त कुंजन पुंज मलिंद पियैं मकरंद अनंद भरे। द्रुमबौरत कैलिया कूकै करै बहै सौरभ सीरी समीर हरे॥ वहितंत बसंतको भावैनहीं गुरदीन जऊ लसैकंत गरे। निशिबासर नींद औ भूखहरी मुखपीरी परी दल पीरे परे॥ १

गोपाल कवि ॥

क० ॥ तरु पतझारनमें किशलित डारनमें रमित पहारनमें दुनीमें दिगंतहै। त्रिबिध समीरनमें यमुनाके तीरनमें उड़त अबीरनमें झलाझलकंत है ॥ छायरह्यो गुंजनमें अलिपुंज कुंजनमें गानमेंगोपाल ऐसोरूप दरशंतहै। फूलमें दुकूलमें तड़ागनमें बागनमें डगरमें बगरमें बगरो बसंत है १ ॥

गुलाल कबि ॥

क०॥कैसी अलिराजै अलिअवलि अवाजै आजुसुमनसुमनराजै छिनछिनछूकैये।कहत गुलालऔरसालन पै सुखजाल बोलत बिशालतेन भोगत मरूकैये ॥ धीर को धराती छातीकौन अबलाकी अब कोकके कलाकी कोकिलाको सुनि कूकैये। जलथल गंजन सरस रस भंजन सुमानकी प्रभंजन प्रभंजनकी झूकैये १ ॥

क० ॥ गौनहद हौनलागे सुखद सुभौनलागे पौन लागे बिषद बियोगिनके हियरान। सुभग सवादिलेसुभोजन लगन लागे जगन मनोज लागे योगिनके जियरान ॥ कहत गुलाल बन फूलन पलाश लागे सकल बिलासन के समय सुनि हियरान। दिन अधिकान लागे ऋतुपतियानआगे भानलागे तपन सुपान लागे पियरान २ ॥

गिरिधर दास कवि ॥

क० ॥ सुनत निदेश सो अशेष वनिता सुभेष चली एक एक गहैं गरब अकरिकै। कवरी समेटि बाँधी सवरी सुभग शुचि लहँगो जवर कस्यो लङ्क मैं जकरिकै ॥ गिरिधरदास हाथ फूलकीछरी लै धाई छबि सों अतूल होरीहोरी शोरकरिकै। चपलासी चमकि चहूँधा सो चपल चारु चंदमुखी लीन्हों ब्रजचंद को पकरिकै १ ॥

गुनाकर त्रिपाठी ॥

क० ॥ फूले हैं रसाल नव पल्लव विशाल बन जूही औ पलाश मल्ली आदि वहुको गनै । कूजत बिहंग पिक कोकिलादि एक संग गुंजत मलिन्द बन बीथिकानि मैं घनै । बहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनि गन के मनै । एरे ब्रज रंग ऐसे समै देहु संग नतु दहन अनंग सिसु गोपिकान के तनै १ ॥

घनआनँद कवि ॥

क० ॥ राजा नव योबन बिलास को बसंत जहां अंग अंग रंगन बिकासही की भीरहै। प्यारे बनमाली घन आनँद सुजान सेवै जाको देखि कामके हिये में नाहीं धीरहै॥ सुरति समाजसाज कोकिल कुहूक राजै शासन अनेक सुख सौरभ समीरहै। स्वाद मकरंद वो मनोरथ मधुप पुंज मंजु वृंदावन देश यमुना के तीर है १ ॥

स० ॥ बैसनई अनुराग मई सुभई फिरै फागुन की मतवारी। को वरे पानि रची मेहँदी डफनीके बजाय हरै हियरारी॥ साँवरे भौंरके भायभरी घन आनँद सोनमें दीसत न्यारी। कान्हवै पोषत प्राणपियै मुख अम्बुज च्वै मकरंदसी गारी २॥

स० ॥ बौरनभौंर कुमार भजै पुहुपावलीहास बिलासहिपूजत। पाठकियोकरै आठहू याम सुबोलनि सीखन कोकिल कूजत॥ वै घन आनँद जान छए तकि यों छबि आन क्यों आंखिन छूजत। एरी बसंत न आवत कंत सुजानि कै मानमई कत हूजत ३॥

चिरंजीवी ब्राह्मण ॥

क० ॥ होरी के दिवस कहूं गोरी राधिका को देखि कान्ह जिय मांझयों बिचास्यो बुद्धि बीछेतें। आजुबिन रँगेकेहु छांड़िहो न लाड़िलीको घातन में लाग्यो फिरै आनँदके ईछेतें॥ कहै चिरंजीवी त्योंहीलाल पिचकारी लेकै लपक्यों प्रियापै प्रियाभागी तकितीछेतें। ओढ़नी सरकि चोटी पीठयों लखात मानो इंदु भाज्योजात औ फनिन्द पस्यो पीछेतें १॥

चन्द कबि ॥

स० ॥ फूलरहे बनबाग दशौंदिशि कोकिल कुंज सों कुंज घनोरहै। बोलै मधुब्रत कुंजन में अरु डोलत पौन सुगंध सनोरहै। कबिचंदजू चैतकी चाँदनी में दम्पति

को चित नित्त चुनोरहै । राधाकृष्णजी रावरी राज्य में बारहू मास बसंत बनोरहै १ ॥

क्षितिपाल कबि ॥

स० ॥ धूम धमारिमची वृजमेंमिलि फेंकतरंग उड़ावत रोरी । आनिधस्यो बलवीर गोपालहि भामिनि भेष रच्यो बरजोरी ॥ सोबिनती विधि पूरीकरो सुतवारी करो यशुदाजूकी छोरी । छोड़िदियो क्षितिपाल ललाजू को भोरही आइयो खेलन होरी १ ॥

जीवनाथ कबि ॥

क० ॥ मैनमहाराज करदीन्हो है बहालहालतेई तरुनाथ कुलदल जैतवारहै । कोकिलहैं कानोगोह चौधरी चवाई चंदा भौरन बिसंदाकेते पैयत न पारहै । टेसू कोतवालजाको रूपहै अराल काजीपौन इनसाफहै सुगंध को अभार है । अलिमिलु बालम अजौंन तोहिं मालुम सो आयो जंग जालिम बसंत फौजदार है १ ॥

ठाकुरकबिप्राचीन ॥

क० ॥ बौर मौर किंशुक सुकंकन कलित सौर भूषन सुफूलके पराग पट भायो है । ठाकुर पताके पता लाल कंज सिंहासन कुंजभेद पालकी गयंद रथ छायो है ॥ पौन है सुदौर बने बिरिछ बराती तौर भौर चोपकादि बोल बाजने बनायो है । जोहन से मोहन बहार बनरी है सङ्ग सोहन बसंत बनरा सो बनि आयो है १ ॥

स० ॥ बौरे रसालन की चढ़िडारन कूकति कैलिया

मौनगहैना । ठाकुर कुंजन पुंजन गुंजत भौरनकोवे चुपै बो चहैना ॥ शीतल मंद सुगंधित वीर समीर लगेतन धीर धरैना । ब्याकुल कीन्हो बसंत बनाय कै जाय कै कंत सो कोऊ कहैना २ ॥

स० ॥ प्रात झुका झुकी भेष छपायकै लै गगरी जलको डगरीती । जानीगई नकितेकऊ बारते आनि जुरेजहांहोरी धरीती ॥ ठाकुर दौरिपरेमोहिं देखत भागि बची सुकछू सुघरीती । बीरजो दौरि किवारन देउँरी तो हुरिहारन हाथ परीती ३ ॥

स० ॥ ठाढ़ी रहौ न डगौ न भगौ अबदेखो जोहौं कछु खेलति ख्यालहि । गावन दैरी बजावन दै साजि आवन देइतै नंद के लालहि ॥ ठाकुरहौं रँगिहों रँगसों अँगओढ़िहौ बीरअबीर गुलालहि । धूंधुरमै धधकीमैं धमारमैं हौं धसिहौं धरिलैहौं गोपालहि ४ ॥

क० ॥ केशर सुरंगहूके रंगमें रँगोंगी आजु और गुरुलोगनकी लाजको पहेलिबो । गाइबो बजाइबोजु नाचिबो नचाइबोजू रसवश ह्वैकै हमसबी बिधि झेलि-बो ॥ ठाकुर कहत बाल होनीतौ करोंगी सब एक अन-होनी कहोकौन बिधिठेलिबो । करकुच पेलिबोगरेमेंभुज मेलिबोजो ऐसीहोरी खेलिबोतौ हमतौ न खेलिबो ५ ॥

क० ॥ मचरची फागु और सबसबहीपै घालै रंग औ गुलाल लाल ख्याल अवलोकोंमें । मोपै तुही ठाकुर लगायेघात घूमै घेरिदेखो अबजात कितैइतउत रोकोंमें ॥ गहिलेहौं गाफिलकर छिनमें छबीले छैल छेदिकैछली जूनि जनैनानका नोकोंमें । ओटै ह्वैकरत पिचकारिनकी

चोटे कहां सोहै ध्याव साँवरे सराहौं तब तोको मैं ६ ॥

तोष कवि ॥

क० ॥ सुमन अनंतफूले विपिन लसंत पौन सौरभ वहत भौर गुंजै रस मंतहै। सुतरु फलंत कूक कोकिल कलंत तजै ध्यान मुनि संत जहां केलिको अगंत है। सबै रूपवंत औ वियोगिनि को गंतजहँ रतिही को तंत तोष सुकवि भनंत हैं। वेधे रतिकंत पाय तरुणी यकंत अब जाहु कित कंत ऋतु भूपति बसंतहै १ ॥

स० ॥ खेलत फाग भरे अनुराग सुराधिका माधव सोह मचायो। गावत तान तरंगन तोषबजावत ताल मृदंग सुहायो। मारिचली पिचकी हरिदौरि गही मुख स्वेद अबीर लगायो। नीके विभूति लगाइ मनो अवधूत को स्वांग कलानि बनायो २ ॥

स० ॥ खेलायो हमैंकहि तोषतुम्हैं मनुहारि के मंत्र परोरि परोरि। गहेपट मांगती फागुहँसैं अनुरागसों भौहैं मरोरि मरोरि। छिरोरि छिरोरि उरोज गये जो गहेतुम दौरिदरोरि दरोरि ॥ बरोरि बरोरि कहै बतियां सुखपावत लाल करोरि करोरि ३ ॥

देवकबि प्राचीन ॥

क० ॥ डारद्रुम पालन बिछौनानव पल्लवके सुमन झँगूला सोहैतन छबिभारी दै। पवन झुलावै केकीकीर बतरावै देवकोकिल हलावै हुलसावै करतारीदै ॥ पूरति परागसो उतारो करै राई नोन कंजकली नाइका लतानि

शिर सारीदै। मदन महीप जूको बालक बसन्त ताहि प्रातहि जगावत गुलाब चटकारीदै १॥

क०॥ नील पट तन पर घन से घुमाय राखै दन्तन की चमक छटासे बिछुरतिहौ। हीरन के किरण जमाय राखौ जुगुनूसी कोकिला पपीहा पिकबानी सों भरतिहौ॥ कीचआंसुवानके मचाय कबि देव कहै बालम बिदेशको पधारिबो हरतिहौ। इन्द्रको धनुष साज बेसर कसति आज रहुरे बसन्त तोहिं पावस करति हौ २॥

स०॥ कोबचिहै यह वैरी बसन्तते आवत यों बन आग लगावत। बौरतही करि डारहै बौरी भरे बिष वैरी रसाल कहावत। कैहै करेजन की किरचै कबि देवजू कोकिल कूक सुनावत॥ बीर की सों बलबीर बिना उड़ि जायँगे प्राण अबीर उड़ावत ३॥

स०॥ नौलबसंत उठे अकुलाय सुनेकल कोकिल की किलकारी। भाँवरैसी भरैसाँवरे साँवरे होत निछा-वरते सहचारी॥ देव दुहूंको दुहूंदुरिकै रँगदै पठई अँग अंग उजारी। केसरिया खुलैं नन्द किशोर किशोरी कि केशर की रँगसारी ४॥

स०॥ फूले अनारनि पाँडर डारनि देखत देवमहा डरमाँचै। माधुरी भौरनि आमके बौरनि भौरनके गपा मंत्र से बाँचै॥ लागि रही बिरही जनके कचनारन बी-च अचानक आँचै। साँचे हुँकार पुकारि पिकी कहैनाचे बनैगी बसन्तकी पाँचै ५॥

स०॥कछु और उपाव करै जनिरी इतनै दुखसों सुख है मरिबो। फिरि अंतक सो बिन कंत बसंत सु आवत

जीवतही जरिबो ॥ वन बौरत बौरी होजाउँगी देवसुने धुनि कोकिल की डरिबो । जब डोलिहै औरै अबीर भरी सुहहाकहि वीर कहा करिबो ६ ॥

स० ॥ बैरीवसंत के आवन में बनबीच दवानल सीप जरैगी । योगिनिसी बनहैं बनमाल वियोगिन देव क्यों धीर धरैगी ॥ ह्वैहै करेज कछूको कछू जबकोयल कोकिल कूक करैगी । फूले पलाशके डारन की डरि बेर डरावन डीठ परैगी ७ ॥

द्विजदेव ॥

क० ॥ होनलागे शोर चहूँओर प्रति कुंजनमें त्योंहीं पुंज पुंजन पराग नभ छायगो । फूल फल साजन को आयसु विपिन माहिं शीतल सुगंध मंद पौन पहुँचाय गो ॥ द्विजदेव भूले भूले फिरत मलिंदन की सुखमा बिलोकि हिये सुखसर सायगो । आयेहुते आगेते हरौलनके लोगइत आवत हमारे उत ऋतुपति आयगो १ ॥

क० ॥ और भाँति कोकिल चकोर ठौर ठौर बोलै औरै भांतिशबद पपीहनके व्वैगये । औरै भांति पल्लव लिये हैं वृंद वृंदतरु औरै छबि पुंज कुंज कुंजन उनै गये ॥ औरै भांति शीतल सुगंध मंद डोलै पौन द्विज देवदेखतन ऐसेफल ह्वैगये । औरै रीति औरै रंग औरै साजऔरै संगऔरै बन औरै छिण औरै मन ह्वैगये २

क० ॥ हौरेंहौरें डोलतीं सुगन्धसनी डारन तें औरें औरें फूलन पैं दुगुन फबीहै फाब । चौंथते चकोरनसों भूलेभये भौरनसों चारों ओर चम्पन पै चौगुनी चढ़ी

हैं आब॥ द्विजदेवकी सों द्युति देखत भुलानो चित्त द-
शगुनी दीपतिसों गहब गुछे गुलाब। सौगुने समीर ह्वै
सहस्रगुनेतीरभयेलाखगुनीचांदनीकरोर गुनौमहताब३
क०॥ फेरि वैसे बेलिमन्द डोलनचहूंधा लागी फेरि
वैसे फूलन पै मन्द झरिलागी हौन। फेरि वैसी भूमि
भई वासित सुवासनसों फेरिवैसे पूरित परागन भये हैं
पौन॥ द्विजदेव फेरि वैसे सोहे तरु पुंज पुंज कुञ्जन
में फेरि वैसे मोर ह्वै गयेहैं मौन। फेरि वैसे पलटि गई
हैंगृहवापिकाऊ फेरिवैसेपलटि गयेहैं चारोंओरभौन४॥
क०॥ गुञ्जरन लागी भौंर भीर केलि कुंजन में
कैलियाके मुख ते कुहूंकन कढ़ै लगी। द्विजदेव तैसी
कछूगहब्र गुलाबनतैंचहकि चहूंधा चटकाहटबढ़ैलगी॥
लागे सरसावन मनोज निज ओजरति बिरही सतावन
की बतियां गढ़ै लगी। होन लागी प्रीति रीति बहुरि
नईसी नवनेह उनईसी मतिमोदसों मढ़ै लगी ५॥
क०॥ फेरि वैसे सुरभि समीर सरसान लागे फेरि
वैसे बेलि मधु भारन उनैगई। फेरि वैसे चहकि चकोर
चहूं बोले फेरि फेरि वैसे कैलियाकी कूकन चहूं भई॥
द्विजदेव फेरि वैसे गुनी भौंर भौंरै फेरि वैसेही समय
आयो आनँद सुधामई। फेरि वैसे अंगन उमंग अधि-
काने फेरि वैसे कछूक मति मेरी भोरी ह्वै गई ६॥
क०॥ सुरहीके भारसूधे शबदसुकीरनके मन्दिरन
त्यागिकरै अनत कहूं न गौन। द्विजदेव त्योंहीं मधु भा-
रन अपारनसों देखु झुकि झूमिरहे मोगरे मरूवदौन॥
खोलि इननयननि निहारों तो निहारों कहा सुखमा अ-

भूत आयरही प्रति भौनभौन । चाँदनीके भारन देखात उनयेसो चन्द गन्धहीके भारनबहत मन्दमन्दपौन ७॥

क० ॥ फेरि बनबौरे मनबौरेसे करनलागे फेरि मन्द सुरभि समीर ह्वै कितन्तगो । फेरि धीर नाशन पलाशन में लागी आगि बहुरि बिरहिजूह डरपि इकन्त गो ॥ द्विजदेव देखि इनभाइन घराते फेरि जानिये कहांधौं भाजि सो ।हिमन्त अन्तगो । फेरि उर अन्तर ते डगरि गयोरी ज्ञान फेरि बन बागनमें बगरि बसन्तगो ८ ॥

भूले भूले भौर बन भाँवरे भरैंगे चहूँ फूलि फूलि किंशुक जकेसे रहिजाय हैं । द्विजदेव कीसों वह कूजनि बिसारिकूर कोकिल कलंकी ठौर ठौर पछितायहैं॥ आवत बसन्तके न ऐहै जोपै श्यामतोपै बावरी बलाय सों हमारेहू उपायहैं । पीहैं पहिलेहीतें हलाहल मँगाय या कला निधिकी एकोकला चलन न पायहैं ९ ॥

स० ॥ वायु बहारि बहारिरहे क्षिति वीथी सुगन्धन जाती सिंचाई । त्यों मधुमाते मलिन्द सबै जयके करखानरहे कछुगाई ॥ मंगलपाठ पढ़े द्विजदेव सबै बिधि सों सुखमा उपजाई । साजिरहे सबसाजघने बनमें ऋतुराजकी जानि अवाई १० ॥

स० ॥ नागरसेहैं खड़ेतरु कोऊ लिये करपल्लव में फल फूलन । पांवड़े साजि रहेहैं कोऊ कोऊ बीथिनबीच्छ पराग दुकूलन ॥ फूलभरैं द्विजदेवके ऊपर काननमाँहँ कलिन्दजा कूलन । आगममें ऋतुराजके आज सबै बिधि खोये सबै निज शूलन ११ ॥

स० ॥ आहकै कांपि कराहिउठी दृग आँशुन मीचि

सकोच धरी है। लैकर कागज़ कोरो लला लिखिबे कह्न बैठी वियोग कथा स्वै ॥ ऐसेमो आनि कहूं द्विज-देव बसन्त बयारि कढ़ी तितही ह्वै। बातकी बातमो बौरीतिया अरु पीतह्वै पाती परी करसेच्वै १२ ॥

स० ॥ मिलि माधवी आदिक फूलके व्याज बिनोद लवा बरसायो करै। रचि नाचलतागन तानि बितान सबै बिधि चित्त चुरायोकरै ॥ द्विजदेवजू देखि अनोखी प्रभाअलि चारन कीरति गायोकरै। चिरजीवो बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूननकी झरिलायो करै १३ ॥

स० ॥ आज सुभायनही गईबाग बिलोकि प्रसून की पांतिरही पगि। ताहि समय तहँ आये गोपाल तिन्हैं लखि औरो गयो हियरोठगि ॥ पैद्विजदेवन जानि पर्यो धौं कहा त्यहि कालपरे अँसुवा जगि। तूजो कहै सखिलोनो स्वरूपसोमोअँखियानमें लोनीगई लगि १४

स० ॥ फूले घनेघने कुंजन माँहनये छबिपुंजके बीज बयेहैं। त्यों तरुजूहनमें द्विजदेव प्रसूनन येईनये उनये हैं॥ सांची किधौं सपनो करतार बिचारतहू नहीं ठीक ठये हैं। संग नये त्यों समाज नये सबसाज नयेऋतुरा-जनये हैं १५ ॥

स० ॥ प्रथमैं बिकसे बन बैरी बसंत के वातनते सुर झाई हुती। द्विजदेवजू ताहूपै देहसबै बिरहा नलज्वाल जराई हुती ॥ यह सांवरे रावरे नेह सों अंगन प्यारी न जो सरसाई हुती। तोपै दीप शिखासी नई दुलही अवलोकिबे की न बुझाई हुती १६ ॥

स० ॥ भ्रमे भूले मलिन्दन देखि नितै तन भूलि

रहैं किन भामिनियाँ । द्विजदेवजू डोलैं लतान चितै हिये धीर धरै किमि कामिनियाँ ॥ हरि हाय बिदेश में जाय बसे तजि ऐसे समय गजगामिनियाँ । मन बौरैन क्यों सजनी अबतौ बन बौरी बिसासिन आमिनियाँ १७ ॥

स० ॥ चाहिहैं चित्त चकोर दवा श्रुति आपनो दोष परोसिनै लैहै । ये दृग अंबुज से अकुलाइ कला बिष बंधु कहाय अचैहै ॥ ऐसी कसामसीमें द्विजदेव अली अलिके गण गाइ सुनै है । कैहै सो कौन दशा तनकी जोपै भौन बसन्त लौ कन्त न ऐहै १८ ॥

क० ॥ लैलै करझोरी जुरिआई इतै गोरी उतै होरी खेलिबे को ग्वाल जालहू बनायकीच । छायगो छिनै में यों गुलाल मेघमाल ऐसो द्विजदेव जासों न जनायो परै ऊंच नीच ॥ ऐसी भई धूंधर धमारकी सुताही समय पावस के भोरेमोर शोर कै उठे अपीच । घनके समान ज्यों ज्यों दौरै घनश्याम त्यों त्यों संपासी दुरत आली चम्पा घन बीच बीच १९ ॥

देवकीनन्दन शुक्ल ॥

क० ॥ रंगरंग फूले बेलि बिटप अनेक संग देवकीनन्दन कहै शोभा यों अनंतकी । त्रिबिध समीर डोलै बोलै पिक प्यारे बोल पुंज अलि गुंज मति मोहै मैन मंतकी ॥ सखिन समेत साजे जेवर जड़ाऊ सबै बसन बसंती शोभाभारी प्यारीकंतकी । बेस बंगलापैबेस सुनत बसंत राग बागबन बनक बिलोकत बसंत की १ ॥

द्विज कवि ॥

स० ॥ मदमाती रसाल की डारनपै चढ़ी आनँदसों यों बिराजती हैं। कुलजानि की कानि करै न कछू मन हाथ परायहि पारती हैं ॥ कोउ कैसीकरै द्विज तूही कहै नहिं नेको दया उर धारती हैं। अरी कैलिया कूकि करेजनकी किरचै किरचै किये डारती हैं १ ॥

दीनदयालगिरिबनारसी ॥

क० ॥ सबकुल यूथ मिलि बंधु जीव सोहतहैं कसर में अवर सुख गंजन वासहै। करैअलिगान फिरै भौंरी मुद भरी संग चहूंओर आवत गुलाब की सुवासहै ॥ सजै अति मुक्त द्युति झालरनि कानन में कुन्दनकी कला फैलि रही आसपासहै। मौरहै रसाल रटै शाखा द्विजदीनद्याल ब्याहकोसमाज धौं बसंतकोप्रकासहै १ ॥

क० ॥ सोहै शुक बानी चहुंओर मंजु काननमें षट्-पदी धुनिमाते बेला बिलसंतहै। केतक अशोकपर सेवत सुधीर द्विजबोलत रसाल सुमनस बिकसंतहै ॥ तरुणी के देखन को नैनन नचावे जितमाधवी सुरति युत बात बिकसंतहै। उपजै बिशाल रुचि देखतही दीनद्याल किधौं संत सभा कैधौं शोभित बसंतहै २ ॥

दिवाकर कवि ॥

क० ॥ ब्रजमें बसंत रागबागमें बसंत बन बेलिन बसंत सरसंत आमें बौर में। भनत दिवाकर स-मीर नीर तीरतीर बनिता बसन्त करिदीन्हे और तौर

में ॥ ठौरठौर कोकिला को बोल अनमोल भयो बगरो बसंतहै मलिंदन के भौरमें। औरऔर लौरलौर घरघर जहँ जहँ कियोहै वसंत सलसंत सब दौरमें १ ॥

क० ॥ आयो परवाना पातडारछांह तम्बूतानि कोकिला दिवान वोर तोर पतनावै चुनि। छड़ीदार कैलिया पहरा देति आठोयाम बायुफूल सेजिया मजेजिया बिछावै तुनि ॥ झण्डा लाल सेमर सुगंध हरकारा बर बाजत नगारा जो मलिंद गण गावै धुनि। शबद दराज सो दिवाकर जू पक्षिन के दक्षिणके देश ऋतुराज आज आवै सुनि २ ॥

क० ॥ पुनि सर सालक मकंदन लपटिकर दक्षिण से आइ शुभ लागत शरीरमें। मंदमंद चालसे मराल के लजातजात बपुहवै पवित्रता नहाये गंगनीरमें॥ सुखद सुहावन सोहावन मुनीश मन नारीसों नवोढ़ा गति चले अति धीरमें। भनत दिवाकर सुधासों निशि सनी प्रात जानीक्या बहारहै बसंतके समीरमें ३ ॥

क० ॥ बिरही दुखारी कामकी कहां अधिकारी चंचरीक गण जारि देश कियोहै दिवारीसो। पेड़ पत्त झारी कल कैलिबोलि भारी शुभ सौरभ पसारी छीनछायो फूलवारीसो ॥ भनत दिवाकर जू छाके भये कोकिल बसंती सारी युवती शरीर पैन्है प्यारीसो। फरै लागे बिटप सो बेलाके फूल फूलै लगे ब्यापे लगे सबमें बसंत बायु दारी सो ४ ॥

क० ॥ खेलैलगी फागु संग रम्भासी रसीली नारि नागरी गुलाल मुख मेले नंद बेटेमें। कोऊ पिचकारी

रंग बसन उघारि मारि झपटि उतारि रंग बोरी कोऊ फेटेमें ॥ होरीहोरी बोली गोरी बैस सब थोरीथोरीश्याम श्यामा शेरीलै लपेटे श्यामपेटेमें। तौलौ मुसक्याय कुच पकड़े दिवाकरजू धरेबाज कोक मानोएकही झपेटेमें५॥

दास कबि ॥

क० ॥ देश बिन भूपति दिनेश बिन पंकज फणेश बिनमणि और बिनशशि यामिनी। दीपबिन गेह औ सुगेह बिनसम्पति औ देहबिन देहघन मेहबिन दामिनी॥ कबिता सुछंद बिन मालती मलिंद बिन सर अरबिंद बिन होत छबि छामिनी। दास भगवंत बिन संतअति ब्याकुल बसंत बिन लतिका सुकंत बिन कामिनी १ ॥

नागर कबि ॥

स० ॥ आवत है नँदगाँवते गाँवते संगसखा डफ लीन्हे नवीने। रंगन सों भरि डारे सबै हँसि हाथ मरोरि के चंगही छीने ॥ आपहु के कर बांधिकै हारसों प्यारीके पाँयन पारे अधीने। कालिहकी बात न भूलिकै नागर आजहू वेई भले ढँगलीने १ ॥

स० ॥ गांस गसीली ये बातैं छिपाइये इश्क न गाइये गाइये होलियां। गेंद बहाने न तीर चलाइये सूधे गुलाल उड़ाइये झोलियां॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहौ दिल प्रीति कलोलियां। पांइपरों जीडरो टुकनागर हाइकरो जिनि बोलियां ठोलियां २ ॥

स० ॥ देवनकी औ रमापति की दोउ धामकी बेदन कीन बड़ाई। शङ्खरुचक्र गदा पुनिपद्म स्वरूप चतुर-

भुजकी अधिकाई ॥ अमृत पान बिमानन बैठिबो नागरके जिय नेक न भाई । स्वर्गवैकुण्ठमें होरी जो नाहिं तो होरी कहा लै करै ठकुराई ३ ॥

नरेश कबि ॥

स० ॥ झोरिसे कौने लये बन बाग ये कौने जुआमन की हरियाई । कोयल काहे कराहति हैं वन कौने चहूँदिशि धूरि उड़ाई ॥ कैसी नरेश बयारि बहै यह कौन धौं कौन सों माहुर नाई । हाय न कोऊ तलाश करै ये पलाशन कौने दवारि लगाई १ ॥

नन्दराम कबि ॥

क० ॥ आयोरी बसंत कूकि कैलिया पुकारै लगी हम सी गरीबिनी को गात गारि डारैगी । मंद मंद मारुत सुगंध सरसान लागी ज्वाल को जगाइकै जरूर जारि डारैगी ॥ नंदराम बागन में फूलै लगी बेली बन करिकै अधीरिनी सुधीर टारि डारैगी । येरी तसवीर तो दिखा दे मोहिं मोहन की आखिर कदम्बन की डारै मारि डारैगी १ ॥

क० ॥ आयो हैं बसन्त बौरे बागन बसीहै धूम बेलिन पग पुंज अरु पीरो दरशानहै । गुंजि रहे भौंर ठौर ठौर फूलेफूलनमें फवतसमीरमें सुगन्ध सरसानहै ॥ नंदराम देखो तो पपीहरा पुकारतहै पीउपीउ प्यारीके पियूष अधरान है । कैसे लाल चलिबे की चरचा चलावतहौ ऐसे समय ऐसे बैन बान के समान है २ ॥

क० ॥ असन में आसन अकाश में अवासन में

अलिन में आलिन की आलिन में दौरिगो। कहैनंद-
राम त्यों बिहंगन में बागन में बन में बिनोदन में बौ-
रन में बौरिगो॥ क्षिति में छबीलन में छपा में छपाकर
में छत्तिन में छातिन में छेकि छल छोरिगो। देखुरी
बसंत में बतावत हैं कंत में न सारी सरहंत में अँगा-
रन बिथोरिगो ३॥

क०॥ नदिन में नारन में नारंगी अनारन में नवल
निवारन में तौर बदलेगये। नंदराम ग्रीषम गुसामें गर-
मी में गैल गहब गुलाबन सों अंग मसले गये॥ ऊसर
के अंगन में नीर नदी रंगनमें तरल तरंगनमें हरिण
छले गये। हेमगिरि मंदिर में हिमगिरि कंदरमें अंदर
के अंदर में बंदर चले गये ४॥

क०॥ लोकन सवाँरे तो सवाँरे ना बिगारे कछू
लोकन सँवारि नर नारिन सवाँरतो। कीन्हें नर नारि
तौन प्रेम को प्रचार देतो प्रेम को प्रचारो तौन मैनको
प्रचारतो॥ मैन को प्रचारो तो प्रचारो ना सँयोग देतो
कीन्हे जो सँयोग तो बियोग ना बिचारतो। नंदराम
कीन्हो जो बियोग बिधना तो भूलि बौरे बन बागन ब-
संत ना बगारतो ५॥

क०॥ जालिम जुलुमदार जाहिर जहान जौन ड-
गर डगर बिष बगर बगारिगो। कहै नंदराम ब्रज गांव
की गरीबिनिन रावरेकी चेरिन पर बेरिन को मारिगो॥
ऊधो जी हवाल कहिदीजो नंदलाल जूसों गोकुलकी गै-
लगैल गजब गुजारिगो। फूलै ना पलाश ये पलाश के
बसंतबाज काढ़ि कै करेजा डार डारन पै डारिगो ६॥

क०॥ फेरि वैसे कुंजनमें गुंजरन लागे भौंर फेरिवैसे कोकिला कुबोलन ररैलगी। फेरि वैसे पातनपै पूरिगो पराग पीत फेरित्यों पलाशन में आगिसी बरैलगी॥ फेरिवैसे पपिहा पुकारै लगे नंदराम फेरिवैसे धाम धाम सौरभ भरैलगी।फेरिवैसे ऊधमी बसंत बिशवासी आयो फेरिवैसे डारन में डाकसी परैलगी ७॥

स०॥ जादिनते परदेश गये पिय तादिनते तनु तापसी दौरत। आवते वेगिइतै नँदराम जू देखते बाग बसंत समौरत॥ चंदउदोत न होतउतै अरबिंद मलिंद के वृंदन भौरत। याही अँदेश महा मनमें सखि का वह देश नहीं बन बौरत ८॥

नंद कवि॥

क०॥ बोरीहै पिचक झकझोरीहै झटकि पट फोरीहै कलश इहां बसै कोऊ कोरीहै। जानौ जनि भोरीहै कहूंकी कोऊ छोरी है न थोरीहै ढिठाई जाकी बहियांमरोरीहै॥ नंदजू कहत कबि गोरीहै तौकाको कहा जानतहौ कछू काके कुलकी किशोरीहै। गोपगन धोरीहै जनकजाको एहो कान्ह प्यारे हरि होरीहै तौ कहा बरजोरीहै १॥

नैसुक कबि॥

क०॥ होरी लगी तुम इतरान लागे अबहींते ऐसो जरिजाय ख्याल जामें लाज जायगी। परिहै जोरंग तौ तिहारी सौं बिगरि जैहै नई जरतारी नेकसारीभर जायगी॥ नैसुक निहारत हौ मूठीफेरि भारतहौ गैयन के चरैया हौ बलैया डरिजायगी। परि है जो गुलाल

मेरी आंखिनमें लाल तो गुपाल यहि ब्रज में जमाल परिजायगी १ ॥

नेही कबि ॥

क० ॥ उड़नि गुलालकी घमंडि घन छाइरह्यो पिचकी चलत धार रस बरसाईहै । चांदनी शरद बुक्का चंद मुख छबि फबी कांपत हिमंत भीजे दोऊ सुखदाईहै ॥ धाइकै धरत पिय सिसिकै सिसिर चीर केशरि शरीरते बसन्त दरशाईहै । ग्रीषम गरूर बोल पिय सों कहत नेही फागुकी समाज कैधौं छवो ऋतु छाईहै १ ॥

पद्माकर कबि ॥

क० ॥ कूलन में केलिन कछारन में कुंजनमें क्यारिन में कलित कलीन किलकन्तहै । कहै पदमाकर परागहू मैं पौनहू में पातिन में पिकन पलाशन पगन्तहै ॥ द्वार में दिशानमें दुनी मैं देशदेशन में देख्यो दीपदीपन में दीपत दिगन्तहै । बीथिन में ब्रजमें नबेलिनमें बेलिनमें बनन में बागन में बगरयो बसन्तहै १ ॥

क० ॥ औरे भांति कुंजनमें गुंजरत भौंर भीर और डौर औरन में बौरन के ह्वैगये । कहै पदमाकर सो औरे भांति गलियान छलिया छबीले छल औरे छबिछ्वै गये ॥ औरै भांति विहंग समाज में अवाजहोत ऐसो ऋतुराजके न आज दिन द्वै गये । औरैरस औरै रीति औरैराग औरैरंग औरैतन औरैमन औरैबन ह्वैगये २॥

क० ॥ पात बिन कीन्हे ऐसी भांति गए बेलिनके परत न चीन्हेजे वेलरजतलुंजहैं। कहैपदमाकर बिसासी

या बसंत केसु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं॥ ऊधोयह माधोसों सँदेशोकहिदीजो भले हरिसों हमारे ह्यांन फूले बन कुंज हैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकी डारिनपै डोलत अँगारन के पुंजहैं ३॥

स०॥ येब्रजचन्द चलौ किन वा ब्रजलूकै बसंतकी ऊकन लागी। त्यों पद्माकर पेखो पलाशनि पावकसी मनो फूंकन लागी॥ वे ब्रजबारी बिचारी बधू बनबावरी लौं हिये हूकनलागी। कारी कुरूप कसाइनैये सुकुहू कुहू कैलिया कूकन लागी ४॥

स०॥ बीर अबीर अभीरन को दुख भाषे बनै न बनै बिन भाखै। त्यों पद्माकर मोहन मीत के पाये सँदेशन आठ ये पाखै॥ आये न आप न पाती लिखी मनकी मनहीमें रही अभिलाखै। शीत के अंत बसंत लग्यो अब कौनके आगे बसंत लै राखै ५॥

स०॥ येनँदगांव ते आये इहां उत आई सुता वह कौनहू ग्वालकी। त्यों पद्माकर होत जुराजुरी दोउन फागु रची इहि ख्यालकी॥ दीठिचली उनकी इनपैइन की उनपै चली मूठि उतालकी। दीठि सी दीठि लगी उनके इनके लगी मूठिसी मूठिगुलालकी ६॥

स०॥ फागु के भीर अभीरन ते गहि गोबिंदैलैगई भीतर गोरी। भाई करी मनकी पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी॥ छीनि पितम्बर कम्मर तें सुविदा दई मीड़ि कपोलन रोरी। नैननचाइ कह्यो मुसक्याइ लला फिरि खेलन आइयो होरी ७॥

स०॥ या अनुरागकी फागु लखो जहां रागती राग

किशोर किशोरी । त्यों पदमाकर घाली घली फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी । जैसी की तैसीरही पिचकी करकाहु न केशरि रंगमें बोरी । गोरी के रंगमें भीजिगो साँवरो साँवरे के रँग भीजिगे गोरी ८ ॥

स० ॥ ऊधम ऐसो मचो ब्रजमें सबरंग तरंग उमंगनसीचै । दै पिचकारिन छज्जन जातिन ह्वै छबि छाजत केशरि कीचै ॥ त्यों पदमाकर होहु गई हुती पीछे गोपाल गुलाल उलीचै । यक संगहि जो फिरि मैं रपटी तो वे भये ऊपर मैं भई नीचै ९ ॥

स० ॥ आईहै खेलन फागुइतै बृषभान पुराते सखी सँगलीने । त्यों पदमाकर गावती गीत बतावती भाव बनाइ नवीने ॥ कंचनकी पिचकी करमें किये केशरिके रँगसों अँगभीने । छोटीसी छाती छुटी अलकैं अति बैसकी थोरी बड़ी परबीने १० ॥

क० ॥ रंगभरी कंचुकी उरोजनपै ताँगी कसी लागी भलीभाईसी भुजान कखियानमैं । कहै पदमाकर जवाहिरसे अङ्ग अङ्ग ईंगुरसे रंगकी तरंग नखियानमैं ॥ फागु की उमंग अनुरागकी तरंग वैसी तैसी छबि प्यारीकी बिलोकि सखियानमैं । केशरि कपोलनिमें मुखमें तमोल भरी भालमें गुलाल नन्दलाल अँखियानमैं ११ ॥

क० ॥ झेला झेल झोरिनको मूठिनको मेलामेल रेलारेल रंगकी उमंग सरसतहै । कहै पदमाकर गवैयन की ऐल परी गैल गैल फैल फैल फागु परसतहै ॥ धूम धध कौश्रन की धधकी बजत तामें ऐसो अति उधुम अनोखो दरसत है । ग्वाल पर ग्वाल तहि ग्वाल पर

नंद लाल लाल नंदलाल पै गुलाल बरसतहै १२ ॥

क० ॥ आली हों गईती आज भूली बरसाने कहूं तापै तू परै है पदमाकर तनैनीक्यों । ब्रज बनिता वै-बौनितान पै रचेहै फागु तिनमें जू ऊधमिनि राधा मृगनयनीयों ॥ घोरि डारी केसरि सुबेसरि बिलोरि डारी बोरि डारी चूनरी चुचाति रङ्ग नयनी ज्यों । मोहिं झक झोरि डारी कंचुकी मरोरि डारी तोरिडारी कसन बिथोरिडारी बेनी त्यों १३ ॥

क० ॥ आई खेलि होरी कहूं नवलकिशोरी भोरी बोरीगई रंगन सुगंधन झकोरैहै । कहै पदमाकर यकन्त चालि चौकी चढ़ि हारनके बारनके बन्द फन्द छोरैहै ॥ घांघरे की घूमनि उरुनकी दुबीचै पारिआँगीहू उतारि सुकुमारि मुखमोरैहै । दन्तन अधर दाबि ददरिभईसी चाँप चौवर पचौवर कै चूनरि निचोरैहै १४ ॥

क० ॥ एकैसङ्ग धाय नंदलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गयेजो भरि आनँद मढ़ैनहीं । धोयधोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह अबतो उपाय एको चित्तमें चढ़ै नहीं ॥ कहाकरौं कहाँजाउँ कासों कहों कौनसुनै कोऊतो निकारो तातें दरद बढ़ैनहीं । ऐरी मेरीबीरजैसे तैसे इन आँखिनतें कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ैनहीं १५ ॥

क० ॥ मधुर मधुर मुख मुरली बजाइ धुनि धमकि धमारनकी धामधाम कै गयो । कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरन की करिकै घला घली छला छली चितैगयो॥ कोहै वहग्वालिनि गुवालिनके संगमेंअंग छबिवारीरस रंग में भिजै गयो । बै गयो सनेह फिर छ्वै गयो छरा

को छोर फगुआ न दै गयो हमारो मन लै गयो १६ ॥

पजनेश कबि ॥

क० ॥ किरिणिसी कढ़ि आई आँगन उघारे गात कबि पजनेश छैल छितिपै छहरिगो । उझकि झपाक मुख फेरि प्यारे रुख ओर हेरिहरि हरषि हिमअलपै अरिगो ॥ आधो मुख मलत अबीर ते मुकेश हाथ नख रेखचिन्हित उरोजनपै झरिगो । मानों अर्द्धचन्द्रकोप्रकाश अर्द्ध चन्द्रिकापै चन्द्रचूर ह्वैकै चंद्रचूरपै बगरिगो १॥

क० ॥ फरश जरीके नग जटितजटाम तन मणित बितान ब्रजफागु भीर भरिगो । कबि पजनेश क्रीट कुंडल कपोल मुख मण्डित अबीर दृग धूधर धुधरिगो ॥ लागो है कुमकुमा गोरीके गुलाल भरो बिथुरि उरोजनपै आदि ते उनभिगो । फोरितम मण्डल ब्रह्मण्डको अखण्डमानो अरुण उदोत हेम गिरिपै बगरिगो २ ॥

स० ॥ बिधु कैसी कला बधू गैलनि में गसी ठाढ़ी गोपाल जहां जुरिगो । पजनेश प्रभा भरी भामिनिपै घने फागुके फैलनि सों फुरिगो ॥ मुरकी रुकी बङ्क बिलोकत लाल गुलाल में बेंदा सबै पुरिगो । दिगमें दरश्यो है दिनेश मनो दिगदाहकी दीपति में दुरिगो ३ ॥

स० ॥ दुहूं ओरसों फागुमड़ी उमड़ी जहां श्री चढ़ी भीर ते भीर भिरी । धधकी दै गुलालकी धुंधुरमें धरी गोरी लला मुख मीड़ि सिरी ॥ कुच कंचुकीकोर छुवै छरकै पजनेश फँदी फरकै ज्यों चिरी । झरपै झपैकौंधै कंढै तड़िता तरपै मनो लाल घटामें घिरी४ ॥

प्रताप कवि ॥

स०॥फूले निकुंज घनेद्रुम मंजुल भृङ्ग लतानन तान कहे। अति शीतल मन्द सुगंध घने चहुं तीक्षण तीर समीरबहे॥ धुनि कोकिल कीर कपोतन के भर कानन कानन जातसहे। उरशालत शूल समूह प्रताप बसंत में कन्त सो अन्त रहे १॥

स० ॥ नित हेरत बाट थकीं अँखियाँ दुहुँ पावक से अँसुवा न बहे। दिन के गिन ते घिसि पोर गये जियरा अवधीर अधीर गहे॥ कहियो इतनोई सँदेशो भटू बिछुरे लड़िकै तब काह कहे। अब पाहन सों हियरोकै प्रताप वसन्तमें कन्त विदेश रहे २॥

परमेश कवि ॥

स० ॥ बागन बागन ह्वैकै पराग लै ज्यों ज्यों बहै यह वैहरि झूकन। त्यों त्यों परी परचण्ड महा परमेश उठै बिरहागिनि मूकन॥ कंत विदेश बसन्त समय हियरा हहरान लग्यो अब हूकन। नेह भरो सिगरो तन जारिकै कैला कियो यह कैलिया कूकन १॥

स० ॥ साजि बरात चले दशरत्थ प्रभा मिथिलेश की पौरि लसन्ती। हेमके खम्भ जड़े मणि आदिक औ-मुक्तान की चौक पुरन्ती॥ गावत कोकिल बैन सखी परमेशभनै सिगरी गुणवन्ती। श्रीरघुबीर के ब्याह समय सित श्याम शरीरपै चीरबसन्ती २॥

स० ॥ शोभित है मणि मंदिरमें बहुधा चिक शुभ्र तहां दरशन्ती। शोधेसनी पर्यंक पै प्यारी लसै कुचकं-

चुकी ओप धरन्ती॥ताहीसमय परमेश भनै पति आयो लखे बिहँसी गुणवन्ती । ब्यंग्य सन्यो तिन बैन ठन्यो घनश्याम बन्यो तुम बागबसन्ती ३ ॥

स० ॥ जोहित तोहिं पठायो हुती कहती नाहिं आली बड़ी गुणवन्ती । नैनलजीले सो ढीले परे बँद कंचुकी आनन की दरशन्ती ॥ भाषै परमेश तिहारी खुली अलकै चहुँधा सुचिया लटकन्ती । ओप गँभीर तुम्हें मति धीर दियो किनबीर सुचीर बसन्ती ४ ॥

प्रहलाद कवि ॥

क० ॥ शूर सहकार शशि औरनके तीरकरे मोरन की बानी बेशबाजे रतिनाहकी । परिभृत बंदिजन बेहद बिरद बोलै झंझापोन ढाढ़ी लखि बाढ़ी पीर दाहकी ॥ कहै प्रहलाद कबि किंशुक त्रिशूल फूल शूल उपजावै कहा गतिहै निबाहकी । बिरही बचैंगे कैसे चाह करि अन्त हेत चढ़ी फौज प्रबल बसंत पादशाहकी १ ॥

स० ॥ पी रहे दूरि पपीहा बकै मतजैये वहां जहां सौतिको तीरहै । तीरहै बैरिन बोलौयहां रवशेरन गुंजत भौंरकी भीरहै ॥ भीरहै धीरज राखिबेको प्रहलाद बसंत मनोज की बीरहै । बीरहै कोऊ नहीं यह गांवमें बूझत कोऊन काहूकी पीरहै २ ॥

पण्डित प्रवीन ॥

क० ॥ बल्लीको बितान मल्ली दलको बिछौना मंजु महल निकुंजहै प्रमोद बनराजको । भारी दरबार भर्यो भौंरनकी भीरबैठ्यो मदन दिवान इतमामकाम काजको॥

पण्डित प्रवीन तजि मानन्ी असानगढ़ हाजिर हजूर सुनि कोकिल अवाजको । चोपदार चातक विरदबढ़ि बोलैदर दौलत दराज महाराज ऋतुराज को १ ॥
क० ॥ आयो ऋतुराजआज देखतबनैरीआली छायो महामोद सों प्रमोद बन भूमि भूमि । नाचत मयूर मद उन्मद मयूरन को मधुर मनोज सुख चाखै मुख चूमि चूमि ॥ पंडित प्रवीन मधु लम्पट मधुप पुंज कुंजन में मंजरीको लेतरस घूमिघूमि । हेलीपौन प्रेरित नबेलीसी द्रुमन बेलि फैली फूलदोलनिमें झूलिरहीझूमिझूमि २॥
क० ॥ बौरेंगे रसालबनबागन बिशाल सुनि कोयल कुहुकि दिन रैनिक्यों अतीतैगो । ह्वैहै जो प्रफुल्ल मल्ली मालती मतल्ली बल्ली अवली अलीन का कलीन कलगीतैगो ॥ पंडित प्रवीन बिन प्रीतम बहैगो पौन कौन रतिरंग में अनंगजंग जीतैगो । बीत गयो कैसो करि शिशिर हेमन्त आली कन्त बिन कैसे या वसन्त ऋतु बीतैगो ३ ॥

बेनी कबि ॥

स० ॥ फूले रसाल की डारन बैठि अलीकुल झूमि झुकै मॅडरातहैं । बेनीजू कोकिल कूक कपोतनये उलहे लतिकान में पातहैं ॥ शीतल मन्द सुगंध समीरऊ पी मधु चन्द अनन्द में गात हैं । या महिमन्त बसन्त के येगुण मान कि लाल खतै छुटि जात हैं १ ॥
स० ॥ घूंघुर सी बन धूमसी गावन गावन तान लगे नर बौरी । बौरी लता बनिता भई बौरी सुश्रौधि

अध्याय रही अबथोरी ॥ बेनी बसंत के आवतही बिन कंत अनंत सहैदुख कोरी । औरी घरै हरि आये न जो पहिले हौं जरौं जरिहै फिरि होरी २ ॥

क० ॥ अँचरा उरोजनते खुलि खुलि जात प्यारीफेंकै पिचकारी भारीलागी रंग बरसात । कहतबनैन कछू देख तहीआवैबनिमैन कामिनीसी दामिनीसी द्युतिदरशात ॥ कुच उचकोहै लचकोहै मध्य देशबेश बेनीकबि आनन अनूपछबि सरसात । छाइजात आनँद लजायजातगारी सुनि चोट करि कान्हपै अली की ओट आइजात ३ ॥

क० ॥ खेलिबेको फागु देवदारासी उतरआई दीरघ दृगनदेखि लगतनहिं पलकै । उड़त दुकूल दरशातभुज मूल बर उन्नत उरोजहार हरिन के झलकै ॥ बेनी कबि भूपर धरत मन्द मन्द पांव आननके ऊपर अनूप छबि छलकै । लाल लाल रंग भरी मदन तरंग भरी बाल भरी आनँद गुलाल भरी अलकै ४ ॥

बलदेव कबि ॥

क० ॥ चन्दनचमेलीचापचौसर चढ़ायचारुमधुमद वारे सारेन्यारे रसकारेहै । सुगतिसमीर मदस्वेदमकरन्द बुन्द बसन परागसो सुगन्ध गंध धारेहै ॥ बारनबिहीन सुनि मंजुल मलिंद धुनि बलदेव कैसे पिकवारे लाज हारेहै । फूल मालवारे रति बल्लरी पसारेदेखो कन्त मत-वारेकी बसन्त धूमधारेहै १ ॥

क० ॥ उदित प्रकाश आसपास देश देशनमें द्विज बलदेव बात ब्योंतकी बताये देत । लहरै समीरै लोनी

लतिका लवंगनकी लपटी लतान तरुणाई तरु तायें देत ॥ आवत तमासे ऋतुराजके समासे खासे परन पलाशनके पावकबसायेदेत। जाहिरभो युवती जमातिके जसूसी लखिजूटेजोर जुलमी मनोजको जगायेदेत २ ॥

क० ॥ आये रावरेहो तजि सहज स्वभाव जिन्हें कहे नहींजात कछु तिनके जेहालाहै। द्विज बलदेव तौ विलोक्यो तुम्हें भीति नहीं नेकहू गनेन जिन शीतभीत पालाहै ॥ विदित बसंत तासों तंतकी बतायें देत किंशुक कदम्ब कचनार कुन्त जालाहै। आज नन्दलाला कर लीन्हें मृगछाला हाला चम्पे कीसी माला कुंभिलानी चारु बालाहै ३ ॥

क० ॥ आवत बसन्त बेलि बागनमें फूलीसब पदुम पलाशे अलिवृंद मन भायेहै। आनँदअरम्भ करिपक्षी बनबोलतहै त्रिविध समीरसे सोहायो सुख पायेहै॥ तानसुमंत्र पढ़ि बाँसुरीबजाई हरि सुनिधुनि जैसे जोसो तैसे उठि धायेहै। झपटि झरोखे बीच झाँकी बलदेव कहै व्रजकी कुमारी श्री बिहारी लखिपायेहै ४ ॥

क० ॥ हूजे लाज बाज गाज काजहै कहाँको साज आज ऋतुराज लैसमाज ताज धैसचेत। द्विज बलदेव बनबागतौ निहारौ नेकबौरे करि डारैडारै डाकसी अधीर हेत ॥ कैहे काह फेरिवैसे फरश फबेहै फैलि फहरै पताके फौज फेरो झखकेत खेत। चौगुन चढ़ाव चाव चहकि चकोर उठे ठौरठौर कैलिया कुहूके करि हूकैदेत ५ ॥

स० ॥ कोकिलके गण कूकैलगे तिमि कौलनकी कलिका बिकसंती। फूलिउठी लतिका बलदेवजू लोपै

लगी चलि लाजलसंती ॥ कैसे रहैगो सोधीरज को दल मैन अली घनी घेरी गसंती। बेधैलगे हियरो बिरहीन को बौरेबनै ब्रनबाग बसंती ६ ॥

स० ॥ गेजबतै उत नन्दलला तबतै निज हाल न पूछत कोई। तान तरंग तजी तुरतै बलदेव मिलै पर आनँद होई ॥ पाइ बसन्त न सन्त रहै मनका बिधिसे निज भाव बिगोई। माल विशाल दियो हितलाल भये बिरहाल यही लै सोई ७ ॥

ब्रजचंद कबि ॥

क० ॥ पीरे फूल चम्पकको शोभियत कर्णफूल तै-सोहीं दुकूल अतिसरस सुहायोहै। पीरोहै लहँगा कुच कंचुकी सुहात पीरी पीरोही शरीर मानो केशरिलगायो है ॥ मोतिनकी माल गरसोहै बनमाल पीरीपीरो पोख-राज नग जटित जरायोहै। कंचनकी भूमितामें धरैपग झूमिझूमि देखो ब्रजचंदजू बसन्त बनिआयोहै १ ॥

स० ॥ खेलत फागुजू मेरी भटू इनसों बड़े चाइते बावरीतेंहै। केशरिके रँगकी भरि सुन्दरि डारत कामरी पै पिचकैंहै। त्यों ब्रजचन्दजू सांवरे गातनि नावै सुगंधनि की लपटैंहै। ये मँगुवा दधि माखनके तेकहौ कहां ते फगुवा तोहिंदैहै २ ॥

ब्रजलाल कबि ॥

क० ॥ घुमड्यो गुलाल औ अबीर की घमक छाई सुन्दर सहेली हियो अंगअंग सरसै।नंदकोकुमार ग्वाल बालन सों सैनमारे केशरि पिचक छूटैं मानो मैनदरसै ॥

बृन्दाबन रसिक चकोर सब ब्रजलाल सुरनर मुनि सब देखिबे को तरसै। होरी अंक ओरीमें पयूष अमनीपै आजु राधा मुख चंदपर झलाझल बरसै १ ॥

ब्रजराज कबि ॥

क० ॥ गुंजरत भृंग पुंज कुंजरित कोकिलादि पात पातसहकार फूलफल नयेरी। चम्पक कदम्ब औकदम्ब भांति भांतिनके आल बालराजत तमालबाल छयेरी ॥ बेला औ चमेला तूलयेला केला कुंजनमें शीतल सुगंध मंद सारबाय अयेरी। मंहासुकुमारी प्राणप्यारी ब्रजराज की तू आज ब्रजराज केहि काज बन गयेरी १ ॥

बीर कबि ॥

स० ॥ सेवती गंधछके अलिगुंजत कुंजनमें रसपुंज भरैगो। फूलि उठै जकनाहीं परै कल कोकिलको गण कूक करैगो ॥ कोऊन बीरसहै तनपीर मनोजके तीरसों धीर धरैगो। तोहिं बसन्त हसन्त भटू उठि अन्तहू कन्त बिना न सरैगो १ ॥

बच्चूराम ॥

क० ॥ प्रथम बसन्त पिय आवन की आशहै जो आवतहों आवै तो बुलाऊ कर जोर जोर। नाहीं तो समीपहोन पावै ना बहारदार शिशिर पुकारो राखो याकोमन मोर मोर ॥ परसि पलाशन रसालन प्रसून बेलि खिलन न पावै अलि कीजै कृपा थोर थोर। बच्चूराम

त्रिबिध समीर बेग दूरि करो भृंगी पिक हटको न शोर करें घोर घोर १ ॥

क० ॥ बीथिन सघन अति बीथिन में बोलैंपिक तैसोई रह्योहै घेरि बिरहा इतै उतै । दूजे भईकेशरि समान भुव पीतमयी पहिरे बसन्ती चीर सखियाँ जितै तितै ॥ सीरी सुखदायक समीरलै प्रसून बास आवत हमारे हिय बेधत नितै नितै । बच्चूराम बावरी भई हौं मैं बिहारी बिन पीली भई देह पीली पीलीको चितै चितै २॥

भुवनेश कबि ॥

स० ॥ बूझतहौ कहा वाकी दशा भुवनेश जू बात बृथा बहि जायगी । साँची कहे पतियाहु नहीं नहिं कांची कछू हमसों कहिजायगी ॥ आशनहीं बचिबे की अबै पर प्यारी जऊरहते रहिजायगी । बीसबिसे बन फूले पलाशन देखि अँगारन सों दहि जायगी १ ॥

स० ॥ कोकिल कूकि कलोल करै कलकोइल कूजै निकुंजन मैं । कीर उदोत कपोत के गोत छके मद शोरव गुंजन मैं ॥ किंशुक केत की कुन्द जुही बिकसो भुवनेश जू पूंजनमैं । काहेन ऐसी समय अलितोहिं सोहात अहै रस भुंजन मैं २ ॥

मणिदेव कबि ॥

क० ॥गावनो धमारि को सुलागत सुखद महाधावनो सुमारुत को आनँद अनन्तको । चावनो बढ़ावनो भो आलिन को गन गुनि हिय हुलसावनो भो कोकिल भनन्तको ॥ मणिदेव भनत कलेश को परावनो भो अङ्ग

उमगावनो भो देखे पदकन्तको। छावनो गुलाल को सुहावनो लगत आली भावनो लगत मोहिं आवनो बसन्तको १ ॥

क० ॥ कोकिलन खोजिन को सङ्गलै अनेक फिरै चारों ओर प्यारी बिरही जनके खोजको। यातेहौं कहति चलु प्यारे सुखदान पास तजिकै अयान दूर कैरीमान सौजको ॥ मणिदेव भनत रसालन के बौरन के भौरन ये सोहत धरे हैं महा ओजको। दायक बिथारी ऋतु-नायक लियेहै बर घायक परम दीवे शायक मनोजको २॥

क० ॥ ज्वैरहे सुजान तिन्हैं जात परदेश कौन ह्वैरहेते भौंर मिसि कीरति बिहीनके। फूल मिसि मानों डारपानि पर पेखि रहे आनँद अतूल होय शोभ उमहीनके ॥ कहै मणिदेव खरे देखि कैपलासन को जानिकैमलासन बिलोकि बलहीनके। बाढ़िकै सुतेज वान बधिक बसन्त बली मानो दीन काढ़िकै करेजे बिरहीनके ३ ॥

क० ॥ मार की मरोर बेशुमार सों फिरै न सहै मार कुंकुमानकी उरोजन पै गोरीरी। लाल रंग ह्वैगयो कि लाल कालिन्दी को सब डारै बहुलाल पै गुलालन की झोरीरी ॥ मणिदेव भनतकरोरै करिभाव बाल घोरै रंग दौरै चहुँओरै रंगबोरीरी। आनँद समाज की है जामै सुधिलाजकी न आजकी अनूप ब्रजराजकी सुहोरीरी४॥

क० ॥ नन्द के कुमार की अपार पिचकारिन की धीरनपै धारते सँभारन सँभार गई। गाय गाय धाय कै धमारियों मचाई धूम तासुधीर वारिनसों धीरता न धारि गई ॥ मणिदेव भनत गवाँरी कहि गारीदैकै ग्वालिनि

को कालिह जो गुमानै निजगारिगई । बीरकी सों बीर बलबीरपै अबीरसोई भीरमें अभीर की अभीरि आजु मारगई ५ ॥

क० ॥ लालकी ललकि लखि दौरि दुरिजात हुती छुवन न देत छबि तन द्युति जालकी । जालकी दरीचीं ते निहारि मुरिजातिहुती भांतिहुती मंदिर में द्युतिसों मसालकी ॥ शीलकी न सुधि ताको आजु मणिदेव कहै क्वैगई बसन वारी मदन महालकी । हालकी सुनोरी चित्तचोरी करि दौरी वृषभानकी किशोरी झोरी भरिकै गुलालकी ६ ॥

क० ॥ बावरे न होउ सुनो सांवरे बिहारी तुम छिन माहिं रावरे गरूर को निकारैगी। राधा महरानी जब ऐहै उमगानी तब रावरी सुवानी बर बचन बिसारैगी ॥ मणि-देव भनत बखान की चलांकी तासु रावरे सखान की न भीर को बिचारैगी । खरेहौ गुलाल कै किलाल में तयार पर देखतही लाल तुम्हैं लाल करि डारैगी ७ ॥

मनीराम कबि ॥

क० ॥ कोकिल नकीब औपपीहा चोबदारदार भँवर नफीरै कीरै मन्द मन्द गायोहै । गुटक कपोत गोत ताल मानो तबलनकी अबलनकी जाति भांति मोरवा नचायो है ॥ तूती लाल देत भाव भाषत भुजंगी भेद चातक उतारै राईलोनकी बनायोहै । मदन महीपतिके मनीराम माघसुदी पंचमीको ब्याहन बसंतऋतु आयो है १ ॥

क० ॥ गावैराग बानीबर मानौसुधा सानीसुनि मोहै

सब ज्ञानी ध्यानी ध्यानी अलसंतरी । केसर कुसुम्भ रंग कंचन के यंत्रभरे ओरीसरि होरी औ गुलाल वर संतरी ॥ चोवा और अतर फुलेल के फुहारे चलै मलै देव मीडै सुख सुरसोह संतरी । मनीराम माघसुदी पंचमी पियारे कान्ह साजि ब्रजराज आजु खेलत वसंतरी २ ॥

मोहन कवि ॥

क० ॥ मद मतवारे भारेभौंर गज गुंजरत मुनिजन देखि गीत गावत उमाहके । कोकिल नकीब बोल करत कलोल आगे पौन हलकारे आली छूटे चित चाहके ॥ मोहन सुकवि जीति शिशिरतगीर कीन्हे वशकरि लीन्हे देशरहे ना निबाहके । यह जियजान मानकरना गुमान आली डेरापरे बागन वसंत बादशाह के १ ॥

मुबारक कवि ॥

क० ॥ विटप लता कढ़ीहैं चाप दापसीबढ़ीहैं सेसर चढ़ी हैं अली अवली सुधरिकै । सुमन सुमनजाने वेई शर ऐंचि ताने महाविष साने जे पराग रहे भरिकै ॥ आहट विचार्यो चटकाहट कलीन पार्यो मार्यो यह चाहत मुबारक अकरिकै । जैहौ जरि मैन आजु जौहर कैतोहियिपर पावक शिखा पलाश पल्लव पकरिकै १ ॥

स० ॥ किंशुक झार कुसुम्मित डारिदै झार बयारि बहै जो गवाँरन । आग लगी है कहूं बिन काजन मैंहूं सुनी समुझी ऋतुराजन ॥ तेरीसों तोहिं डरौंमैं मुबारक सीसी करौ सखीदै जलधारन । च्वै चलिहैं चुरियाचलि आवरी आंगुरियां जन लाव अँगारन २ ॥

स० ॥ आयो बसंतअलीबनते अलि के गणडोलत डंक बगारन । काम ध्वजा किशलय उमगी बन कोकिल केगण लागे पुकारन ॥ ऐसेमें कैसेबचैंगी मुबारक आज कियेहैं सतीके सिंगारन । दौरिपलाश कि डार चिताचढ़ी भूमिपड़े निरधूम अँगारन ३ ॥

स० ॥ गुंजत भौंर बिराग भरे बन बोलत चातक औ पिक गायके । फूले हैं टेसू कुसुंभ जहां तहां दौरत काम कमान चढ़ायके ॥ डोलत बायु सुगंध मुबारक लागे हिये मलयागिरि लायके । मेरेमनाये न मानै बबा की सौं ऐहै बसंत लैजैहै मनाय के ४ ॥

स०॥अम्ब बसन्तमें बौरहिंगे अरु कामिनि चन्दन बीर रँगैहै । डोलैंगे पौन सुगंध मुबारक कुंजलता सों लता लपटैहैं ॥ योगी यती तपसी औ सती इनको बिरहानल आनि सतैहै । ताहि छिना सखि प्राण तजौं जो पै कन्त बसन्त के तन्त न ऐहै ५ ॥

मण्डन कवि ॥

स० ॥ बीतन लागे बसन्तके बासर औधिकी आश अजौं अभिलाखौं । मण्डन ये इतने सँग राम पियारे की सीखन तीखजनाखौं ॥ क्षीण भई तन मोतन अन्तर दाह निरन्तर कौन सभाखौं । दारुण भारअँगार की आगि रुई में लपेटि कहांलग राखौं १ ॥

माधव कबि ॥

स० ॥ आली सुनो बनमाली बियोग पलाशके पुंजन को सुखभागो । पात सुखाय गिरे महि आनिलतान

लतान में श्यामता को रंग लागो ॥ धीर धरे ठहरात न माधव मैन को जालिम जोरहै जागो। भामिनी भौनमें भागि चलौ फिरि आगि उठैगी धुवाँ उठै लागो १ ॥

मधुसूदन कवि ॥

स० ॥ आयो वसन्त दहन्त सखी घर आयेन नाह न पाये सँदेसे। कोकिल कूकि उठीं चहुँओरतें हूकि उठी हिय लूक सो लेसे ॥ याहीतें जीय डरै मधुसूदन जाति नहीं बन वाही अँदेसे। फूलि पलाशरहे जितही तित लोहू भरे नख नाहर कैसे १ ॥

मन्साराम कवि ॥

क० ॥ प्यारे के वियोग आली उठी आगि बृंदावन जरती सदेह कुंजै सुंदरी महाँमहाँ। बौरेकचनार आँच उठति पलाशनतें कुसुम करील डीठपरति जहाँजहाँ ॥ मन्साराम तिन्हें भेटि आवत समीर बीर लजो जात तन ताती लागति तहाँ तहाँ। मृग अधमारे बिललात है भँवर कारे कोयल हू कोपलै पुकारती कहाँ कहाँ १ ॥

मदनगोपाल कवि ॥

क० ॥ फूलन के दोना रचि साकलि सुमन रुचि सान्यो मकरन्द घीकनो लै घृत सोतुहै। महामुनि ऋतु-राज कामदेव बाँचत है खग होमि सोहाकार द्विजनको गोतुहै॥मदन गोपालदेव ताकिपूजाकीजियतु सखीसुख वारी प्यारी तेज को उदोतुहै। मधुकुण्डमांझलाल टेसू ये अगिनिझरै आजुबृन्दाबनमें अनूठोहोम होतुहै१ ॥

यशवन्त कबि ॥

क० ॥ आईहै बहार बनबेलिन नवेलिन में बहुधा चमेलिन में भौंरभीर छाईहै। छाईहै छपाकर मरीचिका दरीचिनमें तिनहूं लखतके अतन ताप ताईहै ॥ ताईहै सकल सुधिबुधि यशवन्त मेरी जबते पियारे प्राणप्यारी बिसराईहै। राईहै न नेककहू नवमें कलेवरमें कहियो हो कन्तसो बसन्त ऋतु आईहै १ ॥

रसखान कबि ॥

डहडही मोरी मंजुडार सहकारकीपै चहचही चुहिल चहूं कित अलीनकी। लहलही लोनीलता लपटी तमालन पै कहकही तापै कोकिलाकी काकलीनकी ॥ तहतही करि रसखानके मिलन हेत बहवही बानितजि मानसम लीनकी। महमही मन्दमन्द मारुत मिलन तैसी गह गही खिलनि गुलाब की कलीनकी १ ॥

स० ॥ खेलत फागु सुहाग भरी अनुरागहिं लालन को धरिकै। मारत कुंकुम केसरि के पिचकारिन में रंग को भरि कै ॥ गेरत लाल गुलाल लली मन मोहिनि मौज मिटा करिकै। जात चली रस खानि अली मद मस्त मनी मनको हरिकै २ ॥

स० ॥ आवत लाल गवाल लिये मग सूने मिली इक नार नवीनी। त्यों रसखानि लगाइ हिये भटू मौज कियो मन माहिं अधीनी ॥ सारी फटी सुकुमारी हटी अँगिया दरकी सरकी रंग भीनी। गाल गुलाल लगाइ लगाइ कै अङ्क रिझाइ बिदा कर दीनी ३ ॥

स० ॥ लीन्हे अबीर भरे पिचका रस खानि खरो बहु भाय भरोजू । मारसे गोप कुमार कुमारसे देखत ध्यान टरोन टरोजू ॥ पूरब पुण्यनि हाथ पस्यो तुम राज करो उठि काज करोजू । ताहि सरौ लखिलाख जरौइहि पाख पतिब्रत ताख धरोजू ४ ॥

स० ॥ जाहुन कोऊसखि यमुना जल रोकैखड़ो मग नन्दको लाला । नैन नचाइ चलाइ चितै रस खानि चलावत प्रेमको भाला ॥ मैं जुगई हुती बैरन बाहिर मेरी करी गति टूटिगो माला । होरी भई कै हरी भये लाल कै लाल गुलाल पगी ब्रजबाला ५ ॥

स० ॥ फागुन लाग्यो सखी जबतें तबतें ब्रजमण्डल धूम मच्योहै । नारि नवेली बचै नहिं एक बिशेष यहै सबै प्रेम अच्योहै ॥ सांझ सकारे वही रसखानि सुरंग गुलाल लै खेल रच्योहै । को सजनी निलजीन भई अरु कौन भटूजिहि मान बच्योहै ६ ॥

स० ॥ खेलत फागु लख्यो पिय प्यारी कों तासुख की उपमा केहि दीजै । देखतही बनिआवै भले रसखानि कहाहै जो वारने कीजै ॥ ज्योंज्यों छबीली कहै पिचकारी लै एक लई यह दूसरी लीजै । त्योंत्यों छबीलो छकै छबि छाकसों हेरै हँसै नटरै खरो भीजै ७ ॥

क० ॥ आई खेलि होरी ब्रज गोरी वा किशोर संग अंगअंग रंगनि अनंग सरसाइ गो । कुंकुमकी मार वापै रंगनि उछार उड़ै बुक्का औ गुलाल लाल लाल तरसाइ गो ॥ छोड़ै पिचकारिन धमारिन बिगोय छोड़ै तोड़ै हिय हार धार रंग बरसाइ गो । रसिक सलोनो रिझवार रस

खानि आज फागुन में औगुन अनेक दरसाइगो ८॥

क०॥ गोकुल को ग्वाल कालिह चौमुंह की ग्वालिनसों चांचर रचाइ एक धूमहि मचाइगो। हियो हुलसाय रसखानि तान गाइ बाँकी सहज सुभाइ सब गांव ललचाइ गो॥ पिचका चलाइ औ युवती भिजाइ नेह लोचन नचाइ मेरे अंगहि बचाइगो। सहसहि नचाइ भोरी नन्दहि नचाइ खोरी बैरिन सचाइ गोरी मोहिं सकुचाइ गो ६॥

राम गुपाल कवि॥

स०॥ बाल झरोषा उघारि निहारि गुलाल लैलालनऊपर डारै। एक उरोज लख्यो उघर्यो पिय तामें दई पिचकारि कि धारै॥रीझ थकी सबरी सजनी उपमाकबि राम गुपाल बिचारै॥ मानहुं मैन उझार दियो निंबुवा थिरकै अनुराग फुहारै १॥

रामचन्द्र कबि॥

क०-लालन पै ताल पै तमालन पै आलन पै लाल माल बाल पै रसाल सरसो परै। पढै कबि रामचन्द कुन्द कन्द बंदन पै चंदन पै चंद पै मलिंद दरसोपरै॥ केकी केलकेसर करंज केत की पै कंज कार कूत कोकिल कदम्ब परसो परै॥ रंगरंग रागनपै संगही परागन पै बृंदाबन बागन बसंत बरसो परै १॥

राम कबि॥

क०॥ चरचत चांदनी चखन चैन चुओपरै चौधा

सों लग्योहै चारोंओर चित्तचेतना। गुंजत मधुप वृंद कुंजनमें ठौरठौर शोर सुनिसुनि रह्यो परत निकेतना॥ राम सुने कूकन करेजो कसकत आली कोकिलको कोऊ मुखमूंदि अबलेतना। अन्त करे डारत बसन्तहि बनाय हाय कन्तहि विदेशाते बोलाय कोऊ देतना १॥

क०॥ सखिन सों कहै वाम आवै आज घनश्याम शीतल भवन मध्य पलँग बिछाइये। अतर लगावों चीर छिरकों गुलाबनीर चन्दन कपूर घसि तनमें लगाइये॥ कहै कवि रामकर बीजनालै कर ठाढ़ी फूलनको हारलै सुजान उर नाइये। माधोके दिनन मधु सूदन जो आवै घर इहिबिधि साधो संगमाधो बिसराइये २॥

रावराना कवि॥

क०॥ फागु खेल श्याम संग सदन सिधारी प्यारी राजै द्युति दामिनी सी भामिनी भरी अनंग। कविराव राना बैठि रतन सिंहासन पै दर्पभरी दर्पणलै भूषण सँभारै अंग॥ चन्द मुख चन्दनते चन्दकी कलासी खासी कंचनकी झारिनमें जल भरि लाईगंग। कोमल कपोलनतें धोवती गुलाल लाली त्योंत्यों होति आली अति गहब गुलाबी रंग १॥

रसिया कवि॥

स०॥ जबतें ऋतुराज समाज रच्यो तबतें अवली अलिकी चहकी। सरसायकै शोर रसाल की डारिन कोकिल कूकैफिरै बहकी। रसिया बनफूले पलाश करील

गुलाब की बासमहा महकी। बिरही जनके दिल दागिबे कों यह आगि दशों दिशितें दहकी १ ॥

राजाराम कबि ॥

क०॥ छाई छबि हीरनकी रबि ज्योति जीरनकी राजा राम चीरनकी चिलकारी अलकें। अबला अहीरनकी पाली दधिछीरनकी सोनेसी शरीरनकी गारी दैदैबलकैं॥ पिचकारी नीरन की मार सम तीरन की देव दान चीरन की मांगबेको ललकें। सोहैं करै बीरनकी उड़नि अबीरन की मुख लाली बीरन की बीरन की झलकें १॥

रघुराज कबि ॥

स० ॥ बसुधाधर में बसुधाधर में औ सुधाधर मे ल्यो सुधामें लसै। अलिवृन्दन में अलिवृन्दन में अलि बृन्दन में अतिसै सरसै ॥ हिये हारन में हर हारन में हिमि हारन में रघुराज लसै। ब्रजबारन बारन बारन बारन बारन बार बसन्त बसै १ ॥

स० ॥ फाबि रहे कटि फेंटे कसे करमें लिये कंचन की पिचकारी। शीश में सूरसे सोहै किरीट लसैं तिमि बागे बने जरतारी ॥ रोरी भरी लिये झोरी सखा कटि पीट पिछौरी सुहोरी तयारी। गोप समाजमें श्रीरघुराज बिराजि रहे बलदेव बिहारी २ ॥

स० ॥ सजिकै बरसानेतें आईं अलीं किये खेलना फागु तयारीभली। तहँ ठाढ़ी भईं धरि गोकुलकी गली लै पिचकी दुनली तिनली। तन सारी बिरजिरही अ-

भली रघुराज मनो बहु चांप कली ॥ लखि नाप लली प्रण रोपि चली कवि जैहै दली नहिं खेल छली ३ ॥

स० ॥ खेलती फाग फवीं अबला कमला सी अनेक कलानि दिखावैं। लै पिचकी कहुं औचक आय बिहारी के अंगनि रंग चलावैं ॥ जौलौं गुलाल की मूठि भरे रघुराज चलावन को हरि धावैं। तौ लगि वे ब्रज की नवला चम कैं चपलासी लला नहिं पावैं ४ ॥

स० ॥ बादले कि छैगई बसुधा तिमि गाढ़ी गुलाल की भै अँधियारी । बाजि रहे बहु बाजे सुहावन छैरही किंकिणि की झनकारी॥देखोपरै नहिं नैनन सों रघुराज भयो तहँ यो भ्रम भारी। लालन धाय गहैं लतिकान तमालन धाय गहैं ब्रज नारी ५ ॥

स० ॥ गोकुल गाँउ के गोपन गोल सो आगू गोबिंद कहूं कढ़ि आये । त्यों बरसाने कि प्यारी लली इत जे निकसीं सुख सिंधु नहाये॥ होत जुरा जुरी श्री रघुराज चलावन को चले मूठि उठाये। दोऊ रहे छवि में छकिकै ब्रज बाल गोपाल गुलाल बहाये ६ ॥

स० ॥ कोई सखी तहँ बोली निशंकन शंक करोहौं तिहां रही बोरिहौं। गाय धमारि को धाय धरा पर ग्वालन गोलन हौं हठि फोरि हौं ॥ तोरि मैं सौंह करो रघुराज लगे पिचकारिन में मुख मोरि हौं। गोपिन भीरलै मेलि अबीर रंगै बल बीर के चीरको बोरि हौं ७ ॥

स० ॥ धीर धरौ न डरौ न टरौ सब देखिहौं आजु जो खोलिहौ ख्यालै। गाइये गीत बजाइये बाज बुलाइ ये और सहौंमन वालै ॥ आवन दे रघुराज इतै साजि

ल्यावन दे सँग ग्वालन लाले। गोपिन गोल गुलालकी गेरिकै घेरिकै ह्वांगहि लेहौं गोपाले ८॥

स०॥ गहि केसरि रंग भरी पिचकी सब बाल रसाल गुलाल लई। रघुराज बजावत बीन धमारिको गावत कान्हपै जातभई॥ अति आनँद सों उत वोऊ खड़े जुडीठि भई अनुराग मई। जकिकै भयो सामरो बावरो सो ब्रजडावरी बावरी सी ह्वै गई ९॥

स०॥ देखि सखी सब राज किशोरन चित्तके चोरन सों अनुरागी। बाजे बजावन लागी अनेकन गावन लागी धमार सुरागी॥ आये लला अब आये लला अब जान न पावैं सखान लै भागी। श्रीरघुराज को धायधरो झुकि झारिकै झोरिन संगहि लागी १०॥

स०॥ कोइ गोरी कहीं कढ़िकै न रुकैंगी जबै लगि आपको पाइहौना। मोहिं आनि किशोरीकी कै बरजोरी बनाइहौं छोरी बचाइहौंना॥ तुम चोरी करी चितकी रघुराज लला जो कहूं भगि जाइहौना। झिल झारिकै झोरी जु मोरों मुखै तौ सिया सखी फेरि कहाइहौंना ११॥

स०॥ कोई सुजान सखा कह्यो नर्म कहूं रघुबंशिन हारन पाई। तूं कहै कैसे वृथा अरी बैन इतै पिचकारिन की झरिलाई॥ सो सखि नागर की सुनबात दियो हरि हेरि हरे मुसकाई। हैरघुराज सखाबिजयी बिजै पायकै जैहै निशान बजाई १२॥

स०॥ फेटैंकसे कटिमें चटकीले मजीले महीप लला है अनोखे। चौलड़े त्यों मुकुता हलमाल सुतारावली छबि छीने अदोखे॥ खेलन फाग सजे रघुराज सुराज

कुमार महा चित चोखे। अंगनि अंग उमंग भये जिन जोहत होत अनंगके धोखे १३॥

रसरास कवि॥

स०॥ लालहि घेरिरहीं ललना मनो हेमलता लपटानीं तमालहि। मालहि टूटत जातन जानत लूटतहैं रसरास रसालहि॥ सालहि सौतिन के उरमें चलरी उठिबेगि दैताल उतालहि। तालहि देतिउठी ततकाल लगाय गुपाल के गाल गुलालहि १॥

रघुनाथ कवि॥

क०॥ आव ढुरकायदै गुलाब खस केवराको चन्दन चमेली बेला माधवी निवारीमैं। जुही सोन जुही जाहि चम्पक कदम्ब मिलि सेवती समेत एला मालती निकारी मैं॥ रघुनाथ इनको बिलोकिबो न भावै हमैं कन्ताबिन आयो बसन्त फुलवारीमैं। भागिचलो भीतर अनार कचनारनतें आगिउठी आवति गुलालाकी कियारी मैं १॥

क०॥फूलैंगे अनार कचनार नहसुत आम फूलैंगे सिरिस औ पनस फूल सूलैंगो। फूलैंगी सुपाँडर औ मालती अमिलतास सेमर पलाश फूलि आगि रूप तूलैंगो॥ फूलैंगो कनैर माधवी चमेली रघुनाथ फूलैंगे गुलाब जिन्हैं देखिचेत भूलैंगो। बिरहको बिरवा लगायो जौन कन्त सखी आवत बसंत कहौवहो अब फूलैगो २॥

स०॥ देकहि मीर शिकारनको इहि बागन कोकिल आवन पावै। मूंदि भरोखन मंदिरके मलयानिल

आयन छावन पावै । आये विना रघुनाथ बसंतको ऐवो न कोऊ सुनावन पावै । प्यारीको चाहैं जियायो धमारितौ गांवको कोऊ न गावन पावै ३ ॥

स० ॥ तोहिं बसंतके आवतही मिलिहैं इतनी कहि राखी हितूजे । सो अब बूझति हौं तुमसों कछु बूझते मेरे उदासन हूजे ॥ काहेते आये नहीं रघुनाथ ये आइकै औधके बासर पूजे । देखु मधुव्रत गूंजे चहूंदिशि कोयल बोली कपोतऊ कूजे ४ ॥

स०॥ जानति हीन बसंतको आगम बैठहि ध्यानधरे निजु पीको । एतेमें कानन ओर सों आइकै काननमें पस्यो बोल पिकीको ॥ हेरघुनाथ कहा कहिये कहि आयो हा आयो गरो भरितीको । लोचन बारिजसों अँशुवाको अथाह बह्यो परवाह नदीको ५ ॥

स० ॥ बैठि बिसूरतिही पिय आगम एतेमें कोयल की सुनिबानी । जागि उठी बिरहागि महा लखिमैं रघुनाथ की सोह सकानी ॥ चन्दन लाइ मिलाइ कपूर निशाभरि सींच्यो गुलाबके पानी । कौन कहै बतिया निशिकी नतियाकी तऊ छतिया सियरानी ६ ॥

स० ॥ काजमहा ऋतुराज बलीके यहैं बनि आवत है लखितेही । जात कह्यो न कहा कहिये रघुनाथ कहै रसना इकएही ॥ साल रसाल तमालहि आदिदै जेतिक वृक्षलता बन जेही । नौदल कीबेको कीन्हों बिचार तौ कै पतझार दियो पहिलेही ७॥

क० ॥ साँझहीं तें खेलत रसिक रसभरी फागभस्यो अनुराग राग गावै रीझि पगिपगि । केसरि गुलाल सो

लपटि रह्यो रघुनाथ रूपकी ठगोरी डारि गोरीडरि ठगि ठगि ॥ भोडर के किनकायों लालके वदन पर निरखि जुन्हाई बीच ऐसे लसै जगिजगि। मानो फूल्यो बारिज बिलोकि कलानिधि आली किरनै चलायँते लुनाय रही लगिलगि ८॥

स० ॥ खेलति फाग सुहाग भरी वृषभान लली भली भांति उमंगसों। घूंघुट ओट किये रघुनाथ गई हरि पै छकि छूटि कै संगसों॥ चौंकि तिरीछी चितै मुसक्याय फिरी पिचकारी लगायकै अंगसों। रीझिरहे वह भाव चितै अरु भीजि रहे वा रँगीली के रंगसों ९॥

स० ॥ खेलिकै फाग फिरी जबसों तबसों दृग देखिये मैर मढ़्योसों। आवतहैं मुख जोसो कहै कछू खाहिन पीवहि भूत चढ़्योसों॥ ऐसीदशा सबकी रघुनाथ रह्यो तपि कै अँग आगि दढ़्योसों। डारि गयो नँदलाल सखी ब्रजबाल पै मानो गुलाल पढ़्योसों १०॥

स० ॥ बातैं लगाय सखानतें न्यारोकै आजुगह्यो वृषभान किशोरी। केसरिसों तन मंजनकै दियो अंजन आंखिन मैं बरजोरी॥ हेरघुनाथ कहाकहौं कौतुक प्यारे गोपालै बनायकै गोरी। छांड़ि दियो इतनो कहिकै बहुरो इत आइयो खेलन होरी ११॥

स० ॥ कैसीहैं ढीठी लखो ब्रजकी रघुनाथ कछू गुन जातन गायो। खेलत फाग गली में अचानक आज गोपालै कहूं गहि पायो। कै सुधि गारी की औ पिचकारी की बैर लियो यहि भांति सोहायो। जो कछु भायो सो भेषबनायो औ जो मन आयो सो नाचनचायो १२॥

स० ॥ कैसी है ढीठि लखौ यह गोपिका ओप भरी सिगरी ब्रजबाल सों। काहू की कानि न मानति है हठ ठानति है चपलापन चाल सों। मारि गई तब की बढ़ि के रघुनाथ घुमाय के फूल कीमाल सों। लाल की फेंट सों लैकै गुलाल लपेटि गई वह लाल के गाल सों १३॥
स० ॥ खेलत फागु सखीन के संग सों एक बढ़ी फगुवा सुख पागी। मूठी गुलाल लिये रघुनाथ गई हरि पै हिय मैं अनुरागी। प्यारे के हाथन सों छुटि कै पिचकारी की धार त्यों छाती सों लागी। नैननचाय चितै तिरछे मुसक्याय पिछौंड़ी कै पीछेको भागी १४॥
स०॥ फागु मची बरसाने के बाग सखी समता कहि जाय न जाकी। रीझि रही लखि हौं रघुनाथ जू देखि रही बहुधा चहुंघा की॥ बाल गुपाल पै दौरी गुलाल लै ऐसी लसी भरी रंग प्रभा की। चारु तमाल को संगमकों भई जुम्म की बेलि मनो कल ताकी १५॥
स०॥ फागु मची बरसाने के बाग में पूर रह्यो थल तान तरंग सों। गोप बधू इत ठाढ़ी गोपाल उतै रघुनाथ बढ़े सब संगसों॥ घूंघट टारि सखीन की ओट ह्वै प्यारी चलाई जो प्रेम उमंग सों। लागी लो मूठ अबीरकी आय पै प्यारो अन्हाय गयो वह रंगसों १६॥
स०॥ जाति चली एक गोप लली लखि मोहन औसर बूझि के होली। केसरि सों भरि के रघुनाथ छिपाय लई पिचकारी अमोली॥ पाय दबे बढ़ि पीछे ते आगे ह्वै लाय दई एती भांति तें भोली। ऊंचे उरोजन ऊपर धार सराक दै लागी छराक दै बोली १७॥

स०॥ जानति हैं कि गये मथुरा चढ़ि मारन कंस छड़ावन ओलै। फाग के आवत जैसी दशा भई सो रघुनाथ सुनो मन जोलै॥ कै सुधि होरी के खेलन की भुल ये सिगरी सुधि नंद के टोलै। फेट गुलाल भरे पिचकारी लै बाल गुपालहि ढूंढ़त डोलै १८॥

स०॥ फागु बिलोकिबे को रघुनाथ गोपाल कीजो दुचिती बहुतै हौ। चाहो चल्यौ तो चलौ चलै संग चले बिनु जानति हौं पछतैहौ॥ पै इतनी कहे राखति हौं मन में न अकेलोई मोद बसै हौ। कै सुख कै दुख पैही बलाय ल्यो चेत कै आज अचेत ह्वै ऐहौ १९॥

स०॥ होरी को औसर हेरि लला हरये ढिग आय गली में लई गहि। छीछरछायल छूटि गई रघुनाथ छबीले न फेरि सके लहि॥ रीझ औ खीझ दोऊ प्रकटी बृष भान लली इमि दूरि खरी रहि। नैन नचाय कछू कहिबे को पै चाह्यो कह्यो नहिं आयो कछू कहि २०॥

लालकवि॥

स०॥ बड़ भाग सुहाग भरी पियसों लहि फागुमें रागन छायो करै। कबिलाल गुलाल की धूंधुर में चख चंचल चारु चलायो करै॥ उझकै झिझिकै झहराय झुकै सखि मण्डल को मन भायो करै। छतियां पर रंग परे ते तिया रति रंगते रंग सवायो करै १॥

स०॥ फूलि रहे बन बाग सबै लखि फूलनि फूलि गयो मन मेरो। फूलनही कों बिछावनोकै गहनो कियो फूलनही को घनेरो॥ लाल पलाश नये चहुँओर ते

मैन प्रताप कियो घन घेरो । राखे यों फूलैं फैलाय फैलाय कियो ऋतुराजने मानहुं डेरो २ ॥

स० ॥ खेलत होरी किशोरी सबै पकरोरी धरोरी है सोर मचायो । मार परै पिचकारिन की जहांलाल गुलाल सों अम्बर छायो ॥ केसरके घटको करलै गिरधारन को ललिता नहवायो । मानो महा मनि मर्कत को पुखराज के संपुट बीच छपायो ३ ॥

स० ॥ घेरे रहैं घरहाँई घनी फिर बीते न फागु कछू कहि जायगी । लाल गुलाल की धूंधुर में मुखचन्द्की ज्योति कहूं लहि जायगी ॥ प्रेम पगी बतियाँ न तेरी छतियाँन की लाज सबै बहि जायगी । जो न मिली मन मोहनै तौ मन की मनही मनमें रहि जायगी ४ ॥

स० ॥ वह सांवरि गोरी सी आपुस में होरी होरी कहे बतरावत हैं । वह कोऊ अबीर की झोरी भरैं कोऊ केसरि घोरि मंगावत हैं ॥ वह रोरी के लाल कमोरी भरे छिरकै हरि पै छिरकावत हैं । वह श्याम हसंत बसंत रमै नंदलाल गुलाल उड़ावत हैं ५ ॥

स० ॥जुरि खेलैं तिया हरि होरी भले बहु बीन मृदंग बजैं रमकैं । कर कुंकुम लै रंग कंजमुखी पिय के मुख लावन को झमकैं ॥ तहं लाल गुलाल के धूंधुरमैं बहु बालन की दुति यों दमकैं । जनु सावन सांझ ललाई के मांझ चहूं दिशितें चपला चमकैं ६ ॥

स० ॥ फाग मची सिगरे ब्रज में नभ बादर लाल गुलाल के छाये । नागरि औ मनमोहन नागर सामुहे होत चितै मुसुकाये ॥ मान गयो छुटि मोद भयो मन

दोऊ सनेह भरे बतराये । मूठी अबीर भरी में सुगन्ध लगावन के मिस सों लपटाये ७ ॥

स० ॥ गरजै डफ झांझ सुझिल्लिन के गन बादर लाल गुलाल की झोरी । बहु बुन्दन की पिचकारिन सों भिजवै हठिके हरि पीत पिछोरी ॥ कल कूजित कोकिल चातक के गुन गाय रिझावत फाग गनोरी । साजि कुंजनमें मनमोहनसों जनु पावसपीतम खेलतहोरी ८ ॥

स० ॥ होरी के औसर गोरी सबै मिलि दौरिलख्यो जब कान्हर आयो । ह्यां इनमें निजभावती देखि रह्यो मनभावन को मन भायो ॥ हाथ पसारे न सूझिपरै तहँयों कछु लाल गुलाल उड़ायो । बाहनबांधि हिये लगिके हरि राधिका के मुख सों मुख छ्वायो ९ ॥

स० ॥ फागुन आयो सुहायो सबै रस कौतुक या ब्रज में सरसैहैं ॥ गोपिन के गणमें चलिहौं तुमगोपिन में मनमोहन ऐहैं । केसर सों रँगिहो उनके अंगलाल रंगीलो तुम्हैं रंगिदैहैं । होरी के खेलमें मेरे मिलापको आपसे आप भले बनिजैहैं १० ॥

लोने कवि ॥

क० ॥ मोरेमोरे मंजुतर मंजुरीन मिलि आली गंध गुणमयी मन्द मारुत झकोरे लेत । नवलकिशोर लोने कंपयुत लतिकान लंपट निपट रस आनँद अथोरे लेत ॥ गरलकैसी गांठसे गठेसे एकठेसे ठसे फिरत अमान आन गांठ गहि छोरेलेत । काम कैसे चर ऋतुराज कैसे सहचर चच्चर करत चंचरीक चित चोरेलेत १ ॥

स०॥ तालरी बाजत भूरि मृदंग छुटे बहु रंग भयो नभ लालरी। लालरी गुंजन की उरमाल अबीर भरी भरि झोरिन सालरी॥ सालरी होत बिलोके बिना नँद नन्दन आज रच्यो ब्रजख्यालरी। ख्यालरी लोने कहा बरनै मन मोहन नाचत दै कर तालरी २॥

लोकनाथ कबि॥

क०॥ बनबने बानिक मो बरण बरण फूले लोकनाथ ललित लतान छबि छाईहै। मंजु मंजु मंजरीन गुंजत मधुप पुंज कुंजनमें कोकिला की कोकनि सुहाईहै॥ होरी होरी करत किशोरी दौरीखोरी खोरी गोरी चल तहाँबल बल सुखदाईहै। लटकि लटकि कान्ह बांसुरी बजावतहै येरी चलि देखिये बसन्त ऋतु आईहै १॥

लेखराज कबि॥

क०॥ सन सन डोलै पौन सन सन सूख्यो सन सनसन अंगदुख सनहोत हरिघरी। बनबन बीनिलीन्हों बनबन ब्योरि ब्योरि बनतन बरणत क्योंहूं उरधर धरी। लेखराज ऊंखऊ पियूषसों बिशेष राखि नाहिं अनमेख देखि देखि करकर वरी। अब अरबरी शरबरी मिलै कैसे कन्त अरहरी अरहरी अरहरी अरहरी १॥

शिव कबि॥

स०॥ विषहि बगास्यो चहै बात मलयाचलकी गिली उगिलीहै बर ब्यालनके जालकी। बाड़वको संगी बिधुभयोहै सुढंगी याते क्योंन करै चहूंओर चाँदनी

जवालकी ॥ कहै शिवकवि फूले कुटिल पलाश कूर जाने कहाबातकाहू दीन प्रतिपालकी। प्यारी विनदेखिये बसंत में अचम्भौ एकशालत हियेहै मृदुमंजरी रसालकी १ ॥

क० ॥ निकसी बसंतिका सुगंधभरी शिवकबि औरै ढंग भये बन कुंजकी थलीनके। कोकिलके कलकल कल नहिंदेत पल चारोंओर शोरसखि सुनिये अलीन के ॥ ऐसी समै मान प्राणपतिसों न कीजिये मेरी मेटिबे को मानमाननीकी अवलीनके । देखो रतिराज काज ऋतुराज कारीगर गुरुज बनायेहै गुलाबकी कलीनके २

क० ॥ कुंजकुंज प्रति गुंजरत देखु अलिपुंज कूकै कूर कैलिया कहाँ लौं धीर धरिबो। त्रिबिध समीर आनि तीरसों लगत हिये उमगै गँभीर पीर कैसेदिन भरिबो ॥ कहै शिवकबि हाय प्रगट्यो बसंत समै बिन बनमाली आली भोजरूर मरिबो। सेमर अपारनमें किंशुककी डारनमें भयो कचनारन अँगारनको फरिबो ३ ॥

क० ॥ मंजु मल्लिकान के मधुर मकरंद हेत रिंदये मलिंद जित तिततें पिलैलगे। जोहि जोहि चाँदनी मनाये बिन मोहिमोहि माननी समूह प्राणपति न मिलै लगे ॥ कहै शिवकबि क्यों कन्तबिन बसंत बीतै त्रिबिध समीर डोलि दाहन दिलै लगे। किंशुकके जाल लाल लाल बनबीथिनमें फूलनके मिस आली आगि उगि- लै लगे ४ ॥

क० ॥ आसदेन लागेकै बिलास निजु शिव कबि आसपासमें पलास कलिका खिलनकी। चटकीली चाँद- नी करन लाग्यो चंदमंद बधिबे बधूनमें बिदेशी गाफिल-

नकी॥ दई निरदई यह अंतक बसंत आयो अबहूं
कैसेहू न मोहनै मिलनकी। फूंके पौन भूंकै बिरहागिकी
भभूकै हिये प्राणलेत चूकै नहीं कूकै कोकिलनकी ५॥

शिवनाथ कबि॥

क०॥ आब छिरकायदे गुलाबकुंद केवड़ाको सेवती
समीत बेला मालती पियारीमें। जूही सोन जुही जाय
चम्पक कदम्ब अम्ब चम्पा औ चमेली गुल चाँदनी
निवारीमें॥ शिवनाथ बातको बिलोकिबो न भावै मोहिं
पीव बिन आयोहै बसंत फुलवारीमें। भागिचलु भीतर
अनार कचनारौ लग आगै उठी प्यारी गुल्लाला की
कियारी में १॥

शंभु कबि॥

स०॥ आयो बसंत दहंत सखी घर आये न कंत न
आये सँदेशन। शंभु कहै पथिकाये सबै अरु कोऊ
बिदेशी रहे न बिदेशन॥ चंदमुखी दृगते अँसुवा ढुरि
आनि पड़े कुच याही अँदेशन। मानो मयंक सरोजन
में मुकताहल लैलै चढ़ावै महेशन १॥

स०॥ कंत बिना ये बसंतके बासर अंतकसे उरमें
अरिहैंगे। हे कृश आगे हितू मुनिसी सुनि कोकिल
बोल सहै परिहैंगे॥ काम के कैवरसे कवि शंभु ये अम्ब
के बौर हिये हरिहैंगे। सेमरते मरते उबरी अबरी धौं
पलाश कहा करिहैंगे २॥

स०॥ ज्यों त्यों रह्यो अबलौं जिय तू अब आयो
बसन्त कछू न बसैहै। शंभु सुगंधित शीतल मन्द समी-

रनि पीर गँभीर उठैहै ॥ क्यों ठहरैगो करैगो कहा जब कोकिला कूकि कै कूक सुनैहै । और न तेरो फबैगो कछू बलिसंग कुहू के तुहूँ कढ़िजैहै ३ ॥

स० ॥ फाग रच्यो नँदनन्द प्रबीन बजै बहुबीन मृदंग रबाबै । खेलतीं वे सुकुमारतिया जे न भूषण हूं की सकैं सहि तावै ॥ श्वेत गुलाल की धूधुर में झलकैं इमि बालनके मुख आबै । चाँदनी में कबि शंभु मनो चहुँ ओर बिराजि रही महतावै ४ ॥

स० ॥ फाग रची वृषभान के भौन दै गारिन ग्वारि चहूँदिशि कूकै । आय जुरी उपजावति जे मनमोहन के मन मैन की हूकै ॥ चातुर शंभु कहावत वे ब्रज सुन्दरी सोहि रही ज्यों भभूकै । जानी न जाति मशाल औ बाल गोपाल गुलाल चलावत चूकै ५ ॥

स० ॥ खेलति फाग सोहाग भरी सुथरी सुर अंगना तें सुकुमारिहै । जैये चले अठिलैये उतै इतै कान्ह खड़ी वृषभान कुमारिहै ॥ शंभु समूह गुलाब के शीशन ढारिकै केसरि गारि बिगारिहै । पाँमरी पाँवड़े होत जहाँ तहाँ कोलला कामरी पै रँग डारिहै ६ ॥

स० ॥ खेलति होरी किशोरी जहाँ जिनपै रति रम्भा रमा गई वारि कै । सोंधो तहां सजिये हरि जाय जहां जनिये कोऊ ग्वारि गँवारिकै ॥ शंभु सरोज से पानि सुजान गहै पिचकारी गुलाब जो गारिकै । सो न खराब करैगी लला कमरी पर केसर को रंग डारिकै ७ ॥

शालग्राम कबि ॥

क० ॥ शीतल सुगंध मन्द बायुके सनाकबहै नभमल हीन देखि मन सकुचातहै। बन बिच शालग्राम किंशुकचमाके अहै अलि भन्न भन्न भन्न धुनि गरजात है॥ कोयलै नवीन बहु वृक्षन भना के रहै भन्नन सों नीर हीरशुभ्र सरसात है। चित्तन पै सुख हित आनँद तमाकेरहै वाह वाह वाह ऐसी ऋतुपति जात है १॥

शंकर कबि ॥

क० ॥ मंजु मलयाचल के पौन के प्रसंगनते लाल लाल पल्लव लतान लहकै लगे। फूलै लगे कमल गुलाबआबवारे घन शंकर पराग भू अकाश अहकैलगे॥ बोलै लगीं कोकिल भनन्त भौंर डोलै लगे चोपसों अमोलै मकरन्द चहकै लगे। नेको न अटक चल्यो कामको कटक चारु चारों ओर चटक सुगन्ध महकै लगे १॥

क० ॥ मदन महीपको समन्त बलवन्त दिशि बिदिशनि बीरा लै बसन्त उठि धाये है। करत न बारनअबारन प्रतापजाको शंकर बखानै यों अजब गुनगायेहै॥ फिरत दोहाई भौंर भौंरन के ब्याज कूर ललकारैं कोकिल की कूकनि गनायेहै। फूले ये पलाश के न फूल काढ़ि काढ़ि मानो नेजेमें बियोगीके करेजे लटकायेहै २॥

शेष कबि ॥

क० ॥ फूल फरमान छाप छपद दुहाई बास नूतन

सुसाज टेसू तम्बू दै परे है । केकी कीर कूक पिकबा-
नी चिठीआई जान रह बढ़ाई छबि रैयत मरोरी है ॥
शीतअधार बाद मापि रूप लीन्हों हेरी उपज हमारे
हरि ध्यान जो धरोरी है । आयो है वसंत व्रज लायो है
लिखाय शेष जोन्ह को जलेबदार काम को करोरीहै १ ॥

क० ॥ सघन अखण्ड पूरि पंकज पराग पत्र अक्षर
मधुप सद घंटा रहनातुहै । बिरमि चलत फूली बेलिन
के बास रस मुख के सँदेशे लेत सबनि सुहातुहै ॥ शेष
कहै सीरेसरबरनके तीरनीर पीवतन परसेते हिय सिय-
रातुहै । आवन बसंत मनभावन मनोजतन पवन परेवा
जनु पाती लीन्हे जातुहै २ ॥

संगम कबि ॥

क०॥ भौंरन के पुंज गुंजरत आवैं कुंजरसे कोकिल
नकीब तेई कुहुकि सुनावैंगे । लाल लाल किंशुकपै लसैं
आशमान छ्वै छ्वै बौर बरछीनके अधिक रूपछावैंगे ॥
संगम कहत काम कारीगर कोप कैके त्रिविध समीर
सोई सुरंग चलावैंगे । मानिनी गनीमनके मान गढ़
तोरिबेको सकल समाज सों बसंतराज आवैंगे १ ॥

सेवक कबि ॥

क० ॥ योग लागे चलन बियोग सों बियोग लागे
लोग लागे सेवक सँयोग सुखसाज तें । गंधलागे सौर-
भी द्विरेफ होन अंधआगे तरुके प्रबंध लागे फूलनकी
छाजतें ॥ गौन लागे बिहँग सुपौन मौनगौन लागे होन
लागे नाचराग रंगऊ समाजतें । सन्त लागे कांपन

अनन्त काम तन्त लागे अन्त लागे शिशिर बसन्त लागे आज तें १ ॥

क० ॥ वेई दल फूल जिन्हें बाढ़त बिलोकि फूल शूल समते भये समूल छबिसारी सो। सेवक बखानै तेई ठौरठौर भौरतहै भौरनके तौर औौर ह्वैगये महारीसो। शीतल समीर सोई पीर कौं करत हाय धाय धाय परत पराग रागधारीसो। जाय न कहत कोई कीजैकौन तन्त राम कन्त बिन ह्वै गयो बसन्त अन्तकारीसो २ ॥

क० ॥ फूलन लसन्त एतो अनल अनन्त राजै बाढ्यो काम तन्त सो बसन्त की बहार में। धूंधुरपरागन धुवां की धुधुकार हेरि हारन में है नहीं अगारन अगार में ॥ दहर दहर बन देखि कै कहर त्यागि लागियापहर दुखसागरके पारमें। सासन सों मैन के बिनासन को देहकरु आसन को सेवक पलासनकी डार में ३ ॥

क० ॥ हारन में फूलको बिदारन बिदारन तें धारन कस्योन दुखधारनको पारपै। कैलियाकी कूकनिअचूकनि सरन खाय टूकन भयो पै गयो हूकन की ढारपै॥ साल करि सालन रसालन के सालन की कीन्हों मौर मालन उतालन सुतार पै। सासन सों मैनके बिनासन को देह करु आसन को सेवक पलासन की डार पै ४ ॥

क० ॥ मोती कल गंग नील सारी कालिन्दी को संग डस्यो लाल रंग रूप भारती को भरिगो। सेवक भनत कै हियो को अनुराग जागि उमगि अदांग आज ऊपर उघरिगो॥ ललकि ललानेमूठि बादला की मारी तापै सनख उरोज पर ऐसो अनुसरिगो। मानो

भानु पूर कला आपनी को सूरमानि ह्वैके चन्द्रचूर चन्दचूड़पै बगरिगो ५ ॥

क० ॥ आजु ब्रजराज ब्रजमण्डल में खेलै फागु गोरिनकी भोरिन ठगोरिन पै डारदेत । गेंद गुच्छ कुंकुम हजारी पिचकारी भरी भारी दमकलनि विहारी परिचार देत ॥ कोऊ तहां भूल कोऊ मानत मनोज फूल कोऊ प्रीति मूलकहि सेवक सँवारि देत । हालनको भेदनगुलालनकी मूठिजौन बालनपै कबहूं मसालनपैडारिदेत ६ ॥

क० ॥ खेलत सुफाग महाराज ब्रजराज आज नाचै बार अँगना सभामें छल छूटिछूटि । सेवक बखानैं सुर सकल सभाके मचे महत मनोजके मजाकी मौज लूटि लूटि ॥ घूमि घूमि तालसों उझकि झुकि झूमि झूमि हावभाव भूमिलों बतावै तान जूटि जूटि । पूतरी सी पातरी नगीसी पन्नगी सी नरी किन्नरी सी किन्नरी परीसी परै टूटिटूटि ७ ॥

शेखर कवि ॥

क० ॥ कुंज लागे लसन प्रसून बिकसन लागे रसन सुगंध मकरन्दकी भरीनके । भौरन के पुंज मंजु गुंजरन लागे बन जाल लागे धरन रसाल मंजरीन के ॥ छाई छबि शेखर बसन्त की अवाई ब्रज लागो मोद बढ़न विनोद की भरीन के । रंग लागे चढ़न उमंगऊ बढ़न लागे संग लागे कढ़न सुहाये सुन्दरीन के १ ॥

क० ॥ बोलै लगी कोयलै औ कोकिला कलोलै लगी डोलिडोलि सुखद समीर लाग्यो परसै । फूले द्रुमपुंजनपै

गुंजन मधुप लागे मंजु फूलवृन्द लागे मकरन्द बरसै। शेखर धमारिन की धूमसी मचन लागी मैन लाग्यो नचन नवेली नेह सरसै। कंत बिन कैसे अन्त धीरज धरैगी आली मान गढ़ अन्तकबसन्त लागोदरसै २॥

सेनापति कबि॥

क०॥ बरण बरण तरु फूले उपबन बन सोई चतु-रंग संग दल सजियतु हैं। वन्दी जिमि बोलत बिरद बीर कोकिल हैं गुंजत मधुप गान गुन गाहियतु हैं॥ आवै आस पास पुहुपनकी सुबास सोई सौंधेके सुगंध मांझ सने रहियतु हैं। शोभाको समाज सेनापति सुख साज आज आवत बसन्त ऋतुराज कहियतु हैं १॥

क०॥ सरस सुधारी राजमन्दिर में फुलवारी भौंर करै शोर गान कोकिल रवाव के। सेनापति सुखद समीर है सुगंध हेतु हरत तुरतश्रम शीतल सुभावके॥ प्यारो अनुकूल के हूँ करत करनफूल केहूँ शीशफूल पाँवड़ेऊ मृदु पाव के। चैत में विभात संगप्यारी अल-सात लाल जात मुसक्यात फूल बीनत गुलावके २॥

क०॥ लसत कुटज बन चम्पक पलाश बन फूली सब शाखाजे हरति जन चित्त है। सेत पीत लाल फूल जाल है विशाल तहां आछे अलि अक्षर जे काजर के मित्त है॥ सेनापति माधव महीना भरि नेम करि बैठे द्विज कोकिल करत घोष नित्त है। कागज रँगीन में प्रवीन है बसन्त लिखे मानो काम चक्वे के बिक्रम कवित्त हैं ३॥

क० ॥ लाल लाल टेसू फूलि रहे हैं विशाल संग श्याम रंग भेदू मानो मसिमें मिलाये हैं। तहां मधुकाज आय बैठे मधुकर पुञ्ज मलय पवन उपबन बन धाये हैं ॥ सेनापति माधव महीना में पलाश तरु देखि देखि भाव कबिता के मन आये हैं। आधे अन सुलगि सुलगि रहे आधे मानो बिरही दहन काम कैला परचाये हैं ४ ॥

सरदार कबि ॥

क० ॥ कूकि कूकि कोकिल कठिन आँच फूके लगे, दरप भभूके लगे दमकन दाहके। डोलि डोलि त्रिबिध समीर बीर तीखे तीर भोरे लगे साहस सिखाये नेह नाहके ॥ कबि सरदार लागे कढ़न बिसासी बौर तीर लागे चढ़न चहूँघा चित चाहके। रोज रोज बढ़न सरोजन के शीश भौंर ओज लागे पढ़न मनोज बादशाह के १ ॥

क० ॥ संग की सहेली रहीं पूजत अकेली शिवा तीरयमुना के बीर चमक चपाई है। हौं तोआई भागत डरत हियराते घेरे तेरे शोच करी मोहिं शोचत सवाई है ॥ बचिहै बियोगी योगी ज़ान सरदार ऐसी कण्ठते कलित कूक कोकिल कढ़ाई है। बिपिन समाज में दराजसी अवाज होति आज महाराज ऋतुराज के अवाई है २ ॥

क०॥रेखैसी करत अंग अंगन असेखैपेखै डारकचनार वारी सुमन सहेजे में। पवन परेखे प्राण पत्र जनु

पारें हारें साहस अचूक बेग अजब अमेजे में ॥ कवि सरदार वृक्ष अति पतिझार भये बैठके हों काटे रैनि तन बिन रेजेमें । कोयल कुरूप कूक करत कुवेष बीर बिना श्याम देखै मेखै मारत करेजे में ३ ॥

स० ॥ सोंधे समीरन को सरदार मलिन्दन की मनसा फलदायक । किंशुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालनहूँ को मनायक ॥ कन्त अनन्त अनन्त कलीनको दीनन के मनको सुखदायक । साँचो मनो भवराजको साज सु आवत आज इतै ऋतुनायक ४ ॥

स० ॥ डोलैं सुगन्धित वायु चहूँ बन ये तरु पुंज कुसुम्भ बिछावत । वैसे बिहंग उमंग भरेजयपत्र पिकावलि कूकि जतावत ॥ है सरदार मनो भव फौज को साज नये क्षितिपाल सजावत । बौर रसाल को मौर धरे यह ठाट ठटे ऋतु ठाकुर आवत ५ ॥

स० ॥ शीतल मन्द सुगन्ध सदा सरदार सराहन योग नवीनो । चैत निशा चित चेतन चंद चढ़ो चख चारु चकोर नवीनो ॥ ठान सयान नहीं सजनी यह जान अयान पनो रँग हीनो । बैठि कहा पछितात अरी जब खेत चिरैयन ने चुनि लीनो ६ ॥

स० ॥ चीर चुनो चुरियां चटकील चलैं चुपचातुर चाल चपाकें । ऊँचे उरोजन पै अँगिया सरदार हिया बिछिया चमकाकें ॥ हार निवारि निवारन काज सु-साज सबै सुखमा सरसाकें । पूजन आज कहै गनगौरि को नन्दकी पौरि घरी घरी आकें ७॥

स० ॥ ग्वाल छके मदतें सिगरे अगरी डगदै डफ

ढोल बजावैं। आन तिया पतिआन लगावत गावत आनन आन लगावैं॥ त्यौं सरदार गुविंद के ऊपर इंदु मुखी रँगकी झरलावैं। हेरत इन्दु अनूपम पै अरविंद मनो मकरंद चुवावैं ८॥

स०॥ गोरी चलीं कहि होरी सबै तकि श्याम सखान लयो रँग मांगो। दोऊ दुहूँघा दबावत गावत नाचत राचत रूप सभागो॥ त्यौं सरदार लयेंबलबीर अबीर चलावत हैं अनुरागो। लालन तें जनु जाल बिशाल प्रवालन तें शशि पूजन लागो ९॥

स०॥ लै पिचकार सजे सरदार चलावत गावत दौर दरेरत। कीरतिजा नँद नन्दन संग सजे अँग अंगनये रँगगेरत॥ छूटत लालन के करतें लगि कंठ गुलालमहा छबि घेरत। मानहुं सीय सवासिन को मुख छोड़ हुताशन कों हरि हेरत १०॥

स०॥ करलै कर बाल गुपाल निहार चलावत चोट सुदेशन तें। मुरकी दुरकी लुरकी न गनैं उरकी थुरकी न अँदेशन तें॥ सरदार परै रँगधार घनी कुच ऊपर आवत केशनतें। परिछै शशि स्वच्छ महेश शशी जनु आप अशेष फणेशनतें ११॥

स०॥ ग्वालिनि ग्वाल रहे रँगठान न जान परै इत ओ उत वारी। त्यौं सरदार बिहारत कान्ह सुआन जुरी वृषभान दुलारी॥ दोऊदुहूँघा रहे मुख हेर सकेर महा अति आनँद भारी। मूठ चलैं उनकी इन पै न चलैं इनकी उन पै पिचकारी १२॥

स०॥ थोरीसी बैस किशोरी सबै भरि झोरी अबी-

र उड़ावतीहैं। करताल दै ढोलन की धँधकी धुनि बांध धमार बजावतीहैं॥ सरदारलिये मिथिलेश कुमारि उदार कै भाग सरावतीहैं। मुसिक्याय के नैन नचाइ सबै रघुनाथै बसन्त बँधावतीहैं १३॥

स०॥ मम प्राण प्रमाण करों उरमें पुरमें शरसे सुर सालतहीं। सरदार चले न चले तबतो अब हालत का डफ हालतहीं॥ हुरहारन हारन हार फिरैं पनिहारि न रोकत बालतहीं। प्रणपाल रहो दिनचार हहा चलि जैयो गुलाल के चालतहीं १४॥

क०॥ डरोना अहीरन तैं अगर अबीरन तैं चारि जनी चारु चारओरन तें धावोरी। एक हाथ ओड़ो पिचकारी की अगारी मार एकहाथ ओट राखि आँखिन बचावोरी॥ कबि सरदार आयो बड़ो खिलवारी ताहि खेल को सवाद रंगरंगन बतावोरी। कीरतिकुमारी कह्यो हेरिकै कुमारी कोऊ होरी गुन वारी बनवारी बाँधि लावोरी १५॥

शोभकबि॥

स०॥ कहुँ चैतकी चाँदनी में सतभामा के श्याम सिधारे निहोरन मै। गई आधिक जामिनी बीत तऊ तईमानी न मान मरोरन मै। कबि शोभजू नैनन नीर बहै कहै बैन मनोरस चोरन मै। कबधों बन घेरि हैं ये मुरली बरसाने की साँकरी खोरन मै १॥

सखीसुख कबि॥

क०॥ रोगसों असाधिन की औषधी को जाने सब

रसन की क्रियासें प्रवीण मन भायोहै । मेटत अजीरण को भूखनि बढ़ाइ देत नारिनके शोधिबेको भेद जान आयोहै ॥ कलीना खिलत यहै पुरिया खुलति लाखी भोगिन को देत सखी सुखसो सुहायोहै । रिझवारि मो-हन के आगे गुण प्रगटत आजु बनिदेखिरी बसन्त बैद आयोहै १ ॥

हरिकेश कबि ॥

क०॥ मलय गुलाबी हाथ सुमन पियालेआले चटक गुलाब चोख चाखत बिचारोसो । कहै हरिकेश मोदचारों ओर छायो जोर मधुर अलापै राग ताल कूक भारोसो॥ सुनि मन बसन लथोरे नेह बोरे बलि हेर झकझोरै करै कोरै पिय प्यारोसो । सुरभी कल्हार कुंज सदन सुछाक्यो बाँको मन्द मन्द आवत मरुत मतवारोसो १ ॥

क ०॥ मलय समीर पीर करि लै अधीर मोहिं नेशुक सुसीर नीर धीरन उधारि लै । कहै हरिकेश चन्द जारि ले घरीक तूहूं सांचो बिष कन्द चारु चांदनी पसारि लै ॥ अबहीं मिलत मोको नन्द के दुलारे प्यारे तौलौ तू उताल कारी कोकिल कहारि लै । गारि लै गरब गरबीले तू अनंग किन मेरे इन अंगन अनंग बान झारिलै २ ॥

हरिदास कबि ॥

स० ॥ कोमल कंजन की कलिका अलि काहेन चित्त तहां तू रमायो । मंजरी मंजु रसालन की तिन को रस क्योंनहि तोमन भायो ॥ फूलती औरै अनेक लताहरि

दासजू आयो बसंत सुहायो । छोड़ि गुलाबनको बन तू कट सेरुवा पै किहि कारण आयो १ ॥

हरिजन कबि ॥

क० ॥ आयो ऋतुराज महाराज महि मण्डल मैं तिहिकी दपट आगें शिशिर हिमंतको । दुंदुभी धुकार डफ तालहू को भुनकार मेरे जान घंटाहैं मदन मय मंतको ॥ कबि हरिजन कहै प्यारी परवीन सुनोयाको तोबचावहै मिलन एक कंतको । पूरण प्रतापदिन प्रभुता बढ़त आवै कोकिला पढ़त आवै बिरद बसंतको १ ॥

हरिलाल कबि ॥

क० ॥ फूललाई फललाई नीके नीके दललाई बौर लाई बनिआई धनि गुण गावैना । हरिलाल दोऊकर जोर कहौं तोसों बीरपीर औरहूकी जानि हियो तरसावै ना ॥ नेह सरसावै तून रंग बरसावै मोसों पंचशर पावक की चाँचर मचावैना । चोवाचारु चंदन अतर दरशावै जनि कंत बिन मालिन बसंत मोहिं भावैना १ ॥

हरिचन्द कबि ॥

क० ॥ सुखद समीर रूखी ह्वै चलन लागी घटि चली रैनि कछु शिशिर हिमंत की । फूलै लगे फूलफेरि बौरे बन आम लागे कोकिलैं कुहूकै लागी माती मद मंतकी ॥ हरिचंद काम की दुहाई सो फिरन लागी आवै लागी छिन छिन सुधि प्यारे कंतकी । जानीपरै

आजु बिरहीन की सिरानी अब आयो चाहै राते फेर दुखद बसंतकी १॥

क०॥ बनबन आगिसी लगाइकै पलाश फूले सरसों गुलाब गुल्लाला कचनारो हाय। आइ गयो शिरपै चढ़ाय सैनबान निज बिरहिन दौरिदौरि प्राणन सम्हारो हाय॥ हरिचंद कोयल कुहूकी फेरि बनबन बाजै लाग्यो युग फेरि कामको नगारोहाय। दूर प्राणप्यारो काको लीजिये सहारो अबआयो फेरि शिरपै बसंत ब्रजमारो हाय २॥

क०॥ नैन लाल कुसुम पलाश से रहेहैं फूलमाल गरे मानो बन झालरि सों लाईहै। भँवर गुंजार हरि नामको उचार तिमि कोकिल सो कुहकि बियोग राग गाईहै॥ हरीचंद तजि पतिझार घरबार सबैबौरीबनि दौरी चारु पौन ऐसी धाईहै। तेरे बिछुरेते प्राण कंतकै हिमंत अंत तेरी प्रेम योगिनी बसंत बनिआईहै ३॥

क०॥ पीरो तन पस्यो फूलो सरसों सरस साईमन मुरझानो पतझार मानो लाईहै। सीरी श्वास त्रिबिध समीरसी वहतिसदा अँखियाँ बरसि मधु झरिसी लगाईहै॥हरीचन्द फूलमन मौनकेमसूसनसों ताहीसोंरसाल बाल बदिकै बौराईहै। तेरे बिछुरेते प्राण कन्तकै हिमन्त अन्त तेरी प्रेम योगिनी बसन्त बनि आईहै ४॥

स०॥ सखि आयो वसन्त ऋतूनको कन्त चहूँ दिशि फूलिरही सरसों। बर शीतल मन्द सुगन्ध समीर सतावन हार भयो गरसों॥ अब सुन्दर सांवरो नन्दकिशोर कहै हरिचन्द गयो घरसों। परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पियापरसों ५॥

क० ॥ खेलो मिलिहोरी घोरो केशरि कमोरी फेंको भरिभरि झोरी लाज जियमें बिचारोना। डारो बहुरंग संग चंगऊ बजावो गावो सबहि रिझावो सरसावो शंक धारोना ॥ जोरिकर कहति निहोरि हरिचन्द प्यारे मेरी बिनतीहै एकताहि तुमटारोना॥नैनहै चकोर मुखचन्दसों परैगी ओट यातें इन आंखिन गुलाब लाल डारोना६॥

हृदेश कबि ॥

क० ॥ बासन बगीचे सीचे केसरि उलीचे कीचे अतर सुगंधन के परत फुहारे हैं। राजत हृदेश फाग मस्त मनमोहन पै उड़त गुलाब अनुजलधर भारे हैं॥ बाल भाल मोतिन केमाल पै गुलाल धूर भाषत रिसाल छबि जाल चटकारे हैं।मानो पंच बाण के शृंगारे रूप कारे भारे तारे आशमान के गुलाबी रंग धारे हैं १॥
क०॥ चंदन चहल चित्र महल हृदेश मोहेरस बतियान सों प्रमोद सखि यान में । खूब खस फरस फुहार फुही फैल रही भरे अति शीतल समीर छतियानमें॥ गोरे गात सोहै गरे गजरा चमेलिन के गुहे बर सुघर सहेली अति सान में।गोदलै उरोज कर परस गुलाब आब छिरकत लाड़िलो लली की अँखियान में २॥

हनुमान् कबि ॥

क० ॥धूधरि उमंग सों मचाय हो अबीरन की संग लिये मदन तरंग भरी गोरीमैं। रस बरसाय दरशाय हाय भाय तिन्हैं गाफिल करों तो बृषभान की किशोरी मैं। सहिकै अपार पिचकारिन की धार सोहै गरक

करोंगी हनूमान रंग रोरी मैं। खेलन कों होरी चाहे मोतें अरुझो री पर ओरी आज छैल को गहोंगी बर जोरी मैं १ ॥

क्षेमकरण कवि ॥

क० ॥ फूले कचनार सहकार औ अपार बन शीतल सुगंध मंद मारुत कपायो री। चंदन के गार और सुमन सुगन्ध सार हार मुकतान के बितान तन तायो री ॥ क्षेमकरण चंचरीक गुंजे औ कूंजे पिक पाछे सेज अशन बसन मोन भायो री। आयेमधुमास मोहिं करे उपहास मधु मधुपुर माधव बसन्त हू न आयोरी१ ॥

क० ॥ पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयल की सुमन सिपाही सैन्य साजि कै सिधायोहै। मधुबन नकीब बोलै बोलैबायु चोपदार तोपदार तरुवर तयारी करि तायोहै ॥ क्षेमकरण चाँदनी चमूकी चाव देतोहै लेतोहै अँकोर नाहिं हर बल शशि आयोहै। बैरीयां बसन्त बरजोरी ब्रजराज बिनमदन महीप मतवारोउठिधायोहै२॥

श्रीकवि ॥

क० ॥ हहराय उठत परत भहराय भूमें मंजु मंजु गुंजरत कुंज कुंज इतराय। आय चारु चूमत पुहुप पटलीको पाय पुनि मधु पीको अंक भरत निशंक धाय॥ खाय खाय घूमरी को भरमत ठौर ठौर दौर दौर श्रीकबि पराग धूसरित काय। पाय मधुरस आज निपट अघाय धाय दुख बिसराय कान करत मधुपराय १ ॥

गिरधारी कबि ॥

क० ॥ माते मकरन्द के मलिन्द गण गुंजरत मंद मन्द सोई मंत्र मोहन सुनायोहै। कहै गिरधारी खुली खोपरी कपोतिनकी तोमरी की तान कोकिलान सुरगायोहै ॥ गोलीसी निकल रहीं कलियां गुलाबन की नये नये आमनकी जात उपजायोहै। राजब्रजराज जूकोराजीकरिबेको आजबाजीगर ब्रजमेंबसन्त बनिआयो है १

गिरधारन कबि ॥

स० ॥ अनुराग गुलाल उड़ांय सबै नँदलाल हिये हरषावतीहैं। गिरधारन चोवा बन्यों रस राज समाज महा छबि छावतीहैं ॥ भरि रंग सुढंग उमंग सनी पिचकारी दृगैं बरसावती हैं। ब्रजराजकुमार के साथधमारमैं मारकी मार मचावतीहैं १ ॥

स० ॥ खेलनमें रस मेलनमैं गिरधारन आजुबने रंग राते। ताछिन आय गयो अबला दल शेष प्रभा कहते सकुचाते ॥ आनन गोप तियानके मंडित बंदन तें तहँ यों दरशाते। केसर केसर के सरसीरुह बेश बने सब नैन सुहाते २ ॥

स० ॥ रस खेलमैं रेलमैं रंगनकी पिचकारिन कों करलै बरसैं। गिरधारन चंदन कीचके बीच खेलार फँसे सुखमा सरसैं ॥ नँद नन्दन लैकर बन्दन कों अँगलाये हिये अतिही हरसैं। तब चारु अहीर बधूटिनके तन बीर बधूटिनसे दरसैं ३ ॥

स० ॥ लाल गुलाल समेत अरी जबसों यह अम्बर

श्रोर उठीहै। देखतहैं तबसों तितही लखिचन्द चकोर की चाह झुठीहै॥ डारतही गिरिधारन दीठि अबीरन के कन साथ लुठीहै। मोहनके मनमोहनकों भटू मोहन मूठसी तेरी मुठीहै ४॥

स०॥ केसर सो रँग चोवासे केश गुलाल सीहै अधरान ललाई। कुंकुम से कर कुंकुमासे कुच नैनकी सैन बनी पिचकाई॥ बुक्कासी सारीलसै गिरधारन टेसू सी चोली चुभी अधिकाई। गोरी गोपाल सों खेलत होरी सरूप धरे मनो होरी सुहाई ५॥

स०॥ चोवाके मेघ गुलालकी दामिनी बुक्का बलाका लसै अधिकाई। केसर शक्र शरासन चारु सुरंगन की बरसा वरसाई॥ बाजनि बाजन की गिरधारन गाजनि सो अति लागे सुहाई। आजु गोपाल ने होरी के बीच में पावस की परमा प्रगटाई ६॥

स० खेलत खेल झमेलनमैं रस खेलन खेल बढ़्यो अनमोला। सोहत है गिरधारन मार हजारन बारन रूप अतोला॥ एक सखी तहँ रामहिं देखि कै शीश तें चन्दनको घटढोला। मानहुं शुद्ध सतो गुण ने पहिर्‌यो धरि चाह रजोगुण चोला ७॥

स०॥ फागुन की उजियारी एकादशी देति बिनोद सुमोद के पुंजैं। गावतीं गीत बजावतीं नागरीताल पखावज आवज रुंजैं॥ तैसे फिरै अलि मैं गिरधारन त्यों अलिबृन्द चहूं दिशि गुंजै। काम कलोलन मैं कलता करै कालिन्दी कूल कदम्बकी कुंजैं ८॥

स०॥ गोप सबैमिलि गोकुलके करतारिन देतउड़ा-

वत शेरी। चाले अनूप शिंगार किये गिरधारन गारी सुनावैं अथोरी॥ चारहु ओर अबीरउडै ढरकावत केसर बोरि कमोरी। दारु बटोरिकै जोरिकै चारु लगावत होरी औ गावत होरी ९॥

स०॥ ग्वाल अनेक सवाँगकिये सँग गारीकहैं रस ढंग लपेटी। कोऊलिये पिचकारिनकों कोउ केसर बुक्का अबीर अखेटी॥ बीथिनमैं ब्रजकी गिरधारन तैसीबनी उत गोपकी बेटी। धाइकै होरीकी धूंघर बीच धमारनकी करैं धूम धुरेटी १०॥

गोकुलनाथ कबि॥

स०॥ मूठी गुलाल भरे चली लालके मारिबे को मुख पै सुखको चहि। गोकुलनाथ खेलार लई तब लोंइनहूं भरि केसरि सोलहि॥ जाय दई पहिले कुचपै पिचकारी की धार निहारि के होकहि। आँचर ओड़ि चितै सतराय लजाय सखीन की ओट लई गहि १॥

गुलाब कबि॥

स०॥ होरी अहीर को सांवरो छैल सुसंग लिये वृषभान किशोरी। सोरी गयो यहि मारगकै दये झांझ पखावज की घन घोरी॥ घोरी गुलाल अबीर गुलाब में बांह गहे औ करै बरजोरी। जोरी निहारत वारत प्राणन डारत रंग पुकारत होरी १॥

दत्तकबि॥

स०॥ कल कंजन त्यों पग ऊपर नूपुर हंसन की

धुनि रुंदन की। रँगदत्त अबीर की भीर – नाहिं नेवुं छबि यों मुख मुँदन की ॥ छकि होरी के खेल बेसर थकी झलकै उपमा श्रम बुंदन की। बिलसै मनो शिंगार भरी मुकतान फरी छरी कुंदन की १॥

धीरज कबि ॥

स० ॥ दई चूनरी रंग भिजाय सबै फिरि तापै गुलाल की झोरी करै। न करै गुरु लोग की लाजकहूं झझकारेऊ आनि निहोरी करै ॥ कहि धीरज मोरीसी जानि हमैं मगमें अरिबे की नथोरी करै। इन बंकरी मोरी मरोरी सखी हरिदेखुरी होरी में जोरी करै १ ॥

नारायण कबि ॥

स० ॥ लोल करे दृग गोल गुआलिनि दै करताल सु ढोल बजावति। चूनरि चारु चुरी जु नरायन पाँयन पैजनियाँ झमकावति॥ अंग उमंग अनंगमई रँग छूटि छटा क्षितिपै छबि छावति। धावति धूम मचावतिगावति लाल गुलाल उड़ावति आवति १ ॥

प्रेम सखी

स० ॥ लाल लये पिचका करमें भये आप खरे सिय सामुहें आय कै। तैसी बनी मुख की सुखमा बिधु पूरण शीत निशा जनु पायकै॥ पीत दुकूल कसे कटि में जिहि ते बिजुरी दबि जाति लजायकै। प्रेम सखी हिय में वह माधुरी राखत ज्यों निधिरंक चोरायकै १ ॥

स० ॥ भूषण भूषित संग सखा इत संग सखी सत्र

वत रोरी। –६। को बरणै तिनकी छबि को बहु रूप सुनावैं…स रतिमार है॥ लीन्हें उतै पिचका करमें इत बे…ड फूल की गेंद अपारहै। प्रेम सखी सियके पियके …ग ठाढ़े भये सब खेलन हार है २॥

स०॥ चोवन के चुरुवा इततें अलि डारे गुलाल की मूठि अपार है। केसर रंग भरे सिगरे पिचकान की मानो रही जुरि धारहै॥ प्रेम पयोधि में जाय परे यहि के सिगरे सुख देखन हार हैं। प्रेम सखी न टरै रस मत्त इतै नृपजा उत राजकुमारहै ३॥

स०॥ फूल छरी तरवार चली इतते पिचका भरि मारत तीर हैं। भीजि गई रँगते सिगरी बिथुरी अलकैं न सँभारत चीर हैं॥ शस्त्र प्रहार सहैं सिगरी भटरोस भरे न गनैं तन पीर हैं। प्रेम सखी प्रमदा गण मत्त खरे मनो घायल घूमत बीर हैं ४॥

स०॥ गावत बालन राग सखी गति भेदते बाजन लागी मृदंग है। को बरणै तिहि औसर को सुख छाय रह्यो स्वर ताल तरंग है॥ राम सियाछबि ऊपर मैं बलिहारी करों रतिकोटि अनंगहै। प्रेमसखीछबि दम्पति की हियमें छहराय रह्यो वहरंगहै ५॥

अम्बिकादत्त कबि॥

स०॥ आजु सखीहै कहाब्रजमैं घरहीघर आनँदसाजतहैं। बन्दनवार लगेलहरैं कदलीनकेखम्भ बिराजत हैं॥ अम्बिकादत्तजू चाह भरेपिचकारीलिये छबिछाजतहैं। धूम धमारनकी धमकै धधकान भरेडफ बाजत हैं १॥

स० ॥ धरती धरती डरती पदकों घुँघुरू नहिं नेकु बजावतीहो। झुकी झांकती भौंह चलावतीहो नकबेसर झूमि झुमावती हो ॥ कवि अम्बिकादत्तहि हेरि चितै छिपती सी हहा मुसकावती हो। करमें पिचकारी लिये किनकों तुम रंग भिगावन आवती हो २ ॥

स० ॥ लायेहो चोवा कहा यहिसों मुख बासहै सौ गुनो मेरो रसीलो। रंग दिखावतहो कहा मों पटयासों अहै छैगुनो सो छबीलो ॥ अम्बिकादत्तजू मूठीभरेका दिखावत आनन हो गरबीलो। तेरी गोपाल गुपालन सों मम अंगहै चौगुनो सो चटकीलो ३॥

स० ॥ गई आजुहुती ब्रजबाट सखी सुकहा कहूं साध धरीकी धरीरही। हरि आय अचानक धोंकितसों मोहिं अंक भरीमैं खरीकी खरीरही ॥ कबि अम्बिका-दत्तके हाथपरी भरी झोरीअबीर परीकीपरीरही। लरकी लरीहारचुरीकरकीकरकीपिचकारी भरीकी भरीरही४ ॥

स० ॥ क्यों अठिलान लगे अबहींतें सुआमन बौर दिखावन दीजिये। कोकिल कोकल पंचम तानि कै कामिन कों ललचावन दीजिये ॥ अम्बिकादत्तहु को कबिता करिकै फगुआ कछु गावन दीजिये। आजु हि ते हरिहोरी मचावत फागुन तो भला आवन दीजिये ५॥

स० ॥गारी जुपै मुख एकहु काढ़ि हो तो सिगरे ब्रज शोर परैगो। नन्द यशोदहु को नहिं छोड़िहों मोतन जो दृग कोर परैगो ॥ अम्बिकादत्तजू सुधी सुनो सुनिबे में कहा कछु जोर परैगो। छीटहू चूनर पै जोपरी तो घरै घर मैं लला घोर परैगो ६ ॥

स० ॥ आजुकी बातकहा कहिहों मुखसों कछुहू कहि जातन प्यारी। साध सबै मनकी मनहीं रही ऐसी कछू बिधि बात बिगारी ॥ अम्बिकादत्तजू जादू कर्यो जनुमैं अपनी सुधिहाय बिसारी। देखतही मनमोहनको मुख हाथ सों छूटिपरी पिचकारी ७ ॥

स० ॥ होरीकी बातनिके चलतै तुव बोलनि क्यों लरजाय गई। अंगलता तुव कंचन सी किमि हाय रोमञ्चन छायगई ॥ अम्बिकादत्त को देखतही झुकि झांकती क्यों सरमायगई। धूम धमारनकी सुनतै अली स्वेदके बिंदु नहाय गई ८ ॥

दिनेश कबि ॥

क० ॥ मुनि मन मथिबेको रीति सरसाती सबै कोहै अति धीर थिर सकै जो बिरोधिकै। सीरे शोधसंग धीरे धीरे की समीर बीरकरै बिनुधीर मन मनमथ बोधिकै ॥ सुमन दिनेश लसै बनिकै बनीन मधि मधुकर निकर रहेरी रस रोधिकै। मानों रतिनाथ बिनु नाथमेरे मारिबे को धारे कर निशित बिसारे सार शोधिकै १ ॥

क० ॥ फूलि फूलि बन में निवास करि फूले बन बासी मुनि लोगन को करत बिहालुहै। फेरि अतिराग परि पूरित मरोर पाइ बैर करि भयो जो बियोगिन को कालुहै ॥ कहत दिनेश ब्रजनागरि पियारी देखु किंशुक कुसुमन को अद्भुत ख्यालु है। आपु अति टेढ़े वै हठीलिनिके टेढ़ेउर सूधे करिबे को सदा रहतउतालुहै २ ॥

क० ॥ निपटै कुटिल भांति जातिहै निहारे जेनकरि

के अचैन देन हारे दुख दाहके। रातेराते रंगनि समातें जेन बन बीच नीच लखि पथिक डराते जिवै राहके॥ कहत दिनेश फूले कुसुम पलाशके न भाँगु मिले न जो करैया चित चाहके। सो नित समेत उठे बिरही कदन करि रदन विलोकु बन मदन गराह के ३॥

क०॥ रूप भई सुरसउदार शुचि साखिनसों मंडित ह्वै नीके तू रह्यो जो छबिछाय के। सुबरन मंजरी समेत परि पूरण जो नील माणि कैसेफल पुंजनिको पायकें॥ कहत दिनेश येरे बिशद रसाल तोहि जोपै बिधि सबै विधि बिरच्यो बनाय के। ह्वैकै सहकार कहितौ कत अ-नीति करि राखत बटोहिन के लोचन लुभाय कै ४॥

क०॥ मंजरी मिलितडारैं सदलरसालनकी बिकसी अपारै पार पावै को बखानिकै। गुंजरतभौंर ताहि नीके ताकिबे को जब ठाढ़ी भई बाल दृग ऊपरको तानिकै॥ कहत दिनेश ताहि समै पाईपौन झर्‌यो कुसुम किशोरी के उरोजन पै आनि कै। मानो सोधि पूरब को बैरकोपि कामदेव मारे तीर तीखन महेश अनु मानिकै ५॥

क०॥ बकुल तमाल कुंद लकुच रसालतरु मंडित लतानि लेश रबि के न वोज को। जित तित बिबि-धि बिहंग कल कूजैं गूजैं मधु मतवारैं करैं मधुकर मोज को॥ कहत दिनेश देखु आली बन्यो बन कुंज छाकी हम जाकी उपमाकी करैं खोजको। मण्डित कुसुम्भ तीर भौंरनि गंभीर बीर सोहत तुनीर मानो सुभट मनोज को ६॥

क०॥ आवत निपट ताहि शीतल करत अरु देत

फल पाको जाको सुंदर परत्तु है। बात हिम आतप कों सहत रहत सदा कहत कछून बूझै फूलित सुमनु है॥ कहत दिनेश दृढ़ आसन अधार मूल हेत तपही सों औ निकेत कीन्हों बनु है। आली अलि आली जप माली गहे राजत है साखी जानि जानु जानु कोऊ मुनि जनु है ७॥

क०॥ बास पाय उड़त बहुरि घिरि आवत जो गावत रहत उर उमँग उदार ते। रूखे रूखे दल सों दलित अंग होत जाको जात भिदि जोहै खर कंटक अपार ते॥ कहत दिनेश मन मोहन बिलोकौ इतऊवत न मधुप कलेशन के भार ते। फूले फूले फूलनि बिलास करिबेके हेतु बिलगन होतहै गुलाबन के डारते ८॥

क०॥ इनते अधिक सुकुमारता तिहारे तनअतन उदै की छिपि तेसिय ज पाइतू। इन में कहा है ऐसी अंगिनी सुगंध तेरे आस पास पूरण प्रकार अधिकाई तू॥ कहत दिनेश सुनि एरी गज गौनी इन पातनि ते लोनी लई गातनी गुराई तू। चन्दमुखी कंटक गुलाबनके फूल कहा करिके अकाज बिनु काज फिरे धाईतू ९॥

क०॥ मिलत मरालन सों मुदित मराली जहां करि के अमंद छबि मंद मंद डोलैरी। तीर तरु साखन सो छादित अमलीनीर रंगरंग बिबिध बिहंग कुल बोलैरी॥ कहत दिनेश आली देखत बनत शोभा सुखद सरोवर की लेत मन मोलैरी। फूलि फूलि फूले अरबिन्दन के वृन्द जामें उन्मद श्याम अली करत कलोलैरी १०॥

क०॥ राजी भयो मदन बिराजी रोम राजी खुलि

छाजी छबि तेसिये त्रिलोचन के कोरकी। कढ़ी कछू त्रिबली गिरोहै शीश पट कुच कोरनि समेत बढ़ी शोभा भुज छोरकी॥ कहत दिनेश यह लीला फूल तोढ़िबे की हेरि हेरिछाकी मति कान्हर किशोरकी। हँसि हँसि भावती उचावे कर जातन को फूली डार भावतो नवावे तिहि ओरकी ११॥

क०॥ छूटि लागी अमल कपोलन अलक बेनी उरझि उरझि लागी हीरन के हारमें। श्रुतिमें सखी के लाग्यो बोल अनमोल अरु आँचर उरसि लाग्यो उरज उदार में॥ कहत दिनेश मन लाग्यो ब्रजसुंदरी को चोटत कुसुम वन कौतुक अपारमैं। नैननट नागर मेंहा सअधरामें लग्योचरण धरामेंकर कुन्दनकी डारमैं १२॥

स०॥ फैलि कढ़ी कुच कोरनि की भुज छोरन की छबि चारु तहांपै। शीश की चीर गरे गिखो आनन ओप उदै शशी वारिये जापै॥ आलिन सों मिलि कालिन्दी कुंज दिनेश भरी दरशै सुखमापै। चोटत फूल उचैकर राधे इतै-उतै सांवरे के कर कापै १३॥

स०॥ कूल कलिन्दी कदम्ब की ओर रही मिलि मानो मनोज अनीजे। गोरीसबै भरि झोरी अबीर औ रोरीगहे कहै होरीहै लीजे॥ कीजे सबै मन भाई दिनेश पतीजे खरो रँग भीजे न छीजे। तारी दै दै अरु गारी दै दै लै गुलाल गोपाल के गालन मींजे १४॥

स०॥ क्यों उमदाने गोपाल कछू बनि ऐहै नहीं जो कोऊ लखिपैहै। डारतही रंग सारी हमारी नई जरतारी कहूं भरिजैहै॥ हेरि दिनेश हरा हियरा कोहरो

जनि जो हरि हहाहिरैहै । आपु बिकैहो घरो बिकिहै बिकि जैहै यशोदा औ नंद बिकैहै १५ ॥

स० ॥ लखिआये अरी दिन फागुनके तहां कोऊ धमारि मचावै नहीं । कहुं भूलहू आजु दिनेशकहै बिनु लाल गुलाल उड़ावै नहीं ॥ उठि आलिन आली मनै करु कोऊ जरे परलोनु लगावै नहीं । कछु गावै नहींरी बजावै नहीं इत आवै नहीं गुन गावैनहीं १६ ॥

स० ॥आयोहै फागुन फागुन बीनलै बीन अभीर की भीर जुरैगी । बाजे बजैंगे सजैंगे सबैतन बीरन पीर दुराये दुरैगी ॥ प्यारे बिलम्बि बिदेश रहेतौ दिनेश या प्रीतिसो कौन मुरैगी । जानि पस्यो पहिले उड़िहै सखी प्राण ये पाछे अबीर उड़ैगी १७ ॥

क० ॥ उतयुत ग्वालन सों लाल लिलकारत औ इतते अमित राधा सखिन समेतहै । दुहूँ ओर बाजत मृदंग डफ ढोल बीन सुरचंग बांसुरी रवावै सुख हेतहै॥ कहत दिनेश नीर केसरि फुहारे परै उमड़ी गुलाल छबि भोडर की सेतहै । बाजीबार राधा ब्रजराजही को राजी करै बाजीबाजी बार ब्रजराज बाजी लेतहै १८ ॥

क० ॥ रात्यो दिन गावत रिझावत मनोज मन भावतन और मति नारि औ नरनकी । रीझै खीझै बिहँसै बिलोकै हँसै नागर ज्यों चतुर अनागर कहै को नागर नकी ॥ सबै उम राउ रंक राउको न भेद रह्यो चहुंघा दिनेश फैलीकीरति अतनकी । सहित समाजकुलकानि हूकी साज गई लाजगई निकरि नबोढ़नके मनकी १९॥

क० ॥ गरद गुलाल की बिलोकत बिलोल भई

लोल भई हौं हू पै न जानीपर पीर तूं । क्यों न होइ नि-
पट कठोर उर तेरो गिरिधारन गोपाल जाति जाहिर
अहीर तूं ॥ कहत दिनेश वह तोहि बिनु दीन जैसे
मीन जलहीन किन देखै चलि तीर तूं । एक़तो हुतोई
वह अबला अबल ताहि नीके करी औरऊ अब-
लबल वीर तूं २० ॥

क० ॥ केतिन के ललित लचीले कटि कूलन में
केतिनके परति दुकूलन में धाय कै । कितिन के बिथुरि
बिराजै भुज छोरन में मोरन में नीके नैनकोरन मैंजायकै॥
कहत दिनेश लाल करसे गुलाल वारी बाढ़ी गाढ़ी गरद-
न काढ़ी काहू चाय कै । गोरे गर वीच आयके तिनके
कुचनि कपोलनि में रही छबि छाय के २१ ॥

नीचे लिखे हुये कबित्तों में कबियों के नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ कूकि उठी कोकिलान गुंज उठी भौंर भीर
डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने । फूलि उठी लतिका
लवंगन की लोनी लोनी झूलि उठीं डालियां कदम्ब
सुख पावने ॥ चहकि चकोर उठे कीर करि शोरउठे टेरि
उठी सारिका बिनोद उपजावने । चटकि गुलाबउठे लट
कि सरोज पुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनिआवने १ ॥

क० ॥ कन्त बिन बासर बसन्त लागे अन्तकसे
तीर ऐसे त्रिबिध समीर लागे लहकन । सान धारे
सांगसे चन्दन घनसार लागे खेद लागे खरे मृग मेद

लागे महकन ॥ फांसी से फुलेल लागे गांसीसे गुलाब अरु गाज अरगजा लागे चोवालागे चहकन। अंग अंग आगि ऐसे केसरि के नीर लागे चीर लागे बरण अबीर लागे दहकन २॥

क० ॥ किंशुक समान के निशान फहरान लागे बंदी जन भीर भारी भौरहू गला करै। पंच शर साथ हाथ लीन्हें है नवीन शर शीतल सुगन्ध मंद मारुत चला करै ॥ बगरि उठे हैरी बिलोकि बैरी चहूं ओर हूकै करि धावै भट कूकै कोकिला करै। हाय बिनकन्तको सहाय करै मेरी अब आवत बसंत बिरहीन पै हलाकरै ३॥

क० ॥ कोऊ कहौ जाय कान्ह आई है बसंत ऋतु कोकिल के बोलिबेको ब्रजमें बखानेहै। हिये सुलगाति आगि ऊधो दई फूंकि आइ मरत बनैना जेवे बचन सुजानेहै ॥ येहूपर काम कमनैत ने गही कमान नेही गोप नैनन के तारिका निशानेहै। खिले अनखिले अधखिलेई पुहुपनाहीं एकबाण मारेएकछांड़े एकतानेहै४॥

क० ॥ कलित कमण्डल कमल कलिकाके करिकिंशुक कुसुम बर अम्बर सुहायो है। ठौर ठौर भौरन की श्रेणी जयमाल मौर सजे हैं रसाल जटाजूट सो बढ़ायो है ॥ शिष्यन के गीत कीर कोकिल कपोतसंग पढ़ै ह्वै उमंग चहूंओर शोर छायो है। कंत बनमालीको पठायो लालीसो लसंतआलीरी बसंतधनि संतबनिआयोहै५॥

स० ॥ कैसे हैं कुंज के सुन्दर फूल बिराजत पात ज़राव जस्यो सो। यामें तौ आवत पावत हौ पतिकी रति केलि को रंग धस्यो सो ॥ आयो बसंत बयारिबहै

अब तो यह देखियेगो उमस्यो सो। सोचतही पुनिपात गिस्यो मुख ह्वै गयो प्यारी को पात भस्योसो ६॥

स०॥ फूले गुलाब कियारिन कोरन लोनी लवंग लता उरझाई। बैसेचकोर चहूं दिशि कोकिल भौंरसमूह नगुंज सुनाई॥ वन्दन वार बँधे तरु पुंजन कुंजन फूलन सेज सोहाई। आनँद आन भई सबके सुनि कै ऋतुराज की आज अवाई ७॥

क०॥ फूलेहैं रसाल नव पल्लव विशाल बन जूही औ पलाश मल्ली आदि बहु को गनै। कूजत विहंग पिक कोकिलादि एक संग गुंजत मलिन्द वन वीथिकानि मैं घनै॥ वहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनि गनके सनै। येरेब्रज रंग ऐसेसमय रहो संग नतु दहन अनंग मिसु गोपिकानके तनै ८॥

क०॥ फूले ते पलाश हैं मसाल जगमगात मानौ मन्दिर सोहात गीत कोकिलन गायेहै। विविध वरणके बनायेहै बराती सब तन मन मोह्यो मधु आनँद बरसायेहै॥ उड़त गुलाल नभ बादर भयेहै लाल अविरा की धूंधुर सो मण्डप यों छायेहै। देखुरी सखी आजु गोरी दुलहिन व्याहिवे को धरि मौर बनरा बसन्त बनि आयेहै ९॥

क०॥ फूले गुल्लाला गुलाब कलियानलागे तातेमद न करत अति सरसाईहै। पवन के चले द्रुम पात भरिजात आली तामें मधु पुरीमें मित्रहू सुधि पाई है॥ सुन्दर सुबास तन उत्तम अवास पाय कुब्जिाको रंग रूप नीको बनि आईहै। ऊधोजी निपट अँदेशो है

सँदेशो अहै कहयोकूर कन्तसों वसन्त ऋतुआईहै १०॥

क० ॥ फूलिरही माधुरी रसाल लता साधुरी पलाशन धुरा धुरी अनेक रंग घेरे हैं । शीतल सुगन्ध मन्द दक्षिण के पौन मान मोचन नरेंद्र हरि क्षणकन नेरे हैं ॥ प्रफुलित कुंजैवे गुलाब अलि गुंजे तेहि जोहनको मोहन परत पायँ मेरे हैं । हेरे क्यों न बन तन लाग्ये कहा ऐसी रही तनहू में अनगन ठनगन तेरे हैं ११ ॥

क० ॥ फूली मंजु मालती न पै मलिंद वृंदबर सुरभि लपेट्यो मंद मधुर बहै समीर । ललित लवंगन की बल्लरी तमाल जाल लतिका कदम्बन की देखे दूरि होत पीर ॥ बौड़ी गुंज पुंज अति झौड़ी झुकि झाक्यो बन केकीकुल कलित कपोत पिक बोलै कीर । भरे प्रेम श्यामा श्याम गरे भुज धरे दोऊ हरे हरे डोलत है तरणि तनूजा तीर १२ ॥

स० ॥ फूटन कोपल कोपनई बिधि टूटत डार भरी मद झौरन । त्यों नवनीत सुगन्धन पार्शी चलै मिलि बायु सुठौरही ठौरन ॥ कुन्द कमोद कदम्ब कलीपर अम्बन तम्बु दिये करि भौंरन । कन्त बिना अब बीर बसन्त में कौन उपाय बचै किहि तौरन १३ ॥

क० ॥ आंबन के बौरन की ओपी शिर टोपी धरे कुरती पलाशन की ललित सुहायोहै । तरल तमालन की किचैं तुपक तीर रजक परागसों अधिक छबि छायो है ॥ गोली से भँवर भीर बोली भांति भांतिन की फूली कलियानमें सुरौलही जमायोहै । वीर बिरहीन के करेज रेजकारिबेको आजु तोबसन्तयो वजीरबनि आयोहै १४॥

क० ॥ और को सुखद भयो हम को दुखद तूहै अद्भुत गति तेरी कही न परति है। औरन को पोषै तोषै वास मकरन्दन सों राखै हमही को अरे मोंहीसों अरति है॥ प्रफुल्लित रसाल तापै होत जात कासों कहौं मेरे अंग अंग में विकलता करति है। मानत न साखि याते भयो वैशाख सब कोऊ नाम तेरो बैशाख ही धरत है १५॥

स०॥ आयो बसन्त भयो तन तन्त चल्यो दल काम मतंगसे हूलै। चातक बास कियो बन पास पलास की डारैं अँगार सी फूलै॥ सेमर फूलि अकाश लगे मनों झब्बा रँगे मखतूल की झूलै। कौन सहै बिन कंत सखी ये बसंत के तंतके अंतकी सूलै १६॥

स०॥ आये बसंत अनंदित भे मकरंदित ह्वै के पसाराकरै। अरु बौरेरसाल पै कोयल बैठिकै धीर धरै न पुकारा करै॥ पतिहीन तिया जे हर्तीघरमें तिनको बिरहानल जाराकरै। पिय प्यारेहमारे मिले सजनी वे पपीहापरे झखमारा करै १७॥

स०॥ आयो बसन्त तमालनते नवपल्लवकी इमि ज्योति जगीहै। फूलि पलाश रहे जितहीतित पाटलराते हि रंगरँगी है॥ बौर कै आमन सारभई तिहि ऊपर कोकिल आनि खगीहै। भागनभाग बचो बिरही जन बागन बागन आग लगी है १८॥

स०॥ आमके बौरधरे तुर्श ऋतु किंशुककी अलफीन सुहायो। धूम परागनकी कफनी अबबेलिन सेलिनसों छबिछायो॥ कञ्ज सखाकरि किश्त लिये अरु

कोकिल कूकअवाज सुनायो। प्राणकी भीख वियोगिन पै ऋतुराज फकीर ह्वै मांगन आयो १६ ॥

क० ॥ आली बनमाली बिन आगमन बाग भये फूल शूल तीर से समीर बरषा करै। कोयल कलापी पिक पापी पी अलापी गिरा सुनत बिलापी जीव जीवन बिदा करै ॥ करिये कुहारी जिय मरिये महारी दुख ओघ अँधियारिन की कौ लग निशा करै। कूर कुसुमाकर में नागर छबीले लगै तौ पै हरि आकर इहां पर कहा करै २० ॥

क० ॥ आवति चली है यह बिषम बयारि देखु दबे दबे पायँन किवारनि लरजि दे। कैलिया कलङ्किनि को देरी समुझाय मधुमासी मधुपालिन कुचालिन तरजि दे ॥ आज ब्रजरानी के बियोगको दिवस ताते हरे हरे कीर बकवादिन हरजि दे। पीपीकै पुकारिबेको खोलै ज्यों नजीहन पपीहनके जूहन त्यों बावरी बरजि दे २१ ॥

स० ॥ बासर बीतिगयो बिधि के समरैनि बसन्तकी है नियराई। मेरु सो अंग उतंग रहो अब सो समजानि परै जियराई ॥ नीर उशीर सों सीरी समीर सोंसो बिरहागिन ही सियराई। चन्द चढ्यो उदयाचलपै मुख चन्द पै आनि चढ़ी पियराई २२ ॥

क० ॥ बेली रस रेली अलबेली नवलान संग मुदित मनोज तरु तरुण बिहारे है। मंजु मंजु सुमन रसाल मंजरीनन पै पुंजपुंज गुंजत मलिन्द मतवारे है ॥ मीनगति छीन दीन पिय बिन अंगहीन अधिक अधीन हीन बिकल निहारे है। राखत न चेत बिरहीनन के

चित्तचेत चैत चन्द चाँदनी अचेत करि डारे हैं २३ ॥

स० ॥वृक्षन वल्ली चढ़ीकरि चोप अली अलिनी मधुपी मुदकारी। कोकिल सारिका कीर कपोत करैं धुनि माधुरी कानन चारी। फूले सबै बन बाग तड़ाग भरे अनुराग पिया अरु प्यारी। चैन में चारु बिहारु करैं दशरत्थ कुमार विदेहकुमारी २४ ॥

क० ॥ बाढ़त विरह हिये पांचों शर ताते किये मद नही मद दिये चंलत दिगंत के। कुसुम पराग लिये अंग राग छवि छिये माधवी के मद पिये तूल मय मंत के॥ धावत शरण घन सावत सलिल कन पावत परसि सुख संग निज कंतके। भावत मनहिं सरसावत तनहिं सखी आवत मधुर मृदु मारुत बसंत के २५ ॥

क० ॥ बोलि कै मलिंद वृंद करखा सुनावैं शोर दुंदुभी धुकार बोलैं कोकिला अगाहके। बंदी जन बिरद पपीहा बोलैं बारबार खोलैं खुशबोई तरु सुमन अवाहके॥ चटकै गुलाब चहुँओर तें चटाचटकै मानों जंगजीत बाढ़ दागत सिपाहके। परीहै पुकार बिरहीनिनिके द्वार द्वार डेरा परे बागन बसंत बादशाह के २६ ॥

क० ॥ बैठ्यो बन बीथिन बनाय दरबार नव पल्लव गिलिम औ गुलाबन की गद्दी है। कीन्हें कीर कोकिल नवीन नव सिन्दापात झारि दै मिसिल दफ़तर कुल रद्दी है॥ बिरह पुराये निज अमल लिखाय लायो हरे हरे चातुरी सों चापत चौहद्दी है। कीन्हें सल्तनत निज सन्त औ असन्तन पै काम क्षिति कन्त को बसन्त मुसद्दी है २७ ॥

क० ॥ सेवती निवारसेत हीरनके हार जुही यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसंतभो । पन्ना पुखराजपत्र चंपक समाज फाव माणिक गुलाबनील इंदीवरगंतभो ॥ माधवीन सून्यो गऊ मेदक लसूनों दूनों औध बाटिका बजार पूनो बिलसंतभो । यतन जलूस जोर रतन रसाल रंग अतनअनन्द हेत जौहरी बसंत भो २८ ॥

क० ॥ सांझ ही सों दर परदान देहो दुरि रही एक जिय शंकया कलानिधि कसाई की । कंत की कहानी सुनि श्रवण सिहानी रैनि रञ्चक बिहानी या बसंत अंतघाई की ॥ कलको न नेक आली पलको लगन पाई टरि कित गई नींद नैनन में आईकी । कुहू कह्यो कोइल कुमति मैं उघार्यो दृग जागिकै जो देखौं ज्वालजरत जुन्हाई की २९ ॥

स० ॥ संग सखीके गई अलबेली महा सुखसों बन बाग बिहारन । बाढ़े बियोग बिलास गये सब देखत ही वे पलाशकी डारन ॥ जानि बसंत औ कंत बिदेश सखी लगी बावरी सी ह्वै पुकारन । च्वै चलिहैं चुरियां चलि आवरी आंगुरियांजन लाव अँगारन ३० ॥

स० ॥ सेवती सोन जुही थल पुंजपै कञ्जकली अलिगुञ्जसी मांचै । बैठीकहा भृकुटीनको ओटिकै शोर सुन्यो ऋतुराज को सांचै ॥ फूलन फौजधमार धुकार हकारत कोकिल कीर कुलांचै । बाचै नबीर मवासे कहूं अब नाचे बनैगी बसंत की पांचै ३१ ॥

क० ॥ सुमन समुद्रहू ते शीश मोर फंदहू ते चारु मुखचंद ते अनंद दरसो परै । पीतपट बसनहू ते कुंदसे

दशनहूते मंद बिहसनहूते रस सरसो परै ॥ मंदर वितानहूते बंशी सुर गानहूते मैनपैन बानते पराग परसो परै । भूषण बिलास हू ते लाल गुञ्ज मालहू ते पौर बनमाल ते बसन्त बरसो परै ३२ ॥

क० ॥ नैन अरविन्द मकरंद रस भरे सोहैं भूषण विविध फूल बन छबि छाई है । कोकिल बचनबर अधर सुपल्लव से कुंदकली दंत द्युति दीपति सुहाई है ॥ चम्पक सुमनगात सौरभ हँसन बात फौज भौर भीर संग सखी समुदाई है । प्यारे ब्रजराज जू सों उमँगि अनंग प्यारी खेलन बसन्तको बसन्त बनि आईहै ३३॥

क० ॥ पीरी तन सारी शीश परते उतारि डारी जबते बसन्त ने आगम जनाई है । पीरो आभूषण तन पीर करन लागो सखी बिना पीव प्यारे पियराई उरछाई है॥ ऋतु की पियराई सभा इन्दु मन भाई हम को पिय राई दुखदाई हो आई है । जोई पियराई तन हूक होत मेरी आली सोई पीरे फूल सौति मालिन बीन लाई है ३४ ॥

क० ॥ पल्लव अधर अरु सुमन विकास हास झरत पराग बर बारिज बदन में । भ्रमत भ्रमर नैन कुच फल पिकबैन श्वास सुखदेति जानि त्रिबिध पवनमें॥ रूप गुण यौवन सुहाग भाग अनुराग नाना मोर मंजरी सु योगन के ध्न में । कीन्हों बसन्त श्रीगोबिंद बिंद बिलसत सहज बसन्त सीलसन्त तेरे तन में ३५ ॥

स० ॥ पीय बिदेशगये जबते तबते सखि केतो उपाय करन्ती चाँदनी ओरन कोर करै मणि मंदिर भाषैकथा गुणवंती । नीर तड़ागन को निकराय कै है बिन कीरति

रूप कि गंती। डौंड़ी फिरी ब्रज में चहुंघा जनि कोई रंगै अब चीर बसंती ३६ ॥

क० ॥ जबते हमारे प्राण प्यारे हैं पधारे उत धीर नाहिं धारे जात पीर हिय में जगै। शीतल समीर भयो तीर कालिंदी को तीर बीर बल बीर बिन नीर दृगते डगै ॥ केशरी समान जब बिरह परे है भान योग ज्ञानये गयन्द यूथ तबहींभगै। बोली कोकिलानकीकरै हैं शूलहूलहमैं ऊधोये कदम्बनकेफूल गोलीसेलगै३७॥

क० ॥ ललित लताके नवपल्लव पताके सजे बजे कोकिलानके सुकल गानके निशान। ठौर ठौर बौरन पै भौंरभीर भौंरकरैं दौरढौर गावत नकीबनकी तौर गान॥ फूलनकी सैन मैन सैनसी करैहै चैन शीतल सुगन्ध मन्द मारुत चलत बान। सजिकै समाजसाज बिरही बिकलकाज यहि ब्रजराजऋतुराजआजहरैप्रान ३८ ॥

क० ॥ लसत तमाल तरु असित बिशाल अङ्ग चञ्चरीक घंटावलि शब्द सुनायो है। पुष्प मकरन्दन के झरतअनन्त पद शीतल पवनमन्द गवन सुहायोहै॥ नाना खगभीर कीरकोकिल महूत लोग लतिका जंजीर जाल पाँयन बंधायो है। मदन महीपतिको दीरघ दि-साकदार आज ऋतुराज गजराज बनि आयोहै ३९॥

क० ॥ रूसनमें दूसनमें लाल मन मूसनमें मैनकी मसूसन में धीर कैसे रैहैरी। कोकिलकी कूकनिमें पौन मन्द भूकनि में अवसरकी चूकनिमें फेरि पछितैहैरी ॥ बेलिन नवेलिनमें संगकी सहेलिनमें खेलिनमें केलि-नमें मनसा समै हैरी। वृन्दाबन कुञ्जनमें फूलनके

पुंजन में भौंरनकी गुञ्जन में भूलिमान जैहैरी ४० ॥
क० ॥ डालेहैं तमालपत्र पांवड़े अवाई सुनगावत हैं गुणीजन इतउत ढाह के। फूलि उठे कुन्द ये मलिन्द वेग चायउठे कूकिउठी कोकिला कलापी चित्तचाह के॥ प्यारे आम्र बौर उठे पक्षीगण दौरउठे चाँदनी चँदोवा जब लागे नरनाह के। गिलमें गुलाबन की गद्दी चारु चम्पे की बाग बीचडेरे हैं वसन्त बादशाह के ४१ ॥
स० ॥ डारन वेली चमेलिन बेलिन फूल प्रसून अँगार हजारन। जारन अंग लगे सजनी अरुनोन पराग समीर प्रसारन ॥ सारन प्यारे बिहारी बिना ब्रजलाग्यो बसन्त असन्त जो मारन। मारन ये जनु शूलके पुञ्जन फूल रचे हैं कदम्ब के डारन ४२ ॥
क० ॥ गान कोकिलान की सुबाँसुरीकी तान मनो सजै बनमाल फूल जालभे अनन्तहै। सोहत समद अलि कोक नद पै भपात मुखपै प्रभात जनु लोचन लसन्त है ॥ उड़त पराग पटपीत फहरात सोई हियो हहरात विरहिनि को तुरन्तहै। आयोरी बसन्त आम कन्तको बनाय बेष देखो बिलसन्त यह कैसो छबिवन्तहै ४३ ॥
क० ॥ गावो किन कोकिल बजावो किन बेणु वेणु नाचौकिन भूमरि लतागण बने ठने। फेंकि फेंकि मारौ किन निजकर पल्लव सों ललित लवंग फूल पानन घने घने ॥ फूल माल वारौ किन सौरभ सँवारौ किन येही परिचारक समीर सुख सों सने। बौर धरि बैठो किन चतुर रसाल आजु आवत बसन्त ऋतुराज तुम्हैं देखने ४४
क० ॥ चहकि चकोर उठे शोर करि भौंरउठे बोलि

ठौर ठौर उठे कोकिल सुहावने। खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि हिलि उठे मारुत सुगन्ध सर सावने॥ पलकन लागी अनुरागी इन नैनन में लपटि गये धौं कबै तरुमन भावने। उमँगि अनन्द अँशुवान लौ चहूंघा लागे फूलि फूलि सुमन मलिंद बरसावने ४५॥

क०॥ छलकत छबिफूलन में गलकत मकरन्द आली ललकत ललामी रबि भौंरसों लजायोहै। लहकत समीर त्रिबिध बहकत कोकिला बैन चहकत चिरैया सब आनँद बढ़ायोहै॥ ठनकत चौरसी अरु झनकत नूपुर धुनि धधकत मृदंग तालरंग सों लजायोहै।हरषत सुरेश मन झझकत महेशजूको गमकत नगारे सों बसन्त ऋतु आयोहै ४६॥

क०॥ होती पतझार मेरी होतीरी सँभार सुधिजो कहूं रसालहू को बौर इक पावतो। कोकिला भवँर बोल सुनतो पराये देश पारधी की पौरिपै परेवा जिमि धावतो फूलेफूल देखि कैसे भूलतो वे हमैं आली जो कोऊ बसन्त हूकी एक तान गावतो।आजु कालिह वाहीदेशऔरै ऋतु ह्वैहै आली होतोरी बसन्त तो हमारोकन्त आवतो४७॥

क०॥ घसो घसो चन्दन उसीर सीर नीर धरौ नीरलावो शीतल समीर लागै गरमै। घोरो घनसाररी गुलाब जल धारन सों लावो दलनीके नलनीके नये नरमै॥ देउरी किवारै कोऊ निकरो न द्वारै सुनो आवत बसन्त यों पुकारै घर घरमै। भूलसी गईहै सुधि देखि फूली धूरि धारा हूलसी मचीहै बिरहीनके नगरमै ४८॥

क०॥ मेल्यो उर आनँद अपार मैन सोवतही पाय

सुधि सौरभ समीरन मिलन की । नेहके झकोरन हिलाय उर दीन्हों लखि सुखमा लवंग लतिकान के हिलनकी ॥ स्वपन भयो धौं केधौं साँचो करतार इमि समुझत रीति लखि अंग शिथिलनकी । खिल गये लोचन हमारे एक बार सुनि आहट गुलाबनके अखिलखिलनकी ४९ ॥

क० ॥ मुकुरे रसालनको गंधलै सुगंध वाहरतन बढ़ावनो है पिककी चहकको । विकसी वसति कोऊ सेवती सरस वास सौरभ सुहायो वर बकुल बहकको ॥ मकरन्द प्याइ सइ साइ रस भाखि रुद् बोल वाइ राखो लाय कीर के लहक को । केतो करि क्योंन पैन पाइ है वसन्त वह शरद को महत जो मालती महक को ५० ॥

क० ॥ देशमें दिशान मैं लतान द्रुम बेलिन मैं कुंजन मैं कंजन मैं रंग दरसानो है । पल्लव मैं पौन मैं पराग हूमें किशलै मैं कुसुम कलीन अलि गुंज सरसानो है ॥ हारन मैं क्यारिन मैं फूल कचनारन मैं झारन पहारन में मोद सरसानो है । बागमें बगरमें बनाय बन बीथिन में बेहर मैं वन में वसन्त बरसानो है ५१ ॥

क० द्रुमडार पलना बिछौना नव पल्लव के कुसुम झगूला तेई तन सुख सारीदै । पवन झुलावै केकी कीर बतरावै मिलि कोकिल हिलक झुलरावै कर तारी दै ॥ झरत पराग ते उतास्यो करै राई लोन कुंद कली नायिका लतान पुचकारी दै । मदन महीप जूको बालक बसन्त ताहि प्रातही जगावत गुलाब चुटकारी दै ५२ ॥

स० ॥ देखतही बनफूले पलाश बिलोकतही कछु भौरकी भीरन । बावरी सी मति मेरी भई लखि बावरी

कंज खिले घटे नीरन ॥ भाजिगयो कढ़ि ज्ञान हियेते न जानि पस्यो कब छोड़ि के धीरन । अंधन कौनके लोचन होहि पराग सने सरसात समीरन ५३ ॥

स० ॥ फागके फूलभरे मन मोहन खेलत गोपिन ते रँग रागे । श्री वृषभान कुमारिको साँवरे गारी दई मुरली सुर पागे ॥ दौरि उठी बनिता सिगरी तबलौं न मृदंगन के गन जागे । वै लकुटी लै लतासी मुरी बहुरो फिरि वै डफ बाजन लागे ५४ ॥

स० ॥ फागुकी रैनि अँधेरी गलीन में मेल भयो सखि सांवरे जीको । हौं घरलीन अचानक दौड़ि लगावन काज गुलालको टीको ॥ वाने गुलाल लगायो अली जब लीन्हों मुठी में अबीर सो नीको । बस्त्रहुँ छांड़ि कन्हैया गयो न भयो सखिहाय मनोरथ जी को ५५ ॥

स० ॥ फागुरी आयो सखी हमकों बिन पीतम मैन सलाकसी लागुरी । लागुरी मेरी गुहारि तिया कछु कीजिये बेग उपाय उजागुरी ॥ जागुरी राग चहूंदिशि होत हैं काम हिये अति देतहै दागुरी । दागुरी मेरी तबै मिटि है जब प्रीतम के सँग खेलिहौं फागुरी ५६ ॥

स० ॥ फागुन मास बड़ो उतपात रहै निशि बासर नींद न आवैं । आपस मांझ सबै नरनारि निरंतर चौगुन फाग रचावैं ॥ जो कुल नारि कहूं सरमाय दुरैं तब हूं गुरुनारि बतावैं । या ब्रज में यह रीति बुरी घर में धसि लोग लुगाइन लावैं ५७ ॥

स० ॥ फागु रची बल बीर के द्वार खड़े फगुआर दोऊ दलवारें । साज सखी नटवा नटनागरबाजे मृदंग

रबाव सितारें॥ रंग सहाव अबीर भरे छुटै कुंकुमा केसर की पिचकारें। केसरियां सरियां पहिरैं पर ओहरियां छरियां गहिमारें ५८॥

स०॥ खेलति फाग भरी अनुराग सुहाग सनी सुख की रसकै। कंज मुखी कर कुंकुम लै पियके मुख मीड़नकों झसकै॥ भारी गुलाल की धूंधुर में ब्रज बालनके मुखयों दमकै। सावन साँझ ललाई के माँझ मनो चहुँघा चपला चमकै ५९॥

स०॥ खेलत फाग गुलाल भरे इत ग्वालि उतै घनश्याम उतंग सों। कंचनकी पिचकारिन धार खुली झलकै मुकतावलि अंगसों॥ भीजि कपोलनि गोलगि अंचल कंचुकी चारु उरोज उतंगसों। केसरि रंग सों अंग रँग्यो कीरही रँगि केसरि अंगके रंगसों ६०॥

स०॥ खेलिये फागु निशंक ह्वै आजु मयंक मुखी कहै भाग हमारो। लेहु गुलाल दुहूँ करमें पिचकारिन रंग हिये महँ मारो॥ भावै तुम्हैं सो करौ मोहिं लाल पै पांव परौ जिन घूंघुट टारो। बीर की सों हम देखि है कैसे अबीर तो आंखैं बचायके डारो ६१॥

स०॥ खेलन फाग सबै निकसीं अरु रंग गुलाल लिये भरि झोरी। मूठि चलावत ग्वालिनपै अरु श्यामल के मुख आवन रोरी॥ जबही हँसि हेरिगह्यो अँचरा परसाद सी प्रीतिगुलालसी जोरी। मोसे दुरैहो कहा सजनी निहुरे निहुरे कहुँ ऊँट की चोरी ६२॥

स०॥ खेलिकै हारी गये यमुना तट सोहत बाग तहां सुखकारी। धाम जहां अभिराम बने तिन ओर

तें दीठि टरै नहिंटारी ॥ रंगभरे अनुराग भरे छबि दम्पतिकी मनमोहन वारी। बासर रैनिविहार करें नित कुंजन में बसि कुंज बिहारी ६३ ॥

स० ॥ होरी को रूप लखो ब्रज पौरि किशोरी को चित्त बिछोहन छीज्यो। दौरिफिरै दुरि देखिबे को न दुरै मन ओज मनोज को भीज्यो ॥ केसरिया चक चौधत चीर त्यों केसर नीर शरीर पसीज्यो। लाल के रंग में भीजि रही सुगुलाल के रंग में चाहति भीज्यो ६४ ॥

स० ॥ हिन्द बिलायतकी सब चीजें पेटारी सोहाग भरी सजवै हौं। कंगही दर्पण प्याली सलाई सुगोली सुई डिबियाहू बिचैहौं ॥ मंजनकै मुख माहँमिसी मिलि सर्मन सुर्मन दैकै लोभै हौं। हेहरि होरी में आज देहातिन कीसी बिसातिन तोहिं बनै हौं ६५ ॥

स० ॥ सारी सुही सुथरी साजि सुन्दरी भूषण अंग न पाछे पेन्हैहौं। चूरी जंगाली सुलाली औकाली हरी दुबिया रंग बन्द लगै हौं ॥ बादला बांक जतूनी गुलाली की डाली भरी बगलै लै चलै हौं। होरी की मांगबे को तिहवारी बिहारी तुम्हैं चुरिहारी बनै हौं ६६ ॥

स० ॥ बाजू बरेखी सुहै कलकण्ठा सुचंपा कली जुगुनू हूं जुरै हौं। चन्दर हार गुही दुलरी तिलरी मुगा मोतिन माल गुरैहौं ॥ पूरित सूत सुरंग सुतार लै रेशम की फिरकीसी फिरै हौं। पाटी सँवारि कै पाट पिन्हैं पटहारी तुम्हैं पटहारी बनै हौं ६७ ॥

स० ॥ कारी किनारी की सारी सजाय कै नौरँगिया अँगियाहू पेन्है हौं। कैकच कांगही काजर दै सजि

भूषण बेंदी औ बिन्दी लगे हौं ॥ शीशपै गेंडुरी गागर पै लघु गागरीदै नगरीमें नचैहौं। देखिहै गोरी सुहोरी में आज बिहारी तुम्हैं पनिहारी बनै हौं ६८ ॥

स० ॥ चादर चूँदरी चोली चढ़ाय चहूँ चव फेरि फिरीसी फिरैहौं। सुन्दरताई सयानी सुखी सीमैं सीबे की वस्तु नफी सी भरै हौं ॥ दीठिसडोर सुई सुअँगूठी हू आंति की कैंची सों काट करै हौं। सैमज लाज हरी अल गार्जिन दर्जिन कै तोहि सीनेलगै हौं ६९ ॥

स० ॥ चीर सुरंगी सजै तनमेंकर केसरिलै रघुबीर पै मेलती। दुल्लह चारु बनो अति सुन्दर देखिकै शोभा नहीं पल फेरती ॥ घूंघुट ओट गुलाल की चोट बचायकै लालनपैरंग मेलती। धनिवेबनिता मनिताजग में सजि कन्त के संग बसन्त जे खेलती ७०॥

स० ॥ केसरिकै पिचका परिपूरण पूर कपूर गुलाब के दोना। आईं सबै ललना ललितादिक खेलन फाग निकुंज के कोना ॥ केसरिया पटमें दृग दाबे गुलालके त्रासन श्याम सलोना। मानो कहूं बिछुरयो निजसाथतें सोन जुही में छिप्यो मृग छोना ७१ ॥

स० ॥ कुंजगलीन अलीगन में चली आवती तीं वृषभानु दुलारी। ताहि बिलोकि के रंगभरे छलसों छिपके रहे कुंज बिहारी ॥ कुंकुमा घाल्यो उरोजनि को तकि पानि सरोज सो ताहि निवारी। जानिहे वीर दशा उर आनि बजीवह एकही हाथकी तारी ७२ ॥

स० ॥ केसर रंग तिहारो भटू लखि लालची लाल अबीर लियेपर। कोस गुलाल लसे यहि औसर छाई

सुबाल गुलाबन के झर ॥ हाथ गहे पिचका चकितोहि सो काशी के राज महो तुमहूं वर। गावत ताल सुराग सखी सब ताल तरंगन सों रसकोभर ७३ ॥

स० ॥ लै बलबीर अबीर की मूठि दई अलबेली लली दृग दूपर। त्यों बनमाली पै आली चलावति लाली गुलाल की छ्वै रही भूपर ॥ लै पिचकारी बिहारी तहाँ अधिकारी करी ब्रज गोप बधूपर। पीन पयोधर तें उचटी सुपरीसब केसर लालके ऊपर ७४ ॥

स० ॥ लाल गुलाल बलाहक तें बरसै झरी झोकन केसर रंगकी। त्योंहीं अनंत छटा छबिकी चमकै चपला त्यों मनोहर अंगकी ॥ दै गलबाहीं अनन्द कियो बरनोंका दशा वह मैन उमंगकी। भूलैनहीं हमको सजनी वह फागु की खेलनि साँवरे संगकी ७५ ॥

स० लैकै अबीर की झोरिनको कर फूटि सखानसों रामकन्हाई। धाय धसे ब्रज ग्वालिन गोल में चारिहूं ओर अबीर उड़ाई ॥ धाई सबै गहिबे कों अली जुरि केसरि की पिचकारी चलाई। चंचल तो चपला सो चमंकिगो गोपिका घेरिरह्यो बलराई ७६ ॥

स० ॥ घेरि लिये घनश्याम चहूँ दिशि दामिनिसी मिलि चेटक कै गई। पीत पिछोरी रही कर खैंचिकै बांसुरिया हँसि छीनिकै लैगई ॥ प्रेम के रंगन सों भरि कै अरु फागुके रंगन मोहनी बैगई। केसरि सों मुख मीड़ि गोपाल को खंजन से दृग अंजनदै गई ७७ ॥

स० ॥ सखि होरी के ख्याल में गोरी किशोरी कि आज अनूपम रीति लही। पहिले पिय को रँग बोर्यो

तबै छवि साँवरी सूरति औरै गही ॥ पुनि अंग गुलाल सों छाय गुपाल को प्यारी जबै हँसि बातें कही । पहिले तुम लालहुते कहिवे केपै लाल भये अबही हौसही ७८॥

स० ॥ गोरी किशोरी सुहोरीसी देह में दामिनीकी द्युति देति बिदारे । नारिनवे सब नारिनकी तब केनभ रूप अनूप निहारे ॥ भौंरसी भौंहन सोहि रही सुरके उरतेंन टरें पलटारे । भीजे मनोमुखअंबुज केरस भौंरसुखावत पंखपसारे ७६ ॥

स० ॥ गोकुल फाग मची सजनी जिहि की सुखमा नहिं जात न जोहै । भीजि रही ललना अरु लाल गुलाल छयो नभ मण्डल सोहै ॥ ऊँचे उरोज अबीर सों मण्डित भोडर संग अजानहुँ मोहै । मानों सुरंग घटा युत चन्द सुआनि गिरीश के शीश बसो है ८० ॥

स० ॥ रोरी किश्नोरी भरे ब्रजगोरी सुखेलती होरी जहां छबिछाई । आयो तहाँ सुखसों सनिकै वर बानक सों वनिकै ब्रजराई ॥ जौलौं चलायो चहै लखिकै उनपै भरिमूठि चहूँ कितधाई । तौलौं कियो सबको सुखलाल गोपाल गुलाल बिना मुसकाई ८१ ॥

स० ॥ मूठि गुलाल लै आलिन ते कढ़ि साँवरे पै चलि गोप किशोरी । त्यों नँदनन्दन हूँ उत धाय महा सुख छायलई कर रोरी ॥ होत जुरा जुरीही उमड़े दोऊ खेलै अनूपम प्रेमकी होरी । हाथ दुहूँके उठाये उठैन रहें लिखे चित्रसे नैनन जोरी ८२ ॥

स० ॥ आकर कंचन की पिचकी मुख मारत श्याम मनोहर आकर । आकर गाल गुलाल मलै नँदलाल

नचै अरु मोहिं नचाकर॥ चाकर जान लियो हमको सरबोर करै रँगसों घर जाकर। जाकर क्यों न लखौ सजनी रँग को उमड्यो बसुधा पै सुधाकर ८३॥

स०॥ बैठी हुती यकठौर कुठोरपै कोपकी ओपन की अधिकाई। आय गये नँदनन्द तहाँ मिलि फागके रंगसों रंग सोहाई॥ एककी आँखिन डार्यो गुलाल निहार्यो नवा फिरि गौलौ तुगाई। दूसरी को अरबिंद से आनन चूमिलयो तबलों रसिकाई ८४॥

स०॥ बाजे तहाँ डफ ढोल उभै दिशि राग बहारमें गाय धमारी। कैगो झिलाझिली दोहुँन की चलीमूठी गुलाल की औ पिचकारी॥ सावन साँझ सो सोह्यो अकाश अबीर की छाय गई अँधियारी। केसरि कीच के बीचमें भूले भ्रमै बलिराम औ कुंजबिहारी ८५॥

क०॥ बाजे डफ ढोल बाजे फागुके समाज साजे ग्वालन के झुण्डलै गोबिंद फौज जोरीहै। बाँधे शिर चीरा हीरा झलकै कलंगिन मैं अंगनि तरंग रंग भूषण करोरीहै॥ केसरिया बागे अनुराग प्रेमपागे मन माखन सभागे फहरात पट छोरी है। लीन्हे भरि झोरी पिच-कारी रंग बोरी आजु होरी आजु होरी बरसाने आजु होरी है ८६॥

क०॥ अवधि बिताई एतीकरी निठुराई पिया पाती न पठाई गुण राजन जरोरीमैं। राति पाती आई पाती अतिही सोहाई फिरी कामकी दोहाई दुखदारुण दरोरी मैं॥ फूलेहैं पलाश औ हुलास सब बाधनके अंग अंग अतर अबीर भरे झोरीमैं। मदन बढ़ोरी प्राण

चाहत कढ़ोरी सखी और खेलै होरी हम होरी होत होरी मैं ८७ ॥

क० ॥ खेलत हैं होरी हरिराध आज वृन्दाबन ऐसी जुरी भीर अंग अंगसों छिलतहै । लालको मयंक मुख मंगल सों दरशात जब वाके करके गुलाल सों मिलत है ॥ घूँघुट उघारत करत बारबार चोट बाल मुख श्याम चीर ऐसे सिकलत है । मानों प्रभु आगे राहु बैर निज लेनकाज चन्द गुनहीको लै गिलत उगिलत है ८८ ॥

क० ॥ होरीहोरी करत अबीर भरि झोरी लीन्हें खोरीखोरी फिरै ग्वालबाल समुदाई है । तामें नन्दलाल लाल चीराजरी धरेगरे भावत बिशाल बनमाल की सोहाई है ॥ कीरति किशोरी संग गोरी यूथयूथ मिलि भरी अनुराग फाग श्याम सों मचाईहै । केसर रँगसाने सुरंग नेह सरसाने डारै मानो बरसाने बरसाने झरि लाई है ८९ ॥

क० ॥ कीरति किशोरी संग श्यामै लखि भई भोरी होरीदेखि आई आज प्यारे बलबीर की । सारीजरतारी की किनारीमें गुलाल राजै तैसीछबि छाजै उत्त काश्मीर चीरकी ॥ हरै हरै आवै मन्द मन्द स्वर गावै दोऊमिलि मुसक्यावै द्युति धावैरी शरीरकी । नैन कोर ओर पर बरुणीकी छोरपर भौंहन मरोरपर ओपहै अबीरकी९०

क० ॥ उतते कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हें करि चतुराई केलि होरीकी मचाईहै । इत वृषभानकी कुमारी सुकुमारी प्यारी आली गण आलीमें रसालसी सोहाईहै ॥ लालन गुलालन की लालन पै डारै मूठि चलै

पिचकारी सुखकारी दुहुँ धाईहै। केसर रँगसाने सुरंग नेह सरसाने डारै मानो बरसाने बरसाने झरिलाईहै९१

क० ॥ आजु नन्द जू के कै अनन्द भरे खेलैं फाग कोटि चन्दते हुचन्द भाल द्युति लालकी। आभरण हीरन के माणिक ललाई आई तैसी छबिछाई है बिशाल बनमालकी ॥ अबीर उड़ावै मूठि मूठिसी चलावै सखी देखिये लुनाई नट नागर गोपालकी। सजे पीतपट पर मुरलीलकुटपर मोरकेमुकुटपर गरद गुलालकी ९२

क० ॥ आज ब्रजराज ब्रजबधुन समाजसंग लाज तजिखेलैं फागु गोकुल नगरमें। उड़त गुलाल क्षिति अम्बर भयोहै लालछिरकै गुलाबछूटै पिचकै डगरमें॥ गही आय अचकै अकेली हरि हाथ धरि गोपी भाजि दुरी भौन भीतर बगर मैं। अतर अबीर तर बतर शरीर कान्हें सतर उरोज भीले चन्दन अगर मैं ९३ ॥

इति श्री षट्ऋतु हजारा अन्तर
गत वसन्तऋतु बर्णन
सम्पूर्ण

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ ग्रीष्मऋतु वर्णन ॥

दोहा ॥

नाहिंन यह पावक प्रबल लुवैं चलैं चहुँ पास ॥
मानहुं बिरह बसन्त की ग्रीषम लेत उसास १
कहलाने एकत रहत अहि मयूर मृग बाघ ॥
जगत तपोबन सों कियो दीरघ दाघ निदाघ २
बैठि रही अति सघन वन पैठि सदन तन माँह ॥
देखि दुपहरी जेठकी छाहौं चाहति छाँह ३
धूप चटक करि चेटकनि फाँसी पवन चलाय ॥
मारत दुपहर बीचमें ताकि ग्रीषम ठग आय ४
तिय छींटत योंपियहि कर लहि जलकेलि अनन्द ॥
मनो कमल चहुँ ओर ते मुकतन तोपत चन्द ५

कालिदासकबि ॥

क० ॥ शीतल गुलाब जल भर चह बच्चन में डारि कै कमल दल न्हायबेको धसिये । अंक भरिप्यारी नेह नदिन सदिनभरि वारिके बिहारतेन बाहिर निकासिये ॥ कालिदास अंग अंग अगर अतर संग केसर समीर नीर घन सार घसिये । जेठ में गोबिन्दलाल चन्दनके चहलन भरि भरि गोकुल के महलन बसिये १ ॥

केशवदास कबि ॥

क० ॥ चण्ड करकलित प्रचण्ड बर सदागतिकन्द मूल फल फूल दलनि को नासहै। कीच बीचबचै मीन ब्यालबिल कोलकुल द्विरद दरीन दिनकृत को बिलास है॥थिर चरजीवन हरन बन बन प्रति केशवदास मृग शिर श्रवतु निवासहै ।धावन नवलधनु सोहत निपान शरशंबर समूह कैधौं ग्रीषम प्रकासहै १ ॥

स० ॥ ऋतु ग्रीषम की अति बासर केशव खेलत हैं यमुना जलमें। इतगोप सुता वहि पार गोपाल बि-राजत गोपिन के गणमें ॥ अति बूड़तिहै गति मीनन की मिलि जाय उठै अपने थलमें। यहि भांतिमनोरथ पूरि दोऊ जन दूरि रहैछबि सों छल सें २ ॥

कृष्णलाल कबि ॥

क० ॥ खासे खस खाने खास खाने तहखाने नल छूटत सरोज की सुगन्ध रपटी रहैं। अतर अरगजे सों केसरि गुलाब नीर छिरके किंवार द्वार झार झपटीरहैं ॥ कृष्ण लाल जेठमें गमन कैसे कीजे प्यारे चन्दन मलय केपंक अंक दपटी रहैं। ज्वाल उदभटी कुच बटी काम गटी तटी हटी मरहटी नटी लटी लपटी रहैं १ ॥

करण कबि ॥

क० ॥ चण्ड कर झारन झकोरत सरोष पौन तोरत तमाल गण मन्द दिन भारो सो। धर्मके धराणि गिरि तमके प्रतापजाके देखत मजेज रेजजगत निहारोसो॥

तरु क्षीण छाय सर सखत समुद्र घन करण बिचारि देखो आतप अँगारो सो । छावत गगन धूर धावत धघात आवै चाप चढ़ो ग्रीषम गयन्द मतवारो सो १ ॥

गिरधारी कवि ॥

क० ॥ खासेखासे खुले खस खाने खुस बोई दार आस पास छूटत फुहारे बड़े फाबके । गिरधारी फरश सँवारी तहाँ फूलनकी परे दर परदा दरीचिन में दाबके॥ चन्दन भिगाय सुख सोये श्यामा श्याम तामें ग्रीषम में ऊषम हेरानी आबताबके । गहब गुलफ गुलगुली गल सुई चारु गिलिम गलीचे तरअतर गुलाब के १ ॥

क० ॥ सुमन सँवारे भारे भौंरन उशीर वारे छूटत फुहारे नीरवारे की सलाकैरी । कहै गिरधारी मची चन्दनकी पंक पर यंक पर पंक कीन बहुरि चलाकैरी ॥ ऐसे में ललन पर देश को गमन कह्यो तरणि धरणि देत तरणि तलाकै री । चहूं ओर अतर गुलाब सर वोरी सखी धाई बरजोरी तऊ जेठ की जलाकैरी २ ॥

गिरधर कवि ॥

क० ॥ तपत प्रचण्ड मारतण्ड महि मण्डल में ग्रीषम की तीक्षण तपन आर पार है । गिरधर कहै काच कीच सो बहन लाग्यो भयो नद नदीनीर अदहन धारहै ॥ झपट चहूंहन ते लपट लपेटी लूह शेष कैसी फूक पौन झूकनकी झारहै । तावासी अटारीतपी आवासीअवनिमहादावासे महलओ पजावासेपहारहै १ ॥

जगमोहन कवि ॥

क० ॥ झांपै झुकी झपटै झरोखनकी झांझरीकी झोंकन खुलैन कहूं खस खस की टाटी सों। आंगनके ऊपर अँगूरन की लगाई लता छिरकै छबीली छीर छीटनकी छाटीसों ॥ आयो ऋतुग्रीषम गरूर जगमोहन जू बगरि बगाखोबार बेलिन की वाटीसों। अगर उशीर नीर सौरभ समीर सीरैसुखद सवाँरे सेजशीतल की पाटीसों १॥

क० खासे खस खानेसींचे अतर गुलाबन सोंसीरे तह खाने चारु चन्दन चहलहैं। कलित कपूरन के चौतरा चुनेहैं तौन मोदवारे मालती के मंजुल महल हैं॥ पन्ना के पलँग रंग परदा पिरोजा धरे बेलन की पाँखुरी सों परण पहलहैं। ग्रीषम के गरम गरूर जग मोहन जू दूर दरशात इत चोवन थहलहैं २॥

क० ॥ गाढ़े गंध सारन घनेरे घन सार आली घोरिघोरि आजु मेरे बगर बगारिदे। त्योंही तह खाननमें खासे खस खाननमें अतर गुलाबके फुहारन फुहारिदे॥ बेली के बिछौना पै सिधारि साधि एला पान आछे मृग मद सों अमोद उदगारिदे। जौलौं जगमोहन बिराजै इतबीर तौलौं बाहरसों बैठि बलि ब्यजना सँवारिदे३

क० घोरि घनसारन घनेरे गन्धसार आली भार न दै अमल अमोद अंग रागैना। खासे खस खानन खुसीस खुशबूके नीर नहरै निराली नई रातौ दिन पागैना॥ शीतल रहै गो जगमोहन तपीत लगो गरम

गरूर लैलै हीतल को भागेना। बाल कैसी पूतरी समेटि अंगमाल कोऊ जौलौंनव बाल की रसाल उरलागैना४

क० ॥ ग्रीषम तपत परचण्ड नव खण्ड मध्य लूह भरे लाले लाले लूहन लुकारेहैं। तीरकैसे तीक्षण उशीर सर सात आली मानों आज बरसत अंगन अँगारे हैं॥ ऊबि ऊबि आवै सांस ज्यों ज्यों अध ऊरध उसासै उपसाये कैसो पूरण पनारेहैं। सूखे सर सरिता अपार जग मोहन जू दिन विपरीते रीते नदी नद नारेहैं ५॥

देवकबि ॥

क०॥शीतल महल महा शीतल पटीर मङ्क शीतल के लीपी भीति क्षिति छीति दहरै। शीतल सलिल भरे शीतल विमल कुण्ड शीतल अमल जल यन्त्र घर छहरै॥ शीतल बिछौननि पै शीतल बिछाई सेज शीतलदुकूल पैन्हि पौढ़ेहैं दुपहरै। देवदोऊ शीतला अलिंगन निदेतलेत शीतलसुगन्ध मन्दमारुतकीलहरै १॥

क० ॥ दोऊ अनुराग भरे आये रंग भौन भाग मघवा शची को लखि लागत सहलहै। बैठे एक आसन पै एकै संग एकै रंग चल्यो ना परत अंग कोमल कहलहै॥ एकन लै अतर लगावै देव दुहुँन के छिरकै गुलाब कीन्हो बिजनबहलहै। लै लै करबीनै परबीनै आलियाँ अलापैं मंजु सुर पुंजन ते गुंजत महलहै २॥

क० ॥ ग्रीषम प्रचण्ड घाम चण्ड कर मण्डल ते घुमड्योहै देव भूमि मण्डल अखण्ड धार। भौनते निकुंज भौन लहलही डारनके दुलही सिधारी उलही ज्यों

लहलही डार । नूतन महल नूल पल्लवन छ्वै छ्वै से दलवनि सुखावत पवन उपबन सार । तनक तनक मणि नूपुरु कनक पाइ आइ गई झनक भनक झनकाये बार ३ ॥

क० ॥ फटिक शिलानि सों सुधास्यो सुधा मंदिर उदधि दधि कैसो अधिकाई उमगै अमन्द । बाहिर ते भीतर लौं भीतन दिखाय देव दूध कैसो फेन फैल्यो अंगन फरश बन्द ॥ तारासी तरुणितामें ठाढ़ी झिलि मिलि होति मोतिन की ज्योति मिल्यो मल्लिका को मकरन्द । आरसी से अम्बर से आभासी उज्यारी लगै प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सो लगत चन्द ४ ॥

क० ॥ क्षीर कीसी लहरि छहरि गई क्षिति मांह यामिनी की ज्योति भामिनी को मान ऐठो है। ठौर ठौर छूटत फुहारे मानो मोतिनके देव बन याको मन काकोन अमैठो है ॥ सुधा को सरोवर सो अम्बर उदित शशि मुदित मराल मानो पैरिबे को पैठोहै । बेलिके बिमल फल फूलत समूल मानो गगन ते उठि उड़गण आनि बैठोहै ५ ॥

दीनदयाल कबि ॥

क० ॥ पतित द्विजन कोहै देति सुमनै सुखाय लगै अति कानन में बात ताप में बली । मित्र वृषको है जहां भारी दुख कारी बनो बोलै दृग राते बिन काल वृथाही छली ॥ जीवन जलावति है लावति है आगि मनो दीन द्याल सार सन मिलै जल की थली । देत

नाहिं बसन सु बसन उतार बिन कैधौं यह ग्रीषम के घोर खल मण्डली १ ॥

दिवाकर कबि ॥

क० ॥ चलै लूक पवन लुकारी जनु सम्बतके मानो भालु जुरे देह मुख जुरे बाघ के। मारतण्ड तेजसे बि-कलभये जलथल रावटीउशीर राजाजाने निशिमाघ के ॥ पियेपिये करत जहांनरहे रातोदिन सरिता तलाव आवपीपीपोषे दाघके। भनत दिवाकर अनलते अधिक आंच कांच चुपे कांकरी दुपहरी निदाघ के १ ॥

दत्त कबि ॥

क० ॥ अम्बर अतर तर चन्द्रक चहल तन चन्द्र-मुखी चन्दन महल मैन सालासे। खासे खसखाने तह-खाने तरताने तने ऊजरे बिताने छुये लागतहै पालासे॥ दत्तकहै ग्रीषम गरमकी भरम कौन जिनके गुलाब आब हौजभरे तालासे। झालासे झरतझर झापनसी बारा बांध धारा बांधि छूटत फुहारा मेघ माला से १ ॥

स० ॥ ग्रीषममेंतपै भीषम भानु गईबन कुंज सखीन के भूल सों। घामते कोमलता मुरझानी बयारि करैं घनश्याम दुकूलसों ॥ कंपतियौ प्रकटे परस्वेद उरोजनि दत्तजू ठोढ़ी के मूल सों। है अरबिन्द कलीनपै मानौ झरै मकरंद गुलाबके फूल सों २ ॥

स० ॥ चन्दन के चहला में परीपरीं पंकज की प-खुरी नरमी मैं। धाय धसी खसखानन न्हाय निकुंजन पुंज फिरी भरमी मैं ॥ त्यों कबिदत्त उपाय अनेक किये

सिगरी सहिबेसरमी में । शीतल कौन करै छतियां बिन प्रीतम ग्रीषम की गरमी में ३ ॥

दामोदर कबि ॥

क० ॥ मह महे महल सुमल्लिकाके राखे रचिमालती की छिके चारु चौगृद बिशाला सी । फरस गुलाब गुल आबके फुहारे भारे छूटत धुंधारे मनो मेघन की मालासी ॥ दामोदर कहे जहांअतर तरंगे उठे अंगेंबदरंगेंहोत सौतिनको सालासी। करति कलाहैबाला आला सुखसेजहीमें ग्रीषम बनाय राखी शिशिरके पालासी १॥

नन्दराम कबि ॥

क० ॥ नदिन में नारनमें नरंगी अनारमें नवल निवारनमें तौर बदलेगये । नन्दराम ग्रीषम गुसामें गरमी में गैल गहब गुलाबन सों अंग भसलेगये ॥ ऊपर के अंगनमें नीर नदी रंगन में तरल तरंगनमें हरिन छले गये । हेम गिरि मन्दिरमें हिम गिरि कन्दनमें अन्दर के अंदर में बंदर चले गये १ ॥

क० ॥ चौकमेंचटक चांदनीमें चारुसेज सारु नारन के ऊपर सेवारन बिछाय दे । चंदन की चहल चमेली के अतर घोरि घने घन सारन चहूँघा छिरकाय दे ॥ कहै नंदराम तैसे बोरि कै सुगंधन सों हौरे हौरे बेगि बेश बीजना डोलाय दे । गहगहे गहब गुलाबनके गुंजगुहि गजरा गरे गरु गुलाब गलकाय दे २ ॥

नैन कबि ॥

क० ॥ प्रबलप्रचण्ड चण्ड करकीकिरणै देखो बैहर उदण्ड नव खण्ड घुमिलतिहै । औटिके उराही रतनाकर को तेल जैसे नैनकबि जलकी लहर उछिलतिहै ॥ ग्रीषम की कठिन कराल ज्वाल जागी यह काल व्याल मुखहू की देह पघिलति है । लूकाभयो आसमान भूधर भभूका भयो भभकि भभकि भूमि दावा उगिलति है १ ॥

पद्माकर कबि ॥

क० ॥ फहरै फुँहारे नीर नहरै नदीसीबहै छहरैछबिन छाम छीटनकी छाटी है । कहै पदमाकर ज्यों जेठकी जलाके तहां आवै क्यों प्रवेश बेश बेलिन की बाटीहै ॥ बारहुँ दरीन बीच चारहू तरफ तैसोबरफ बिछाइ तापै शीतल सुपाटी है ॥ गजक अँगूर की अँगूर से ऊंचा है कुच आसव अँगूर को अँगूरही की टाटी है १ ॥

पजनेस कबि ॥

क० ॥ चोवा चौक चांदनी चँदेवाचिंकै चौकी चौक चम्पंक चम्पावली चमेली चारु चोजहैं । खासे खस फरस उशीर खस खानन में पजन कपूर चंदनादिक रिचोजहैं ॥ लाली लखि ललित ललीके लाललोयन में अमल गुलाबदलमलत उरोजहैं । अवनिअशीतल पैग्रीषमतपीतल पैपियहाथहीतलपैशीतलसरोजहैं १ ॥

परमानन्द कवि

क० ॥ चन्दन महलमध्य चन्द्रकचहल चारुचांदनी सी चिकै चंद चांदनी सुहाई है। तर अतर न बीर बिजन बयार नीर नहर बिमल बारि चौगर्द चलाईहै॥ रजत फुँहारन की परत फुई है तहांपरमानंद गुलाबकी गिलम बिछाई है। ग्रीषम गरम धर्मपावैक्यों प्रवेश तहां जहां महराज ब्रजराज की अवाई है १॥

फेरन कवि॥

क० ॥ चंदनचहल चोवा चांदनीचँदेवा चारु घनो घनसार घेरि सींचे महबूबी के। अतर उशीर सीरसौरभ गुलाब नीर गजब गुजारै अंग अजब अजूबीके॥ फेरन फबत फैलि फूलन फरशतामें फूलसी फबी है बाल सुन्दर सुखूबी के। बिशद बिताने ताने तामें तहखाने बीच बैठी खसखाने में खजाने खोलि खूबीके १॥

बेनी कवि॥

क० ॥ जइये बिना जीरनसों जलकी जिकिर जीभ जख्यो जात जगत जलाकनके जोरतें। कूपसर सरिता सुखाय सिकतामैं भई धाई धूर धौरन धराधरके ओर तें॥ बेनीकबि कहत अनातप चहत सब अगिनसो आतप प्रकाश चहुँ ओरतें। तावासो तपत धरा मण्डल अखण्डलसों मारतण्ड मण्डल दवासो होत भोरतें१॥

क० ॥ आवाँसी अवधि धुंधी धूपरूप धूमकेतु आँधी अन्ध कूपडारै लोचन अनैसेकै। जमक जला-

कनकी नाकनकी लोहू चलै व्याकुल जगत सांझ पावै जैसे तैसेकै॥ लोकपति लूकसे उलूकसे लुकत बेनीकुंज छाया जहां तहां छाइरही ऐसे कै। कोठरी तखानेखस-खाने जलखाने दिन ग्रीषमके बासर व्यतीतहोयँ कैसेकै २

क०॥ धाईहै धरणि धूप धँधकि अँगार जैसे पवन प्रचण्ड लूक लागे दिशि दसते। बेनीद्रुम कूपताल कुण्डनके सोत सूखे रूखेभे कुरंगदेह फूंकै बोरिपसते॥ प्रीतम सुजान जान कैसेकै पयान कीजै शीतल सुगन्ध सींचि राखौ बोरि रसते। तातकी कमाई बित्त बहुत मँगाइ देहौं बंगला छवाय देहौं तुम्हैं खासे खसते ३॥

बलदेव कवि॥

स०॥ देहतची बिरहानलसों अति ऊरध श्वासहि पौन बढ़ाई। मुक्त बलाकन की अवली बलदेव कहै सुखमा सरसाई॥ श्याम घटा समकारी लटै द्युति दा-मिनि त्यों बर दन्तन पाई। भीषम बुन्द गिरैदृगसों ऋतु ग्रीषम में बरषा ऋतु आई १॥

क०॥ सुमन सुगन्ध शुचि सुरभी समीर सेत शीत-ल समाज साज सकल बनाये हैं। नहर नदी निकट खूब खसखाने जाने खिरकी झरोखा खोलि खासदान लाये हैं॥ तरकरि अतर तमोल तानतामदान भानको समान सो प्रमान कै दुराये हैं। द्विज बलदेव कहै बर-फ बिछाय बर बारिके फुहारे औ बितान बेलितायेहैं २॥

क०॥ सुनत सनाके यमुनाके नाके ताके सब ग्रीषम से ढाके सुखमाके निज गात ना। द्विज बलदेव जलदेव

कलदेव कहै जलजलजात जल जात जल जातना ॥ मनअनुमानकरि साजो योंसमानदिन दीपमान भानकी प्रमान दरशातना । गुंथि गुल गजरे गुलाबनसों गल-काय गलिन में गरमी की गरद लखातना ३ ॥

बच्चूराम कबि ॥

क० ॥ बर्बरात बेहरि प्रचण्ड खण्ड मण्डल पै दर्बरात धूपन की द्युति पीन अर्फरात । झर्भरात पवनके झोक आये अर्परात खर्खरात पातपात वृक्षन ते झर्फ-रात ॥ भर्भरात भामिनि भवन मांझ बैठी जाय हर्बरात हायहाय पीवपीव बर्बरात । कहै बच्चूराम छिनछिन में चुर्भरात जल बिन मीन जैसे सेजहु पै फर्फरात १ ॥

क० ॥ प्रीतम नआये जाय कुबिजा गृहछाये ऊधो पाती लै आये यहाँ ग्रीषम की हूक है । पवन झहराने धूल लागी फहराने अब काम शरताने हिय बेधतअ-धूकहै ॥ सूर्य्यकी चमक दूजे घामकी धमक तीजे लूहकी रमकते उठत तन बूक है । कहै बच्चूराम चोली चीरना सुहायअब बिना मिले श्यामके कलेजा टूकटूक है २ ॥

ब्रह्म कबि ॥

क० ॥ उछरि उछरि भेकी छपटै उरगऊपै उरग पग केकिन के लपटै लहकि है । केकिन की सुरति हिये की ना कछूहै भये एकी करि केहरि नबोलत बहकिहै ॥ कहै कबि ब्रह्म बारि हेरत हरिन फिरै बेहर बहाति बड़े जोरसों जहकि है । तरनि के तावन तवासी भई भूमि रही दशहू दिशान में दवासी यों दहकि है १ ॥

वल्लभ कवि॥

क०॥ महल सुमालती के चन्दन चहल बीच सींच कर सन्दल सों तर कर राखोंगी। भर हर हौदन गुलाब औ सिताब आब आफताब नेक कहूं तनकन राखोंगी॥ खसकी खुसीकी चिकै चकृत चहूंघा चारु परत फुहार फुही फुंकरत राखोंगी। वल्लभ बिलोको क्योंन आज ब्रजराजसाज काल्हहू सुगंध रचिसेज सजिराखोंगी १॥

भंजन कवि॥

क०॥ धुंधुरे दिगंत भये बिगत बसन्त आली ग्रीषम विषम दिन काहू ना सुहात है। तैसेही प्रचण्ड मारतण्डनवो खण्ड तपै बलित बवण्डर बहत चारौ वातहैं॥ सूखेसे लगतद्रुम रूखे भूखे सलिलसे भंजन भयावन महावन भ्रुरातहै। आवासो जगतभयो तावासी तपति भूमि दावाभरे भूधर पजावासे धुवातहै १॥

भूधर कवि॥

क०॥ सीरे तहखाने तामैं खासे खसखाने सोंधे अतर गुलाव की बयारै रपटति है। भूधर सुधारे हौज छूटत फुहारे भारे बारेताप दानन में धूप दपटति है॥ ऐसे समय गौन कहो कैसे कै बनैगो प्यारे सुधाके तरंग प्यारो अंग लपटतिहै। चन्दन किवार घनसारके पगार दई तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटतिहै १॥

क०॥ माधो धाम तची भूमि तैसी काम धाम धूम प्यारे बन बारी जून जैये बन बारीमें। उबटि कपूर चारु

चरचिके चन्दन सों छूटत फुहारे सुख सेजन सवाँरीमैं॥ भूधर सुकबि कहूं रबि सोन हेर्‌यो लाल प्यारी अंगसंग रंग रीझि रीझि वारीमें। बसो दुपहरी रतिखाने वाला खाने बीच भोर होत भौन पै अथोत फूल वारीमें २॥

यशावन्त कबि॥

क०॥ रावटी उशीर बिछी शीतल पटीर बीर तीर तीर त्रिबिध समीर झपटत जाति। चन्दन कपूर लिपी दहरै सुगन्ध भूमि फहरै दुहूंके पट चित चपटत जाति॥ छूटत गुलाब भरे ललित फुहारे भारे परत फुहीके हीके रंग रपटत जाति। सरकि सुसोचि सकुचाय यशवन्त अंक ससकि सलोनी शशिमुखी लपटत जाति १॥

रघुराज कबि॥

स०॥ शीतल ताते सिराने महा तहखानेनये खस-खाने बनेहैं। मैन सवाँरे मनौते फुहारे अपारे कतारे छुटै अंगने हैं॥ श्रीरघुराज तहाँ यदुनाथ सखीन समाज लै मोद सनेहैं। ग्रीषम जानि महै सुख दानि सुरुक्मिणि सो इति बानि भने हैं १॥

स०॥ ऊँची अटानि अनन्द सों सोइबो सींचिबो सीकर सौरभ साने। मंजु मयंक मरीचिन सेइबो लेइबो तू अधरामृतपाने॥ श्रीरघुराज सदा सुनिबो सजनीन समाज में सुन्दर गाने। ग्रीषम को बिरहीन को भीषम तीक्षण ताप को मानो बिताने २॥

रघुनाथ कवि ॥

क० ॥ ओबरिन दोबरिन तहखाने खसखाने आप ने बचायबे को फिरैंमें तरसि कै । रघुनाथ की दुहाईपै परत न कहूं कल लागतही बिहबल होतिहौं अरसिकै॥ आज के पवन की व्यवस्था कौनकौन कहौं आवत है तरणि किरणि को गरसिकै । मलयके साँपनके बिषको करपि कै की दावा मैंभ्फरसिकै की बाड़व परसिकै १ ॥

शालग्राम कवि ॥

क० ॥ द्वारन पै खसकेरी टट्टियाँ चुवत जलअन्दर सुफेद परयंकहु तहाँ परो । बाला करि भोजन जेवाँय प ति अतिहित शालग्राम बर्फ लै सुराही मध्य तैभरो ॥ पानके वरिाहूखवाय पति खायआपु मन्दमन्द मारुत डुलावै नींदमें गरो । सुख सर सात दिन दुखना दिखात कहुँ विधि ऐसी ग्रीषम को दूरिना कबौं करो १ ॥

क० ॥ सूबह असिस्टन्ट सब निजसाजे मध्य रात्रि युग याम प्रभु तहसील दारीहै । शालग्राम डिपुटी क- मिश्नर सो आँधी मानौ आदि अन्त रात्रि याम ऐक्ट रा बिचारीहै ॥ मन्द मन्द दिन घाम साहिब कमिश्नर औ तेज मध्य दिन घाम फँना सिलकारी है । लूकको लपाको सो तौ चीफअहै सबकेरौ ग्रीषम के लाटकी सवारी अतिभारी है २ ॥

क० ॥ दिनकर जोर तपैं घाम नहिं देखोजाय आँ- धी औौर आगनै तो उन्नकै निदादई । पंथमेंपथिक सब लूक सों मरत जात जीव अति ब्याकुली सों अर्द्दही

गिलालई ॥ भोगी तहखाने परे मारुत झुलावे जन ताहू पर आब ताब तनसों जुदा भई । धर्म कर्म आपने जनावें जाके जैसे होयँ शालग्रामग्रीषम सो आज सों बिदा भई ३ ॥

स० ॥ आतप ताप तपै रबि मण्डल तापित तात ततो जल आजहै । तापित बायु बहै बड़ शोषसों शोषित कूप तड़ागन लाजहै ॥ भूमि तचै तजि आपनो भाव दुखीबन बालहु ऊंख सुराजहै । हैमहिषी हू कलेशित बारिकी शालग्रामसो ग्रीषम साजहै ४ ॥

स० ॥ देखे पथी अति ब्याकुल लूकसों वाहिहू देखि लजाय कै भाजहै । बोड़ीहू घास जरी जड़सों सब धंधहू बन्द धनीन के काजहै ॥ मूड़ पै भानु चितै अति कोपित धूप धुपीली के बाजन बाजहै । छोटी निशा दिन भारीरहै द्विज शालग्राम सो ग्रीषम साजहै ५ ॥

सेवक कबि ॥

क० ॥ सीना बीच ह्वैकर पसीनाकी बहत धार जीना भयो जुलुम न नैनहू सों घरमी । सेवक भनतपौन पानीतें कढ़ति आगि दागि जैये परसि न होतिकबौं नरमी ॥ खस खाने रस खानेगयें ह्वै अतस खाने कस खाने बैठि कहौं पूजे होसहरमी । ईषमसी ह्वैरही नहीषम परति भूरि भीषम भईहै गाढ़ ग्रीषम की गरमी १ ॥

क० ॥ चादर चहूंघा सिसिरादर मचाइ गिरैनहर निरादरलौ जातिकंप सानेमैं । केतेजल जंत्र शीत जंत्र से मलैके चलै बीजन स्वतंत्र के तुषार मंत्र मानेमैं ॥

फरद फुहारन तें ग्रीषम गरद कीन्हों सेवक त्यों शरद सुवासदे खजानेमें। संग नवला के मन मोहन अनंग राचे माचे रसरंग की तरंग खस खाने में२॥

सेनापति कबि॥

क०॥ तपै इत जेठ जग जात है जरत जासों ताप तें तरनि मानो भरनि भरतहै। इतही अषाढ़ उठे नूतन सघन घन शीतल समीर हिये हीतल भरतहै॥ आधे अंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिये धीरज धरतहै। सेनापति ग्रीषम तपत ऋतुभीषम है मानों वड़वानल सों बारिध बरतहै १॥

क०॥ सेनापति तपनि तपत उतपति तैसो छायो रतिपति तातें विरह बरतुहै। लूकन की लपटै ते चहुं ओर झपटै यों ओढ़े सलिल पटै न चैन उपजतुहै॥ गगन गरद धूंधि दशों दिशा रही रूंधि मानो नभभार की भसम बरसतुहै। बरनि बताई क्षिति ब्योम की तताई जेठ आयो आतताई पुटपाकसों करतुहै २॥

क०॥ सेनापति ऊबें दिनकरके चलत लूबें नद नदी कूबें कोपि डारत सुखायकै। चलत पवन मुरझात उप वन बन लाग्योहै तवन डाखो भूतलों तचायकै॥ भी-षम तपत ऋतु ग्रीषम सकुचि तातें शीतहै कछूक तह-खानन में जायकै। मानो शीत काल शीतलताके जमा-इबे कों राख्योहै बिरंचि बीज धरामें धरायकै ३॥

कं०॥ वृषको तरणि तेज सहसों किरणि करि ज्वा-लनके जाल बिकराल बरसतुहैं। तचति धरणि जग

जरत झरनि सीरी छांह को पकरि पंथी पक्षी बिरमतु हैं ॥ सेनापति नेक दुपहरी के ढरत होत घाम को बिषम ज्यों न पात खरकतुहैं। मेरेजान पौनो सीरी ठौरको पकरि कोनो घरी एकु बैठि कहूं घामै बितवतुहैं ४ ॥

सोभ कवि ॥

क० ॥ भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधरियत रजत फुहारे ततबीरके। ढरियत ढारन सुढारन नहर नीर दरियत घनसार शरद गँभीरके॥ करियत तर अन्तरन सों बिछौना कबि सोभ जू उघरियत बातायन तीरके। चन्दन पलँग अरबिन्दन की सेज पर सुंदरी सिधारी आजु मन्दिर उशीरके १ ॥

क० ॥ आई चलि चन्द्रमुखी चाँदनी महल सोभ चमकत बादला बसन बितरनसों। चाँदी के फुहारनतें फैलत फुईहै फूल सेजपर दम्पति छकत रस रनसों॥ बाजै बीन बादकल हंसन अवाद किये नूपुरनि नादवे धरन उतरन सों। तरभये सौतिन के सतर मनोरथ री तर भये पंथके गुलाब अतरनसों २ ॥

श्रीपति कवि ॥

क० ॥ ग्रीषममें भीषमकै तपत सहसकर बापी तारे नारे नदी नद सूखिजातहै। झंझापौन झरपि झरपि झक झोरिझोरि धूरिधार धूसरे दिगन न दिखातहै॥ श्रीपति सुकबिकहै आली बनमाली बिन खाली जग मोहिं कैसे बासर बिहातहै। तावासे अजिर पग लावा सो तचतघर भयोगिरि आवासो पजावा सो धुवातहै १॥

क० ॥ असल अटारी चित्रसारी वारी रावटीमें बारह दुवारी में केवारी गंध सार की। कामानल छायरह्यो चाँदनी बिछौना पर छवि फविरही क्षीरसागर कुमार की ॥ श्री पति गुलाब वारे छूटत फुहारे प्यारे रपटै चलततर अतर बयारकी।भूषण निवारी घनसार भीजि सारी भरि तऊन बुझानी नेक ग्रीषम के झारकी २॥

दिनेश कबि ॥

क० ॥ देशदेश दिशिदिशि बिदिशि बिदीशन में मैन मत मानिकोन कीनो मत मीनको। तमकि तमकि तम तोमनि तमामकै कै सविता बितानै नित दिवस नवीन को ॥ बनते निकसि बनबासिन निवास कीन्हो बिकसित काम शीत निकसो हुनीन को। करत दिनेश कोक काम कल कौतुकनि कंत बिनु शासत निदान कामिनीन को १ ॥

क० ॥ रुकोनदी नदिनि निकासनीर पूरनको सरन को तपन समान नीर सरको। तीनैतौ तनूनपात पूरित प्रकाशनि सों सकती न तैस करि ताकिनारी नरको ॥ प्यारे परदेश को दिनेश कत दीसौदिन दौरे तपी दरिन तकै न तरु तरको। दिशिदिशि देशनमें दारुण दरेर कै कै पूरो परिपूरण प्रताप दिनकरको २ ॥

हठी कबि ॥

क०॥ शीतल सुगंधसान शीतल महलजान ग्रीषम कहल कौल सेज सुख जानकी। चन्दन चरचि अंग पहिरे सुगंध चीरबीर बलबीरजूको प्यारी पियपानकी ॥

सुखद सहेली परबीन बीन लैलै हठी करि करि गान राग तानन बितानकी । अतरन सीसैकर सुरत खुसीसै नाह बाँहदै उसीसै लेटीबेटी वृषभानकी १ ॥

क० ॥ प्रेम सरसानी यशगावै वेदबानी चौंर ढारै रमारानी रतिरानी सी टहलमें । कंजन सम्हारी सेज मंजुल करन बेस चाँदनी बरन चारु चंदन चहलमें ॥ छूटत फुहारे हिमवारे हठी चारो ओर छिरको गुलाब आब ग्रीषम कहलमें । भेंटी गुजरेटी अहिरेटी कान्हभानु बेटी अतर लपेटी लेटी शीतल महलमें २ ॥

क० ॥ खासो खस चंदन गुलाब छिरकायो जैसी खाई चहूँ ओरन सुगंध कमलान की । मंदमंद व्यजन डुलावैं ललितादि सखी कहतीं कहानी मृदुबानी सों प्रमान की ॥ कोमल करन चापै चरण बिशाखा हठी जगमग भूषण प्रभा ज्यों सुख दानकी । चाँदनी सी सेज चांदै चांदनी बिछौना चारु सुखन समोईसोई बेटी बृषभानकी ३ ॥

क० ॥ केसर अगर खस चंदन लगायो भौन अतर पुतायो भो सुगंध चहुँ ओरी है । कञ्चन फरस मखमल के बिछौना बिछे जरीके बितान आसमान जनुजोरीहै ॥ आस पास चंद्र मुखी व्यजन चँवरढारै लीने पान दान कीने रति द्युति थोरी है । हठी सुख दान भरी रूप के गुमान आज स्यान करि बैठी बृषभानकी किशोरीहै ४ ॥

स० ॥ लीन्हें लली ललितादिक संग उमंग सों श्री वृषभानदुलारी । मालती कुंद निवारी गुलाब सुफूल रही चहुँघा फुलवारी ॥ हेमके छूटे फुहारे हठी मघवा

मघ मेघ महा सरकारी। हौज पै चौजसों मौज भरी
बलि बैठी बिलोकत राधिका प्यारी ५ ॥

क० ॥ खासे खासे खस खाने छिरके गुलाब आब
चंदन चहल चारु छाये जलजात हैं। चांदनीकी सेज
नीकी पखुरी गुलाबहीकी बिछे चारों ओरन पुरैननके
पात हैं ॥ छूटत फुहारे हठी अमल सुजल वारे तैसीबहै
मंद बात सियरात गात हैं। अतर लपेटे दोऊ शीतल
महल बीच प्यारी प्राणनाथ पौढ़े सुख सरसात हैं ६ ॥

क० ॥ बैठी कुंज भौन गोरी कीरति किशोरी राधे
छूटत फुहारे हिमवारे एक पाती है। अतर गुलाब घिस
चंदन चहलमची चारो ओर सुमन सुगंध सरसातीहै ॥
कैयो रंगवारी हठी उठती तरंगै त्यों अनन्त अंगनासी
आभा उफनाती है। बांधि बांधि परा सरासरी मुखकि-
रनै यौंछोरलौ धरापै छूट छरा खाय जाती है ७ ॥

क० ॥ अतर पुतायो बने खासे खस खाने तामेंछींटैं
चहूंओरन उशीरनके आबके। कंजन बिछौना जामेंगुंजै
अलि छौना हठी औननके तौना सोहै सुरन रबाबके ॥
छूटत फुहारे काशमीर रंगवारे भारे बँधे हैं कतारे मघा
मेघ झरदाबके। देखौ ब्रजचन्द जग बन्द चन्द मन्द
होत चन्दन चहल राधे महल गुलाब के ८ ॥

रसिकबिहारी कबि ॥

क० ॥ ग्रीषम समीर तोषी तीरसी लगतअंग भूमि
महि मण्डल में तपनतपी रहै। असन बसनपान पानी
सुखदानीबस्तु तमकैघनेरीसबै यदपि ढपीरहै ॥ ब्याकुल

कुरंग दौरें बनमें चहूं दिशान मीन अकुलात जोपै नीर में खपी रहै । रसिक बिहारी संग लीने निज प्रीतम को खूब खस खानन में नवला छपी रहै १ ॥

क० ॥ शीतल भवन अरु पवन सुशीतलहीशीतल महीतल अनन्द अधिकावै है । शीतल सरिततीरनीर अति शीतल त्यों सैन नवलान हूकी शीतल सुहावैहै ॥ रसिक बिहारीचारु हारमृदु फूलनके सरस सुगंध चाह अमित बढ़ावै है । शीतल घनेरे तहखानन दुरे हैं तऊ ग्रीषम की तापतन तपनि जनावै है २ ॥

क० ॥ डार घनसार चारु चन्दन चढ़ाय अंगसेज पै प्रसून बिछे सुन्दर नरमते । नवल उशीर टाटी लगी है दरीचिन में भीजी है गुलाबनीर उत्तम परमते ॥ छूटत फुहारे चहुं ओर जोर शोरनते अंचलसमीर करैनवला सरमते । रसिक बिहारी सबै शीतल घनेरे साज तदपि अधीर होत ग्रीषम गरमते ३ ॥

स० ॥ यों मुरझाय सबै द्रुम बेलि हुताशनसी जनु लागि पहारन । नीरते छीन लखौ सरिता सर कोन सहै वह आतप झारन ॥ है रस केस अनन्द प्रिया संग वा ऋतुहै बिरहीनके कारन । एकतो जारतते बिरहा पुनि दूजहू ग्रीषम लागी है बारन ४ ॥

लालबलबीर कबि ॥

क० ॥ चलत फुहारेरी गुलाब आबवारे भारे झरन फुहार धार सहत सुगन्धकी । गुलमलताहैं अंग पल्लव छता हैं खिले सुमन अथाहैं धुंध छाई मकरन्दकी ॥

अतर सुतर करवीजना डुलावै अली गावैं रँगीली ताने युगल पसन्दकी। लालबलबीर आली देखरी उताली आज मालती महल झांकी राधिका गोविन्दकी १ ॥

क० ॥ बैठेआ गुलाबके भवनमें लड़ैतीलाल दिपत अमंद छबि चन्द ते उजालासी। भीजत हैं रीझतहैं दोऊ रसराज नीर झरत फुहारनते धार मेघमालासी ॥ वापी कूप सरिता सरोवर सलिल भरे पैरें कलहंसबंस मण्डली उतालासी। लाल बलबीरदासी लैलै जुही चौंर ढारे ग्रीषमकी बातआय लागे गात पालासी २ ॥

क० ॥ कोमल नवीन पदमनकी रचीहै कुंज झूम रहैं झलाझालरन में निवारे हैं। कुवँर किशोर संग कुवँरि किशोरी तामें राजत छबीले आज रूप उजियारे हैं ॥ शीतल गुलाब जल नहरें भरीहैं खरी परदे उशीर पड़े सौरभ अपारे हैं। लाल बलबीर दासी देख छबि सुखरासी चारोंओर छूटत फुहारे रंगवारे हैं ३ ॥

क० ॥ अतर गुलाबन सों महके महल मंजु लता झुकिरहीं पुंजप्रभा दरसतहैं : शीतलउशीरनीर चलत फुहारे भारे लाल बलबीर लखि मोद सरसत हैं ॥ तीर तीर विहरैं बिहारी प्यारी रंगभरे करतलही सों धायधार परसत हैं। लागत झरत बूंद ऐसीछबि देत मनों प्रात अरबिन्द ओस मोती बरसत हैं ४ ॥

क० ॥ महल उशीरके बिराजे श्रीबिहारीप्यारीचादर फुहारेते बिलन्द धार धामेहैं। मंजुल अमल नीर चलत समीर धीर सहत सुवास खास चारों दिशि छामे हैं ॥ लाल बलबीर दासी खासी सुखरासी लै लै नूतन गुलाब

सार अंग चरचामें हैं। झीने सुर गावैं मन मोद सर-
सावैं केती फूल फूल फूलन की चौर लै डुरावे हैं ५ ॥

क० ॥ मंजुल महल मालतीके नीके साज राखे महकै
उड़त उर बाढ़े मैन मद्दी हैं। छूटत फुहारे नीर शीतल
गुलाब वारे चन्दन चहल चारुचौकमें चौहद्दीहैं॥ लाल
बलबीर तहां राजत बिहारी प्यारी सुंदर सुहावनी गुला-
बन की गद्दी हैं। राजै रूपरासी दासी करत खवासीतहां
ग्रीषम को गरम गरूर किये रद्दी हैं ६ ॥

क० ॥ चंदन सिंहासन पै फूलनके आसन पै रसिक
बिहारी प्यारी तापै सुख पावहीं। कोऊ कर छत्र धारे कोऊ
सखी चौर ढारै लाल बलबीर दासी बीजना झलावहीं॥
नाना गति भेदन सों नाचत बजावै बीन अतर सभीनी
प्यारी तानन सुनावहीं। लखि सुखपावहीं बुड़ावै रस सा-
गर में छिन छिन नये नये चोजन लड़ावहीं ७ ॥

क० ॥ चारों ओर द्वारपरे परदे उशीरन के छूटत फु-
हारे नीर सीरे चित चावके। सखी चौर ढोरैं फूल अंगन
अतर बोरैं सौरभ झकोरैं साज मदन उछाव के ॥ लाल
बलबीर दासी खासी करबीन लैलै गावै राग रागिनी
रसीले हाव भावके। दाव कै बिलोककी निकाई सुखदाई
आज राजत बिहारी प्यारी मंदिर गुलाब के ८ ॥

क० ॥ फटिक सरोवर में अमल सुजल भर नाभी के
प्रमाण तहां कंटकन काई है। तामें जल केलि करै रसिक
बिहारी प्यारी चूबक लगाय पिय पग शिर नाई है ॥
लता झुकि रहीं फल पल्लव सों ताके बीच बीच बीच
बीच जल यन्त्रवार छाई है। परत फुहार भारी भीजें

पिय प्राणप्यारी लाल बलबीर दासी हेर हरषाई है ९ ॥

क० ॥ द्वार दर परदे पराये मालती के नीके छूटत फुहारे भारे री गुलाब नीरके । चन्दन चहल मची चौकमें चौहद्दी चारु चलत झकोरे जोरे शीतलसमीरके॥ लाल बलबीर दासी लैलै जुही चौर ढारै रूपको निहारै छैल प्रेम रणधीरके। जीवन अधार सुकुमारसार आज दोऊ राजत बिहारी प्यारी मन्दिर उशीरके १० ॥

क० ॥ चन्दन चहल चारु चारोंओर चौक में चन्दनी चुनेमा चीर चोपनसों धारेहैं। चम्पककी चांदनी में चामीकर चमचमाट चन्दमुखी चंचलसे चरी चौर ढारेहैं ॥ चरचित चोवा बलबीर चितचाहन सों चाहन सों चत्रभुज चँगेरे निहारेहैं । चाँदनीसी चादरपै चौसर चमेलिनके चाल चित चोजनसों चौतरफीपारेहैं ११॥

क० ॥ चलत फुहारे नीर शीतल सुगंधवारे झरन अपारे हेर मेघ झरलाजे हैं । अतर लगाय चाय हिये हरषाय दोऊ अंग अंग सुमन सिंगार शुभ साजे हैं॥ लाल बलबीर दासी लैलैके नवीन वीन गावत प्रवीन रसरंग राग ताजेहैं । देख सुरसाज रीझे रसिक रसीले आज मालती महल राधा रमन विराजेहैं १२ ॥

क० ॥ कोऊ जलदानी सुखसानी लै अतरदानी कोऊलै गुलाब नीर अंग चरचावैहैं । कोऊ चौर ढारै फूल रूपको निहारै आली कोऊ सुखसानी लैलै बीजना झुलावैहैं। लालबलबीरदासी सुमन नवीनवीन चुनचुन सुभग सिंहासन सजावैहैं । जोजो मनभावै प्राणप्यारी श्रीबिहारीजूकेसोसोबनराजकीनिकुंजमेंलडावैहैं १३ ॥

नीचे लिखेहुये कबित्तों में कबियों के नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ ग्रीषम बिहार भौन सांवरे के ढिग गौन करि उतसाह सों सहेली लिये संगकी। होत जलकेलिनके त्रिबिध बिधानतहाँ बाढ़ीहै ललक उरमदन उमंगकी॥ तासमयभई जो शोभा बरणी न जात मोपै दमकि उठी है द्युति दूनी अंगअंग की। नागरी वे कैसी लगैं तरणि तरंगनमें पानी पर पावक ज्यों फिरत फिरंगकी १॥

क० ॥ घोरि घनसारनसों सखिन कपूर चूर लीपेतहखाने सुख दीवे है दुदण्डकी। तामें खसखानेबने ऊजरे बिताने सुर भौन की समानै जे निदानै ठानै ठण्डकी॥ बहत गुलाब के सुगन्ध के समीर सने परत फुहीहै जल यन्त्रनके तण्डकी। बिशद उशीरन के फारि परदान प्यारे तऊ आन बेधती मरीचै मारतण्डकी २॥

क० ॥ जीवन को त्रासकर ज्वाला को प्रकाशकर भोरही ते भासकर आसमान छायोहै। धमकाधमक धूप सूखत तलाब कूप पौन को न गौन भौन आगीमें तचायोहै॥ तकि थकि रहे जकि सकल बिहाल हाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहू वृषभान जग मोचन को तीसरो त्रिलोचन को लोचन खुलायोहै ३॥

क० ॥ चलति उसासकी भकोर घोर चहूँओर नहीं

है समीर जोर सुधा कहैं लोगहै। शोचन की लहरै न ठहरै सकोचनते रविकर होय नहीं श्यामहै धु सोगहै॥ मृगन भ्रमत मेरे मनके मनोरथये फेरेनहिंफिरै लगी प्रीति तृषा कोगहै। धीरधरौ वीरकैसे तपत उशीर भौन नाहीं यह ग्रीषमरी भीषम बियोग है ४ ॥

क० ॥ क्षितिजल अम्बर दशोंदिशा तचीई जात नेकु न सुहात सब वनबेलि भरसी। सीरीहू उशीरन की टाटी आवटीही जात साटी करनाटीहून नेक जात परसी॥ ताछिनहीआये कुंजभौनमें कहूंते श्यामचाँदनी सी लागी धाम सूरज लग्यो शसी। दीरघ निदाघको दिवस घटिकासो लग्यो होत न व्यतीतगानि छनदा छिनकसी ५॥

क० ॥ कमल बिछाये वर बिमल बितान छाये छबि भरेछज्जे दरवज्जे महरावके। घने घनसारके सँवारे सखिहौज तामें छूटत फुहारे भारे केसर के आबके॥ सौंधीसेज सुमन सिंगार अंगराग होत राग रंगभारे सुरसरसहिताबके। चन्दनकी खौर बेंदी बन्दन बनाय बैठे राधिका गोबिंद आज मन्दिर गुलाबके ६॥

क० ॥ तातोहोत तन और सूखिजाति मुख ज्योति अंग अकुलातचित्त अधिको भवतुहै। जैयतुउशीरभौन लागत न नीको पौन ओला घनसार घनो चन्दन अमतुहै॥ सीरेहू यतन याते कीन्हे हैं अनेकभाँति तापर तिहारीसोंह दुखना घटतुहै। जानतहौ ब्याप्यो तोहिं बिरह प्रसिद्ध आली नायकहै कोऊनाहीं ग्रीषमकी ऋतुहै ७॥

क० ॥ तावरी तपन ताप ज्वालासों न बिरहीन छीनकै

रहीहैआपनोई एक भावरी । भावरी सजन मध्य जासों सबराजी रहैनेक लूह लपटसों घटनाजरावरी ॥ रावरीन मानि है सनेह नेह मेरो कह्यो देहमें प्रवेश बारि बाती को लगभवरी । गावरी बजावरी सुबन्दी मन भावरी पै येरी बीर ग्रीषम तू मोहिं न सतावरी ८ ॥

क० ॥ बिकल सकल जल थलन के जीव होत जेठ की जलाकनिमें पुहुमी तपतिहै । सरिता सरोवर रसाल जलहीन भये सूखे तरु पशुहू पखेरुन बिपति है ॥ ग्रीषम तपनि दूजे बिरह लपनि बाढ़ी तापै यह लपटि झपटि लपटति है । सीरे उपचारनतेजारत अनंगअंग पिय बिन मान याको कैसे के रहति है ९ ॥

क० ॥ धौरहर धौल धूप धापहू धसै न जामें चहुँधा दुआरके सुगंध सार शालासे । मणि दीपमाला मणि भूषण बलित बाला खासे परयंक बासे सुमननि माला से ॥ व्यजन उशीरनीर मलयज समोयेकै परसत समीर हैसरस शीतकालासे । जिनहेतबिरचे बिरंचिहैंमसाला ऐसे व्यथितन होत ते निदाघ जात ज्वालासे १० ॥

क० ॥ हौद बीच पलिका पै राजत रसिक दोऊचहूँ ओर छूटै जल यन्त्र त्यों महमहात । लागि के गुलाब नीर फिरन फुहार अंग रंग वैठि बैन मैन नैननि डह डहात ॥ सगबगे बार छूटि रही लटै आननपै रंगमगे रागतान बीना में गहगहात । रीझे भीजे लपटात जात गात बातलगि प्रेमके तमाल नेहबेली ज्यों लह-लहात ११ ॥

स० ॥ है जलयन्त्र के मोहनी मंत्र बशीकर सीकर

सी अवली सों । कै शशि के हित मोदभरो जलजात अकाश है भूमि थली सों ॥ कै मुकता फल को बिरवा बिरच्यो यह फूल जलेस रलीसों । कंजसनालते कैमकरंद चलो तररायकै भांति भली सों १२ ॥

इतिश्री षट्ऋतुहजारा अन्तर्गत ग्रीष्म
ऋतुवर्णन सम्पूर्णम् ॥

अथ पावसऋतु वर्णन ॥

दोहा ॥

सुमन सुगंधनसों सनी मंद मंद चलि आय ॥
प्रौढ़ालौं मनको हरति हियलगि वरषा वाय १
द्रुम उखारि डारत मही फेंकत जलकन साज ॥
पावस मारुत मत्तचलि आवत जनु गजराज २
अब न बचैंगी बिरहिनी पावस पवन कराल ॥
फुफुकारत आवत चल्यो मानहुँ बिषधर ब्याल ३
अब केहूँ नहिं बचहिंगे बिरही जन सिद्धांत ॥
पापी पावस पवन या आवत चल्यो कृतांत ४
चमचमात चपला चहूँ तापर घन घहरान ॥
झंझा झूकन पवनते अब न बचैंगे प्रान ५
पावस घन अँधियार में रह्यो भेद नहिं आन ॥

राति दिवस जान्योपरे लखि चकई चकवान ६
पावसमें सुरलोकते जगत अधिक सुखमानि ॥
इन्द्रबधू जिहि ऋतुसदा क्षिति बिहरतिहैं आन ७
अरुण चीर तनमें सजे इमि बिहरतिहैं नारि ॥
मानो आईहैं सुरी बसुधा हरी निहारि ८
झूमिझूमि तिय सिखतिहैं राग चढ़नकी रीति ॥
आज कालिमें आइहै सुर नारिन को जीति ९
तिय तरसो हैं मन किये करि सरसोहैं नेह ॥
झरि बरसो हैं ह्वै रहे घरपर सोहैं मेह १०

आनँद कबि ॥

क० ॥ आवत कदम्ब कुसुमन को पराग पूरि सीरी पौन लहलही ललित लतानकी । घोरै घन घेरि घेरि पावस अँधेरी पिक केकिन की टेर गुनि अरिहोत प्रान की ॥ ऐसे समय कुंज भौन आनँद उछाह बाढ़े ठाढ़ेढिग ललना मनोरथनि भानकी । सोहन सचाई बात करत रचाई दोऊ छबिसों बचाई छीटैं ओट छतनानकी १ ॥

क० ॥ बरसै सघन घन सावन सुहाई बूँदें कुंज में पवन चलै लहर झकोरेमैं । कुहकैं पपीहा मोर दादुरक-रतशोरगुंजत भँवर बिज्जु नचतसुजोरेमैं ॥ आनँदकहत सखी चहुँघा चँवर ढारैं हाथन ललाई मानों लालरंग बोरेमैं । लहकि ढरकि जाती अलकैं कपोलन पै लचकि लचकि झूलैं मचकि हिंडोरेमैं २ ॥

अजबेस कवि ॥

क० ॥ बेलिन सों लपटे ललित लहकारे भये बलित तमालन के ठौरै ठौरै दरषत । चातक शिखण्डी मन्द मेडुकरहे हैं नादि झींगुर झनक करैं जोर शोर हरषत ॥ झंझापौन झूकैं औ कुहूकैं तैसी कोकिला की अजबेस बिरंह बधू के प्राण करषत । पारावार धारकी धरामें जलधारा भई धारनसों धारा धर वारिधारा बरषत १॥

आलम कवि ॥

क० ॥ कैधौं मोर शोरं तजि गयेरी अनत भजि कैधौं उत दादुर न बोलत हैं एदई । कैधौं पिक चातक महीप काहू मारिडारे कैधौं बकपाँति उत अन्त गति ह्वैगई॥ आलम कहति आली अजहूं न आये पिय कैधौं उत रात बिपरीत बिधिने ठई । मदन महीपकी दुहाई फिरिबे तेरही कैधौं मेघ जूझे कैधौं बीजुरी सती भई १ ॥

औधि कवि ॥

क० ॥ भूली किधौं ह्यां की पीर बाढ़ी है उहांकी झरै नैन झरना की सुधि आये उर बाकी है। चंचला चलांकी करै नट की कला की तैसी दौर बदरा की औ धुकार धुरवाकीहै ॥ ह्वैनकछु बाकी औधि आसरा निशाकीतामें आइ परै डाकी ये झकोर पुरवाकी है। टेर पपिहाकी करै सेल समताकी डरै करै उरझांकी ये पुकार मुरवाकीहै १॥

उमराव कवि ॥

स० ॥ आई अषाढ़ की कारी घटा घहरान लगे ब-

दरा चहुं ओर कै। दूजे जो कन्त बिदेश गये सुधि पाई न नेक रही मग हेरिकै॥ उमराव स्वभाव बिहंग कहे मृदु बैन कहे जो सखी कहे टेरिकै। सोनेसे चोंच मढ़ैहों तेरी बलिजैहों पपीहा पिया कहु फेरि के १॥

कालिदास कबि॥

क०॥ कुहुकत मोर बन पवन झकोर घन कालिदास गाढ़े ये अषाढ़ गुण पेखिये। शीतल कदम्ब छाँह गोरीगरेधरेबाँह इन्दको नगरबन बगरबिशेखिये॥ वारो अव शेष पुरी रसिक नरेश कान्ह ऐसो देश दूसरो न सुख अवरेखिये। नीके नये छप्पर अटान खट छप्पर घटान के घमण्ड ब्रज मण्डल में देखिये १॥

क०॥ हरे बन जरे से जरी सी लागी हरी भूमिकारी घन घटाज्यों प्रलयकी घेर घहरै। लागै फणि फण की फुकारसी बयारि बार बुन्द बिष बाण सम छाती छेद छहरै॥गावै मोरकरखा औ बरषासमै में काम कालिदास कान्ह बिन गोकुलमैं थहरै। महलझरोखनमें झाँकतही लागि उठै यम की सी चाबुक ये यमुना की लहरै २॥

क०॥ सावन की रैन मन भावन गोबिन्द बिन देत दुख झारन में झिल्लिनके शोरहै। कालिदास प्यारी अँधियारी में चकित होत उमड़ि उमड़ि घन घहरतघोर है॥ सूने कुंज मन्दिर में सुन्दरी बिसूरै बैठि दादुर ये दहक सी लेत चहुँओरहै। हियमें बियोगिन के बिरह की हूक उठी कूकउठी कोयल कुहुक उठे मोरहै ३॥

कवींद्र कवि ॥

क० ॥ पौनके झकोरन कदम्ब झहरान लागे तुंग फहरान लागे मेघ मण्डलीनके। भनत कबिन्द्र धरा सारन भरन लागे कोश होन लागे विकसित कन्दलीन के ॥ उटज निवासिन को त्रास उपजन लागे सम्पुट खुलन लागे कुटज कलीनके। नाचे बिरहीन के अहीन स्वर झिल्लिनके दीन भये वदन मलीन बिरहीनके १॥

क० ॥ राजै रस मैंरी तैसी बरषा समैरी चढ़ी चंच लानचैरी चक चौंधा कौंधा वारैरी। पतिव्रत हारै हिये परत फुहारै कछु छोरै कछु धारैं जल धर जल धारैरी ॥ भनत कबिन्द्र कुंज भौन पौन सौरभसौं कौनको कँपाय के न पर हथ पारैरी। कामकेतुकासे फूलि डोलि डोलि डारै मन औरकिये डारै ये कदम्बनकी डारैरी २॥

क० ॥ तड़िता तररत्यों इरम्मद अरर घन घोरकी घरर झनकारै झींगुरनकी। पौनकी लहक त्यों कदंब की महक लागी दाहक दहन लैलै सीमा उरगनकी ॥ भनत कबिन्द्र बिन नाहये सनाह साजे पटा झर घटा फेरै क्योंहूना मुरनकी। पेरै मटू मनको अरेरै करै आठौ याम टेरै बरहीन की दरेरै दादुरनकी ३॥

क० ॥ लाग्यो मास सावन बिदेशी [illegible]व ठाँवन सों आवन लगेहैं कैधौं उन्हैं सुघरीनहीं। कै[illegible] वहगाँवनमें जावन कहत कोऊ कैतो गुन गावन की [illegible]भ अगरी नहीं ॥ भनत कबिन्द्र मन भावन तिहारे हम पावनको सेवै तकसीरहू परीनहीं। हते तो हितावन पै तावन

लगे हौ देहदावनलगे हौ की बिदावन करीनहीं ४॥

क० ॥ लाग्यो यह सावन सनेह सरसावन सलिल बरसावन घटाधर ठटानको। गोरी गाँव गाँवन लगींहिं गीत गावन हिंडोरोभूमलावन उठान ह्वै अटानको॥ भनत कबिन्द्र बिरहीजन सतावनसो देखो चमकावनरी बिज्जुल छटानको। प्यारे परौंपाँवन ललाको लीजै नावनसो देखो आजु आवन सुहावन घटानको ५॥

किशोर कवि॥

क०॥आईऋतु पावस असाढ़ धराधर बाढ़ि ललित कदम्बन लतान ललिताईहैं। कहत किशोर जोर दाहन दरप जैसी तैसिये तड़प तड़िताकी अति छाईहै॥ छोड़ै कौन मानरतिसों बगोड़े कौन आली उनई घटाकी क्षिति छबि अति छाईहै। मेघनकी झुकन झकोरन प्रभंजन की झिल्लिनकी झनक झलानकी अवाईहै १॥

क० ॥ अवनि दुलीचा पै बितान आछे आसमान पौन पियु गन्ध दान कान क्षण ओतहै। कहत किशोर उघटत नट मोर जाल ताल देत चातक जगावै कहि कोतहै॥ जलद मृदंग बाजै परि भृत गान साजै चंचला नचत जुगुनून जग जोतहै। रति सुख सदन उजेरे मुख दीपत कै मदन महीपति की मजलिस होत है २॥

क० ॥ कैसी करौं हेरि यह घेरि दिशा बिदिशानि फेरनभ मण्डल घमण्ड घन छायोरी। पीड़ित पियास परमातुर पपीहा पापी पीउपीउ कह तन अतन जगायोरी॥ कहत किशोर तैसी पवन झकोरनसों मोरन त्यों

महत मलार सुर गायोरी। बड़बड़े बुन्दन बिलोकि बारि धाराबीर अबहीं बरसि गयो फेरि झपि आयोरी ३॥

स०॥ कैसी मनोहर मंजु समीरन जानिये बैरबहै जो कहांते। तैसी किशोर लतालचै तैसी नचै मुरवान की ज्योति जमाते॥ लूटती कैसे नऐसे समै सुख छूटती बिज्जु छटाचहुँ घाते। आज लगी यमुनाते लगी नभलौं नभ श्याम घटान की पाते ४॥

क०॥ झिल्ली रह्यो झिल्लिन की झाईंको झनक जूह दादुर समूहनको होत गलबलाहै। चारिहू तरफ चारु चंचला चमक बक्क चातक चवाई कोनकोन चित चलाहै॥ कहत किशोर देख देखतो नबेलीआजु आवत बिहारमें बहर भूमि भलाहै। झरनसों भरे फुलझरी से झरत आवै झिलिमिली बुंदके झलन पर झलाहै ५॥

क०॥ उमड़ि उमड़ि घुमड़त आये घने घोरे देत निदरि नगारनकी धूम को। कहत किशोर चारों ओर न तें जोरावरी जोरे देत जुरबिजुरीन वारी धूमको॥ झाझ कर झंझा तैसी झुक झक झोरे देत झलरे तमाल न की झाप झाप झूम को। जलज को जोरे देत जल ध को फोरे देत जलनको टोरे देत बोरे देत भूमि को ६॥

क०॥ उकड़ि उकड़ि कढ़ि कढ़ि बढ़ि बाढ़िबर धारा धरधारे रूपअतन असानको। आनअन बेलिनबेलि-नकी कहा बीर बेलिनहु हौसहोत तरलपटानको। कह त किशोर जोर मंजु घोर घहरन लहरन उठैं पुंज दिपन छपान को। खबई बिलोकि तोहि अटल अभंग परै कैसोई कपट आज पटल घटान को ७॥

स०॥ बरसै नव कुंजन पुंजलता सिक मंजु मयूरन को सरसै। मधु मोर किशोर करैं घन ये चपला चल चारु कला दरसै॥ अलि होत्रल तूचल बेगिहहा उत तो बिन प्राण पिया तरसै। उमड़ै हुमड़ै घुमड़ै घन आज मिही बुदियाँन मड़ो बरसै ८॥

स०॥ चहूँ ओरन ज्योति जगावै किशोर जगी प्रभा जेवन जूटी परै। तेहिते झरि मानों अँगार अनी अव नीघनी इन्द्र बधूटी परै॥ चहुँनाचै नटीसी जराव जटी सी प्रभा सो पटीसी न खूटी परै। अरी येरी हटा पटी बिज्जु छटा छटी छूटी घटान ते टूटीपरै ९॥

स०॥ घहरात घमण्ड के की बलकै लहरात सुहात बने बनये। उलहे महि अंकुर मंजुहरे बगरे तहाँ इन्द्र बधूगनये॥ असजानि किशोरसमै रसमै कसहोंहिन मैनमई मनये। चित चैन चयेनभ आनिछये अव देखु नये उनये घनये १०॥

स०॥ छिनही छिनदौरे दुरैदरशैछबि पुंज किशोर जमासे करै। अति दीन बिना पिय जानि जिये बिरही न हिये बरमासे करै॥ अरु देखीभई कबहूं थिरह्वै घन को हरि की उपमासे करै। चहुँघाते महा तरपै बिजुरी तम तोममें आजु तमासे करै ११॥

स०॥ पिक बोलत डोलत मारुत है लतिका द्रुम जानिनये बन ये। उलहे महि अंकुर मंजुहरे बगरे तहँ इन्द्र बधूगन ये॥ अस पाय किशोरसमै रसमें कसहो इनामैन मई मन ये। चित चैनचये मन आनछये अव देख नये उनये घनये १२॥

क० ॥ प्रेममद पागे अनुरागे लालबागे दोऊ लागे भले लोचन को झूलत हिंडोरना। लोनीहै चपल द्युति चीरनै चुराय चितचंदमुखी चंचल चखन गुन बोरना॥ ज्योंज्यों प्राणपति परिरंभन करत त्योंत्यों भावती मुरति यहै शोचके झकोरना। सरस सुमनहूते कोमल किशोर उर कठिन कठोर कहूं गड़ै कुचकोरना १३॥

कृष्णलाल कवि॥

क० ॥ चातक चिहुँक मत मुरवा कुहुँकमत झींगुर किहुँक मत भेकी मननाय मत। चकवा चिकार मत पपीहा पुकार मत बुंद झर धारमत धार घहराय मत॥ कृष्णलाल गाय मत पीरउपजाय मत बालम बिदेश पाय मैनतन तायमत। पौन फहरायमत चपला चवाय मत धायमत धुरवा औघन घहराय मत १॥

करण कबि॥

क० ॥ कंट कित होत गात बिपिन समाज देखेहरी हरीभूमि हेरि हियो लरजतुहै। निपट चवाई भाई बंधु जे बसतगांउ दांउपरे जानिकै न कोऊ बरजतु है॥ एते पैकरण ध्वनि परत मयूरन की चातक पुकारि तेहताप सरजतु है। अरजोन मानी तू नगर जो चलति बेर ग्येरे घनबैरी अब काहे गरजतु हैं १॥

करनेश कबि॥

क० ॥ पौन हहराय बनबेलि थहराय चारु लहराय सौरभ कदम्बनकी सानते। झिल्ली झननायपिक चातक

पुकार उठै बिज्जुछहरायछाय कठिन कृपानते। कहैकर नेश चमकत जुगनूनचाय मेरेमन आई ऐसी उक्ति अ-नुमानते। बिरहीदुखारे तिनपर दईमारे मानों मेघ बर-सत है अँगारे आसमानते १ ॥

काशीराम कवि ॥

क० ॥ आई ऋतु पावस बहत पुरवाई पौन काशी राम तैसी ये तड़ित लागी लपकन। भूमि आये बादर बिहँग बन बोलि उठे चहुँओर कुंजन अंध्यारी लागी झपकन ॥ झिल्लीझननात हहनात मोर शोरसुनि बिरह अगिनिजरि छातीलागी तपकन।हेरहारहरतनहार देखो आठों यामपियाके वियोगमों निशाहू लागीहवसन १ ॥

क० ॥ केकी जब कूकै तबसूकैप्राण काशीराम हरी हरी भूकै हेरे शोच सरसाति है। भाकसी भयो है भौन भरै दुख कौन दीजै छतिलौन ऐसेपौन गौन परसतुहै ॥ बिपति नरेश तुम छाये परदेश अति बिपति हमारीह्यां बिधाता दरसतुहै। बेगि सुधिलेहुनातो छूटी जातिदेह अब कोप्यो है अदेहअरु मेहबरसतुहै २ ॥

कमलापति कवि ॥

क० ॥ घेरि घेरिघहरि घहरिघनआये घोर तापैमहा मारुत झकोरत झरपसो। सुनि सुनि कूकनि मयूरन की बीरमैं तो राख्यों निज प्राण यमराजहि अरपसो ॥ भीतभरीभौनते कढ़ौंन कमलापति मैंतऊ बेधेडारैहियो तड़िता तरपसो। गावन मलारको सुहावन लगैनभयो भावन बिनारी मोहिं सावन सरप सो १ ॥

कविराज ॥

स० ॥ भूमि हरी चहुँओर भरे जल हैं सुथरी ऋतु आई असाढ़ी । मीठी महाधुनि मोरनकी कविराज सुनै सबकी रुचिबाढ़ी ॥ झूलत गोपी गोपाल मिले वृषभान के आँगन भीर है गाढ़ी । हेरेहरी मिस वाकी बटा भरि फेरि घटा में अटापर ठाढ़ी १ ॥

कविराम ॥

क० ॥ कारे जलधर चहूँघाते झूकरत आवै दामिनी सोहावै सो जनावै दुख गाढ़के । झींगुर पपीहा भेक शुकपिक मोर बोलैं डोलत समीर सो करत आढ़आढ़ के ॥ कहै कविराम पीरे अंकुर मही ते कढ़े बढ़ीपीर वनिता के द्वैव जलबाढ़ के । कामके उमाहक विरही जनदाहक ये आये प्राणग्राहक बलाहक असाढ़के १ ॥

क० ॥ उमड़ि उमड़ि घन घुमड़ि घुमड़ि आये चंचला उठनतामें तरजि तरजिके । बरही पपीहा भेक पिक खग टेरतहैं धुनि सुनि प्राण उठे लरजि लरजिके ॥ कहै कविराम देखि चमक खद्योतन की प्रीतम को रही मैंतो बरजि बरजिके । लागे तनतावन विनारी मनभावन के सावन दुवन आयो गरजि गरजि के २ ॥

स० ॥ बरसै जुरिकै अतिकारी घटा लखि बात न आवत है गरसै । गरसै अब चाहतहैं बिजुरी बन के खग देखि सभै हरसै ॥ हरसै कोउ जाय कहै बतियां बुंदिया तन लागत है सरसै । सरसै छबि सांवरोकी कविराम घटा अरिकै जुरिकै बरसै ३ ॥

स० ॥ चौंकि उठी चपला क्षणमें घनघेरिं चहूंदिशि ते घुमरे हैं । छोर दुहूं भरिकै सलिता बनिता सुरँगी चुनरी पहिरे हैं ॥ दादुर मोर चकोर सदा गति कोकिल छेद हियेमें करेहैं । प्यारे सुजान बिना कबिराम सुकैसे असाढ़के द्योस परेहैं ४ ॥

स० ॥ घेरि घटा झुकि आई चहूंदिशि दामिनिते द्युति होत अजोरै । जोरैसो बोलतहै पिक दादुर कांपि उठै जब कूकत मोरै ॥ मोरै मरोर उठै जियमें कबिराम गड़ीतिरछी दृग कोरै । कोरै मिलावै पिया वहसांवरो आय घटा चहुँओरते घोरै ५ ॥

कबिराय ॥

क० ॥ सासुतौ न्यारी ननँद सासुरे सिधारी रैनि अँधियारी कारी सूझतनकरहै । प्रीतमको गौन कबिराय न सोहाय आली पवन हहायो अरु लायो मेघझरहै ॥ संगना सहेली गृहमांझहों अकेली अरु बयस नवेली तनलाग्यो मैनशरहै । आई अधरात मेरोजियरांडेरात जागु जागुरे बटोही यहां चोरन को डरहै १ ॥

कादर कबि ॥

क० ॥ गरज नगारे भारे बुंद हरकारे आगे ध्वजा धारे धुरवा गजतीना बदन के । पवन तुरंग चढ़े धाये भट रंगरंग घेरिआये चारोंओर सूनेही सदनके ॥ केकी कूककाती कलकोकिलासे घातीआरछाती हहराती देखे चपला रदनके । कादरबिरह सुधिलीजै श्याम सादरजू आये बीर बादर बहादुर मदन के १ ॥

क० ॥ पावस न प्यारी चढ़्यो सैनसाजि सैनभारी कोकिला नकीब नौल धौल धुजा बकमाल । बन्दीजन मोरगन बूंद जोरवानघन दादुर निशान देत दीहदीह नदीताल ॥ प्यारेके निरादरते कादर करनिहारे कारे कारे धूमधारे बादरहरिद जाल । दामिनि दमक परबालकी चमक शाल करति बिहाल हमें बालबिना नंदलाल २॥

क० ॥ हरषे हरौल है अमरषे अनंग हेत करषे कलापी चोपि चातक चमूपिली । उमड़े घटाहैं मानि करने छटाहैं छटा फेरत पटाहैं ठटा सूरकी हटाकिली ॥ घेरिकै अड़े हैं बिन बूंदन लड़े हैं औध आनँद खड़े हैं देखि दादुर बड़ेदिली । कादर बियोगी हारि चादर बलाक फेरि बादर बहादुर को नादिर फतेमिली ३ ॥

खानसुलतान कबि ॥

क०॥ चातक उशीर बीर बकसी समीरधीर पुरवाई महावीर केकिनको मानहै । दादुर दरोगा इन्द्रचाप इतमाम घटा जाली बगजाल ठाढ़ो खान सुलतान है ॥ गरजन अरज कदन जिन मनसिज जिन सबजेर किये देश देश आनहै । मेघ आमखास जामें दामिनी तखत वह पावस न होय पंचबानको दिवानहै १ ॥

गंगकबि ॥

स० ॥ निशि नील नये उनये घन देखि फटी छतियाँ ब्रजबालन की । कबि गंग तना द्युति क्षीण भई सुथरी छबि देखि तमालनकी ॥ दशहूं दिशि ज्योति जगामग

होत अनूपम जीगन जालनकी । मनों काम चमूकी चढ़ी किरचे उचटे कलधौतके नालनकी १ ॥

गोकुल कबि ॥

स० ॥ चमकै चपला झमकै जुगुनू रव भेकिनको भय छावतहै । पिक झिल्लिन को गन मोरनसों मिलिकै अतिशोर सुनावतहै ॥ कबिगोकुल प्यारी बिना गिरिधारीकहौ अब कौन बचावतहै । इहि ओर लखौ क्षिति छोरहि ते घन बोरत सो चलो आवतहै १ ॥

स० ॥ घूमि घटा घनकी गरजै चमकै चपला क्षिति छ्वै फिरैफेरी । शोर करै चहुँओरते मोर जुरीकरै कैलिया कूक घनेरी ॥ गोकुल सीरो समीर लगै केहिभांति सों धीर रहैंगे घरेरी । मोहिं बिना यह सावनकी निशि भावन कैसे बितायहैं एरी २ ॥

गिरिधरदास कबि ॥

क० ॥ करत अकाश बारिबाहक बिलास तैसेबुन्द परै बसन कुसुम्भी रंग बोरे पै । क्षणछबि छटा तैसी घटा घन घहराय हरिनके भूषणत्यों सोहै तनगोरे पै ॥ गिरिधरदास लिये गिरिधर लाल संग झुकति झपति जाति थोरेहू झकोरेपै । हूलतिहैशूल सुख सौति उनमूलतिहै फूलतिहै झूलतिहै हेमके हिंडोरेपै १ ॥

क० ॥ उमड़िउमड़ि नदीनद कूल बोरतहै जोरजलधारन सों सूझत कहूंनाहै । परम प्रचण्ड पौन धावनि त्यों धुरवाकी झिल्लिनको शोर सुने होत कान सूनाहै ॥ गिरिधर दास महाबिज्जु को प्रकाश सोई लागै दोह

दुसह दवानल सों दूनाहै । एरी माइ जोई श्याम बिन सुखखोइ यहपावस न होय प्रलय कालको नमूनाहै २॥

क० ॥ श्याम असमानो श्याममयो असमानो तैसो लखि असमानो सुख साजि असमानोरी । सब अहिरानो दुख सहि अहिरानो फूले फिरै अहिरानो संग हरि अहिरानोरी ॥ गिरिधरदास ताप मिट्यो धुरवानो खण्ड उठे घुरमानो किये धीर घुरवानोरी । सुख बरसानो रीझि लियो सरसानोरी त्यों यह बरसानो रीति रस बरसानोरी ३ ॥

क० ॥ भूमिनाचैं नर्तक से मोर एरी चहूँओर चंचला अकाश देव नारिसी नचतिहै । गायकसे गान करैं चातक बिविन घन गन्धर्व गावैं गीत आनँद रचतिहै॥ गिरिधरदास देव फूल बरसावै जल सुमन लुटावै तरु बुद्धियों जचतिहै । पावसको जनम भयोरी यासो सुखमा सों अवनि अकाशमैं बधाईसी मचतिहै ४ ॥

गिरिधारन कबि ॥

स० ॥ दुख दूरभयो अरी ग्रीषम को करिवे पिक चातक गानलगे । चपलाचमकै लगी चारोंदिशानिशि में जुगनू दरशान लगे ॥ गिरिधारन पावस आवतही बकवृंद अकाश उड़ान लगे । धुरवा सब ओर देखान लगे मोरवानके शोर सुनान लगे १ ॥

गुलाब कबि ॥

स० ॥ ऋतु चापन चाप लसैकरमें जलधारन जार लसै सरको । कुहकारन मोर गुलाबकरै भयकार कुला-

हल मे भरको ॥ जुगुनू गन इन्द्र बधून फिरें क्षिति जात परे भटके घरको। हिय हारि नरी वरषान भटू यह संगर मैन पुरन्दर को १ ॥

स० ॥ धुरवान धुकौ तिहिभांति गुलाब यथा दुख दानिहु ते तबरी। झुरवाय गये जुगुनू गनहूं धुरवाय गये कबहूं कबरी ॥ दुरवाय गये दुरदादुर बावर बादर वा बरसे तबरी। उर बालम सोहतिहौं पियके मुरवान करें सुरवा अबरी २ ॥

स० ॥ नीर निरंतर नारिन मांझ गुलाब कहै रमिकै सुखपावै। पीवपुकारतहैं खग जीव अजीभन को गन शोर मचावै ॥ बूढ़न के अँग में रँग होत शिखंडिन को मन मैन जगावै। बालन बालम सौं करिमान कहाँ यह काल गयो फिरि आवै ३ ॥

स० ॥ खगजात उड़े बिदिशो दिशमें मग पावतना जहँ कूक जगी। सब आक जवास झुराय गये जरि नारि पुकारत पीव पगी ॥ धर मांझ गुलाब अँगारपरे भरि अंबरमें चिनगी उमगी। अब धीर धरै उरका बिघिरी जलधारन भीतर लायलगी ४ ॥

स० ॥ बन बागनमें गनजे गनहैं घन आँगनमें तन तापकरै। बसमोर मवासन माँझ गुलाब अकाश बकावलि कोपिलरै ॥ धसि आवतहैं धुरवा घरमें लखि बीरबधू अति जीवजरै। बिषधार भरी दशहौ दिशरी अब क्यों करिकै उर धीरधरै ५ ॥

स० ॥ धुरवा धुकि आवत भूमितऊ झुरसाय न जीतनहू तरकै। मुरवा सुरवा सुनि श्रौनरहै चुपचापन

चोट कछू खरकै ॥ नहिं बीरबधू बकजाल गुलाब जरा युग नैनन में करकै । अबका करिये उपचार भटूजल-धारन तें उरना दरकै ६ ॥

स० ॥ घन घोरन घोर निशान बजैं बगुलान धुजा-गन खेचर को । चपलान गुलाब कृपानकटी जलधारन-ही भरहै सरको ॥ धुनि दादुरचातक मोरनकी न कुला-हलहै अरिके घरको । धरिधीर हिये बरषा न भटू गिरि ऊपर कोप पुरन्दर को ७ ॥

स० ॥ बक मारनही दृग बारिपरे धुरवान रुमावलि ठाकरकी । यह मोरनको नहिंशोर गुलाब अभयकर बानि दयाकरकी ॥ नहिं बूढ़ प्रजा अनुराग रँगी जलधारन पाल चराचरकी । जनि शोच करै बरषान भटू घर ऊपर प्रीति दिवाकरकी ८ ॥

स० ॥ बक बीरबधू जुगुनू सुर चाप सबै सुखकेसर-सावन मे । मुरवा गन दादुर चातक शोर गुलाब कहै हित जावनमे ॥ बर बापि तड़ागनि बान नदीनद नारन के जल पावनमे । घर आवतही मन भावनके घन साव-नके मनभावनमे ९ ॥

ग्वाल कवि ॥

क० ॥ कारी घटा काम रूप कामको दमामो बाज्यो गाज्यो कबिग्वाल देत दामिनि दरेरसी । लपकि झपकि आयो दादुर मचायो शोर हमैं तो बिरह सखि मदन करेरसी ॥ बालम बिदेश बसै चातक को जोर लसै ताही समय होत कछू औरै हरबेरसी । बुन्दन को

इन्द सुनि आँखैं मुंदिमुंदिजात आयोसखी सावनसँवारे शमशेरसीं १ ॥

गोविन्दकबि ॥

स० ॥ सुचसावनी तीज सुहावनी बिज्जु घनेघनहू घहरान लगे । बनके बन गोबिंद चातक मोर मला-रन के सुरवान लगे ॥ दुवो झूलैं झुकैं झमकैं रमकैं हियरा अतिशय उमगान लगे । पट प्रेमपगे फहरान लगे नथके मुकता थहरान लगे १ ॥

गुरुदत्त कबि ॥

क० ॥ रचिरचि इन्दुबधू हरीहरी भूमिपर दौकेदौके दामिनी हमारिये अरजहै।बोलिबोलि पपिहा मयूरगति नाचि नाचि बकिबकि दादुरन काहूकी मरजहै ॥ साजि साजि पावस तू साबस है गुरुदत्त करि करि बार अति छतियाँ दरजहै । येरे बदबदरातू बरजोन मानतहै गरज गरज तोहिं आपनी गरजहै १ ॥

स०॥ पीवकहांकिहि देवतोसावस पावसमें रसबीच कहां है । जीवननाथ के साथ बिना गुरुदत्त कहै तन जीव कहां है ॥ बानी सुनी जबते तबये यहजानिनजात सो पीव कहांहै । पीव कहां कहिके पपिहा केहि सों तुम पूंछत पीव कहांहै २ ॥

घनआनँद कबि ॥

क० ॥ कारी कूर कोयल कहांको बैर काढ़तरी कूकि कूक अबहीं करेजोकिन कोरिलै । पैंड़ेपरे पापीये कलापी

निशिश्रोस ज्योंहीं पातकीये चातकी त्यौंतूही कानफोरि लै ॥ जीवन अधार घन आनँद सुजान बिना जानके अकेलीसबै घेरोदल जोरिलै। जौलोंकरे आवनबिनोद बरसावन वे तौलोंरे डरारे बज्रमारे घन घोरिलै १ ॥

स० ॥ पूरण प्रेम को मन्त्र महा पन जामध सोधि सुधारहि लेख्यो । ताकर चारु चरित्र विचित्र नयो पचिके रचि राचि विशेख्यो॥ऐसो हिये हित पत्र पवित्र सुश्रान कथान कहूं अव रेख्यो । सो घन आनँद जान सुजान लै टूक कियो पर बाच न देख्यो २ ॥

स० ॥ छूटेघटा चहुँघा घिरि ज्यों गहि काढ़ करेजो कलापिन कूकै । सीरी समीर शरीर दहै बहकै चपला चखलैकर ऊकै ॥ येहो सुजान तुम्हैं लगे प्राण सुपावस यो चपि पावस सूकै । है घन आनँद जीवनमूर धरो चित मैं कत चातक चूकै ३ ॥

स० ॥ बैरी बियोगकीऊकत जारन कूकउठे अचका अधरातक । बेधत प्राणबिनाही कमान सवानसे बोल सो कानहो घातक ॥ सोचनहू पचिये बचिये कित डोलत मोलत लेपसहातक। हेघनआनँद आन छये उत पैड़ परे इत पातकी चातक ४ ॥

स० ॥ पानिय मोती मिलाय पुही गुण पाट पुहीसो जुही अभिलाखी । नीके सुभायक रंग भरी हित ज्योति खरीन परै कछु भाखी॥चाहलै बांधीहै प्रीतिकी गांठसो है घन आनँद जीवन साखी । नैनन पानबिराजत जान जोरावरे रूप अनूप की राखी ५ ॥

स० ॥ परकारज देहको धारे फिरो परजन्य यथा

बिधिहो दरसो। निधिनीर सुधाके समान करो सबहू बिधि सुन्दरता सरसो॥ घन आनँद जीवन दाइक ह्वै कछू मेरियो पीर हियेपरसो। कबहूंवा बिसासी सुजान के आंगन मो अँसुवान को लैबरसो ६॥

स०॥ सामन आमन हेरिसखी मन भावन आमन चोप बिशेखी। छाये कहूँ घन आनँद जानि सँभार की ठौर लै भूल बिशेखी॥ बूंदे लगें सब अंगउदौ उलटी गति आपने पापन पेखी। पौनसों जागति अग्नि सुनी ही पै पानीसो लागति आगिन देखी ७॥

घासीराम कबि॥

क०॥ कैधौंउन बनघन घेरिना घुमाड़ि आये कैधौं कीच भूतल में प्रकटी नहीं नई। कैधौं दबि दादुर रहे हैं डर व्यालके कैधौं पापी पपिहा पियाकी टेरना दई॥ घासीराम कैधौं पिक बाजनको त्रास मान्यो कैधौं वह देशबीर पावसहू नहींठई। कैधौं काम श्यामजूके तनतें निकरि गयो कैधौंमेघ जूझे कैधौं बीजुरी सतीभई १॥

क०॥ कारे कारे घनये दतारे से दबत आवै बोलत नकीब केकी कोकिला प्रमानकी। दामिनकी दमक चमक किरवानन की वानन की बरषा बिरह बुन्द ठान की॥ घासीराम बाजत नगारे भारे मेघ कैधौं कैधौंइन्द्र चाप कीन्हों चढ़न कमानकी। दावन पकरि प्यारी बूझै मनभावनते सावन समूह कैधौं आवन अमान की २॥

क०॥ कैसेधरौं धीर बीर पावस प्रबल आयो छाई हरियाई क्षिति तम बगपातीहै। कोकिल कलापै केकी

चातक चकोर झिल्ली दादुरहू चौंचौं करें शोर दिन राती है ॥ घासीराम राती राती ललन सुहाती मिलि इन्द्र की बधूटी चहुं ओर दरशाती है। नटके बटा सी छटा बिजुरी चमक चारु तड़पि अटासों घटा घसि घसिजाती है ३ ॥

घनश्याम कबि ॥

क० ॥ झूलिबे को रस बस नवल हिंडोरे चढ़ी तासम कोऊ सुर किन्नर असुरकी। कहैघनश्याम अभिराम दृग चंचलसो अंचलउड़त बरनैकोछबि उरकी ॥ ख्याल के मचतही लचत उर बार बार मानो बिपरीतरति सीखबेकों ढुरकी। छहरि छहरि चोटी पीठ पै परत मोटी खोटी के परेते ज्यों चमोटी काम गुरकी १ ॥

चन्द कबि ॥

स० ॥ कूकिहै केकी गिरीनके ऊपर भूपर काम कमान लै झूकिहै। झूकिकै चन्द्र बधूनके बुन्दन फूकिहै मन्द समीरन चूकि है ॥ चूकि है प्राण बिना घनश्याम के श्याम घटा तन देखत हूकि है। हूकिहै दैकै हियो करि टूक अँध्यारी निशा में पिया कहि कूकि है १ ॥

चन्दन कबि ॥

स० ॥ उमड़े नभते क्षिति मण्डल मेघ घमण्डि चहूं दिशि धाय रहे। कबि चन्दन चाव सों चातिक मोर हरे बन शोर मचाय रहे ॥ पिय पावसमें बिरही बनितानमें आवन हारते आयरहे। केहि कारण हाय बिहाय हमैंहरि जाय बिदेश में छाय रहे १ ॥

चिन्तामणि कवि ॥

क०॥ झरपिझरपि झूमिझूमि झरै जलधर तरफि तरफि उठै तड़िता घरी घरी। तैसी अभिराम बाम कामसों लपटि घन चिन्तामणि हेरु बेलि बनकी हरी हरी॥ जकि जकि पापी पिक बकि बकि जोरि जोरि तकि तकि प्यारीकारी सूरति डरीडरी।दौरतिगिरति उझकति झुकि झुकि जाति चौकति चकति चक चौंधति खरी खरी१॥

क० ॥ शरद ससीतें अध ससीकै बचीहों कबि चिंतामणि तिमि हिमि शिशिर झमकतें। मारत मरू कै बची अधिक बसंतहूतें पावक प्रजार बांची ग्रीषम तमकतें॥ आयो पापी पावसये प्राण अकुलान लागे भागेंरी असान घोर घन की घमकतें। तापतें तचौगी जोपै अमिय अँचौगी आली अब ना बचौगी चपलान की चमक तें २॥

क० ॥ चिन्तामणि घनवनबीथिनमें बोले मोर तैसिये रहीहै घटा घनकी उनै उनै। तैसिये भईहै लाल भूमि इन्द्रु बधुन सों बधुन पहिरिलाल चूनरी चुनै चुनै॥ सीरी सीरी तैसिये कदम्बन की बास लैलै बायुबहे लह लही बेलिन हुनै हुनै। झांकिकै झरोखे घरी घरी मुरझाति बाम हरी हरी पेखि अंकुरन की मुनै मुनै ३॥

क० ॥ ओढ़े नील सारी घन घटा कारी चिन्तामणि कुचन किनारी चारु चपला सोहाई है। इन्द्र बधू जुगनू जवाहिरकी जगा ज्योति बग मुक्तान माल कैसी छबि छाई है॥ नील पीत सेत बर बादर बसन तन बोलत सभृंगी धुनि नूपुर बजाईहै। देखिबेकों मोहन नवलनट

नागरकों बरषा नवेली अलबेली बनि आईहै ४ ॥

जीवन कवि ॥

क० ॥ शीतल समीर उरतीर सो लगत अरी हरी हरी बेलिनपै पावक प्रजार दे। दादुरन दूरि करि पिकन पकरि देरी बागन के बाहिर मधुप मोर मार दे॥ पावसमें पिय बिन विपति बढ़ावै ये सुजीवन जिवैबेकी उपाय उपचार दे। दामिनी दबाय दै तू बादर विदा करशी कुन्दन बराजि करि बगन बिडार दै १ ॥

जगेश्वर कवि ॥

क० ॥ बादर पटान कारे सटिल सटान जनु धावत नटाननज्यों बिज्जुसटकानकी।अम्बर अुमटानज्योंलपटत भुजटान देव बिजय निशान बुन्द उदित कटानकी॥ भनै जगेश्वर ऋतु पावस भट जानि यों चातक रटान कूक कोयल हटान की । नद के तटान ओढ़े कुसुमी पटान ठाढ़ी देखत अटान चढ़ी लहरै घटान की १ ॥

जयसिंह कबि ॥

क० ॥ कैधौं मोर शोरतजि गयेरी अनेक भाँति कैधौं उतदादुर न बोलतनये दई। कैधौं पिक चातिक चकोरकहूं मारिडाय्यो कैधौं बकपांति कहूं अन्तरगत ह्वै गई॥ झींगुर झिगारे नाहिं कोकिला बिसारैनाहिं बैन कहै जयसिंह दशोदिशा सोगई। जारिडारे मदन मरोरि डारे मोरसब जूझिगये मेघ कैधौं दामिनी सतीभई १ ॥

ठाकुर कवि॥

क०॥ घनघहरान लागे अंग सहरान लागे केकी कहरान लागे बनके बिलासीजे। बोलि बोलि दादुर निरादरसों आठोंयाम ग्रीषमको देनलागे बिरह बिदा सीजे॥ ठाकुर कहत देखो पावस प्रबल आयो उड़त दिखानलागे बगुला उदासीजे। दावेसे दवेसे चहुँ ओ-रन छपेसे बीर बसिबसि रहनलागे बदरा बिसासीजे१॥

क०॥ कढ़ी दिशि दक्षिण ते घोर घनघटा चढ़ीबढ़ी बिरहीकों दुखदेनको न कमहै। ठाकुर झरोखे ह्वै तनक ताकी तीय कह्यो तूरी ताकिआली या उतंग रंग तम है॥ कह्यो वाहि मेघसों न मानै कहै जानैतू न गरजत आवै या सुजान्यो योगहमहै। हैं न बिज्जुहोत किरवारो दण्डचम चम जीव आनै आवत जमातजोरे यमहै २॥

क०॥ आये से अमल झलाझलऊ के टोपेसे वे बिधि कारीगरने बिचित्र बिसतरे हैं। रंगत गरूरेलाल लहर ललाम लोने छबिकी उमंगन सुहाये जल भरेहैं॥ ठाकुर कहत पूरे पानिपके मेरीबीर सुखमा भरेहै ताते उपमान करे हैं। पावस फकीरके कै मदन अमीरके ये बासन चिनीके नीके ठौरठौर धरे हैं ३॥

क०॥ श्यामघटा देहजाकी दन्त पदश्वेत जाकी पौन पुरवाईकी पुकार दरसतुहै। मन्द मन्द दामिनि मदाइनि की झूल तापै अंकुश छटाननकी कौन सरसतुहै॥ ठाकुर कहत तापै मैन असवार भयो हूलत हैं घरी घरी पौन भरसतुहै। प्रेमको सँघाती साथी बालम

बिदेश आयो छातीपर घूमिघूमि हाथी बरसतुहै ४॥

स०॥ देखि तमाशो दिशा बिदिशा बिरही उर अन्तर कांपतिसीहै। केकीपपीहराकी बरबानि झिल्ली झन- कार कों झापतिसी है॥ ठाकुर ठाढ़ी मनोहर पासकहै बर बाल निशापतिसी है। काम कृशानुकी डोरी चली चपला फिरै मेघन मापतिसी है ५॥

स०॥ सजिसूहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटानचढ़ी घटा जोवती हैं। रँग राती सुने धुनि मोरन की मदमा- ती सँयोग सँजोवती हैं॥ कहि ठाकुर वे पियदूरि बसैंहम आँसुन ते तन धोवती हैं। धनिवे धनि पावसकी रतियां पति की छतियाँ लगी सोवती हैं॥ ६

स०॥ भूमि हरी भईं गैलै गईं मिटि नीर प्रबाह बहा- बहा है। कारी घटान अँधेरो कियो दिन रैनमैं भेद कछू नरहा है॥ ठाकुर भौनते दूसरे भौनलौं जात बनैन बिचार महा है। कैसेकै आवैकहा करै बीर बिदेशी बिचार न दोषकहा है ७॥

तोष कबि॥

क०॥ दोऊ रुख मूल झूल झूल मखतूल झूला लेत सुख मूल कहि तोष भरि बरसात। छूटि छूटि अल- कै कपोलन पै छहरात फहरात आँचर उरोजते उघरि जात॥ रहौ रहौ नाहीं नाहीं अबनाझुलावो लाल बबाकी सों मेरेये युगल जानु थहरात। ज्योंहीं ज्योंमचत लचकत लचकी लौं लङ्क शङ्कनि मयंक मुखी अङ्कनि लपटि जात १॥

क० ॥ ती जनीके रोज सब सजनी गईंरी उहाँ झूल-न हिंडोला ब्रजबाला बीर बर बर । तोष निधि तौलौं उठि धुरवा धरालो धूमि धाराधर धरणि बरसि परो धर-धर॥मोहिंतो कन्हाई करिकामरी बचाय लीन्हों औरसब भीजीं तिन तन होयँ थरथर । ऐसो वदनाउँ यहि गाउँ मोगरीबिनीको देखिसूखी चूनरी चवाउफैलो घरघर २॥

स० ॥ घूमिघटा चहुँघाते उठी चमकाति छटाबरषे घन बाढ़े । भीजत लाल तमाल तरेतहँ आइगई सखि मोमुख काढ़े ॥ कामरी लीन्हों उढ़ाइ तुरन्त लगाइ लियो हियमें कुचगाढ़े । मास छसातक को कहि तोष सु ह्वैगये पूरन आस असाढ़े ३ ॥

क० ॥ मानठानि बैठी वृषभानकी कुमारी तासों हरि मनुहारि कीन्हीं बतियां रसालसों । पौन पिक चातक मयूरसे सहाव सबै रजनी औ सजनी सिखाइ हारीं बाल सों ॥ ताहीछिन तोष घनघटा बरषन लागी चढ़ी चट-कारी छूटिघटा मेघ मालसों । लाल लपटिगई निपटि लपानक ज्यों सोनेकी अमरबेलि लपटै तमालसों ४ ॥

देव कबि ॥

क० ॥ झंझा पौन झूकैलगे अंग सब हूकै त्योंहीं उठत भभूकै पंचबान जूके बानकी । दशौ दिशिहूकै मेघ दौर देतढूकै त्योंहीं चातिक उलूकै मनैदेवना अचान की ॥ झिल्ली गण मूकै चुपहोत जो मरूकै त्योंहीं जलकी कनूकै आन प्यासी होत प्रानकी । गये श्यामजूकै उप-जावैहियेहूकै सखी धुरवाकी धूकैदूजेकूकै मोरवानकी १॥

क० ॥ आईऋतु पावसन आये प्राणप्यारे याते मेघन बरजि आली गरजि सुनावैना। दादुरनि कहिबाकि बकिजिन फोरें कान पिकन हटकि भूलिशबद सुनावैना॥ बिरह व्यथामें मैंतो व्याकुल परीहौं देव जुगनू चमकि चित चिनगी लगावैना।चातक नगावे मोरशोरन मचावैं घन घुमड़ि न आवै जौलौं लाल घर आवैना २ ॥

स० ॥ आजुगई हुती कुंजन लौ बरषै अति बुंदघने घन घोरत। देवकहूं हरि भीजत देखि अचानक आय गये चित चोरत॥ पोटमधू तटबींद कुटी के पटीसों लपेट कटी पट छोरत।चौगुनो रंगचढ़ै चितमैं चुनरीके चुचात ललाके निचोरत ३ ॥

स० ॥ सुनिये ध्वनि चातक मोरनकी चहुँ ओरन कोकिल कूकन सों। कविदेव घटा उनई जो नईबन भूमि भई दल दूकन सों॥ अनुराग भरे हरि बागन में सखि रागत राग अचूकन सों। रँगराती हरी हहराती लता झुकिजाती समीरके झूकन सों ४ ॥

स० ॥ झूलत पाटकी डोरीगहे पटुली परबैठन ज्यों उकरूकी। देवजूदै मचकी कटि बाजत किंकिणी के हर गोलउरूकी॥ सीखन को बिपरीत मनो ऋतु पावसही चढ़ सार सुरूकी। खोटी पटै उचटै तिय चोटी चमोटी लगेमनो काम गुरूकी ५ ॥

स० ॥ झूलन हारी अनोखी नई उनई रहती इतही रँग राती। मेहमें ल्यावै सुतैसिये संगकी रंगभरी चुनरी न चुचाती॥ झूलो चलो हरिसाथ हहाकरि देव झुला-

वतही तें डेराती। भोरे हिंडोरे कि डोरिन छोड़िकै देखहु लाल गरे लपटाती ६॥

स०॥ भूलतिना वह भूलनिबालकी फूलनि भालकी लाल पटीकी। देवकहै लचिकै कटि चंचल चोरी दृगंचलचाल नटीकी॥ अंचलकी फहरानि हिये रहि जानि पयोधर पीन तटीकी। किंकिणीकी भननानि भुलावनि भूकनिसों भुकिजानि कटीकी ७॥

स०॥ प्यारो मनावत प्यारी न मानत बैठिरही करि प्रीतिकी टूटन। कारीघटा घहरानलगी सुउठी तब चौंकि चितै चहुँ खूटन॥ धाय डेराय लगी पियके हियसों कबि देव सुनो सुख लूटन। मानतौ छूट्यो मरू करिकै मनते नहीं छूटति मानकी छूटन ८॥

स०॥ आज अटा चढ़ि आई घटान मैं बिज्जु छटा सी बधू बनि कोऊ। देवतिया कवि देवनाकेती पै एते बिलास हुलासन ओऊ॥ पूरब पूरब पुन्यन तें बड़भाग बिरंचि रच्यो जन सोऊ। जाहि लखैलहु अंजन दैदुख भंजन ये दृगखंजन दोऊ ९॥

द्विजदेव कबि॥

क०॥ धुंधरित धुर धुरवान की सुछाई नभ जलधर धारै धरा परसन लागीरी। द्विजदेव हरी भरी ललित कछारै त्यों कदम्बनकी डारै रसबरसनलागीरी॥ कालिहीतें देखि बन बेलिन की बनक नबेलिन की मति अति अरसन लागीरी। बेगि लिखु पाती या सँघाती मन मोहन को पावस अवातीब्रज दरशन लागीरी १॥

क० ॥ घूमि के चहूंघा धाम आवैं जलधारा धर तड़ित पताके बांके नभ में पसरिगे। द्विजदेव कालिंदी समीपन के नीपन के पात पात योगिन जमातिन सों भरिगे ॥ चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निज निजदांव ठांव ठांवनमें अरिगे। विन यदुराय अब कीजे कहा माय हाय पावस महीपके चहूंघा घेरे परिगे २ ॥

क० ॥ घहरि घहरि घन सघन चहूंघा घेरि छहरि छहरि विष बिन्दुबरसावैना। द्विजदेव कीसों अब चूक मति दावि अरे पातकी पपीहा तू पियाकी धुनि गावैना॥ फेरि ऐसो औसरन ऐहै तेरे हाथ घेरे मटकि मटकि मोर शोरतू मचावैना। हौंतो विन प्राण देह चाहत जोई अब कतहि मरसि तूं अकाश बीच धावै ना ३ ॥

क० ॥ बूझै हून सूझत सुघाट बाट जल थल बिन सी सकल मरयाद सब ठामकी। द्विजदेव देहरीके बाहर धरत पगफेरि सुधि करतन ग्रामकी न ग्रामकी॥ बूड़ति अथाहे कुलधरम निबाहे कौन बावरी बिलोकि यह झूकनि मुदामकी। पावस अँध्यारी हुती ऐसिये डरारी तापै आठोंयाम रस बरसनि घनश्यामकी ४ ॥

क० ॥ कारो नभकारी निशि कारिये डरारी घटा झूकन वहत पौन आनँदको कन्दरी। द्विजदेव साँवरी सलोनी सजि श्यामजूपै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी॥ नागरी गुणागरी सुकैसे डरै रैनिउर जाके संग सोहैंये सहायक अमन्दरी। बाहन मनोरथ उमाहै संगवारी सखी मैनमद सुभट मसाल मुख चन्दरी ५ ॥

क० ॥ कूकि कूकि केकीहिय हूकनि बढ़ावै क्योंन

बिषधर भोजनके अति उतपातीरी । साजि दल बादर डरावने डरावै करै येतो घनश्यामजूके परम सँघातीरी ॥ आजगति एक तोहि बूझन चहति आली द्विजदेवकी सों कछु बूझत सकातीरी । अबला अबल जानि सूनी परीसेज माहिं कैसेछिन जोन्हनकी दरकति छातीरी ६॥

क० ॥ उमड़ि घुमड़ि घन छांड़त अखण्ड धार अतिही प्रचण्ड पौन झूकन बहतुहै । द्विजदेव संथासी कोलाहल चहूँघा नभ शैलते जलाहल को योग उमगतु है ॥ बुधिबल याको सोई प्रबल निशाको मेघ देखि ब्रज सूनो बैर आपनो गहतु है । येहो गिरिधारी राखो शरण तिहारी अब फेरि यहिबारी ब्रज बूड़न चहतु है ७ ॥

क० ॥ लीन्हेलेत ज्ञान कोऊ छीनेलेत आनि वानि लूटेलेत कोऊ हठिलाजके समाजको । द्विजदेव कीसों या अँध्यारी अन्धा धुंधि में कि लेत कोऊ कान्ह सुख सम्पति के साजको ॥ येरी मेरी तोहिजऊ मानिमान दोषतऊ समय बिचारि कीजै ऐसे ऐसे काजको । तोहिं इतमान के अनादरन घेरो इत बादरन घेरोजायजाय ब्रजराजको ८ ॥

क० ॥ दीन्हों मन रंचऊन चीठिन बसीठिनपै कीन्ही कानकानकी न दीन अरजनि में । द्विजदेवकी सों जऊ हारीवे सिखाय तऊ सुमुखि सखीनकी सुनीन बरजनि में ॥ येरी मेरी बीर धीर का बिधि धरैगीहीय चातक चवाइनिकी चोखी चरजनि में । मेचक रजनिमें कदम्ब लरजनिमें सुमेघ गरजनि में तड़ित तरजनिमें ९ ॥

क० ॥ चूनरी सुरंग सजिसूहो अंग अंगन उमंग-

नि अनंग अंग अंग उमहत है। झुकि झुकि झाँकति झरोखनतें कारीघटा चौहरे अटापे बिज्जुछटासी जगत है॥ द्विजदेव सुनि सुनि शवद पपीहनके पुनिपुनि आनँद पियूषमें पगतहै। चावन चुभीसी मनभावनके अङ्क तिन्हें सावनकी बूंदें ये सुहावनी लगतहैं १०॥

क० ॥ सावनके दिवस सुहावने सलोने श्याम जीति रति समर बिराजै श्यामाश्याम संग। द्विजदेवकीसों तनु उबटि चहूँघा रहोचुम्बनको चहल चुचात चूनरी को रंग॥ पतिपटताने हरषाने लखै लपटाने उमहि उमहि घनश्याम दामिनीको ढंग। रतिरन भीजे पैन मैन मद छीजे अरु रसबस होतऊ न तनक पसीजे अंग ११॥

क० ॥ सावनके व्याजआज आईं गांवगांवनते आवनते लेने छरीकरन प्रसूनकी। गुरुजनहून गूढ़गुणन रिझावै तहाँ गोरी गुणवती गाय तानै टाहदूनकी॥ द्विजदेव साजै सबै अंगन सुरंग चीर झालरै झमाकैलगी कार नखतूलकी। इन्द्रके बधूनकी सुदेखी छबितूने इत दूनी छवि देखुरी गोबिन्दकी बधूनकी १२॥

स० ॥ होते रहे नवअंकुरकी छबिछाँह कछारन में अनियारी। त्यों द्विजदेवकदम्बन गुच्छन येई नये उनये सुखकारी॥ कीजिये बेगि सनाथ इन्हें चलिये बनकुंजन कुंज बिहारी। पावस कालके मेघ नये नवनेह नई वृषभान कुमारी १३॥

स० ॥ ह्वै धुरवा धुरवारे अली द्विजदेव चहूँ दिशि दौरत ह्वैहैं। त्यों मनमत्त सखापै शिखी मनमोहनऊको बिलोइत ह्वै हैं॥ पावस काल करालहहा क्षणएकहू

संग न छोड़त ह्वै है। फूलसेवे अंगपीउके हायघनीघन चोटन ओड़त ह्वैहै १४ ॥

स० ॥ घूमिघने घुमड़े घनघोर चहूँ चढ़िनाचतमोर अटारी। त्यों द्विजदेव नई उनई दरशाति कदम्बनिकी छबिन्यारी ॥ चूनरीसी क्षिति मानो बिछी इमि सोहति इन्द्रबधूकी कियारी। काहिन भावति ऐसी समय ठकुराइनि या हरियारी तिहारी १५ ॥

स० ॥ चढ़ि चारु अटापै घटान बिलोकत साथ सखीनके गायरही। द्विजदेवजू औचकदीठि कहूं मन भावन ऊपरजाइ रही ॥ लखि लालनके करचंपकली गहिचंपकली सकुचाय रही। धरिऔरई की जनुदेह धरीक दरीचिकामें मुरझायरही १६ ॥

द्विज कबि ॥

क० ॥ नाचत कलापी जूह संगलै कलापिनिको झिझिनकी भीर झनकार कै जमकरही। दादुर करत शोरघोर चहुँ ओरनिते देखबकपांति बिरहीनको धमक रही ॥ द्विज कहै एरी कैसी समय सुहावनि है मोहन सों मिलि लखि लतिका लमकि रही। छाइछाइ मेघ रहे छावनि सों ब्योम माहिं धाइ धाइ चहूँओर चपला चमकि रही १ ॥

क० ॥ बरषै पुनरबसु धरा है उदार जहँ इन्द्रगोप गोपिकाली फिरै घूमिघूमिहै। द्विज हरषावै पयपावै चहुँ ओरनते अम्बर सुहावै सिखिआवै जूमिजूमिहै ॥ चपला सहित बसुयाम जामें घनश्याम गाति अभिराम अति

चलै भूमि भूमि है। चहुँघा तमाले है कदम्बताले दीन-
द्याल पावस रसालेके बिशाले भूमि भूमि है २॥

स०॥ घेरि घटानतें आयो उनै धुरवान की डोरन
लागी कगारन। मोरनके गण शोर करै चहुँ ओरतें
चातिक लागे चिकारन॥ ऐसी समै छवि देखिबेकों
द्विजतुहूं चलै किन दौरि अगारन। भूलत हेम हिंडोरन
में दोऊ कालिन्दी कूल कदम्बकी डारन ३॥

दीनदयाल कबि॥

क०॥ केकिन के नाचगान कुहूकूक कोकिल की
रटनि पपीहराकी नाम धुनिठानीहै। बुन्दनके पात अलि
लोचनश्रवतजातजात तृण जातपुलकावलिनिशानीहै॥
मालहै बिशाल वक पांतिन की दीनद्याल वारिवाह नये
वृन्द बन्दना बखानीहै। झलाझल झल चपला की
द्युति ध्यानभई पावसन होय भक्तिकला प्रकटानीहै १॥

क०॥ घनकी घनक घन घटा घनकत आली
दामिनि दमक देत दीपक प्रकाशहै। बुन्दनके फूल
जाल धनुलै बिशाल माल आये झुकि मेघ सो प्रणाम
को हुलासहै॥ मोरनके शोर चहुँओर बिनय दीनद्याल
पवन झकोर जोर करै आस पासहै। पूजन करत प्रीति
रीति प्रकटाय यह पावस न होय परमेश्वरको दासहै २॥

दिवाकर कबि॥

क०॥ आयो ऋतु पावस मुरेर मेरु बोले मोर
धुरवा धुँधार बुन्दबारिके झरै लगी। भनत दिवाकर
सुरेश चाप ऊगे व्योम दादुर दुराजसी अवाज करै

लगी ॥ झाड़ झाड़ बात घहरात घन घोर शोर चातक की शोर चहुँ ओर बगरै लगी। झिल्ली झनकार बक पाँतीहहकारसुनिनेकुनासोहात आलीअंगथहरैलगी १॥

क० ॥ कैधौं वह देश शेष दादुर चवाइ डारे कैधौं शैल शिखर शिखीन बैठि बोलैना। भनत दिवाकरकी इन्द्रके न देश वह धारामें न धार जल गान वह टोलै ना ॥ झिल्लीगण मूकभई शबद सुनावै नाहिं बिपिन बिहंग संग करत कलोलैना। ऐसेसमय दुन्दमोहिं बुंदन उठाय हाय पावस निशानो श्याम आवतअबोलैना २॥

क० ॥ झमकि झमकि झूलि रागकी सिखति रीति छहरि छहरि बुन्द गिरत अकाशते। भनत दिवाकर करत मोर शोर बन बिहरै बहूटीबीर मेदिनी हुलासते॥ चातक चवाई चाई सुरति बढ़ावै चाव चूनरि सुरंग रंग बासीहै सुवासते। सावन सिरायो मन भावन न आयो आली कादर करत कारे बादर प्रवासते ३॥

क० ॥ लटकि लटकि मेघ बारि झहरन लागे तड़पिं तड़पि बिज्जुकरै रव घोरि घोरि। फैली हरियाई नीर बिहरि बहूटी बार बापी सर सरिता करार जल छोरि छोरि॥ भनतदिवाकर बरस बायुझूंकि झूंकि झंकिझंकि बिपिन बिटप देत झोरि झोरि। वोही काल बाल ब्रज सांवरो पिया के सेज कुच चुभुकाति मुसुकाति मुख मोरि मोरि ४॥

क० ॥ पालेंगे शचान पिक कोकिल हिवान हेतु बेनीको लुराइ गाड़ दादुर लुकावैंगे। भनत दिवाकर सुरज शीशफूल ज्योति आहर सुखाय जिव भूमि प्रफु-

लावेंगे ॥ बिरह दवारि ज्वाल पेड़पात जारिडरे बार बग-
राइके अधार लजवावेंगे । इंधन उसाल लुक पावन
प्रकाश करि प्राविट प्रबल तोको ग्रीष्म बनावेंगे ५ ॥

क० ॥ पवन वजीर वीर दादुर सिपाही सब पावस
मुसाहिब पयोद राखे तम्बू तानि । भनत दिवाकर द्विरद
शोर घोरघन चपला निशान साजधनु इन्द्र किरपानि ॥
बरही सवार बक पांति हहकार पिक चारण पुकार बोले
वीर रस जूह बानि । बूझिके विहाल बाल आयो रति-
नाथ सेन कादर कियेहैं ब्रजनाथ बिन सूने जानि ६ ॥

क० ॥ पीउ पीउ रटत पपीहा ऋतु पावस में दादुर
पुकार सों नचांची कुल चादरन । कोकिल की बोलन
मयूर मेरु नृत्यनसों झिल्ली झनकार सुनि भयोजिव
कादरन ॥ होतो यहकाल आली आलजो दिवाकरजूहाव
भावकरतोकलोल अति सादरन । जाइवहदेशकोवसतहैं
हमार लाई रोजरोज बिरह बढ़ावै बैरी बादरन ७ ॥

क० ॥ सरिता कलोलकरे बनिता हिंडोल धरे चपला
चमक चहुँओरनभ दौड़ौना । लता लपटत तरु संगन
चलत मरु मुरवा रहत हरुनेकु संग तोड़ौना ॥ भनत
दिवाकर समुद्र ग्राह मड़ो कच्छ अच्छत प्रतच्छ प्रीति
राखतहे थोड़ौना । सावन भयावन अँधेरी रैनि भादौं
कान्ह रहैगी अकेली भौन राधेसंग छोड़ौना ८ ॥

क० ॥ भादौं की अँधेरी धुरवाकी लटकेरी पाक
शासनकरेरी क्षणक्षण छोड़ेबानरी । बोलत भयानभोगी
वासना तजत योगी पतिसे बिहीनना सोहात खान
पानरी ॥ भनत दिवाकर करार दरियाव छोड़ीनाव केन

वाह बादशाह छोड़े शानरी । पावस प्रबल मेरे पियको छोड़ाय दीन्हों दोषन बिदेशीकरे कैसेके पयानरी ९ ॥

क० ॥ श्यामसम बादर तड़ित पीत चादरसे आदरसे बातलगे मीठी घन घोरसे । छाती बनमालसे लसेहैं धनु देवराज मोतिनकी पाँतिबक बंशीटेर मोरसे ॥ भनत दिवाकर सुआनन निशाकरसे हीरनसे जुगनू धमारनके शोरसे । ऐरे पापी पावस अमावस की राति अस कस अनुहारि पिय तोरे मन चोरसे १० ॥

क० ॥ बूढ़केबढ़तकाम पावससुखद धाम मेघ अभिराम श्याम छक व्योम उसके । भनत दिवाकर बिहंग चोचा खोता लाइ करत बहार सुलहार लेत सुखके ॥ देखि हरियाई भूमि गाइन हुलास होत रागकी प्रकाश वो बिकाश कास कुसके । कुचसहरात घहरात घनछिन छिन धनधन आलीयह कौन चालीरुसके ११ ॥

दत्त कबि ॥

क० ॥ डोलै पौन परसि परसि जल बुंदन सों बोलै मोर चातक चकित उठी डरिमैं । कहांलौ बराऊं दई मारे मैन बाणन सों थकिरही केति कौ उपाय करिकरि मैं ॥ दत्त कबि प्यारे मन मोहन न पाऊँ कहौं मन समझाऊंरी कहांलौं धीर धरिमैं । छाये मेघ मगन सुहाये नभ मण्डलमें आये मन भावन न सावनकीझरिमैं १ ॥

दिनेश कबि ॥

स० ॥ हाँसीगई उड़ि हंसिनिसी रहे नीरजसे दृग नीरहि ग्वैके । दामिनीसी थहरैज्यों जवास जरै जोपरै

घनते रसव्वै के ॥ चातक आनन पीउररै घनश्याम दिनेश घनी छबिछ्वै के । भावनतेरे न आवन सो वह सावनमें रहीसावन ह्वैके १ ॥

स० ॥ भूरि भुजंगनि खाइकै नीके अघाइकै मोरनि जाहि बढ़ाई । त्यों बिषधारी बिमोहनकी सब रीति जिन्हैं सुखपाइ पढ़ाई ॥ देखि दिनेश मयूरके पक्ष ये होहि न क्यों ब्रजको दुखदाई । आली इतेपर आदर कै जिन्हैं साँवरे बावरै मूड़ चढ़ाई २ ॥

स० ॥ आगि बियोगिनि के हियमें उदगारि पजारि लई छबिछीनी । नौलनिके मनको बहकाइ बस्याई हरी जिन लाज नवीनी ॥ देखि दिनेश ये दादुरटेरि हठीलिनको करै मान बिहीनी । बोलत जोई सोई बिनु जीभ भली भई जो बिधि जीभ न दीनी ३ ॥

क० ॥ कौन उबटैहैरी अन्हैहै बारिजो अमल कौनि अंग अंग अंगरागहि लगैहैरी । कौन दृग आँजैसाजै भूषण बसनबीर तायो तन औरऊ अतन ताहितैहैरी ॥ आलिनके संगम दिनेश गान धुनि सुनि रहैगी न धीर उर पीर अधिकैहैरी । नाहक न मोसों हठकरै टरै ह्यांते निज बरहै न भोन बर भोन कौन जैहैरी ४ ॥

दयाराम कबि ॥

क० ॥ घूमत घुमड़ मतवारे से महान घन घूमत नगारे ज्यों धुकार धुनि सों मढ़े । धुरवा धमक अद्भुत से तमक उठी दामिनी दमक चारु ओर असिसे कढ़े ॥ ऐसी सुधि पावस प्रबल दल दयाराम आयो बिरहीनपै

अतंक अतिही बढ़े। बरषा लगीरी बाम बान बरषासी होन करखा से पढ़त मयूर गिरि पै चढ़े १॥

दौलत कबि॥

क०॥ आई ऋतु पावस पपीहाबोलै दादुरये छतियां दरत तापै बिरह मदी करै। दौलत कहत हाल सुन्दर सरस बाल लाल मणि भूषण बिशालन रदी करै॥ चहुँ ओर चमकत चपलन चोक चारु देखि देखि मृगनैनी नैनन नदी करै। बिरहिन तियनके जीयन के ग्राहक ये नाहबिन नाहकबलाहक बदी करै १॥

धीर कबि॥

क०॥ पावस में नीरदै न छांड़ै छिन दामिनिहू कामिनी रसिक मन मोहन को क्योंतजै। अचला पुरानीपुलकावलीको आनी उरधाय रजवती सरिसिंधुसंग कोतजै॥ नीरकोनपुंसक कहत कबिधीर सबै होयकै अधीरतेऊ नारीनारी कोभजै। कुसुमित लतालखो लपटी तमालनसों लालन सों कहो ऊधो क्योंन अजहूंलजै १॥

धनसिंह कबि॥

क०॥ मोरही चलत परदेश प्राण प्यारे सुनि मेरो दुख धाइ आइ गगन घनछाये हैं। बूँदऊ न छूटे लाल चलबे को ऊटै त्यों त्यों मेरो प्राणहूटै अब क्यों नभ्करि लाये हैं॥ कहै धनसिंह महा बारिद से देखियत बारि तनु देत तौ क्यों बारिद कहाये हैं। संकट सहाये काम एकऊन आये हाइ गरजन आये मेरीगरजन आयेहैं १॥

नागर कवि ॥

क० ॥ बैठीहैं हिंडोरे बीच तखतसुकंचनके जेब सरदारीकी मजेजन भुलावही। दुहूँ ओर चँवर डुलावे सखी चौरदार सायवान संग सों झुकायेही झुलावही ॥ खुले बार हारन जवाहिर हू जगमगात देखै सोहैं लाल ठाढ़े डीठिन डुलावही। नागर सुगंधकी झकोर उठै पैंग संग झूलै श्यामासाहिब मुसाहिब झुलावही १ ॥

क० ॥ यमुनाके तीर भीर भईहै हिंडोरनापै दूरहीतें गह गही गति दरसत है। गान धुनि मन्द मन्द आवतिहै कानन में बीच बीच बंशी धुनि प्राण परसत है ॥ देखि कारे द्रुमन लतान मांझ दामिनि सी पट फहरात पीत शोभा सरसत है। हाहा चलि नागर पै हिय तरसत आली आजु वा कदम्ब तरे रँग बरसत हैं २॥

स० ॥ गरजे घन घोर घटा घुमड़ी जबते बिरहा जु भयो सरजी। सरजीव भयो मृग दादुर चन्द लिये रति नागरकी मरजी॥ मरजीजो उठी पिककी ध्वनिलै चपला चमकै न रहै बरजी। बरजी बरजी जियको सजनी भयो चातकमो जिय को गरजी ३ ॥

नन्दराम कवि ॥

क० ॥ देखो नन्दराम यह पावस समाज जोरि आइगो मनोज महि मण्डल समातना। देखुरी घटा का घेरके रहो कटाका साज याहू ते घटाका जौन जीव न देखातना। झटको पटाका सुनि छाती में छटाका छत होत है झटाका हितटाका दरशातना। जायहै अटान

प्राण देखिकै अटाका रूप बिद्युत छटाकारी चटाका सहि जातना १ ॥

क० ॥ चंचला की चमक चहूँघा चोख चायन सों चाहि चाहि चित्तमें कृपाण चोट कै रहै। इन्द्रको शरासन शरासन सरसबान बुन्दके बिधान न बिनोदन बितै रहै ॥ कहै नन्दराम तैसे चातक चकोर जोर बोलि बोलि बरही बलाके बिषबै रहै । आदरकै राखौ मान कैसेहू कि नादर लै यमके बिरादर ये बादर उनै रहै २ ॥

क० ॥ मालती बितान पर भौरन निवास कीन्हों मद मतवारे मृन्दमन्द सुरगावही। कहैनन्दराम जोर मोरनको शोर सुनि उरमें दरार होत झिल्ली झहरावही ॥ नद उफनात नदी नारनको जात घन घूमि घहरात नयेनेर नीर आवही । नज्जलन देखियत सज्जल जलद कारे कज्जल गिरीश कारे उपमा न पावही ३ ॥

स० ॥ सोइ गई पछिरातमें आजुतही मन मोहन आय गयोरी। तौलौघनेरी घटा लखिकैइन मोरनशोर मचाइ दयोरी ॥ ऐसो बियोग दयो बिधना साखि सपनेहून संयोग भयोरी । कासोंकहा कहिये नँदराम भयो उर सौगुनो शोच नयोरी ४ ॥

नेही कबि ॥

क० ॥ टूटे फूटे घनगज घेरिघेरि रोकैबाट-उड़गण संग सेना अनगन लीनीहै । योगिनी लुटेरे दियाबारि घर घर पैठे घट घट मांझ आगि फूकि फूकि दीनीहै॥ झिल्लीगण चातिक जिहर झनकारनेहो तुमबिन गोपिन

की सुधिबुधि छीनीहै। सूनोजानि सदन सिधारे श्याम द्वारका को शशि आनि ब्रजपर रति बाहकीनीहै १॥

नारायण कवि॥

स०॥ झिल्लिन की झनकार बढ़ी मद माते मयूर महा धुनि टेरत। देत दोहाई मनोज वहादुर दादुर ढूंढ दिशान दरेरत॥ ऐसे मैं कैसी भईहै नरायण नेक इतै न चितै हँसि हेरत। बिज्जु छटा उछटेरी पटासम देखि अटा तें घटा घन घेरत १॥

नाथ कवि॥

क०॥ उमड़ि घुमड़िघन कोपिआये कामदल गर-जत गगन नगारनकी धमकै। कारे पीरे राते धौरेघूमरे सेबादरेपै वरषतसरहोत बुंदनकी झमकै॥ उठेबग पांति पांति उड़त पताके ध्वज दामिनिकी दमकनि खुले खर्ग चमकै। नाथये असाढ़ गाढ़ राढ़सी मचाई देखो नंदके कुमार विन सकै कौन कमकै १॥

क०॥ उमड़ि घुमड़िघन घोरचहुँओरशोरसुनि खग धुनि सुधरहत न गेहकी। हरीजल भरीभूमि झूमिरही द्रूम घूम लता लपटानी तापै झलकन मेहकी॥ ऐसेमें पयान ठान कौनसों सयाननाथ जानत जहान बनीसैना है बिदेहकी। दमकनि दामिनीकी चमकनि कामिनीकी झमकनि बुंदन की जमक सनेह की २॥

क०॥ कूकन मयूरन की धुरवाके धूकनकी झूकन समीरनकी खसनप्रसूनकी। दमकनि दामिनिकी भामिनि की रमकनि झमकनिनेहकी करोर रतिहूनकी॥ नाथकी

सों मानन की भौंके चढ़ि जानन की हँसि हँसि भुकि भुकि ताननदुहूंनकी। उड़न दुकूलनकीछबि भुज मूलन की काम मनहूलन की भूलन दुहूंनकी ३॥

क० ॥ प्रथमहि पावसको आगम बिलोकिनाथतड़पि तड़पि उठै दामिनी अचानकी। ठौरठौर झींगुरन झनकिं झनकि बोलै द्रुमनकी डोलैडार पवन ढरानकी॥ मोरनको शोर सुनिउठैहै भभकिकाम कौन चतुराई सुधि करत पयानकी। घहर घमंडै घेरि घेरि महि मंडै तैसी आवत प्रचंडै ये उमंडै बदरान की ४॥

क० ॥ न जानै वहि देश घन घटाना घुमड़ि आवै न जानै वहि देश मेघवा नरेश मरिगयो। न जानैवहि देश मोर चातक न करत शोर न जानै वहि देश पापी पपिहा जरिगयो॥ न जानै वहि देश रस बातहू न जानै कोऊ न जानै वहिदेश रसमदन मान सरिगयो। न जानै वहिदेश ज्ञानरच्यो ना बिधाता नाथ न जानै वहिदेश ज्ञान ज्ञानिनको हरिगयो ५॥

क० ॥ सावनके मास मनभावनके संग प्यारी अटा परठाढ़ी भई घटा अँधियारीमें। दामिनीके धोखे चक चौंधे दृग कविनाथ छबिनसों मुरिदुरै पिय अंग वारी में॥ कोटिरति वारौं ऐसी राधाजूके रूपपर रम्भा रंक कहा शंक शचीके निहारीमें। पागिरही रस जागिरही ज्योति लाजनि में नेह भीजो वेह मेह भीजो श्वेत सारीमें ६॥

नवीन कबि॥

क० ॥ दामिनी दमंकन तें भिल्ली की भमंकन तें

दादुर अशंकन ते उमग उई परे। बादरते वनते बहार बरहीतेबेस बेलिन ते फूलनते फहरि फुही परै॥ जलकी जलूसजेब योवन जमाजमते जुगनू जमक हरियाईते हुई परै। पोहसी पहारनते पारावारपारनते पौनते नवीन ऋतुपावस चुई परै १॥

निधान कबि॥

क०॥ लगी सो लगाईलङ्क खेहनि खराबकरौमारि करौ मोरन अहार मारजारे को। सुकबि निधान कान आँगुरिन मूंदि मूंदि सुनिहौ न घोरशोर झिल्ली झन-कारेको॥ भेकनकीभीरसहसानन मिटायडारौ मेटिडारौ गरब गरूर घनकारेको। पाऊँ जो पकरि कहूँ जालसों जकरितन फीहा फीहा करौ या पपीहा दईमारेको १॥

निहाल कबि॥

क०॥ जौलौं हौंन बोली तौलौं चातक मयूर बोले मानकी सरोर नैनकोरऊ न खोली मैं। खुलि रही खूब खुशबोईकी लहरि लाल शीतल समीर डोलै तनको न डोलीमैं॥ सुकबि निहाल मैन मनमें उमगि आयो फूलि उठे फरकि उरोज युग चोलीमैं। कूकि उठी कोयल कसायनि कहूंते आइ देखि घनश्याम घनश्याम तो-सोंबोलीमैं १॥

नीलकण्ठ कबि॥

क०॥ योबन प्रवेश में बिदेश मधुसूदनजी निपट अँध्यारी कारी सावनकी यामिनी। एकटक रटत पपीहा

पिक नीलकण्ठ हियो चमकत दमकत जब दामिनी ॥ सूने सेज मंदिरमें सुंदरि विसूरेंबैठी प्रीतम सुजान बिन कैसे जियै भामिनी । नैन भरि भरि ढरै मुख हरिहरि करै उझरि उझरि परै कामभरी कामिनी १ ॥

नन्दलाल कवि ॥

अमित शिखंडिनकी मण्डी धुनि मण्डल में झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापैरी । चंचलकै चपलाचमंकै चण्ड चारोंओर चातक चुनौटी पीवपीवहि अलापैरी ॥ कहै नन्दलाल गाढ़ अगम असाढ़ आयो दादुर दरेरन की दरत दरापैरी । एरी उर कांपै प्राणनाथ कुबजापै अब कौन सहै दापै धुरवान की धरापैरी १ ॥

स० ॥ छायकै प्रेम गये जबते तबते मैं बची करि कोटि उपाय कै । पायकै पावसरी ऋतु सो अबको बचि हैउठि कोकिल गायकै ॥ गायकैसोनँदलाल कहै चपला चमकै चहुंओर सो आयकै । आयकै हाय मिले नहिं मोहन मेरी अटापै घटारहीछायकै २ ॥

पद्माकर कवि ॥

क० ॥ चंचला चमंकै चहूंओरनते चाह भरी चरज गईती फेरि चरजन लागीरी । कहै पदमाकर लवंगन कीलोनी लता लरजिगईरी फेरि लरजन लागीरी ॥ कैसे धरौं धीर बीर त्रिबिध समीर तन तरजि गई ती फेरि तरजन लागीरी । घुमड़ि घमण्ड घटा घनकी घनेरी अवै गरजि गईतीफेरि गरजन लागीरी १ ॥

क० ॥ बरषत मेहनेह सरसत अंग अंग झरसत

देह जैसे जरत जवासो है। कहै पद्माकर कलिन्दीके कदम्बनिपै मधुपन कीन्हो आयमहल मवासोहै ॥ ऊधो यह ऊधम जनाय दीजो मोहनसों व्रजसो सुवास भयो अगिन अवासो है। पाल की पपीहा जल पानको न प्यासोकाहू व्यथित वियोगिनिके प्राणनको प्यासोहै २॥

क० ॥ मल्लिकन मंजुल मलिंद मतवारे भये मन्द मन्दमारुत मुहेम मनसाकीहै। कहै पद्माकरते निनद नदीन नित्त नगर नवेलिनकी नजर नसाकीहै ॥ दौरत दरेरो देत दादुरसे द्वन्दै देह दामिनी दमंकनि दिशानमें दसाकीहै। बद्दलनि बुंदनि बिलोकि बकुलान बाग बङ्गलनि बेलिन बहार बरषाकीहै ३ ॥

क० ॥ कम्पूबन बागनकदम्ब कपतानखड़े सूबेदार साहब समीर सरसायेहै। कहै पदमाकर तिलंगी भीर भंगन की मेजर तमूरची मयूरगुन गायेहै ॥ काहटकरै है घरराहट अटाननकोयेही अरराहट अरावनकोछायो है। मानमुख भंगी सफजंगी ये निसंगी लिये रंगी ऋतु पावस फिरंगी बनिआयेहै ४ ॥

क० ॥ फूलनके खम्भा पाटपटरी सुफूलनकी फूलन के फंदमें फंदेहै लालडोरेमें। कहै पदमाकर बितान तने फूलनके फूलनकी झालरयों झुलति झकोरेमें ॥ फूल रही फूलन सुफूल फुलवारी तहां फूलईके फरश फबेहैं कुंज कोरेमें। फूलझरी फूलभरी फूलजरीफूलनिमें फूल ईसी फूलति सुफूलके हिंडोरे में ५ ॥

क० ॥ फूली फूलबेलीसी नवेली अलबेली बधू झूलति अकेली कामकेली सी बढ़तिहै। कहै पद्माकर

झमंककी झकोरन सों चारों ओर शोर किंकिणीन को मढ़तिहै॥ उर उचकाय मचकीनकी मचामचसों लंकहि लचाय चाय चौगुनी चढ़तिहै। रति बिपरीतकी पुनीत परिपाटी मनो हौसनि हिंडोरे की सुपाटीमें पढ़तिहै ६॥

क० ॥ भौंरनको गुंजिबो बिहार बन कुंजन में मंजुल मलारनको गावनो लगतहै। कहै पदमाकर गुमानहूमें मानहूमें प्राणहूते प्यारो मनभावनो लगतहै॥ मोरनको शोर घनघोर चहुँओरन हिंडोरन को वृन्द छबिछावनो लगतहै। नेह सरसावनमें मेह बरसावनमें सावनमें झूलिबो सोहावनो लगतहै ७॥

क० ॥ तीर पर तरणि तनूजाके तमालतरे तीजकी तयारीताकि आई तखियानमैं। कहै पदमाकर सो उमगि उमंग उठी मेहँदी सुरंगकी तरंगनखियानमें॥ प्रेम रंग बोरीगोरी नवल किशोरी भोरी झूलति हिंडोरेयों सोहाई सखियानमें। कामझूलैउरमैं उरोजनमैं दामझूलै श्याम झूलै प्यारीकी अन्यारी अँखियानमैं ८॥

क० ॥ गायहौं मलारै भुज नाइहौं हियेमें छबि छाइ हौं छिगुन कुंज कंजहीके कोरेमें। कहै पदमाकर पियाय हौं पियाला मुख मुखसों मिलाइहौं सुगंधके झकोरेमें॥ नेहसरसाइहौं सिखाइहौं जो सावनमें पाइहौं परीसोसुख मैनके मरोरेमें। उर उरभाइहौं हियेसों हीयलाइहौं झुलाइहौं कबधौं प्राणप्यारी को हिंडोरेमें ९॥

क० ॥ सावन सखीरी मनभावन के संग बलि क्यों न चलि झूलति हिंडोरे नवरंगपर। कहै पदमाकर सुयोबन तरंगनिते उमगि उमंगनअनंग अंगअंगपर॥

चोखी चूनरीकी चारोंतरफ तरंग तैसी तंग अँगिया है तनी उरज उतंगपर। सौतिनके वदन विलोके वदरंग आज रंग हैरी रंग तेरी मेहँदी सुरंगपर १०॥

क० ॥ चूनरी की चहक चमक चारु चोपनकी चुरियाँ की चुहुरि चितौंनि चख चोरेकी। कहै पदमाकर मनोज मदमाती मंजु मेहँदी की महक मजेज मुखमोरे की ॥ गोला गरब गंजन गुलाई गोल गालन की गहगही गालिब गोराई गात गोरेकी। हरित हराकी हीर हारकीहमेलहूकीहलनिहियोईहरेभूलनिहिंडोरेकी ११॥

स० ॥ सावन तीज सुहावन को सखि सूहे दुकूल सबै सुख साधा। त्यों पदमाकर देखे बनै न बनै कहते अनुराग अगाधा ॥ प्रेम के हेम हिंडोरन में सरसै बरसै रस रंग अबाधा। राधिका के हिय भूलत श्यामसो श्यामके हिय भूलति राधा १२ ॥

स० ॥ कंचन खम्भ कदम्ब तरे करि कोऊ गईतिय तीज तयारी। हौंहू गई पदमाकर त्यों चलि औचका आइगो कुंज बिहारी ॥ हेरिहिंडोरे चढ़ाय लियो कियो कौतुक सो न कह्यो परै भारी। फूलनवारी पियारी निकुंज की भूलन है ना वा भूलनवारी १३ ॥

स० ॥ साँवरी सारी सखी सँग साँवरी साँवरे धारि बिभूषणधैके। त्योंपदमाकर साँवरेई अँगरागनि आँगी रची कुच द्वैके ॥ साँवरी रैनिमैं साँवरियै घहरै घन घोर घटा क्षिति छ्वैके। सामरी पामरी की देखुही बलि साँवरे पै चली साँवरी ह्वैके १४ ॥

स०॥ अंगन अंगन माहिं अनंगके तुंगतरंग उमा-

हतआवै । त्यों पदमाकर आसहू पास जवासनके बन दाहत आवै ॥ मानवतीन के प्राणन में जुगुमान के गुंमज ढाहत आवै । बानसी बुन्दन के चदरा बदरा बिरहीन पै बाहत आवै १५ ॥

पजनेस कवि ॥

क० ॥ पावस बिबश निशि बासर निशासे भासेभन पजनेस देश देशान सँवारेसे । धूम रंगधारेधारे धराधर शृंगन पै धावत अधर धूर धुंधगतवारेसे ॥ छुटे बाद-बानिन बिलंद ज्यों जहाज मानो आवत हिलत नित नेह नदवारे से । होती घनी घूमै धरा धरणि की घूमै घेरि घेरि घन घूमै झूमै गज मतवारेसे १ ॥

क० ॥ घुमड़त घुमड़ि घुमड़ि घनआये घने तरु-गन पक्षी चढ़ि तड़फन सोहैं ये । झझकत झंझाके प्रझंझा झूमि झूमनिमें झुमक झरानेझीने झिनझिन सोहैंये ॥ पूछतअगस्तको उदोतजानि पीतमको पजनल-खिअंकुर अनेकउकसोहैंये । सिंधुतासों दाबिदेखु दशहू दिसो हैं आज बादरा बिसोहै बरसो हैं सोबिसोहैंये २॥

क० ॥ दिनना घरीको घनघेरि घहरान लागे अवनि अँधेरी कैहै आभा इन्दरनकी । पथिक थोरोही थोरी उमिरिअकेलीबीर अकुलाइ नाहींगहोगैल कन्दरनकी ॥ द्रुमन लतान में दिखात ये नजीकही से दुरिदूरिताई श्वेतताई मन्दिरनकी । कबिपजनेस कोसे दाहिने दुवोंसे कोसे डगर नगीची बीच बाधा बन्दरनकी ३ ॥

क० ॥ बोरै भूमि मण्डल मरोरै मौर भूधरन चोरैबारि

धाराधर धरनकी वरषान।झंझाकी झकोरै झिल्ली झन-
कन झीनझीन झनन झनक झलहायन पकरि पान ॥
पजनेस जीवन सजीव निरजीवजीव मेडुक डेरावै डिर
डिर करि मोदमान। केहै कहै केकीकोहै कहै काकपाली
कहैं चातकी सखीय पीयु प्यारीके बचैहैप्रान ४ ॥

प्रताप कबि ॥

क० ॥ आयो ऋतुपावस प्रताप घनघोर भारी सघन
हरीरी वन मण्डन बढ़ायेरी। कोकिल कपोत शुकचातक
चकोर मोर ठौरठौर कुंजनमें पक्षीसब छायेरी ॥ यमुनाके
कूल औ कदम्बनकी डारनपै चारोओर घोरशोर मोरन
मचायेरी। येरीमेरी बीर अब कैसेकैमें धीरधरौं आये
घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी १ ॥

क० ॥ श्वेत श्वेतबकके निशान फहरानलागे ईंचि
ईंचि चपला कृपाण चमकायेरी। घहर भुशुण्डी की
अवाजसी करन लागे बुन्दन के झरनन झींने झरि
लायेरी ॥ भनत प्रताप रति नायक नरेशजूने धीरगढ़
तोरिवेको पावस पठायेरी । येरीमेरी बीरअब कैसेकैमें
धीरधरौं आये घनश्याम घनश्याम नहिं आयेरी २ ॥

परमेश कबि ॥

क० ॥ पौन हहराई वनबेलि थहराई लहराई वन
सौरभ कदम्बनकी सानते। झिल्ली झननाई पिकचातक
चिचाई उठै बिज्जु छहराई छाई कठिन कृपानते ॥ कहै
परमेश चमकत जुगुनू नचाय मेरे मनआई ऐसी उक्ति

अनुमानते । बिरही दुखारे तिनपर कूर दईमारे मानो मेघ बरसत अँगारे आसमानते १ ॥

क० ॥ घनकी घनक औ बनक बकपांतिनकी बीजुरी चमक करबालसी देखातरी । ललित लतान लखियतुहैं नदान औरकहै परमेशत्यों बहुतबेश बातरी ॥ मोरनको शोर चहुँओर होत ठौरठौर दादुरकी दूँदि घोरकरै तनु घातरी । सुख सरसावन लगेरी लोग गावनको बिना मनभावन न सावन सोहातरी २ ॥

पण्डितप्रवीन कबि ॥

क० ॥ पावस अमावसकी अधिक अँधेरी राति सासु है प्रवास मेरी ननँद नदानजू । सूनो सुखभौनहै परोस को भरोसकौन पाहरू न जागत पुकारपरेकानजू ॥ पंडित प्रवीण प्यारो बसत बिदेशपति यातेहै अंदेशअब रसिक सुजानजू । एहो ब्रजराज राज सुनिकै अरजमेरी आजु बसिजैये बसिजैये तौ बिहानजू १ ॥

प्रेमसखी ॥

क० ॥ छोटेछोटे कैसे तृणअंकुरित भूमि भये जहां तहां फैली इंद्र बधू बसुधान में । लहकि लहकि शीरी डोलतिबयारि औरु बोलत मयूरमाते सबनि लतानमें ॥ धुरवा धुकारै पिक दादुर पुकारै बक बांधिकै कतारै उड़ै कारे बदरानमें । अंस भुज डारे खड़े सरयू किनारे प्रेम सखी वारिडारे देखि पावस बितानमें १ ॥

प्रवीणकवि ॥

स० ॥ बरसै घन औ चमकै चपला सुख,दम्पतिके हियमें सरसै । सरसै पिक चातक शब्द प्रवीण रुकाम बियोगिन को दरसै ॥ दरसैसब ओर घटा गज सी घर स्यपिया सु प्रिया बरसै । बरसै बिरहानल एक घरी बिरहीन को एक घरी बरसै १ ॥

पूषी कबि ॥

क० ॥ झरकी झरन झार झरीसी झरन अंग झंझा की झकोर झारझपटी झरीनमें । छटाकी उछटि छबि छपत छपाकरकी छाय रही छनदा सुहाई दिन दीनमें ॥ चातक चिहार चक चौंधि चारु चहूंदिशि चाकित चकोर चकवान के बिहीनमें । तावस परेहै पूषी कावस पराये देश पावस मैं तामस रह्योनबिरहीनमैं १॥

क० ॥ अम्बुज तटानफैनि फूटत फटानजैसे धावत नटान छबि छाईहै छटानकी । चातकरटान नदीनदउप-टान जल जंगल बटान महा मारुत कटानकी ॥ भीजत पटान बुंद चुवत लटान पूषीतन लपटान मानो मदन घटानकी । पीवके तटान ओढ़े कुसुमी पटान अरु ठाढ़ी है अटानलेत लहरैं घटान की २ ॥

परसाद कबि ॥

क० ॥ लहलहीलोनी लोलीलता लखि लखिआली प्यारे बनमाली बिन देखे हिये लरजै । ब्याकुल बियो-गिनी न गेहगेह यहगांव काहूको न जानै कोऊ हरजैन

सरजै ॥ हेरी पुनिवंतो कोऊऐसो परसाद जो मानो मेरीयह जानिलेइ अरजै । पौनकी झकोरनको झिल्लिन के शोरनको घन घटाघोरन को मोरनको बरजै १ ॥

स० ॥ कारी नई उनई घनकी घटा बिज्जु छटा करै आनँद जीको । शोरभो ओर चहूँ परसाद मनोहर मोरन की अवली को ॥ चारु सुहाये पतान को लोगे लतान में सोहे हरो रंगनीको । हैयहि भाँति सुहावनरीपे बिना मन भावन सावन फीको २ ॥

बेनी कबि ॥

क० ॥ छाय छाय खसखाने चन्दन लिपाय गेहबन्दन बँधाय अरबिन्दन की झापे तो । ग्रीषम की तीक्षन तपन तन ओढ़ी अब छोड़ी आश डौंड़ीदे कलापी जो अलापे तो । बेनी कबि कहै आयो आयोरी असाढ़ अब जीवेकी न आश जिये दूनीह्वैहै तापैतो । अतन तरापै मन काँपै बारबार बीर आयजैहै बदराबरायजैहै कापैतो १॥

क० ॥ आली ऋतु ग्रीषम बितायो दिन पीव बिन कठिन कठिन करि बचीहों मरी मरी । अबतो इलाज को रह्यो नाकछू काज लखि उठीये घटान व्यथा उमड़ी खरी खरी ॥ अजहूँन आये हरी झरी जलभरी भूमिचहूँ ओर देखो बेनी होरही हरीहरी । छूटन लगेरी धीरधुरवा निहार प्राण लूटन लगेरी बोलमोरवा घरी घरी २ ॥

क० ॥ घन मतवारे गज पौन हरकारे बकबीर निर धारे मोर ढाढ़िन की तालपर । बिज्जु बरछीन कीचमक चहूँओरन ते त्यों नकीब चातक पुकारन प्रमान पर ॥

देखि देखि काँपत बियोगी जन कातर सुबेनी कबि कहै इन्द्र धनुष निशान पर । कोकिलकी कुहुक दुहाई फिरी ठौर ठौर पावस प्रबल दल आयो महिमान पर ३ ॥

क० ॥ बियत विलोकतही मुनि मन डोलि उठे बोलि उठे बरही विनोद भरे बनबन । अकल बिकल ह्वै बिकाने पथिकजन उर्ध्व मुख चातक अधो मुखमण्डलगन ॥ बेनी कबि कहत मही के महा भाग भये सुखद संयोगिनी वियोगिनि के तापतन । कंजपुंज गंजन सुखीदलके रंजन सो आये मान भंजनपै अंजन बरण घन ४ ॥

स० ॥ झूमिरहे घन घूमि घने तलि बोरत भूमिमनो चहुँघा घिरि । है अफसोसन रोसन वासै बिन हौसलता रहि रूखनसों भिरि । बेनी पपीहन मोरनहूं हहरानन ढूँढि करें बहुते फिरि । ज्योंडरपै तड़पै बिजुरी परैकांहू बियोगिनिपै नकहूं गिरि ५ ॥

स० ॥ ऊची अटापै लखे घटा दोऊ दुहूंनकी ह्वै रहि रूपकला सी । बेनी बड़े बड़े बुन्दनले इक बारही बारिधि की नहलासी ॥ चौंकि चली बिचली बिचली गचपै लचकी करि हाँ कुच भारछलासी । त्यों घनश्याम गही अबला फिरिकै गरेलागि गई चपला सी ६ ॥

स० ॥ कबिबेनी नई उनईहै घटा मुरवा बन बोलत कूकनरी । छहरै बिजुरी क्षिति मण्डल छ्वैलहरै मन मैन भभूकनरी ॥ पहिरो चुनरी चुनिकै दुलही सँगलाल के झूलिये झूकनरी । ऋतु पावस योंहीं बितावती हौ मरिहौ फिरि बावरी हूकनरी ७ ॥

स० ॥ राधा औ माधो खड़े दोउ भीजत वाभारि मैं

झपके बन माहीं। बेनी गये जुरि बातनमें सिर पातनके छतना गलबाहीं॥ पामरी प्यारी उठावत प्यारेको प्यारो पितम्बर की करे छाहीं। आपुसमें लहा छेह मेछोह में काहु को भीजवे की सुधि नाहीं ८॥

क०॥ झूलति हिंडोरे उठे छबिकी झकोरें मन माधुरी मैं बोरैपानखान मुसक्यान की। जोरे दृग कोरै हिये सबके मरोरै मानो शोभा चौंर ढोरै द्युति पट फहरानकी॥ जोबनके जोरे झूला थामत निहोरे हून चोप दुहूं ओरे छुवै फुनग लतानकी॥ बेनीहू हिलोरै फूल छोरै हार डोलै लखि आली तृण तोरै सुधि भूली गान तान की ९॥

बेनी प्रवीन कवि॥

क०॥ गरजि घुमण्डिले सकल महि मण्डिले औ-दण्ड बिरहीनको अदण्ड अब ऐंठेगो। पापीहू पपीहा पीउ दारुण देखाइ दुःख मोरनको शोर तन तोरि अंग पैठेगो॥ चपला कृपाण बुन्द बाण सेप्रबीन बेनी शीतल समीर तन अधिक उमैठेगो। जारीहो बसन्त कीलेप्यारी मारी ग्रीषमकी पावस कलंकशीश तेरे चढ़िबैठेगो १॥

स०॥ चित चायसों चारु हिंडोरे चढ़ी सुखसावन गांवनको सचरा। झझकी हुकिहूकन लेतपरे कचऊपर ब्यालिन वे बचरा॥ ललकें लखि बेनी प्रबीणकहै मनु मैन महीपतिको कचरा। कुच कंचुकी मंदिर मांह महेश ध्वजा फहरात मनो अचरा २॥

बलदेव कवि॥

क०॥ काजर सेडारे लखि मोरगण भारे कूक कीनो दई मारे मोद छाये अति मीन को। द्विजबलदेव बक पंगति बिशेष ताई त्योंही शोर मण्डित मंडूकगण पीन को॥भरत सनाके नाकेनाके सब घेरिलियो कैसी करिबे है उर शोभ घर दीन को। धुंधुर धुंधारे धराधारे अति भारे शोर आये घन कारे डरपावैं बिरहीन को १॥

क०॥ काजरसे कारे घन साजि कै सिधारे अब देत ये नगारे वर बारे जल धारेहैं। आनँद मचारे बलदेव हितकारे उमगात नद नारेहैं निकारे सम प्यारेहैं।मदन प्रचारे सुनि झिल्लीझन कारे दिन आपहू गारे नभ तारे ना निहारेहैं।चीर पट वारे अग्र नख गिरि धारे बनमाल उर डारेते हमारे रख वारेहैं २॥

क०॥ केतसे उपाय पाय पावस जगावै मैन जियरा डरात सुनि मेघके नगारे को। द्विज बलदेव कहै दादुरि मचायो शोरमोर बरजोर औेर जलधर धारेको।चलत समीर शुचित्रिबिधन धीररहै दामिनीदमकि ललचावै जीहमारेको। एतेतो सवांरि साज नितही सतावै सखी दोष कहो कौन है बिदेशी वे बिचारे को ३॥

क०॥ केते रूप ताने घन पावस कमाने डर नेकहू नमाने गहि दामिनी कृपानेरी। घूमि घहराने बल देव बल पाने अरु देतहै निशाने सोकि साने सुख जानेरी॥ आवत रोकाने भेद ताको पहिचाने मन मदनकी खाने सरसाने बुन्द बाने री। कीजे ना गुमाने नेक मेरी कही

मानै श्रम जानै हरि सानै करि आनै मुद ठानैरी ४॥

क०॥ घन घहरात थहरात अंगअंग सबनीर छह रात रात तम अति छायोरी। द्विज बलदेव कहै दादुरि दरारै और झिल्ली झनकारै मोर शोर को मचायोरी॥ बचीहौं बसंतले उपाय करि प्राणरहे ग्रीषम बिताय कै अकेलीकरि पायोरी। पावस कृपाणकरि चपलाके जीतिबेको अबहीं बरषि गयेफेरि झपि आयोरी ५॥

क०॥ साजत समाजै रूपकेते उपराजै दिग देशन में आजैशोर सहित ह्वै आजैरी। दामिनीहू छाजै दुरि ब्योम पुनिबाजैबलदेव हितकाजैमोद महितल राजैरी॥ चित्त अनदाजैलहि मारुतको भाजैफेरि घेरिघेरि गाजै सुरभी सों शिरताजैरी। आपनो मचाजै राखिलेती मम लाजै क्योंन ब्रोलिब्रजराजैये लखावै घनसाजैरी ६॥

क०॥ आजैमेघ वानकोगयोरी रवकानको भुलानो मग मानको संभारतहौ जानको। आदिकरि तान बलदेव गुणगान को लगायो मन ध्यानको छटानको घटान को॥ तड़ित तटानको और असित लटानको न जाति हौ अटानको त्रसितह्वै कटानकों। मदनपटानको डेराती नारटान को जोनागर नटानकों लयातीया चटानको७॥

क०॥ ग्रीषम बिताय ताय रंग रंग बरसाके बरसि बरसि बारि सरस सोहायेहैं। द्विज बलदेव बल बागन बहार बर बाजतहैं बाजने बिहंग बनगायेहैं॥ बिशद बसन बक बिलग बिलग ब्योम बेलिन बितान बनिता अतन तायेहैं। बिज्जुल बिपुल लखि बरहीबोलतबैन मैनके बिरादरये बादरह्वै आयेहै ८॥

क० ॥ दैकै घेरि घुमड़ि घमण्डि घहरान लागे तड़पि तड़ाक दै द्विचन्दह्वै घटागये । द्विजबलदेव अबै त्योंहीं सरसातजात जाहिर जनायोरंग कारेसे भरेभये ॥ कबहूं सुरंग नील सोसनी सबुज सेत संयुत समीर कबौ पीत पटसे ठये । सादरलैदामिनी निरादरकै ग्रीषमको कादर करत मोहिं बादर नये नये ९ ॥

क० ॥ श्याम घन आवै घेरि बिज्जु चमकावै मन मदन जगावै कूक बरही मचावैरी । मोहनपै जावै मम सदनको लावै बलदेव गुणगावै हिततोसों सरसावै री ॥ आनँद मचावै तब पावसहू भावै गुण मारुत चलावै हठि हियो हुलसावै री । अभिमत पावै दुख नेकहू न छावै चित धीरज बचावै बिरहागि को बुझावैरी १० ॥

क० ॥ कैसे चित चोरै गुण पवन झकोरै मोर अति बरजोरै शोरै सुखमा बदनके । द्विजबलदेव वारि वानिक बसन बेश बिजुरी लैधायेहैं बिरादर मदनके ॥ तूही यश लीजै दरशाय नेकदीजै अधरामृतको पीजै मोद दाड़िम रदन के । प्राणपिय पावस अनंद अति छावन ये आये बीर सावन सोहावन सदन के ११ ॥

ब्रजचन्द कवि ॥

क० ॥ बाटिका बिहंगन पै वारिगात रंगनपैबायुबेग गंगनपै बसुधा बगारहै । बाँकीवेणुताननपै बंगले बिताननपै बेश औध पानन पै बीथिन बजारहै ॥ बृन्दाबन बेलिन पै बनिता नबेलिनपै ब्रजचन्द केलिन पै बंशीबट मारहै । बारिके कनाकन पै बद्दलन बां-

कन पै बिज्जुली बलाकन पै बरषा बहार है १

क०॥सघनघटान छबि ज्योतिकी छटान बीचपिककी रटान जोति जीगन जुई परै। हार हिये हरित नदीननद भरित झरीन झर झरित सो धरनि धुई परै। ऐसेमैं किशोरी गोरी झूलति हिंडोरे झुकि झुकनि झकोरे फैल फूलन फुहीपरै। कीजिये दरश नँद नन्द ब्रज-चन्द प्यारे आजु मुखचन्द पर चूनरि चुईपरै २॥

बीर कबि॥

क०॥ घटाघन छतरी पै बग पाँति झालरहै इन्द्र धनु बाँस रंग बिबिध मढ़्यो फिरै। दामिनी दमंक सोई झंझा की झमंक मानो बेलि हरी भूमि वृक्ष तकिया कढ़्योफिरै॥ बीर कहै शीतल समीर ही कहार किये धुरवा खवास रास बिध सों बढ़्योफिरै। प्यारी पहिचान पति पतिनी की पौरि पौरि पंचवान पावस की पालकी चढ़्योफिरै १॥

क०॥ सांवनकी तीजे पिया भीजे बारि बुन्दन सों अंग अंग ओढ़नी सुरंग रंग बोरेकी। गावत मलारै धुरवान की धुकारै कहूं झिल्ली झनकारै झन करत झकोरेरी॥ करत बिहार दोऊ अतिही उदार भरे बीर कहै मन्द शोभा पौनके झकोरेकी। झमक झरी कीत्यों चमक चारु चपला की घमक घटाकी तामे रमक हिंडोरेकी २॥

क०॥ फुहू फुहू बुन्द झरै बीर बारिबाहनते कुहू कुहू शब्द होत कीर कोकिलानकी। ताही समै श्यामा

श्याम झूलति हिंडोरे बैठि वारों छबि कोटिन सैं रति पंचबान की। कुण्डल लटक सोहै भृकुटी मटक जोहै झटक चटक पट पीत फहरानकी । झूलनि समै की सुधि भूलति न हूलति री उझकनि झुकनि झको-रनि सुजान की ३ ॥

बल्लभ कबि ॥

स० ॥ कालिन्दीकूल कदंबकी डारन कूजत केकिन के गनऐखे । तुंग तरंगित त्यों यमुना तहँ तामहँ शोर करै बहुभेखे ॥ मंदहि मन्द सुगाजत है घन राजतबूंद महीन झलेखै । बल्लभ राधिका श्याम तहांशुभ श्याम घटान अटा चढ़ि देखै १ ॥

बच्चन कबि ॥

क० ॥ एकतौ बिदेशी बिन ऐसेही दुखीहैं हमदूसरे प्रचण्ड लागेपावस सतानेरी । बच्चनजू बादरको आदर न मेरेयहां अजब अनारी आपाबिरहबढ़ानेरी ॥ वर्षिबे की हौंसहैतोजाय मथुरामें बर्षसांवरे मिलैंगेतोहिंसौत के ठिकानेरी । अरज न मानै नेक हरज हमारोकरै गरज न जानै मेघ गरज न जानैरी १ ॥

बानकबि ॥

स० ॥ कोकिल की सुनिके कल कूकन केकी कुटै की कुटेकन टेरे । बीर बधू बिरची सी फिरै बिरहानल के मनो बीज बिखेरे ॥ बान कहै सखी भूमि हरी लखि

कन पै बिज्जुन्न हरी फिरै हेरै । धावत धूमसे बादर देखि लगे जल मोचन लोचन मेरे १ ॥

बोधा कबि ॥

स० ॥ ऋतु पावस श्याम घटा उनई लखिके मन धीर थिरातो नहीं । धुनि दादुर मोर पपीहन की सुनि कै छिन चित्त थिरातो नहीं ॥ जबते बिछुरे कबि बोधा हितू तबतें उरदाह बुझातो नहीं । हम कौन ते पीर कहैं जियकीदिलदारतो कोऊदिखातोनहीं १ ॥

बंशीधर कबि ॥

क० ॥ बोलतनमोरभयोचन्द्रमामलीन भयो चातक रटनि बकी काहेते भुलानी है । कोकहूमिलेहैं तिन्हेंदुख सरसान्यो अति हरष चकोरनके प्रीति कुम्हिलानीहै ॥ बंशीधर कहै भौंर मण्डन कलोल करै केकरिअडोल रहे सौत मन हानी है । चंचला हेरानी घनबानी कोन लेरारहयोकौन रीति पावसकी आजु दरशानीहै १ ॥

बिजयानंद कबि ॥

स० ॥ चहुँघांते घरी घरी घेरि घनाघनकी घटा घोर घनी घहरै । छिनही छिन छीनन को बरही क्षितिलो छिन छायाछटा छहरै ॥ चकवा चकईबक चातक चीरिन की चिचियानि चहूँ चहरै । बिलखाय बियोगिनि बेदन से बिजयानँद बैठरहे बहरै १ ॥

क० ॥ घहर घहर घहरात चहूँघाते घेरि सघन घुमड़ि घन घन बरसत हैं । छहर छहर छहरात क्षिति

मण्डलपै छूटिछूटि बुन्दनतेछराँको छरतहैं ॥ भहरभहर भहरात भौन भीति भारी भीति भारी भारतीके भौनहूं भरतहैं । थहर थहर थहरात मेरो गात आली बिजय अनन्द परदेश में बसत हैं २ ॥

भुवनेश कबि ॥

क० ॥ सुंदर सुखारे अनियारे कारेकारे घनधारे बहु भेष धाम धारे वरसतु है। तरुण तरारे न्यारे न्यारे उद गारे पौन दादुर दगारे धुनि धारे दरसतु है ॥ पीपी कै पुकारे पपीहराउ प्यारे प्यारे सारे दुन्दुभि धुकारे तो अनंग सरसतुहै । अचरजयामें कहु कौन भुवनेश जोपै श्याम मिलबे को मन मेरो तरसतुहै १ ॥

क० ॥ गरजै चहूंघा घन घोर मोर शोर करै लरजै लतान वृन्दशोभा सरसाई है । दामिनी दमाकै जुरि जुगुनू चमाकै कहूं कैलिया रमाकै भरी कूकै सुख-दाईहै ॥ मन अनुरागै प्रीति रीति उर लागै लखि इन्दु-भटू रागै बन बागै छहराईहै। अरज बिहारी पै हमारी भुवनेश येती मिलनके योग बेश पावसऋतु आईहै २ ॥

स० ॥ घहरारी घनेघन घोर घटा करि शोर उठे बहु मोरअटा । घनश्यामै मिलेतिय ताहीसमै चली दामिनी सी फहरै दुपटा ॥ वाके नैन घनेघने घालै कटाक्ष भनै भुवनेश सुकौन छटा । जनु बिश्वफतै करिबेके हितै फर-कावै मनोभव भूप पटा ३ ॥

स० ॥ चमकीली फिरै चपला चहुँघा द्युति दन्तन की जबहीं सरसै।सुनिकै भुवनेशजू बैनसुधासम कोकिल

बोलनिको तरसै ॥ यह मेरेही अंगनके परसादते पाव-
सकी सुखमा दरसै । ललिकै अलकै घन आंसुन ब्याज
बड़े बड़े बुन्दनसों बरसै ४ ॥

स० ॥ बन बागनके प्रति कुंजनमें घनीलोनी लवंग
लता लहरै । बसिकै नभमण्डलमें भुवनेश भले क्षण
जोन्हहियो थहरै ॥ बरषैघन आंशुन ब्याजननीर तऊपै
अधीर भये घहरै । पपिहाऊ पिया रट लायो करै मन
मानुष को नहिं क्यों हहरै ५ ॥

भूधर कबि ॥

क० ॥ लागत असाढ़ दल साजि चढ़्यो मेरेपर
घेरे लेत मोहिं बोलिटेरै जल सरजे । झिल्लिनके झुण्ड
बक झुण्डते सुभटसंग बोलत नकीबकेकीकाके रहैबर-
जे ॥ चंचला निशान आसमान फहरान लागे भूधरसु
कबिकहैयेहीपंच सरजे । आधेआधे बैनकहिराधेमें रह्यो
न चैन मैन पादशाहके नगारे आनि गरजे १ ॥

क० ॥ रागभरी भीजीसी हिंडोरे झूलैसूहे पटप्यारी
मुखचन्दपै चकोर झगरत है । भूधरसुकबि बीर कण्ठ
माहिंमणिमाल बाजूबन्द किंकिणी कनक नगरतहै ॥
गहै करडोरी जोतिजोति जीति लालनसों सौरभ मगन
भौंरजाल डगरतहै । कहूं फूलेफूल कहूं उड़त दुकूल
कहूं उर उघरत कहूं बार बगरतहै २ ॥

भगवंत कबि ॥

क० ॥ बादरन होयँ दल आये मैन भूपजूके बुंदियाँ
न होयँ पंचबान झरलाईहै । दादुरनहोयँये नकीबबोलैं

चारोंओर मुरवा न होयँ हाँक शूरन सुनाईहै॥ बगुलान होयँ श्वेत ध्वजा भगवंत जूकी चपला न होयँ शमसेरै चमकाई है। बालम बिदेश यातें बिरहिन जारिबेको जुगनून होयँ काम जामकी जगाईहै १॥

भूपतिकबि॥

स०॥सावनकी ऋतु आई सखी पतियान लिखी अजहूँ मन भावन। भावन राग मलारमें भूपति रंगउमंगसों लागेहैं गावन। गावन में हरषै सबही बरषै बर बुन्द घटानकी आवन। आवन आज भयो नहीं पीवको जीवको मैन लग्यो तरसावन १॥

मौनकबि॥

क०॥ ग्रीषम ते तचि बचि पावस मरूकै पाईतामैं फुकैजुगनू भबूकैंलागें पौनकी। हूकैंउठैं हियमें कनूकैं लखे बुन्दन की झिल्लिहूं न मूकैं ये बिसासी बैरी भौनकी। चपला चहूंकै त्यों त्यों तनमें भभूकै उठैं ऊकैं मारैं मुरवा कहाँ मैं कौन कौनकी। दादुरकी हूकैं धाइ करत अचूकैं उर कोकिल की कूकैं तापै बूकैं देती नोनकी १॥

स०॥ भावती जो पियकी बतियाँ सखि सालतिहैं उर शूलसी वोई। घोर घटा बिजुरी चमकै तिसरे पपिहा पिय पीय रटोई॥ मौन भनै भ्रम भामिनि को लरजै छतिया तन काम बिगोई। स्वासन स्वास उसासतहै बरसात गई बरसाथ न सोई २॥

भमानकवि ॥

स० ॥ मारे मनोज के बाण हिये सुदिये दुख तैंने बियोगके भारे। भोर भये निशि बासर मोहिं चुवावत हैं अंखिया जलधारे॥ धारेबिलोकि पयोद भमानसु आवत याद अनंद तिहारे। हारे हियो हहरात अबै दिलजान लगौ गरे आन हमारे १॥

स० ॥ बरस्योई करौ हित प्रीतमको उर आलिनको हरस्योई करौ। हरस्योई करौ घनदेखि सखी धुनि दादुर की सरस्योईकरौ॥ सरस्योई करौ सरस्रोत भमान भलै बिरही तरस्योई करौ। तरस्योई करौ जिय सौतिन को नित ये बदरा बरस्योई करौ २॥

भवानीदीनकवि ॥

क० ॥ पावस प्रबेश बेश छाइ रह्यो देश देश शेष ज्यों सरोष श्वासपौन गहिबे परी। दादुर दबावै तनघेरि घेरि आवै घन केकिन की कूकै बन हूकै लहिबे परी॥ जानै ना सयानी जाहि मुखहू न आनी अब भूपति भवानीदीन सोई कहि बे परी। आये नहीं लालबाल भई है बिहाल हाय चातक चवाइनकी चोट सहिबे परी १॥

भूषनकवि ॥

क० ॥ मेचक कवच साजि बाहन बयारि बाजिगाढ़े दल गाजि उठे दीरघ बदनके। भूषन भनत शमसेर सोई दामिनीहै हेतनरकामिनीके मानकेकदनके। पैदर बलाके धुरवानके पताके देखि घेरि घेरिआवै चहूँओरही

सदनके। नाकर निरादर पियासों मिलसादर ये आये बीरबादर बहादुर मदनके १ ॥

मुबारक कवि ॥

क० ॥ धाराधर भूमि ऋतु धरासे धधाय धाये धौरहर धमकाये धाय धकादेतुहै। झंझापौन झूक झोरझुवन झकोर झोंकझिल्ली झनझाल जाल झझकतु प्रेतुहै। बिरहबलायते मुबारक नकहीजाय तापर सहाय प्रेतचढ़े खलखेतुहै। दादुर दिवार चढ़े चातक तमारचढ़े गिरिचढ़े मोरशिरचढ़े मीनकेतुहै १ ॥

क० ॥ बाजत नगारे घन ताल देत नहीं नारे झींगु- रन झांझभेरी भृंगन बजाईहै। कोकिल अलापचारी नीलग्रीव नृत्यकारी पौनबनधारी चाटीचातक लगाईहै॥ मणिमाल जुगनू मुबारक तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जगाईहै। बालम बिदेशनये दुखको जनम भयो पावस हमारे लाग्रे बिरह बधाई है २ ॥

स० ॥ उमड़े नभ म[illegible]ा मण्डित मेघ अखण्डित धारनते मचिहै। चमकैगी चहूँ दिशिते चपला अबला कहु कौन कला बचिहै ॥ अकुलाइ मरैगी बलाय मुबा- रक आज उपाय इहै रचिहै। पहिले अचवैगी हलाहल लै तब केकी कुलाहल कै नचिहै ३ ॥

स० ॥ आई सोहाई नई बरषा ऋतु रीझ हमारी कही पिय कीजिये। जैसी रंगीहै कुसुम्बन चूनरी तैसिहि पागतुम्हैं रँगदीजिये ॥ झूलापै झूलहिं एकहीसंग मुबा- रक एतो कहो पुनि कीजिये। जैसे लसै घनश्याम

सों दामिनि तैसे तुम्हारे हिये लगि भीजि ये ४ ॥

स० ॥ खरकामें खरे बरषा ऋतुमें उनये घनजे अति संकटसे । भजि और मुबारकदौर टरे अरि राधेगोपाल रहे हटके ॥ तरजाकि तरौवन जोरिकै गौवन घेरि बझौ-वनते ठटके । पर मेहमें भीजै सनेह भरेदोउ पामरी कामरीमें सटके ५ ॥

मोतीराम कबि ॥

क० ॥ झंझा झक झोरनसों धूकै चहूँ ओरनसों पावस झकोरनसों असीसों छन्योपरै । तरुणाई तोरनसों हियकी हिलोरनसों बिथा सिंधु बोरनसों तनहू हन्यो परै ॥ बोलत मरोरनसों दादुर पिक सोरनसों हित मोती-राम कबि कैसेकै भन्योपरै । बादरकी कोरनसों जलकी धँधोरनसों मोरनके सोरनसों मैन उफन्यो परै १ ॥

क० ॥ पीउ पीउ कहत मिलै जो मोहिं आज पीउ सोने चोंच चातक मढ़ाऊँ अति आदरन । कठिन कलापिन के कण्ठन कटाइ डारौं देत दुख दादुर चि-राय डारौं दादरन ॥ मोतीराम झिल्ली गन मंदिर मुँदाइ डारौं बधिक बुलाइ बाधौं बनकी बिरादरन । बिरहाकी ज्वालनसों जिरह जराइ डारौं श्वासन उड़ाऊं बैरी बेदरद बादरन २ ॥

महा कबि ॥

क० ॥ उमड़िघुमड़िघन घेरिकैघमण्डकीन्होंचपला समेतचहुँ ओरनते झूमरे । निशिदिनजापीतापी बोलत पपीहा पापीकूरहै कलापी ऐसेघोर सुनि घूमरे ॥ जियैंगे

बियोगीकैसे ऐसे समय महाकवि योगीते वे भोगीभये फोरि फोरि तूमरे। देखि मेरीआली अब मैनके मतंग छूटे धाये आवें धुरवा ये धौरेधौरे धूमरे १ ॥

मल्ल कबि ॥

क० ॥ भादों में कारी बिकरारीराति ह्वैहैप्यारी जुगुनू जमाति जोरजोर धमकावैगी। घंनन घमण्डकैकै बरषा अखण्ड कैकै पवन प्रचण्ड द्युति दामिनी दबावैगी ॥ अरुण बरणकैकै इन्द्रवधू ठौरठौर मल्लकबि कहै जोर आपनो जनावैगी। पावस समयमें जोपै ऐहैनहीं कन्त तोपै मदन महीपतिकी फौजै उठि धावैगी १ ॥

महेशदत्त कबि ॥

क० ॥ एरी ऋतु पावस में मोर घोर शोर करै ठौर ठौर मण्डुक कठोरशोर बैरह्यो। देखिकैबकालीरी कपाली अरिजाली हाली आली बनमाली बिन काली मोहिं कै रह्यो ॥ दामिनी दमंक बीच यामिनी बिलोकि नित कामिनी सकत बात मुख पै न धैरह्यो। झिल्ली झनकारै मेघ बारिधार धारै पिक कोकिल पुकारै यों महेशदत्त कै रह्यो १ ॥

मिश्र कबि ॥

क० ॥ कारे कारे बादर सों बरषत आदरसों दादुर पपीहा पिक उर न समातके। ठौर ठौर सरस सरोवर अथाह भये गुंजरैं मधुप पुंज पातै जलजातके ॥ हरी हरी दूब छोटी तापर विराजै बुंद-उपमा बनीहै मिश्र

निरखि सिहातके। सावन सनेही मनभावन रिझावन को मोतिन गुँथाये है दुलीचा सकलातके १॥

मकरन्द कबि॥

क०॥ कैधौं वहि देश घन घुमड़ि न बरसत कैधौं मकरन्द नदी नदपथ भरिगे। कैधौं पिकचातक चकित चक्रवाक वाक मत्त भये दादुर मधुपमोर मरिगे॥ मेरे मन आवत न आली प्यारे आवतहै काम कुर निकर महीतेधौं निकरिगे। कैधौं पंचशर हर फेरकैभसमकीन्हों कैधौं पंच शरजू के पांचोंशर सरिगे १॥

क०॥ तेरे डाह दही बैठ कोठरी के कोनेरही अजहूं तौ देहि कौल निकसौतौ कोने सों। कहै मकरन्द कोई पक्षिन गहन पंख काम सो निहोरो करिदेखो जौन तौ-नेसों॥ तोको मैं जराय जरों चोपकरि ओपकरों चुनि चुनि चुनी लाल लाखन के लोनेसों। येरे ये पपीहा जैसे पीय पीय कहै तैसे आव आव कहैतो मढ़ावों चोंच सोने सों २॥

मतिराम कबि॥

स०॥ धुरवानकी धावन मानो अनंगकी तुंग ध्वजा फहराने लगी। नभमण्डल ते क्षितिमण्डल छ्वै छिन ज्योतिछटा छहराने लगी॥ मतिराम समीर लगी लतिका बिरही बनिता थहराने लगी। परदेशमें पीय सँदेश नहीं चहुँओर घटा घहराने लगी १॥

माखन कबि ॥

क० ॥ भादौं गँभीरनीर बाढ़ोनदी नारन में उतरै न बटोही चित्त चंचल भ्रमावैरी । पापी पपीहा मोर शोर करै बागन में बावरी बलाहक देह दावासो लगावैरी ॥ करि कै सिंगार मोतिन सों भराय मांग माखन कवि कहै नेम आपनो जनावैरी। जिया हुलसावै तिया लोने गीत गावै हम रामचन्द्र साहब की साहबी मनावैरी १ ॥

यशवन्त कबि ॥

क० ॥ झिल्लीझनकारै पिक चातकी पुकारै बनमोरन गोहारै उठै जुगनू चमकि चमकि । घोरघनकारे भारेधु-रवा धुरारेधामधूमन मचावै नचै दामिनी दमकिदमकि॥ झूकन बयारि वारि लूकन लगावै अंग कूकन भभूकन सों और मोग्वमकि खमकि । कैसेरहै प्राण प्राणप्यारे य-शवन्तबिन छोटीछोटी बुन्दनसों बरसै झमकिझमकि १॥

यदुराय कबि ॥

क० ॥ दूबरी भईहैदेह कूबरीसनेहसुने ऊबरीनशोक सिंधुपायज्ञानबोहितै। रहीअकुलायहायकरैशिरकोनवा-यकहै यदुरायरहे केतेदिनको बितै ॥ गाढ़ये असाढ़देखि बढ़ति वियोग व्यथा दामिनीदमकमोरशोरहै जितैतितै। आये घनश्याम काहू बासने सुनाई टेरि चौंकि चौंकि उठी चन्दमुखी चहुँघा चितै १ ॥

रामचन्द कबि ॥

क० ॥ सावन सुहावन मनभावनकी राहदेखि सगुन

जगावै कन्तनाह घरआवैरी। देखिघनघटाचित्त चागुनो चकित होत छातिन बिचपातिनकी लीकै करिजावैरी॥ चूनरी कुसुम्भरंग सोहै शिरसखियनके झूलती हिंडोरा बिरहिनिनको लजावैरी। जियाहुलसावै त्रियालोनेगीत गावै हम रामचन्द साहबकी साहिबी मनावैरी १॥

रघुराज कबि॥

क०॥ मरज बढ़ावै महादुर्जन फरज बांधे काजना करत कछू कारज सों आनेरी। चरजनजाने हियेदरज ढुरावैहाय बरजनसीखै समय प्रीतम पयानेरी॥ भनैरघुराज अब अरजना सुने नेक बिरहीपरज परजन अनुमानेरी। तरजनजाने और हरजनजाने नेक गरजना जाने मेघ गरजना जानेरी १॥

रसरास कबि॥

क०॥ सावन सजल घनबरषै अखण्ड धारचहूं ओर नार खारतालझिलि भरिगे। झिल्ली झनकार रव दादुर अपार मोर शोर कुहुंकारन उदार छबि करिगे॥ हरी हरी भूमि तापै इन्द्रबधू फैलि रही उपमा सुताकी रसरास चित्त धरिगे। सबुज बनातपर मानोमेनजौहरी की गांठिते उचटि पुंज माणिक बिथरिगे १।

रघुनाथ कबि॥

स०॥ चांपिचढ़े घन व्योममढ़े बरसै सरसै करिकै प्रण गाढ़े। ऐसो समय रघुनाथ कियो घरते पग बाहिर जात न काढ़े॥ श्री वृषभान कुमारि मुमारि सखी तिहि

औसर ऐसके बाढे। पातन को छतना शिरदैदोउ बातन के रस भीजत ठाढे १ ॥

क० ॥ औधके आस गोपाल के पास चली बनको निशिबास गये है। एते में मेघ अकाश में आय के छाय दिशान अँधेरी लई च्वै ॥ पायबेको पथ ऐसीसमय रघुनाथ की सोंह सुनो सुखसों भ्वै। अंगके संग अभूषण जालसों आपुही बाल मशाल गईह्वै २ ॥

रामदास कवि ॥

क० ॥ श्याम घन आये आली श्याम परदेशछाये श्याम कण्ठ शत्रु आगि अंगमें बढै लगी। श्यामकण्ठ बोलि सुनिश्यामकण्ठ सोरि आवै कोकिलाहु कूकि कूकि प्राणन कढै लगी ॥ झिल्ली मंडूक कूक सुनि हिये होत हूक रामदास तात गुणनिधिसों चलैलगी। रैनि अँधियारी होन लागी द्रुम बाढ़ी दशकन्ध बन्ध प्यारीऊ पयाना सो करै लगी १ ॥

ऋषिनाथ कवि ॥

क० ॥ रस रँग भरे दोऊ उज्ज्वल अटापै खड़ेहरें हरें हेरतसुहेतहिये पटिउठै। दमकिदमकिजातिदामिनी चहूँधा चारुचमकि चमकि चूनरीमें अंगठटिउठै ॥ कहै ऋषिनाथ मोरदादुर करत शोरजोरजोर जमकि पपीहा पीउ रटिउठै। घुमड़ि घुमड़ि घन घिरि घिरि आवै मोद उमड़ि उमड़ि दोऊ छतियां छपटि उठै १ ॥

रघुराई कवि ॥

क० ॥ प्यारेही के काज प्यारी हित काज प्यारे दुहुं दुहुंनासिंगारे तन नीके चन्द मटसों । यमुनाके नीर तीर हँसि हँसि बातें करें मन अटकायो कल कोकिला की रट सों ॥ राते रघुराई घनघटा घहराय आई बरसन लाग्यो नान्हीं बुन्दन के ठट सों । जौलौं प्यारो प्यारीको उढ़ायो चहै पीत पट तौलौं प्यारी प्यारो ढांप लीन्हों नील पटसों १ ॥

रामप्रताप कवि ॥

क० ॥ लागेभरिजोरमोर कुहुँकन कुंजनमें पपिहा पियाको नाम लैलैके पुकारैरी । कहैनृप रामपरताप कारी कैलियाहू कूकदेतीहूके अरु झिल्ली झनकारैरी ॥दादुर रटनिसुनि हियरा फटनलाग्यो जुगुनू चमकि सुधिसकल बिसारैरी । हाय प्राणप्यारे बिनुघेरि घनआये चहुँ बिरह ब्यथामें मार मार मार डारैरी १ ॥

क० ॥ उमड़ि घुमड़ि घन बरषन लागे चहूँ दशहूँ दिशामें लागी दमकन दामिनी । पौनको झकोर अंग अंगको मरोर देत स्रावनकी कारी अतिभारी लगै यामिनी॥रामपरताप ऐसीसमय जाको प्यारो ढिगवाको अतिआनँदवो धन्यधन्य भामिनी।मेरेप्राणप्यारेतोबिदेशमेंबसतहाय परी सूनीसेज तलफति ह्यांमेंकामिनी२॥

स० ॥ प्यारे औ प्यारी अटापर बैठिकै देखत दोऊ घटाकी छटारी । बारहि बार गराजत बादर दामिनियाँ करती ज्यों पटारी ॥ बोलै प्रियाहँसि प्रीतमसों यह कारी

घटा उनईहै अटारी। रामप्रताप सँजोगी सुखी पै बियो-गिनीको भई बूँद कटारी ३ ॥

स०॥घेरिघटा घहराय रही दरकावतुहै बिन प्रीतम छाती। कामिनियाँ हियरा तरसावत दामिनियाँ चहुँते दरशाती॥ रामप्रताप झकोरत पौन भई दुखदाइनि सावन राती। तापै बियोग बढ़ावतहैं वह पीकहि बोलि पपीहरा घाती ४ ॥

स०॥ की वह देश बसे जहँ प्रीतम घेरि घटान कयौं घहरेहै। की वह देश न दामिनि दीपति बुन्दन मेह नहीं छहरेहै॥ की वहदेश न रामप्रताप जू पौन झकोर चहूं लहरेहै। की वह देशमें पापी पपीहा पिया न कहै कै पिया वहरे है ५ ॥

रामचरित्रकबि॥

क०॥ कैधौं वा बिदेश घन घुमड़ि न छावै चहूँ कैधौं वा बिदेश कहूँ दामिनी न दरसै। कैधौं वा बिदेश मोर शोर न मचावै जोर कैधौं वा बिदेश बेग बोलिके न हरसै॥ कैधौं वा बिदेश में न झींगुर झनक झुण्ड कैधौं वा बिदेशमें न जुगुनू ज्योति सरसै। कैधौं वा बिदेश राम चरितरसिककोऊ कैधौंवा बिदेशघटाघेरिकैनबरसै १ ॥

स०॥ आयो असाढ़ सुनो सजनी रजनी दिन घेरि घटा घन छायो। छायो बिदेशहि रामचरित्र अँदेश लग्योहै सँदेश न पायो॥ पायो भले अपने बश कैधौं कहूं कोउ सौतिन सेज लुभायो। भायो कहा उनके मन माहिं कि पावस आयो पिया नहिं आयो २ ॥

स० ॥ निज नैनन को बरषाबरषा तरसातन आंशुन धोवतीहैं। कहुँ रामचरित्र न रोवती है दिलकी दिलही बिच गोवती हैं ॥ हमतो नित पावस की निशि में सखि सूनी सेज टकटोवती हैं। धनि वे धनि पावस की रतियाँ पतिकी छतियाँ लगि सोवतीहैं ३ ॥

स० ॥ धनि वे जिन पावस की ऋतु में नित प्रीति में प्रीति संजोवती हैं। धनि वे जिन कारी घटामें अटा बिच बिज्जु छटा छबि छोवतीहैं ॥ धनि वे जिन रामचरित्र हिये हिलि हौसन हर्षित होवतीहैं। धनि वे धनि पावस की रतियाँ पतिकी छतियाँ लगि सोवतीहैं ४ ॥

स० ॥ आयहो न ऐसे सावन में मनभावन पावस कैसे बितायहो। तायहो का तन तापन ते मन आपनहोय सो लेख भेजायहो ॥ जायहों जल्द चले पुनि पाछहि रामचरित्र अबेर न लायहो। लायहो और कछूना हमें जो बने तो तुहीं चटसों चले आयहो ५ ॥

स० ॥ सावन शोक नशावनहै नहिं रामचरित्र मेरे मनभावन। भावन मोहिं घटा घनकी बनकी हरियाली लगी लुकलावन ॥ लावनकोऊ कहै उनकोउनको कर-जोरि कहो गुणगावन। गावनमें सबको सुखहैहमको दुखही दुखहै दरशावन ६ ॥

रसिकबिहारी कबि ॥

स० ॥ प्राणप्रिया मिलिहै मन तू न तरस न तरस न तरस न तरस। छिन एक क्षमाकर मैन हिये न सरस न सरस न सरस न सरस ॥ रसिकेश अरे बिरहा अब

तौ न दरस न दरस न दरस न दरस । इत आवहि प्यारी घटा तबलों न बरस न बरस न बरस न बरस १॥

लाल कवि ॥

क० ॥ आयो ऋतुपावस लों योबन चढ़ाई करि सैसवकोफन्दबन्द छोरन चहतहै । ग्रीषम समान मिट्यो जातगुरुजन भीत पवन सुछन्दता झकोरन चहतहै ॥ कामको घनेरो घन बरसि सनेह बुन्द तन मन प्राणसबै बोरन चहतहै । बयस नदी में लाल प्रेम को प्रवाह बाढ़्यो लोक लाज सीमा हाय तोरन चहतहै १ ॥

क० ॥ आयो पुनि पावसअमावस निशाभोदिन छिन बिन प्यारे किहि भांतिन बितायहौं । किरचै करेजहूकी कोकिलैकरनलागी मोरशोर सुनि किमि चित्त ठहरायहौं ॥ वेदरदी बैरी बद बदरा बड़ेईबुरे नितप्रति तासों प्राण कैसेके बचायहौं । परतन एकौपल कल लालक्योंहूं हाय काके गरेलागि काम तपनि मिटायहौं २ ॥

क० ॥ कूकैलगीं कोकिलै कदम्बनपै रातोदिन मोर पिक शोरहू सुनात चहूँ पासहै । मन्दमन्द गर्जत घनेरी घटा घूमिघूमि बहत समीर धीर संयुत सुवासहै ॥ जित तित नारी नरगावै सुखपावै अति झूलत हिंडोरे लाल बाढ़त हुलासहै । हिये तरसावन को काम सरसावनको बुन्द बरसावनको सावन सुमासहै ३ ॥

क० ॥ कैधौं वह देश जहाँ प्रीतम पियारे बसै घोरै घटानहिं घूमिघूमि घहरावैहै । कैधौं चमकतनाहिंचपला

चहूँघा तहाँ कैधों न सुरेश कबों बुन्द झर लावेहै॥ कैधों काम कुटिलन ब्यापत करेजे कैधों कोऊ नाहिं मेघ औ मलार रागगावेहै। कैधों लाल पावसकी रातमें पपीहा पापी बारबार पीपीकर कूकना सुनावेहै ४॥

क०॥ कौनपरी चूकमोसों एरीमेरीबीर जासोंकीन्ही मनमोहनने ऐसी हाय घतियाँ। छाये परदेश पायो कछुना सँदेश येहीजियमें अँदेश कबों भेजतन पतियाँ॥ कामकी सताई दिन रोयकै बिताओ लाल कैसे कलपाओ पीर होतअति छतियाँ। तापै कलपावनको बिरह बढ़ावन को आई दुखदाई फेरि सावनकी रतियाँ ५॥

क०॥ हरितहरित हरिलेत मन बेली बन सघन घटान घन घिरि घहरानेहै। बोलै चहुँओर कीरकोकिल पपीहा मोर कुंजकुंजगुंजै अलिपुंज मनमानेहै॥ अंकुर बिछाय हित कीन्ही मरकत मणितामें इन्द्रबधू जाल लालसबजाने है। दिशिदिशि देखिद्युति चाहमनभावन की सावनकी सबजीमें सबजी भुलाने है ६॥

क०॥ बिन घनश्याम धाम लागत निकाम बाम आठोयाम दहत अतन तन छतियाँ। केकी पिक कूकै हूकैउठै येअचूकै अंगलूकैदेतदादुर बिरहआगततियाँ॥ पतियाँ न आईबीर छतियाँ जरन लागी बतियाँ सोहात नाहीं भूली गति मतियाँ। बीती औध आवनकी लाल मनभावनकी डग भई बावनकी सावनकी रतियाँ ७॥

स०॥ झूलत प्रेमसों हेमकी डारसी बारसी पातरी हैकटि खीनी। दैमचिकीलचिकावति अंगनि रंगमचावति नारिनवीनी॥ पीय झुलायदियोहै अचानक प्यारी

सहाछबिसों भयभीनी । लाल हिंडोरनगोदभरी तिय मोद भरी अखियाँ भरिलीनी ८ ॥

लछू कबि ॥

स० ॥ केकीकीकूक पिकीकी पुकार चहूंदिशि दादुर दुन्दि मचायो । भूमि हरी चमकै चपला अरु श्याम घटा जुरि अम्बरछायो ॥ ऐसेमें आवनहोइलछू अबला लखि लाल सँदेश पठायो । बावनको पगुभो बिरहासो अहो मन भावन सावन आयो १ ॥

शिवनाथ कबि ॥

क० ॥ ऐसी झरी बूंदन में दूंदन उठायो काम मूंदै मुख प्यारी बनी गूंदै न बहरिकै । कहैकबि शिवनाथ झिल्ली गणगाजत है सावनमें वहैरसलहरी छहरिकै ॥ ऊनरी सुकंज द्युति दूनरी दगन बाढ़ी हूनरीकहति खौर देनरी गहरिकै । ऊनरी घटामें गोरी तूनरी अटापै बैठ खूनरी करैगी लालचूनरी पहरिकै १

शम्भु कबि ॥

क० ॥ मोरनके सुरते न सुरते रही है और उरते निकासे चेत सुरते कन्हाई की । पीव पीव कहै बिनपीव जीव अकुलावै घाते चहुँघातेलागी चातककसाईकी ॥ तोरे धर धीरजही बौरे मन मोह महा दौरे शम्भु दुसह दमार दुखहाई की । कोरे उठी घनकी बचावै कहु कोरे प्राण कोरे लेती हिये ये झकोरे पुरवाई की १ ॥

क० ॥ सीरी सीरी बही चहूँओरते बयारि बड़ीघटन

बगारिबड़ो आसरो सो दै रह्यो। याहीहेतुछोड़िके नदी-
नि नद येते दिन तेरीआश गहे तेरी ओर तकते रह्यो॥
नीरदतू आपनो बिचारिदेखु नामशम्भु कहा ऐसेऔसर
में ऐसोहठ लै रह्यो। गरजि गरजि हुलसायो हियो
चातकको बुन्दनके समय में निमुन्द मुख कै रह्यो २॥

स०॥ आयहौ कारमें शम्भु लला घर बाहर ही
बरषा को बिताय हौ। तायहौ तापन ते अँग अंग अनं-
ग की रार सों कैसे बचायहौ॥ चायहौ जोतौ कहावहु
को फिर मोतन की कुशलातन पायहौ। पायहौ यामें
कहा यश कौन को सावन में मनभावन आयहौ ३॥

शालग्राम कवि॥

क०॥ सर तट सुन्दर नवीन गृह छाजै पुनि रिम-
झिम रिमझिम मेघके तड़ाके है। शोभित पलँग पर
कामिनी बहार पेखि पतिसँग हँसिहँसि सुखकै भनाकैहै॥
बारुणीको पानकरै गिजक सों फेरि फेरि शालग्रामदेखो
कैसे मदके सनाकेहै। जीव भनै चित्तसो अनन्द ऐसो
कौन अहै बादर घुमण्डे ऋतुपावस झनाकेहै १॥

स०॥छोड़ नदी नदमार्गहि रोकत दिक्षुविदुक्षहि धार
बही। छान छवाय सुखी सब लोगभे देखत हर्ष बहार
सही॥ नारिन मार बढ़ो झरि लागत कोकिला शब्दहि
कूकि रही। द्विज शालग्राम हरिः शरणं ऋतु पावस भूमि
झमाकि रही २॥

शंकर कवि॥

क०॥बिज्जुकी छटामें घन घोरकी घटामें बकपांतिकी

अभामें कैधौं नैननि लगायेना। दादुर कलामेंजोर शोर सरनामें पीउ पीउ पपिहामें हामें शोर सरसायेना ॥ शंकरजू जामें नीलमणिसी ललामें भूमि सोहै ठाम ठामें तामें कामें तेज तायेना । मोरहरषामें नदी नद तरषामें अजहूं लौं परषामें बरषामें हरि आयेना १ ॥

क० ॥ चंचलासी चौंकति चहूँघा आंशु बरषत फैले तम केशकी न सुधिउरधारी है । इन्द्र गोपझारीहै अँगारी बिरहागिवारी भूषण जड़ाऊज्योति रंगन बिसा-रीहै ॥ शंकर बखानै कै पपीहा पीव पीव रटै लाजहंस जामेंगति दूरकी निहारीहै।शोभालखि न्यारीमन आपने बिचारी बरषाहै यहभारी कि बियोगवारी नारी है २ ॥

स० ॥ हरी है सबै सुधि बुद्धिहरी तिय सेजपरी तन चेत नरीहै । नरीहै कहारति रूप रतीकन सोने के साँचे ढरी पुतरीहै ॥ तरीहै मनोज महानँद की नृप शंकर शोभित लाल डरीहै । डरी है खरी यह पावसमें सखि शोर सुने लखे भूमि हरी है ३ ॥

शेष कवि ॥

क० ॥ मोरनके शोरसुनि पिककी पुकार तैसी चातक चिकार सुनि सूनी श्याम यामिनी । जुगुनू जमक देखि झिल्ली की झनक लेखि भयसों बिशेष शेष डरै गज-गामिनी ॥ झरन झरतनीर कम्पत शरीर एरी बालम बिदेश धीर धरै कैसे कामिनी । मारे डारै मदन मरोरे डारै दादुरये दाबे आवै बादर दबाये आवै दामिनी १ ॥

संगम कबि ॥

क० ॥ तीरहै न बीर कोऊ करै ना समीर धीर बाढ़ो श्रम नीर मेरो रह्यो ना उपाउरे । पंखा है न पास एक आस तेरे आवन की सावन की रैनि मोहिं मरत जियाउरे ॥ संगम मैं खोलि राखी खिरकी तिहारे हेत होतिहौं अचेत मेरी तपनि बुझाउरे । जानु जानि मानो कौन कीजिये उताल गौन पौन मीत मेरे भौन मन्द मन्द आउरे १ ॥

सेवक कबि ॥

स० ॥ दिन रैनि की संधि न बूझिबेकी मति कोक तमी चुरवानलगी । नदियां नदलौं उमड़ी लतिका तरु तैसेनपै गुरवान लगी ॥ कहु सेवक ऐसे में कैसे जियै जिहिकाम तिया उरबान लगी । मतिमोरिनीकी मुरवान लगी गति बीजुरी की धुरवान लगी १ ॥

स० ॥ हैंधुरवा मुरवान कहूं पुरवा न कहूं बर बीजन लागी । छत्र लगाये महूं सँगमैं यहि कौतुक में मति छीजन लागी ॥ री बलि जाति न जातिकही सुनि सेवक-हून पतीजन लागी । ये घनश्याम अनोखे नये वृषभान सुता लखि भीजन लागी २ ॥

शेखर कबि ॥

स० ॥ लेहजू गेह को जैबो कहा इत आयो है नेह सोमेह उनैहै । जैहौन तोइतरैहौ कहापिय भीजत बूंदन को न छपैहै ॥ शेखर ऐसी कहो न तिया छपिये छतियांमें

भलो रँग रैहै। रंग तिहारो रहैगो लला पै हमारी तौ चूनरी को रँग जैहै १॥

सेनापति कवि॥

क०॥ दूर यदुराई सेनापति सुखदाई ऋतु पावस की आई नाहिं पाई प्रेम पतियां। धीरज जलधर की भों सुनि धुनि धरकी सो दरकी सोहागिनि की छोह भरी छतियां॥ आई सुधि बरकी हिये में आनि करकी कही जो प्राणप्यारे वह प्रेमभरी बतियां। बीती औधि आवन की लाल मनभावन की डग भई बावन की सावन की रतियां १॥

क०॥ दामिनी दमंक सुरचापकी चमक श्याम घटा की घमक अति घोर घनघोरते। कोकिला कलापी कल कूजत हैं जित तित सीकर ते शीतल समीरकी झकोर ते॥ सेनापति आवन कह्यो हो मनभावन सुलाग्यो तरसावन बिरह जुर जोरते। आयो सखि सावन मदन सरसावन सुलाग्यो बरसावन सलिल चहुंओरते २॥

क०॥ बर्बरात बैहर प्रचण्ड खण्ड मण्डल पै दरबरात दामिनि की द्युति सी अर्फरात। घर्घरात घनन के मेघआये झर्झरात पर्परात पानिपके बुन्दनते जर्फरात॥ भर्भरात भामिनि भवन मांझ सेनापति हर्बरात हाय हीय पीय पीय बर्बरात। चुर्भुरात खिन्न खिन्न धीरन धरत बीर नीरहीन मीन ऐसी सेज पर फर्फरात ३॥

क०॥ उनयेते दिन लाये सखी अजहूं न आये उनयेते मेह भारी काजर पहारसे। कामके बशीकरन डारै

अबसी करन ताते ते समीर जेहैं शीतल तुषारसे ॥ सेना पति श्यामजू को बिरह छहरि रह्यो फूल प्रति कूल तन डारत प्रजारसे। मोर हरषन लगे घन बरषन लगे बिनु बरषन लगे बरष हजारसे ४ ॥

सरदार कबि ॥

स० ॥ श्रावन पूरन मास भये यह कौन लला चित में अभिलाखी। छोड़त प्राणप्रिया अपनी पर भूमि तकावन को मति माखी॥ एसरदार बिचारकरो किनका सुध सोध सबै सुचि नाखी। सार्खीदै देवन को करमें घर राखत है परकी बर राखी १ ॥

श्री कबि ॥

क० ॥ छायो नभ मण्डल घुमड़ि घन श्रीकबिजू आनँद अथोर चारोओर उमगतहै। पायो मद मालतीको कुंजकुंज गुंजतहै भौंरदुखपुंज गेहगेहते भगतहै॥ धायो देश देशते बिदेशी सब कण्ठ लायो निजनिज तीको भरो मोदसो जगतहै। आयोसखी सावन सोहावन सही पै मोहिं बिन मनभावन भयावन लगतहै १ ॥

श्रीपति कबि ॥

क० ॥ आढ आढ करत असाढ़ आयो मेरीआली ड़रसे लगत देखि तमके जमाकते। श्रीपतिये मैनमाते मोरनके बैन सुनि परतन चैन बुँदियानके झनाकते॥ झिल्ली गण झांझ झनकारे न सँभारे नेक दादुर दपट बीज तरसै तमाकते। भरकी बिरह आग करकी

कठिन छाती दरकी सजल जलधरकी धमाकते १ ॥

क० ॥ घन दरशावनहैं बिज्जु तरपावनहैं चहूँओर धावनहैं वैहर सगाढ़की । माननी भयावनहैं मोर हरषावनहैं दादुर बोलावनहैं अति आढ़ आढ़की ॥ श्रीपति सुहावनहैं झिल्ली झनकावनहैं बिरही सतावनहैं चिंता चित वाढ़की । लगन लगावन हैं मदन जगावन हैं चातकको गावनहै आवन असाढ़की २ ॥

क० ॥ कंत बिन भावति सदनना सजनि मोपै बिरह प्रबल मैनमंत कोप्यो बाढ़के । श्रीपति कलोलै बोलै कोकिल अमोलैखोलै गौनगाँढ तोपैगौनराखेआढ़आढ़ के॥ हहरिहहरि हिय कहरिकहरि करि थहरिथहरि दिन बीते जिय माढ़ के । लहरि लहरि बीज्जु फहरि फहरि आवै घहरि घहरि उठे वादर असाढ़के ३ ॥

क० ॥ धावत धुरारे धुरवानकी निहारी पिय चातक मयूर पिक आनँद मगनभो । श्रीपतिहो सावन सोहावनके आवनमें बिरह सुभटते बियोगिनीको रनभो ॥ जलमयी धरणि तिमिरमयी देहदीह घनमयी गगन तड़ितमयी घनभो । छवि मयी बन भो बिलासमयी तनभो सनेहमयी जनभो मदनमयी मनभो ४ ॥

क० ॥ तमकी जमकबकपाँतिकी चमक ज्योतिभीं-गनझमक चमकनि चपलान की । बैहर झकोरै मोरै रोरैचहुँओरैसोरै प्रेमके हलोरै घोरै धुनि धुरवान की ॥ रतियाँ जमकिआई छतियाँ उमगिआई पतियाँ न आई प्यारे श्रीपति सुजानकी । नेहतरजन बिरहाके सरजन सुनि मान मरदन गरजन बदरान की ५ ॥

क० ॥ मदमयी कोयल मगनह्वै करत कूकै जलमयी मही पगपरते नमगमें । बिज्जु नाचै घनमें बिरहहिय बीच नाचै मीचु नाचै ब्रजमें मयूर नाचै नगमें ॥ श्रीपति सुकबि कहै सावनमें आवन पथिक लागे आनँदभो अँगअँग में । देहछायो मदन अछेह तम क्षितिछायो मेहछायो गगन सनेह छायो जगमें ६ ॥

क० ॥ धूमसे धुधारे कहूं काजर से कारे ये निपट बिकरारेमोहिं लागत सघनके । श्रीपति सुहावन सलिल बरसावन शरीरमें लगावन बियोगिनतियनके ॥ दरजि दरजि हिय लरजिलरजि करि अरजिअरजि पांय पकरे मदनके । बरजिबरजि अतितरजि तरजि मोपै गरजि गरजि उठै बादर गगनके ७ ॥

क० ॥ जलभरे झूमै मनो भूमै परसत आय दशहूँ दिशानघूमै दामिनी लयेलये । धूरिधार धूमरेसे धूमसे धुधारे कारे धूरवान धारे धावै छबि सों छये छये ॥ श्रीपति सुकबि कहै घेरिघेरि घहराहि तकत अतनतन तावतें तयेतये । लाल बिन कैसे लाज चादर रहैगी मोहिं कादर करत आय बादर नये नये ८ ॥

क० ॥ घांघरेकी घुमाड़िउमाड़ि चारु चूनरीकी पांयन मलूक मखमल बरजोरेकी । भृकुटी बिकट छूटी अलकै कपोलन पै बड़ीबड़ी आँखिन में छबि लाल डोरेकी ॥ लखिन तरलजड़ाऊजरबीले जोरस्वेदकनललितबलित मुखमोरे की । भूलतन भामिनी की गावन गुमान भरी सावन में श्रीपति मचावनि हिंडोरेकी ९ ॥

क०॥ सावन सुहावनको आवन भयो है पियधावन

धवलधुरवान को विशेखिये । बैहर झरप लागे घरक उठत छाती दरप जरप तड़तानकी परेखिये ॥ श्रीपति रसिक मनभावन तजत जिय या समय बिदेशको गवन कहा लेखिये । धीरज बिहण्डै बुन्द बदरी अखण्डै अति घनकी घमण्डै ब्रजमण्डलमें देखिये १० ॥

स० ॥ बैठि अटापर औधि बिसूरत पाय सँदेशन श्रीपति पीके । देखत छाती फटै निपटै उछटै जबबिज्जु छटा छबि नीके ॥ कोकिल कूकै लगै मनलूकै उठै हिय हूकै बियोगिनितीके । बारिके बाहक देहके दाहक आये बलाहक गाहक जीके ११ ॥

स० ॥ आवते गाढ़ असाढ़के बादर मोतन में अति आगि लगावते । गावते चावचढ़े पपिहा जिन मोसों अनंगसों बैर बँधावते ॥ धावते बारिभरे बदराकबिश्री-पतिजू हियरा डरपावते । पावते मोहिं ना जीवते प्रीतम जोनहिं पावसमें घर आवते १२ ॥

स० ॥ तेरेईवे झमके लखिकै जुगुनूनकीजेतन लूकै लगीं । बरकीसुधिकै दरकी छतियाँ जबसीरी बयारिकी झूकै लगीं । भनिश्रीपति आप घटा घहरै हहरै हियरा अतिहूकै लगीं । अब कैसे बनाव बनैगो पिया बिन पापिनकोकिल कूकै लगीं १३ ॥

स०॥ पपिहा की पुकार परीहै चहूँ बन में गण मोर-न गावनके । कहि श्रीपति सागर से उमगे तरु तोरत तीर सुहावनके ॥ बिरहानल ज्वाल दहै तनको क्षण होत सखी पग बावन के । दिन गे मनभावन आवनके घह-रान लगे घन सावन के १४ ॥

श्री पतिराय कबि ॥

स० ॥ घेरिघटा उनई चहुँघाँ छिनएकमें बिज्जुछटा छबिछायहै । श्रीपतिराय कहा करबी अरबी करिकै पिक-चातक गायहै ॥ कारो पिछौरा उतारि हहा अब चूनरी लाल अनूप सोहायहै । हौंजो सुनी घरीचारिकमै तिया आजु तिहारो पिया घरआयहै १ ॥

शिवलाल कबि ॥

स०॥ धावन कोऊ पठाऊँ उतै उनतौ इहि औसरमें कहे आवन । गावन एरी लगे मुरवा धुरवानभमण्डलमें लगे धावन॥छावन योगीलगे शिवलाल सुभोगी लगेहैं दशा दरशावन । तावन लागो बियोगिनको तनु सावन बीर लगे बरसावन १ ॥

स० ॥ वहुँ फूलै कदम्बनि कुंजनमें अरु भावतो पौन बहै नितमें । बरजै जनि कोऊ मयूरनको गरजै घन आपनेही मतमें ॥ शिवलालभयो मनभायो जितो अब और करौगी तितो नितमें । बरसाइतिमें घर आइगये बड़ेभाग भटू बरसाइतिमें २ ॥

शिवदास कबि ॥

क० ॥ कारेकारे धुरवाचिकुर चारु चमकत चंचला बरंगना सुआति अलबेलीहै । पचरँग अम्बर अडम्बर पटम्बरनि मुद्रित बदन चंद सुखद सहेली है ॥ जुगुनू जमाति नैन बगुला कतार हार केकीधुनि नूपुर अनूप रस रेलीहै । कबि शिवदास दिनदूलह मदनभूप बानक बनक बनी बरषा नवेलीहै १ ॥

शिरोमनि कबि ॥

स० ॥ आयो असाढ़ भई अतिगाढ़ गई सब रैनि पहारिसी ठाढ़े। कौन सुनै अरु कासोंकहौं चहुँओरते दामिनी नाखति बाढ़ै॥ मोरहीतेकरै कोकिल कूक शिरोमनि लेत करेजोई काढ़े। कामिनी के हनिबेको मनो चमकी झमकी जमकी जमदाढ़ै १॥

स० ॥ दादुर चातक मोरकरौ किनशोर सुहावनको भरुहै। नाहतेही सोईपायो सखी मोहिं भाग सुहागहु कौ बरुहै॥ जानि शिरोमनि साहजहाँ ढिगबैठ्यो महा बिरहा हरुहै। चपला चमकौ गरजौ बरसौ घन आश पियातौ कहा डरुहै २॥

शिवराई कबि ॥

क० ॥ मानो एक चोप तम्बू ठाढ़ोहै सुरुख श्याम डोरी मखतूल तामें लागत सुहावने। कहै शिवराई शोर करत कलापी पापी झिल्ली झनकारतबिरह उपजावने॥ ताही समय प्यारी सखियानते कहतबात लाल बिन घरी घरी युगन बितावने। काम पातशाहके हुकुमते परीसि मानो सब्रुज वनातके बिछायेहै बिछावने १॥

सोमनाथ कबि ॥

क० ॥ बादर उतंग अंग डोलत अनंग भरे बगन कतार दन्त दीरघ सँवारे है। चरखी चमक तरकतऔ गरज पुंज बरषे मदन निशि नीरके पनारे है॥ सोमनाथ प्यारे नदनन्द के बिरह जान ब्रजमें उमंगन करोर हन-

कारेहैं। आये घन भारे मैंबिचार उरधारे ऐरी कारेरंग-वार ये मतंग मतवारे हैं १ ॥

क० ॥ दिशि बिदिशानते उमड़ि मढ़ि लीन्हो नभ छोरि दिये धुरवा जवासे यूथ जरिगे। डहडहे भये द्रुम रंचक हवाके गुण कुहकुह मुरवा पुकारि मोदभरिगे॥ रहिगये चातक जहाँके तहाँ देखतही सोमनाथ कहूँ कहूँ बुन्दहु न करिगे। शोर भयो घोर चहूँ ओर नभ-मण्डल में आये घन आये घन आयकै उमड़िगे २॥

संतन कबि ॥

क० ॥ हूकै निरशंक अङ्क लैकै उरजन लाई निरखि निरखि नैन रूपरस चाखती। दीन ह्वैकै बोलती तुरत आँशुवन ढारिदोऊ करजोरि कै बिरह ब्यथा भाखती॥ ल्यावती पकरि गुरुजन आगे आँगनलौं संतन कहत बेगिलाज नदी नांघती। जोमैं सखी जानतीकी सावन बिदेश ह्वैहै पावन पकरि मनभावनको राखती १॥

सिंह कबि ॥

क० ॥ भूमि भई हरित सरित सर उमड़त सूझोना परत मग पग दीजियतु है। नेह सरसावन सधावन लगेहैं सिंह आवन की बारमैं बिदेश भीजियतु है॥ सखिन की सीख सुनि सींचिये न दुख बेलि केलि तज कबते बिरह कीजियतुहै। येहो मनभावन लगेहैं पिक गावन सुऐसे भरे सावन पयान कीजियतुहै १॥

सूरज कवि ॥

क० ॥ घने घन घेरि घेरि उमड़ि घुमड़ि आये ऐसो तम छायो मानो भूमि परसत है । चपला चमकि चहूं-ओर चारु चोरै चित्तामें वकपांतिनके पुंज दरसतहैं ॥ इतै झरि लागी उतै अनुरागी भये दोऊ कैसे हाव भावन में मैनसरसत है । सूरज सुकवि आजु लखै पिय प्यारी संग लाल वँगलामें लाल रंग बरसत है १ ॥

सूरत कवि ॥

क० ॥ गरज पुकारसों वियोगी तन छार भये बुंदै विष वारि परै महा बिषधारीके । धुरवा अनेक फन मण्डन को बिज्जु मनि चमकि चमकि चित्त होत नर नारीके ॥ बोरै फेन झरै वायु मन्त्रसों सँचारकरै देशनमें रोरि परै सूरत डरारी के । भामिनि भँडारे बिष वामी तै निकारे कान्ह फिरै घनकारे नाग पावस खिलारीके १ ॥

स० ॥ धनि वे जिन प्रेम सने पिय के उर में रस बीजन बोवती हैं । धनि वे जिन पावसमें पिसिकै मेहँदी कर कंज मलोवती हैं ॥ धनि वे जिन सूरत साजि सजै हम लाजके बोझको ढोवती हैं । धनि वे धनि सावन की रतियां पतिकी छतियां लगि सोवती हैं २ ॥

हरिचंद कवि ॥

क० ॥ कूकैलगी कोयलै कदम्बनपै बैठि फेरि धोये धोये पात हिलि हिलि सरसैलगे । बोलैलगे दादुर मयूरलगे नाचै फेरि देखिकै संयोगी जन हिय हरषै

लगे ॥ हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी लखि हरिचन्द फेरिप्राण तरसै लगे। फेरि झूमिझूमि बरषा कीऋतुआई घेरि बादरनिगोरे झुकिझुकि बरसैलगे १॥

क० ॥ आयो सखि सावन बिदेश मनभावन जू कैसे करि मेरो चितहाय धीर धारि है। ऐहैं कौन झूलन हिंडोरे बैठि संगमेरे कौन मनुहारि करि भुजा कण्ठ पारि है॥ हरिचन्द भीजत बचैहै कौन भीजि आपकौन उर लाय काम ताप निरवारि है। मान समय पगपरि कौन समुझैहै हाय कौन मेरी प्राणप्यारी कहिकै पुकारिहै २॥

स० ॥ गरजै घन दौरिरहैं लपिटाइ भुजाभरि कै सुख पागी रहैं। हरिचन्द जू भीजि रहैं हियमें मिलि पौन चलै मद जागी रहैं॥ नभ दामिनि के दमकै सत-शाइ छिपी पिय अंग सुहागी रहैं। बड़भागिनि ओई अहैं बरसात में जे पिय कण्ठ सों लागिरहैं ३॥

स० ॥ यह सावन शोक नशावनहै मन भावन यामें न लाजै भरो। यमुना पै चलौ सुसबै मिलि कै अरु गाय बजायकै शोक हरो॥ इमि भाषतहै हरिचन्द पिया अहो लाड़िली देर न यामें करो। बलि झूलो झुलाओ झुकौ उझकौ यह पाखै पतिव्रत ताखै धरो ४॥

हनूमान कबि ॥

क० ॥ नाचत कलापी जूह संगलै कलापिनको झिल्लिनकीभीर झनकारकै जमकि रही। दादुर करत शोरघोर चहुँओरनसों देख बगपाँति बिरहीनको धमकि रही॥ कहैहनुमान मानछोड़ि प्राणप्यारीजाय मोहनसों

मिलिदेखु लतिका लमकि रही। छाइछाइ मेहरहे चाव-नसोंब्योममाहिं धायधाय चहूँओरचपलाचमकिरही १॥

क० ॥ नाजुक नवेली अलबेलीलै सहेली संग आई बरबाग बीच अधिक निहोरे पै। हरीहरी क्यारिनमें डोलै गलबाहींदिये बोलै बैन मधुर सुभावभाव भोरे पै॥ कहे हनुमान ज्योंही झूलिबेको कीन्हो मन त्योंही सान छाईहै सुहाई मुखगोरे पै। झूलति हमारे हिये हूलतिहै सौतिनके फूलति कलीसी बालबैठी जो हिंडोरे पै २॥

क० ॥ अवली अलीन की अनोखी नवला लै संग चोखी रतिहू ते राजै आनँद अथोरे पै। साजे बिन दूखन के भूषन को अंगन में औरही अनूप आब आई मुख गोरे पै॥ कहै हनुमान घरहाई के सकोचन ते हेरति न लालैभई शोचन करो रेपै। हूलैहिये सौतिके अतूलै छबि धारि झूलै मनसों पियाकी गोद तनसों हिंडोरेपै ३॥

क० ॥ जाके मुख चन्द सौंहै लागत है मन्द चन्द कुन्दन ते सुन्दर सलोनो जासुगातहै। औरै छबि छाय रही अंगन में अंगन के अंचल ते उघरि उरोज दरशात है॥ कहै हनुमान प्रेम पूरण उघरि पयो छपत न कैसेहू छपाये सरसातहै। ज्योंज्यों मचकीनको मचाय बाल झूल-ति है त्योंत्यों खरो भूमै लाल लफि लफि जातहै ४॥

क० ॥ पकरे उरोजन को सकुच नवाय ग्रीवनाहींनाहीं कहि कहिबातैं अरतीहैं जे। हरीहरीडारनमें परेजेहिंडोरा तिन्हैं देखि झूलिबे को अनखाय लरतीहैं जे॥ कहै हनुमान तेई धन्य सुन्दरीन माहिं पैन्ह लालसारी हिये मोद भरतीहैं जे। सावन की हेरिघटा बैठी रँग-

शावटी में भावन की गोद में कलोल करतीहैं जे ५ ॥

क० ॥ हेरिकै बहार बरषाकी बलि बारबार आईबन बाग बीच मदन मरोरे पै। आसपास गावैं मंजुघोषासी सहेली सबै मंजुल मलार मनमोहै बरजोरे पै॥ कहै हनुमान ता समानमें शचीहै कहा जाकेरूप सौहै रहै रतिहू निहोरे पै। हीरन जटित चारु चाँदीको तखतडारि बैठी बाल झूलतिहै हेमके हिंडोरे पै ६ ॥

हनुमंत कबि ॥

स० ॥ धावनभेजु सखी वहिदेशबसै जिहिदेश पिया मनभावन। भावन मोर या लूकलगी तनबीच लगी जियशझ्झरसावन ॥ सावनमें नभयो हनुमन्तदोऊमिलि झूलि मलारहि गावन। गावनमोहिं सुहात नहीं बदरा बदराह लगे जुरिधावन १ ॥

हरिराम कबि ॥

क० ॥ अनलकी लूकै फूकै देत बिरहानलको तन भहराय घहराय घनगरजै। कोकिलाकी कूकै हूकै होत हिय हरीराम हाय हाय एतो ये पपीहा पापी नरजै॥ हरी भूमि जल भरी देखि सुधि बुधि हरी हरी पर देश अरी करी पंच शरजै। बरही बिदारत है बिरही के उरन को दई निरदई कोऊ बरही न बरजै १ ॥

हाफिज कबि ॥

स० ॥ चातक मोर करै अतिशोर उठी घनघोरहै श्याम घटा। चमकैबिजुरी अति जोर भरी अरु लागी

झरी लिये ठाट ठटा ॥ शोक भरी पछतावे खड़ी विरहागि जरी शिर खोले लटा । कराहि के हाय करै पछिताय वह हाफिज देखिके सूनी घटा १ ॥

हठी कवि ॥

क० ॥ झूमि झूमि आयेघूमि घने घनश्याम आली कूकै काकपाली कामपाली बरसात है । ऐसे समय कुंज भौनकीरति किशोरी तौन सखिन समूह साथ सुख सरसातहै ॥ कहा कहौं तोहिं ताहि देखिआई तैसे भटू कौतुक बिलोकि हठी हिय हरषात है। यमुना के तीर बहै शीतलसमीर तहांबीर बलबीरजूकोबलिबलिजातहै १॥

क० ॥ कंचन अटा पै बैठी जोवत घटाहैं प्यारी बिज्जु की छटासी सखी सेवत सिहातीहैं। लीन्हें करबीनै एकै गावती प्रबीनै हठी राग रागनीनके प्रमाण दिखरातीहैं॥ राधासुख चन्द की मरीचै ब्रजचन्द ए उमण्ड के प्रचण्ड कैकै ऐसी सरसातीहैं । मंड खंड मंडलको दाबिकै अखण्डल को फोर चन्द मण्डल को छोर कढ़ि जातीहैं २॥

नीचे लिखे हुये कवित्तोंमें कवियोंके नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ आली प्राण ग्राहक बकाली ये बलाहक मैं दाहकसी जगै पीर इन्द्र गोप गन ते । धीर धरै बीर किमि पेखि सुनासीर चाप उठत समीरलै कलाप तप तनते ॥ ठौरठौर मोरनकी कोर चहुँ ओर चितै हियेबर जोरह्वै मरोर छिन छनते। दामिनी दमकदेखि उठींबरि

कुञ्जधाम लखि घनश्याम झरि लागीरी दृगन ते १ ॥

क० ॥ आइये जुश्याम घनश्याम लता मुरझगई प्रेम उरझोहै जुबिचार चित्तलाइये। सूखो हिय नालपै सरोज कुँभिलायगये चातक मन मोर गर्ज बाँसुरीसुना इये ॥ उरबनमाल बक पंगत फबी है किधौं पीत पट फहरि बिज्जु बायु सरसाइये। कैसे बचैहाय कुसुमाकर मरोरैधरै समझमन नीत नेह मेह बरसाइये २॥

क० ॥ अंकुर कुसुम इन्द्र बधूगन चहूँ ओर करिकै मगोंहे राखे सूखिबेको पटहै। रूप घन श्याम घटा छटा शिर सोहतहै जलही बिभूति भूति पौन ताके तटहै ॥ हर हर अवाज सुनी जात घर घर जाकी भरिगो तलाब बड़ो खप्पर अघटहै। जगके बियोगिन को काम निशि दिन दाढ्यो सावन ह्वै योगी यों दिखायो मरघटहै ३ ॥

स० ॥ आयो असाढ़ हहा अबहींते चढ़ी चपला अति चापकै तूंदै। ह्वैहै कहा सजनी रजनी दिन पापी कलापी मचाई है दूँदै ॥ श्याम बिना कल नाहिं परै अँशुवान्न रहै भरि आँखनि मूँदै। ग्रीषम भानसी सोहत सानसी लागती बानसी बारिकी बूँदै ४ ॥

स० ॥ आजुरी देखु घटा घन सुन्दर सावन कीन्हों सुहावन साजरी। साजरी भूषण भोग शिंगार सो तेरोई आजु बन्यो सब काजरी ॥ काजरी आजु घरी वह नेह की तेरे अधीन खड़े ब्रजराजरी। राजरी वारों तिहूं पुर को मुरलीधर आये मया करि आजुरी ५ ॥

स० ॥ आये असाढ़ घटा लखिकै चपला चमकै घन बीच समैहैं। एकही बार बड़ेबड़े बुन्दपरैं क्षितिपै

छहरान मचैहैं॥ भीजत देखि उढ़ायकै कामरि लायगरे हरि मोहिं बचैहैं। ह्वैहै अनन्द सबै ब्रजमें जब गोकुल चन्दजू गोकुल ऐहैं ६॥

स०॥ आसवमें चपला चख चूंधित चौंकि अचौंकि भुजान भरेंगे। साहसकै रसकै मुसकै सिसकै बशहीतल ताप हरेंगे॥ पीपरदेश करै हिय पीर अधीर भये हम हाय जरैंगे। पावसमें पियप्यारी प्रमोदित कोऊ बिलासी बिलास करैंगे ७॥

स०॥ कर कागद लैकै बियोगिनि नारि लिखै इमि प्रीतमको पतियाँ। यहि पावसमें परदेश छये बलिहारी तिहारी शिला छतियाँ॥ सखियाँ पियसंग हिंडोरे चढ़ीं कहैं गीतमें गाभीभरी बतियाँ।अतिकारी डरावनी सांपिनिसी मोहिं शालति सावनकी रतियाँ ८॥

स०॥ आवत देरभई बरषैन लगे करषै पिक चातक दादुर। मोरसो शोर लगे धरषै चित चोर सने सुख सौतिं सहादुर॥ बन्दि उपाय बनैन किये नहिं फारिकै लाज समाज किचादर। बाढ़ धरायकै देती जराय ये दायक गाढ़ असाढ़के बादर ९॥

स०॥ काहेको रूसत पावसमें इन बातन तोहिंन कोऊ सराहै। पौन लगे लहराती लता तरुकुंज कदम्बमें केकी कराहै॥ बोल सुहावने चातकके लगे इन्द्रबधू गण धाई धराहै। बोलि पठाइ उतै उनये उनये नये देखि नये बदरा है १०॥

स०॥ करकी पसुरी जब लागिगई जबते ऋतु पावसकी बरकी। बरकी सुधि आयगई जबहीं बरषै बरषा

वो धरा धरकी॥ धरकी नभबंद महादुरकै सजनी न लखै द्युति चादरकी। दरकी छतियाँ सुमिरे बतियाँ पतियाँ नालिखै अपने करकी ११॥

स०॥ कोउजाइ शिखी गणको सिखवै अनखात न क्यों मघवा खलसों। पपिहाऊ पियै किन जायकै नीर अघाइकै गोकुलके थलसों॥ अब ऊधो दयाकरिआये इतै ब्रज बासिनपायो महा फलसों। थल बावरे दावरे बीच करे रह्यो मीनन काम कहाजल सों १२॥

स०॥ कोरन लौं दृग देती हौ काजर कारी घटा उमड़ी घन घोरन। घोरनते जोचली अलि सुन्दर नेक नहिं देती बाग के मोरन॥ मोरन की गति नाचत है नहिं मानत है हटको बर जोरन। जोरन अञ्जन देहु सखी अँखुरी कटि जैहै कटाक्ष की कोरन १३॥

स०॥ कूकै कलापीन चूकै कहूं झुकि झूकै समीर की आन झकोरत। त्योंपपिहा पपिहा गपिहा भयो पीव को नाव लै हीय हिलोरत॥ पावस पीर अधीर नथ्या वस घूंटै घटाघट त्योंघन घोरत। बूंदै बदा बदी बारिध लौं बाढ़ै बैरिनि आज बियोगिनि बोरत १४॥

स०॥ कूंजनदै कलकोकिल कूक पपैयन शोर मचावन दैरी। गावन दै मुरवान अरी धुरवा नभ मण्डल छावन दैरी॥ आलिन के गण को बरजै जिन पावस रङ्क सुनावन दैरी। अंकमें जो मन भावन तौ घन सावनकै बरसावन दैरी १५॥

क०॥पावस प्रथम पिय आवनकी औधहै जो आवतिही आवैतौ बुलाऊँ अति आदरन। नाहींतौन कीच

होंन देरी बीच सूखेसर छीपनहि आप खाली शखिखल खादरन ॥ बीजुरी वरजि कहिमेघ गरजि इनगाज मारे मोर मुख मोररी निरादरन । चोंच नांच चातिकन कण्ठ रोकि कोकिलन दूरिकरि दादुर बिदाकरदे बादरन १६॥

क० ॥ पावस प्रवेशपिय प्यारो परदेशये अँदेशकरि झांकतिहे महल दरीदरी । बगनकी पांति इंद्रबधुनकी कांति लखि भांति भांति बादर बिसूरत घरीघरी ॥ पवनकी झूकें सुनि कोकिलकी कूकें सुनि उठी हिय हूकें लगी कांपनडरीडरी । परीअलबेली जियखरी तल बेली तके हरी हरी बेली वके व्याकुल हरी हरी १७ ॥

क० ॥ पावस के आवत इतसरवर माहिं हंस जल माहिं होति देखी नित कलुषाई है । मानसर चलिबेकी सुरति लगाई निज हंसिनी सुबंसिनीहू हिये यादिआई है ॥ तहांके निवासी पक्षी पक्षिनी कहन लागे प्रीतिपर-देशीकी हमें ना सुहाईहै । कैसी अद्भुत वरषाकी ऋतु आईजो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुख दाईहै १८ ॥

क० ॥ पवन झकोरें झकझोरें झोरें बुंद बोरेंघने घन घोरेंबोरें दोरें चहुँ ओरेंरी । बिज्जु छटा कोरें बिनमोरेंजी रसाल कोरेंआवत असाढ़ भारी ठोरेंठोरें खोरेंरी ॥ जोरें प्रेम भोरेंचित धीरज बिथोरें नाहिं मानत निहोरेंकान दादुर येफोरेंरी । तोरें लाज छोरें कुल कानि बरजोरेंवीर मोरन की शोरें मोरेमनहिं मरोरेंरी १९ ॥

क० ॥ पावस में जागि अनुरागिरी सरोज नैनरैन दिन देत उपदेश को मनोज मुनि । नंद के किशोर बिन कैसे रहैजीव छिन पीउ पीउ होति पपिहा कीचहूं ओर

धुनि ॥ अंग थहरानलागे लता लहरान लखिसखिनाहिं धीरपीतपट फहरानगुनि । घटा घहरान छिनछटा छह- रान लागी हियोहहरान लागो झरि झहरानसुनि२०॥

क० ॥ प्रीतमन आये जाय द्वारिका में छाये ऊधो पातनि पठाई यहां पावसकी हूकहै । मेघ घहराने जल लागे झहराने अब काम शर ताने उरबेधत अचूकहै ॥ झिल्ली की झमक दूजे बिजुरी की चमक तीजे मेघकी घमकते उठत तन बूकहै । दुख सुख कासे कहौं प्रीतम न आये भौन कोकिलाके कूकते करेजा टूक टूकहै २१ ॥

स० ॥ पावसमें परदेश पिया सुखही बनितानसों प्रेम पगे । घन घूमि रहे छबिसों क्षितिपै मरयाद मनोरथ जात भगे ॥ अतिमारुत मार सुबाणन सोंपुनिनैन मनो सब याम जगे । किहिभांति पतिव्रत पालहुँरी मुरवा गिरिपै कहरान लगे २२ ॥

स० ॥ प्रीतम गौन किधौं जियभौन कि मारुकभौन मनायक मारो । पावस फूलकी पावक शूल पुरंदर चाप कि सुन्दर आरो ॥ सीरी बयारिकिधौं तरवारिहैबारिद वारिकै बान बिसारो । चातक बोलकी चोटचुभै चित इंद बधूकै चकोरको चारो २३ ॥

स० ॥ पारथको धनु घूमि गयो बरष्यो घन घोरचहूँ दिशितेज्यों । लङ्कपती हूउतारि धरी धनु टारि धरी रघु बीर बलीत्यों ॥ एकहीहै रस बात नई येजू शालत प्राण अचंभ यही यों । बैरी मनोज के हाथ रही बरषा ऋतु येरी कमान चढ़ी क्यों २४ ॥

स० ॥ घन घोर घटा चहुं ओर चली चिनगी जुगुनू

चमका बनो है । मुरवान के कूक अचूक हियेसहि हूक महा पछि तावनो है ॥ मन माहिं सदा मुद दम्पति के बिरही जन ताप तपावनोहै । अलि सावनमें मनभावन तेरहि दूरि महा पछि तावनो है २५ ॥

स० ॥ घेरि घटा घन कारी चहूं दिशि शोर कठोर रहे करि दादुर । बंदि छटा छबि छाई हरी भरी भुम्मि लतानन की बिछी चादर ॥ आदर सोंरहे कूकि शिखी निशि कारी अँध्यारी करै हिय कादर । ताल तमालन जाल बिशाल रसालन पै बरये घने बादर २६ ॥

स० ॥ घन घोर घटा उमड़ी चहुं ओर सों मेह कहै न रहो बरसों । हरि राधिका दौरि दुरे दोउ कुंजमें लागि रहे तिहि ठांवरसों ॥ अतिसीरी बयारिबहै सजनी मुसकाय तिया जुकहै बरसों । अजू आजको धोसन भूलिबे को यह याद रहै बरसों बरसों २७ ॥

स० ॥ घन श्याम घटा उनई इतते घन श्याम नहीं घन घात करै । चमकै चपला दमकै छतियां क्षणही क्षण आँखिन आँशूढरै । पलही पललौं पिय पीय रटै कलनाहीं परै दुख देह जरै ॥ पलसोंन लगैं पलपीय बिना पलकाके परे पलकाके परे २८

स० ॥ घोर घटा घहरैनभ मण्डल तैसिय दामिनि की द्युतिजागत । धावत धूरभरे धुरवा मुरवागिरि शृङ्गन पै अनुरागत ॥ फैली नई हरियारी निहारि संयोगिनके हियरा अनुरागत । रीति नई ऋतु पावसमें ब्रजराज लखे ऋतुराज सों लागत २९ ॥

क० ॥ घुमड़िघुमड़ि आये बादरउमड़ि धाये साँवरे

बिदेश छाये औसर करारेमें। दादुर पपीहा मोर शोरचहुँ ओरकरैं मारत मरोर उठि कामज्वार जारेमें ॥ धूम जल धारै करै उमँगि सलिल सरै गाजकी गजोन मरै बैस मतवारेमें । झूकैं झुकि जातीं चढ़ीं झूलिझूलि गातीं देखिफाटै बीरछातीया कुठौर ठौर मारेमें ३० ॥

क० ॥ घन घिरि आयो बन सघन तिमिर छायो रैनको डरैंगे लेखिदेखियों दृगनतें । नंदजू कहत बृषभान नंदिनीसों नंदनंदनहि घरैजाहु लैकै बेगिबनतें ॥ गुरुके बचनपाय प्रेमकी रचन भरेचले कुंजतीर तरु देखिकै बिपिनतें । यमुनाके कूलमें रहसि रस केलिमयी ऐसे राधामाधो बाधा हरौ मेरेमनतें ३१ ॥

क० ॥ घोरघन घुमड़ि घटानकी घुमण्डनमें बीजुरी प्रचण्ड नेकधीरज धरीरहो । दादुर चकोर मोरशोरचहुँ ओरनते निशिदिन एक झर बरसै हरीरहो ॥ उर लपटाय सुखपाय नवनीत संग जंघ जुरि केलिरस रंगमें भरीरहो । गरज हमारी कर दरज दिलोंहे बीच प्यारी नेक और घरी द्वैकतो परीरहो ३२ ॥

क० ॥ घहरि घहरि घनघोर चहुँओर छाये छहरि छहरि छबिशोभा सर सारैरी । पवन झकोर जोर दादुर मयूर शोर चोपभरे चारों ओर झिल्ली झनकारैरी ॥ येरीमेरी बीरबनै धारतन धीर अब पातकी पपीहा पीव पीवकै पुकारैरी । यंत्रको न धारै अरु मंत्रको उचारै जाते तजिकै प्रवास मन मोहन पधारैरी ३३ ॥

क० ॥ घमकि नगारनसों मेघन गराजकीन्हों चपला चमकि किरपान दरशायोहै । भूपति मनोजकी ध्वजान

फहरान लागी बक मेहरान अस्मान भरि छायोहै ॥ दादुर नकीब चहुँ ओरसों पुकारकरें मोरनकी हाँक सुनि सुरन जनायोहै। ऐसे समै जानिकै गुमान मतठान प्यारी गाढ़े दल साजिकै असाढ़ चढ़ि आयोरी ३४॥

क०॥ शीतल सुगंध मंदडोलै किनडोलै पौन धुरवा धुरारे चहैधावै चहै धावैना। प्यारे मन भावनके आवनकी औधिगई विरह सुकल चहै पावैचहै पावैना॥ प्राणनकी प्यासी सौतपावस प्रचण्डभई अबकै कलापी चहै गावैचहै गावैना। जतन अनेकनसों अबना बचौंगी वीर अब वे बिदेशी चहै आवै चहै आवैना ३५॥

क०॥ श्याम छवि धारे फिरै धुरवा धरणिछ्वैरीइंद्र धनुपीत पट चटक दिखायोहै। दामिनि दमक द्युति देत देतवोर सोई कुण्डल अमोल लोलगति चमकायोहै॥ विशद बलाकन की पांति बनमाल अति मन्द मन्द मेद बाँसुरीलों स्वर गायोहै। आवन अवधि रही प्यारेमन भावनकी सावन सुहावन सों साज सजि आयोहै ३६॥

क०॥ सांची कहैरावरेसों झांवरे लगत माल आवै जिहि काल सुधि साँवरे सुजानकी। फूलभार भरीडार जैसे यम जार ऊधो कालिन्दी कछार सजै धारज्यों कृपानकी॥ चपला चमक लगै लूक कैअचूक हिये कोकिल कुहूक बरजोर कोरवानकी। कूकमोरवानकी करेजा टूक टूक करै लागतिहै हूक सुनि धुनि धुरवानकी ३७॥

क०॥ सांझहू सकारे झनकारे होत नदी नारे पावस के मांझ झांझ झिल्लिन तजतये। दामिनि मशाल को दिखावै ताल दादुर दै मोर चहुँओर नाच नाटको

सजतये ॥ धुरवा मृदंगनकी धीर धुधुकार ठानराते नैन मातक लगानको भजतये। शोकको जनम ब्रजओक में भयोहै ऊधो साँवरे बिरह ते बधावरे बजतये ३८ ॥

क० ॥ सोहत सुभग बैल बाहन बिमल बायु बिशद बकाली शेषहार लपटायोहै। सादर सों लायबर बादर बिभूति अंग दादुर उमंग धुनि डमरू बजायोहै ॥ कारी घटा गज छाल धारा जटाहै बिशाल दामिनी छटा त्रिशूल सुन्दर सुहायोहै। काटिहैं कलेश मोद देहैंरी भटू बिशेष धरिकै महेश भेष सावन लखायोहै ३९ ॥

क० ॥ सावन सुहावन बिशेषि नभ धनुलेखि याद होति झटपट पीत अभि रामकी। तकि मृगपाँती बिल पाँती अकुलाती मतिआवति सुरति वह मौल सिरी दामकी ॥ मोर चहुँ ओर देखि मुकुट सुरति होत चपला चमक देखि कुण्डल ललामकी। ऊधोब्रजबाम कैसे धीरधरैं सूने धाम लखि घनश्याम सुधि आवै घन श्याम की ४० ॥

क० ॥ श्याम घन घटा छाय आय आय अटा पर दामिनि छटा दिखाय कटा सी करावै लाग। शोरकै चकोर मोर मोर मन मोरै लगे दादुर गोहार करि मार गोहरावैलाग ॥ कोयल कुहूकि कूकि टूकटूक कीन्होंहिय जुगनू दियासी बारि अंग अंग तानै लाग। बन्दि बिन भावन पपीहा यहि सावनमें पियापिया टेरिटेरि जियको जरावै लाग ॥ ४१ ॥

क० ॥ सावन सोहावन ह्याँ लागत भयावन सो आवन अवधि अब सोचैं गज गामिनी। ऐहैंधों कबहूं

बलबीर ह्यांकि नाहिं ऊधो कैसे धीर धरैये अधीर ब्रज कामिनी ॥ जहांतहां योगनकी ज्योति जगै ज्वाल जैसी यमकी जमातिसी जनाति जातियामिनी। जारैहै पपीहरा पुकारै पीउपीउटेरि घेरिमारै बादर दरेरिमारै दामिनी४२॥

क० ॥ सुंदर सरस ऊंचे महल मजाकेमंजु भंभरी भरोखन में जोय बोई करिये । तड़ित प्रचण्ड औ-घटान के घमण्डन में प्रीति रस प्यारीते समोयबोई करिये ॥ परि परयंकपै सुनीत नवअंक लायकै कर निशंक लंक गोयबोई करिये। अधरकपोल रसरंगमें मगन होय गरक गलेफ बीच सोयबोई करिये ४३॥

क० ॥ साजै शोर बादरसमाजै जोरचहूँ ओर बाजै ऋतुराज के बधाई के तुतुरवा। तैसी तन तीरसी बयार बहै सीरी सीरी मंद मंद बोलैं मद माते वन मुरवा ॥ गवन की तुम्हें परी आजु इहिसमै हरीहरीहरी भूमिभई दूबके अँकुरवा। बूंदै बरषावन पियाके परसावन सनेह सरसावन ये साँवनके धुरवा ४४॥

क० ॥ श्याम घटा नाहीं येतो धूमकी छटाहै छाई बीजुरी कहां है येतो भाकै उठैं धुरमें। गरज कहां है घोर फाटै ऐसी थवन की जुगुनू कहांहै येतोचिगै उठैं सुरमें ॥ मेघ बुंद नाहींये बुभावत फिरतदेव तिनहीं के छीटा देखि आवत अतुर में। लाल बिन दावादलअब की बचावै कौन येरी आगलागीहै पुरंदरके पुरमें ४५॥

स० ॥ सदा चातिक चायसों बोल्यो करौ मुरवानको शोर सुहावनहै। चमकै चपला चहुँ चाव चढ़ी घनघोर घटा बरसावनहै॥ पलकौ पपिहान रहौ चुपकै अरु

पौनचहूँदिशि आवनहैं। मिलि प्यारीपियालपटे छतियाँ सुखको सर सावन सावनहैं ४६॥

स०॥ सावनके दुख दावनये घनश्याम बिना घन आनि सतावें। तैसे मिले तिन्हैं आनिय मोर सुजोरके शोर जरे पै जरावें॥ प्यारेको नाम सुनाय सखी हिये पापी पपीहा ये शूल उठावें। नेह नवेली भरी अबहौं दिन दोइक पीय जो औरन आवै ४७॥

स०॥ सखियाँ कोउ भूँकते भूलनके डरि लागहिं प्रीतम की छतियाँ। कोउ डोरधरे कर एक त्यों एकते पीकी बचावति हैं घतियाँ॥ कोउ गाइ मलार रिझाइ रहीं अरु कोऊकरैं रसकी बतियाँ। कब पीर निवारिहौ मो हियकी पिय जातिहैं सावनकी रतियाँ ४८॥

क०॥ उठेघन जाल देखि दामिनिकपाल देखि देव-राज चाप देखित्रास अति आवतो। बुंदवृंद पात देखि सूर्य अप्रकाश देखि दिनहूको अन्तदेखि चैनहून पावतो॥नभको बितार देखि बायुसुख चार देखि अति अंध-कार देखि मो मैं मन लावतो। होतो उहां पावसतौयेरी सखी बातसुनौ बीसबिसे आजहीहमारो कंतआवतो४९

क०॥ उमड़े सरित सर भारे बेशुमारे अति बहे नद नारे छहरारे जल थलपै। मारुत हहारे तरुवन तोरि डारे पातपात भोरि डारे जारि डारे जवादलपै॥ पैदल सवारना चलत घाट बाटनमें भरोहै चहल बंदि रहल गहलपै। कंत बिन कामिनी भयामिनी अटापै लगे घेरे रहै घटा नेक मेरेहि महलपै ५०॥

क०॥ उठत पहारे घनकारेसारे बदल के कज्जलते

कारे धुधकारे देत दामिनी। झकत झरारेते करारे बुंद बरसत भारे अन्धकारे घटा लागतभयावनी ॥ मोरवा कुहूकै जोरशोर पिक कूकै बेदिसल्डुक घघूकै शोचहूकै कोकिला घनी ॥ कंत बिन कामिनी बिरह सरसावनी सो लागेडर पावनी या भादों केरी यामिनी ५१ ॥

स० ॥ उठि देखुरी बीर अटान अटा चढ़ि बिज्जु छटा छहरान लगी। अति सीरी बयार सुगंध सनी द्रुम बेलिन पै फहरान लगी ॥ सखि औधिकी आश धरीपै रही लखिकै छतियां थहरान लगी। यह कैसी अचानक आनि बनीरी घटा घन की घहरान लगी ५२ ॥

स० ॥ उत कारी घटा इतमें अलकै बक पांति उतै इत मोति लरी। उत दामिनित्यों तियदन्त इतै सुरचाप उतैइत भौंहतरी ॥ उत चातकत्यौ पिउपीउ रटै बिसरैन इतै पिउ एक घरी। उत बुंद अगाध इतै अँशुवा बिरहीते मनौ घन होड़ परी ५३ ॥

स० ॥ ऋतु पावस आइगो भागन ते सँग लालके कुंजनमेंबिहरौ। नहिंपायहौ औसरऔर युवत्वकहा अब लाजलजाइ मरौ ॥ गुरु लोग औचौचंदहाइनसों बिरथै केहि कारण बीर डरौ। चलि चाखै सुधा अभिलाखै करौ यहि पाखै पतिव्रत ताखै धरौ ५४ ॥

स० ॥ ऋतु आई सोहाई नईबरषा बढ़ोमोदमयूरन के हियको। हरियाई चहूं दिशि फैलि रही अनुराग बढ़ावतहैजियको ॥ चढ़ि ऊंचे अटान बिलोकै घटाकर कंज सों हाथगहे पियको। लखि कंज कलीन तड़ागन में मुख मंजु मलीन भयो तियको ५५ ॥

स० ॥ चाह चढ़ी चितमें हितकी उत कौनहुंके रस में अनुरागे। लेत नहीं सुधि देत महा दुख ये धुरवा मिलि आय अभागे॥ कौलौं रहौं धरि धीर कृपानिधि बोल उराहन के कढ़ लागे। बेली लगी गर वृक्षन के पिय दक्षन ह्वै परदेश में पागे ५६॥

स० ॥ चपला चटमोर किरीटलसै मघवा घन क्षोभ बढ़ावत हैं। मृदु गाजत आवत बीण बजावत मत्तमयूर नचावतहैं॥ उठि देखु भटू भरिलोचन चातक चित्तकी ताप बुझावत हैं॥ घनश्याम घने घन बेषधरे सो बने बनते ब्रज आवत हैं ५७॥

क० ॥ चाय चढ़े दादुर ते बेधतहैं बदनको झिल्ली सुर सु आसव सुखानि को ओमु है। पढ़त पपीहा केकी कोकिल अखण्ड कांडी हरहिर जग मग्यो जुगनूको खोमु है॥ दल दीजो ऊधो प्राण वंत की जो पाय गही लजनि करै जो नेक देखो चाहै जोमु है। गोपी होतीं आहुत बिरह कुण्ड पावसमें आइये सदनश्याम मदन के होमु है ५८॥

क० ॥ चपलाचमक घन गरजन साज संगसहित अनंगके तरंग धरिबोकरै। शीतलसुगंधयुतपवन सहाय करि बसुधाअपार जलधार भरिबोकरै॥ चातक पुकार मोर शोर करिहार बन झिल्ली झनकार हर भांति अ-रिबो करै। पिय के परयंकमें निशंकह्वै भरति अंक अब घन घोर चहूंओर करिबो करै ५९॥

क० ॥ चीरफहरावन झुलावन संयोगिनको हियो-हुलसावन रिझावन सोहायो है। सुधि बिसरावन तर-

लावन सतावन जगावन अलन मोर सोरनमचायोहै ॥ धीर जगवावन विरहकावन फुलावन तावन तड़ित रसाल घन धायो है । विन मनभावन बढ़ावन विरह ताप सावन वितावन वियोगिन को आयो है ६० ॥

क० ॥ गयेकहि आवन न आये यहि सावनमें ऊधो मनभावन भुलाय रहेहैं तही । कै रहीं बिहाल बाल व्रजकी गोपाल विन रैनि दिन नैन ते अपार धार ह्वै वही ॥ बैठिजन पुंजठाम यमुना निकुंजधाम छांड़िश्याम पाहिंह्यां सोहात नाहिंहैकही ।गरजैहैंघनघोर लरजैहैंबन मोर नंदके किशोर सुनी अरजै अजौ नही ६१ ॥

क० ॥ गगन गरजि छायो मेघ जोरि झरिलायो शीतल समीर वहै त्रिविध भयामिनी । कोकिला कलोलै करै मोरबोलै चहूँओर कोपिकाम आयोजू अकेलीयाम कामिनी ॥ ऊधोजी शरीर सुख सब कोऊचाहतहै कहत बनैनहै पराई पीर पामिनी । मारेडारै मदन मरोरे डारै दादुरये दाबे मारै बादर दबाये मारै दामिनी ६२ ॥

स० ॥ गरजी घनघोर घटा चहुँओर भयो विरहा तबहीं सरजी । सरजी जुभये पिक दादुर मोर लिये रति नायक की मरजी ॥ मरजी जुउठी पियकी सुधिलै चपला चमकै न रहै बरजी । बरजी अब कौनरहै सजनी भयो पावस मोजियको गरजी ६३ ॥

स० ॥ गरजी पुनि घोर घटा सजनी रजनी दिन ऊबत भीतरजी । तरजी तड़िता नभ शोर सुने सुमनै मन कान भयो मरजी ॥ मरजी हित हाहा करी कितनौ अरजी न कबूल कियो बरजी । बरजीनहिं

मानत मेरी भटू भयो चातकसों जियको गरजी ६४ ॥

स०॥ दादुर बोल मचै चहुँओर सुने बिरही हिय ताप बढ़ावत । पावसकी झमकी रतियाँ पतिकी छतियाँ बिनकौन बितावत ॥बोलहिंगे अलिकुंजनमें बनके मुरवा धुनि टेर सुनावत । काह कहौं सखिनाह बिनाअबयै बदरा बदराह बतावत ६५ ॥

स० ॥ दोऊ अनंद सों आंगनमांझ बिराजे असाढ़ कीसांझ सुहाई । प्यारीके बूझतऔरतियाको अचानक नाम लयो रसिकाई ॥ आयो उनै मुहमेह सोंको हनित्यों सुर चापसी भौंहें चढ़ाई ।आँखिन तें गिरे आंसूके बुन्द सो हाँस गयो उठि हंसकी नाई ६६ ॥

स०॥ देखैं अटा चढ़ि दोऊघटा दृगलागे दुहूनिसों प्रीति लहीहै । दैपटयों कुसुमी रंगको पटयों पर प्रीतम प्रीति कही है॥ चूनोमिलै हरदी रँगरोचन प्यारे कुमार पढ़ायो सहीहै । बाढ़तरंगहै एकत संगही रंगभये बिन रंग नहीं है ६७ ॥

क० ॥ देहौं दृगअंजन तिहारे हठ मंजनकै पावकसों जावक हौं पाँयन दिवाय हौं । सूहो शिर सारी डारि झूलिहौ हिंडोरे माँझ धीरेसे सुरन कछुगुण गणगायहौं ॥ हठ नाहीं कीजे हाहा रक्षाकर बांधिबेकी सुनहु सयानी याको भेदहौ बतायहौं । मेरेतन ग्राम बैठो बिरह नरेश नामकैहैं चिरंजीव याते भूलिना बँधायहौं ६८ ॥

क० ॥ दमकै दशौ दिशा दुनाली द्यौद दामिनिकी घनकै नगारे भारेउर उलझनके । झनकै झनाक झुण्ड झींगुर बिगुलबाजै सनकै समीर तीर शुक्र शरासनके॥

मनके समर मद सेचक छिल्ल कोर ठनके नकीब दर्प दादुर दुमनके। मनके मदूल छिन्न कामिनि कदनके ये स्याह वीर बादूर बहादुर मदनके ६९ ॥

क० ॥ झूमत झुकत झूमि झूमि घूमि घूमि चलें भूमि सों भिरत मनो बलके उमंगये। बार बार गरज सुनावे बरजे न जाहिं नहींहै उदारधारमदके तरंगये॥ दंत बकपांतिते डरावै बिन कंत मारे अंकुश समीरहू न माने कारे रंगये। करिये सहाय आय या छिनमें श्याम घन होहिं न सघन घन मदन मतंग ये ७० ॥

क० ॥ झूलत हिंडोरे बँधीप्रेममन डोरे मणिमालउर डोले संग डोले मणिमालके। छाये श्रमसीकर तुषारके हँसीकर मनोज के बशीकर लचन लंकबालके॥ भावन के राग भरिगावन लगीहैं राग कानन सुहान लागे कोकिल रसाल के। पैन अतिचंचल चलतचखु चंचल यों फहरै अंचल सुरंग पटलालके ७१ ॥

क० ॥ झूलत हिंडोरे प्रिया पीतम यमुन तीर बोलै पिक कीर छवि छाजत लतानकी। बांधे पाग पचरंग ओढ़े चूनरी सुरंगकंचुकीदुरंगबेदी कीरि द्युति भानकी॥ ब्रजबधू गावै झुकि झुकि के झुलावै श्यामा श्याम के रिझावै होतबरषा सुगानकी। घोरघन गाजै बगपांतिहू बिराजै ताकेबीच बीचबाजै बंशीसुन्दर सुजानकी ७२॥

स० ॥ झरुहै झहरान झकोरन हैं दुरुहै कहि दादुर दूदन को। बरही करहीमिलि शोर महाभय नेक न दामिनि कूदनको॥ ब्रजराज बिचारत भीजेगी राधिका

कुंजन कोनन मूंदन को। अपने करतानतकामरी कान्ह जितै भरजानत बूंदनको ७३ ॥

स० ॥ झरलाग्यो झरी उघरै न घरी नदियां उमगी जलधारन सों। यह भूमि हरी मनलेत हरी धुरवाधुकि जात बयारन सों ॥ लखि बादर दादुर शोर करै मिलि कूकत मोर मलारन सों। हँसि दोऊ मिले गरबांह गरे झुकि झूमै कदम्ब की डारन सों ७४ ॥

स० ॥ झूलत दम्पति नेहरँगे रसपुंजनिकुंजनिहों बलिहारी। रंगभरे पिय दीन्ही सखी कल झूलभकोर के रंचक भारी ॥ ढीलीभई मोतियानकी डोरसुकोर ह्वै हेर्‌यो ललातन प्यारी। आलीरी लाज भरी बिचघूंघुट कैसी लसी अँखिया अनियारी ७५ ॥

स० ॥ झरनाहि बराबर बान जुरे बक नाहिं लगी पर ऊपर है। जुगुनू गन बूढ़न एकन आगि परें मिरि भालन को भर है ॥ मुरवा अरु चातक दादुर शोरन जंतु कुलाहल को गरहै। बिरही जन जीवनके बध कों बरषा न सखी शरपंजरहै ७६ ॥

स० ॥ नई नोखी भई हो कहा तुमही उमही रहती मति दीन्हीदई। दई कान्ह की बीरी न लेति भटू तुम्हें या बतियां कहो को सिखई ॥ खई में न बड़ो भयो कोऊ कहूं छिनहीं अतिहीं रिसि पूरि गई। गई भारमें नाहीं न नाहीं करो लखो कैसी घनेरी घटा उनई ७७ ॥

स० ॥ नीर झलान को पोखत पीर न वीरन बुंद बिसारे हैं बान ये। धूम बियोगिनि के घट कों घुटि भूमि पै झूमि रहे धुरवान ये ॥ जौ झरतै न रहैंगे सो

नैन नदी नद सिंधु भरेंगे निदान ये। पीकहि पीकहि पापी पपीहरा पीगये जानिके पीगये प्राणये ७८॥

स०॥ जाइ के द्वारका बैठि रहे जुलहे अबला ब्रज की दुखभारी। आवतमेघ नयेउनये जुगुनू दरसैसरसै निशिकारी॥ कोकिल कूक करै हिय हूक उलूक सो बोलत पीक पुकारी। आंसु झरै अँखिया से तिया छतियां करके बकै हाय बिहारी ७९॥

क०॥ जादिनते प्राण रखवारे न पधारे ऊधोतबते हमारे उर भारे खेद दै सबै। कोकिल कुहूक हूकलगै बिज्जु कला लूक टूक टूक करै हियो मेघ गरजै जबै॥ घेरेदुख मैन मति धीरज सकै न धरि आवत न चैन दिन रैन मन में अबै। पैहै सुखनैन मम लखें सुखमा के ऐन आये सुखदैन यह बैन सुनिहौं कबै ८०॥

क०॥ जबते हमारे प्राण प्यारे हैं पधारे उत धीर नहिं धारे जात पीर हिय में जगै। शीतलसमीर भयो तीर कालिन्दी को नीर बीर बलबीर बिनु नीर दृग ते डगै॥ केशरी समान जब बिरह परे है भान योग ज्ञान ये गयन्दयूथतबहीं भगै। बोली कोकिलानकी करै है शूलहूल हमें ऊधोयेकदम्बनके फूल गोलीसे लगै८१॥

क०॥ धुरवा कालिंदी कूल इन्द्रचाप बटमूल राजत अतूल अति आनंद की शाला सी। गरज मृदंग भारी चातकअलापचारी केकीततकारी पिकेदतहट तालासी॥ बड़ी बड़ी बुंदन बखेरि पुहुपांजलि को धीरीपौन उघटि सुघटि पांति आला सी। ब्योम राजमण्डलमें नृत्यकरै श्यामघन आसपास दामिनी बिराजै ब्रजबालासी ८२॥

क० ॥ धीर गयो हीको सुनि शोर वरही को बीर नाम लैकै पीको या पपीहा आनि पीकोहै। मेघ अवली को घोर पौन अवलीको वहै मार अवलीको हायमार अवलीको है ॥ नाहसे पथी को कहूं आइबो न ठीको कहै देखि अवनीको रँग लागत न नीको है। डारे अध जीको मोहिं कीन्हे अधजीको यह जानत न जीको भेद हरत न जीकोहै ८३ ॥

स० ॥ धायेहैं आज घने घनघोर सों बोलत मोर बियोग जनाये। जनायकै मोह बियोग सों योबन मारत काम के बाण चढ़ाये ॥ चढ़ाय के लाये हैं श्याम घटा वदरा चहुंओर महाझरि लाये। लाय कै मोहिं कहां बिलमे अजहूं नहिं पीव बिदेश सों धाये ८४ ॥

स० ॥ धावन लागे घने बदरा चदरासी धरा हरी छावनलागे। बंदि सुनावन लागे शिखी रवदादुर शोर मचावन लागे ॥ गावनलागे मलार औ सावन चातक कूक उठावन लागे। वेमनभावनआयेन आली बिदेशी सबै घर आवन लागे ८५ ॥

स० ॥ हरी भई भूमि उठ्यो घन घूमि बरस्सत झूमि हरक्खत मोरे। तड़प्पत भेक सड़क्कत सांप खड़क्कत पात पहार के पोरे ॥ लपक्कत बिज्जु लला लड़जास झमक्कत झींगुर झांझसे झोरे। पछी पछितात तपी बिलखात डरप्पत कामिनि कन्त के कोरे ८६ ॥

स० ॥ है घनघोर घने घहरातसो मोर सुने हहराति हिया है। कौन करे मनसा घरको रस भीजिबे की भई भीति भियाहै ॥ कामके काज इलाज यहै बिन काजकी

और सबै वनिताहैं। पावस में सुख सोइ लहै जिहिकी रतियां छतियां छतियाहै ८७॥

क०॥ होयरही हरी हरी ब्रजकी सकलभूमि फूलन के भार झूमि रही झुमडारीहै। लहरैं कलिन्द नंदनी की नीकी लसै नभ उमड़ि घुमड़ि रही घटा धुरवारी है॥ प्यारी मनमोहनजू झूलत हिंडोरे जहांसुरभि समीर धीर चले सुख कारीहै। प्रेम बश भीजत फिरत फेरिबरषा में बनमें विहार करैं राधिका बिहारीहै ८८॥

क०॥ मान गढ़ घेरा होत गरज अरेरा होत दादुर दरेरा होत जेरा होत जामको। पिक भटभेरा होत धकपक हेराहोत गरब अरेरा होत बेराहोत सामको॥ पवन सरेरा होत धनुष घरेरा होत बुंदन गरेरा होत खेराहोत बामको। बीजुरी उजेरा होत कौंधा चकफेरा होत घनन को घेरा होत डेराहोत काम को ८९॥

क०॥ रहसि रहसि हँसि हँसिकै हिंडोरे चढ़ी लेति खरी पैंगैं छबि छाजै उकसनमें। उड़त दुकूल उघरत भुज मूल बढ़ी सुखमा अतूल केश फूलनि खसन में॥ ओझलकै देखि देखि भये अनमेष श्याम रीझतबिसूरि श्रम सीकर लसनमें। ज्योंज्यों लचिलचि लंकलचकत भांवतीको त्योंत्योंपियप्यारोगहै आंगुरी दसनमें ९०॥

क०॥ बोलत है बन मोर दादुर करतशोर दामिनि की कौंधै अति लागति भयावनो। गरजत घन घोर काम चढ्यो दलजोर कहाकरौ नाहनाहीं महामन भावनो॥ बैठीं हौं अधीन अबयाको धौं बिचार कहा मेरे गरे परेवोई सावनो डेरावनो। और सहेली सब झूलत

हिंडोरोडारि श्वासकोहिंडोरोमोहिंपस्योहैझुलावनो ९१॥

स० ॥ बादर रेख उठी नभमें पुनि फैलिगई अति आतुरताई । श्याम तमालते भूमिभई तम पुंजछये तिहि औसर आई ॥ घोरघटा घन धारलगी अँधियार भयो बिजुरी अरराई । लाय हिये हरिको नँदराय डेराय उठे गउवें क्षिति राई ९२ ॥

स० ॥ तड़पै तड़िता चहुँओरनते क्षितिछाइ समीरनकी लहरैं । मदमाते महागिरि शृंगन पै गण मञ्जु मयूरनके कहरैं ॥ तिनकी करणी बरणी न परैसो गरूर गुमानन सों गहरैं । घनये नभमण्डलते छहरैंघहरैंकहुँ जाय कहूँ ठहरैं ९३ ॥

स० ॥ भावनते मनके बिछुरे जबते तबते तनकाम सतावन । तावन देह समीर करै बदरा लखि मोर लगे कल गावन ॥ गावन घेरि घटाबरषै जियकोसिगरे विधि हैतरसावन । सावन कौन उपाय सखी हियलाय मिलों अपने मन भावन ९४ ॥

स० ॥ भजिबेगि चलों मथुराको भटूबचिहै न कोऊ करिजोरनरी । घिरि कारी डरारी घटानभते लटकी धुरवानकी डोरनरी ॥ अतिचाय चढ़ी लहकै चपला बहकै बरहीन के शोरनरी । वहपाछिलो बैर सँवारि पुरन्दर चाहै अबै ब्रजबोरनरी ९५ ॥

स०॥भादोंकी भारी अँध्यारी निशा झुकि बादरमन्द फुही बरसावै । लाड़िली आपनी ऊँची अटापै चढ़ीरस रीति मलारहि गावै ॥ तासमय मोहनकेढगदूरितेआतुर

रूपकी भीखयों पावै। पौन मयाकरि घूँघुट टारैदयाकरि दामिनी दीप दिखावै ९६ ॥

क० भादौंभरे सरवर नदी नारे घरघर धरापर मेघ बुन्द झरझर झरति है। भरिभरि नयननमें नीरनिमैन मारीहारी बरिबरि अरिअरिबीरमें कहतिहै ॥ धरिधरि देखौकर हियो होत धरधर थरथर काँपैधर धीरनाधरति है। हरिहरि जीवजात देखे लता हरिहरिहरिहरिहरि हरि रसना रटतिहै ९७ ॥

क० ॥ छुहैनहिं इन्दीवर छैहैना कलिन्दी माहिनाहीं अबसखी श्याम बिन्दीहू लगायहै। आनि जनिनील-मणि भूषणनि मेरीबीर दूरिकरि येरी मृगमदको नलाय है ॥ आली का कपाली कौनसुनिहै रसाली कूकअबतौ तमालनके कुंजमें नजायहै। देखिहै घटान कौनचढ़िकै अटान बामश्याम संग बैर अब हमहूं बढ़ाय है ९८ ॥

स० ॥ छाय रह्यो तमकारी घटानयों आपनो हाथ पसारि लखै को। अंगरचे मृग के मद सों मणि मर्कत भूषण साजि अँकैको ॥ नील निचोलनकी छबिछाजति त्यों भ्रमरावली सोंमगछेको। सावनकी निशि साहसकै निकसी मन भावन के मिलिबे को ९९ ॥

स० ॥ लागे अषाढ़ सबै घरआवत देशविदेश रहै नहिं कोई। मानसकी कहिये जुकहा पशुपक्षी सबै बश कामके होई ॥ कोरी सखी मुख मोरी हँसै यह पावस देखि तिया रति जोई। कैसे ये प्राण रहैं घटमें बरसात गई बरनाथ न सोई १०० ॥

स० ॥ लाग्यो अषाढ़ सबै सुख साजन मोजिय में

बिरहा दुख बोई । सावन में सब केलिकरैं मैं अकेली परी संगसाथन कोई ॥ कैसे जियों अब येसजनी ऋतु पावस में घनश्याम बिगोई । कौनसी चूक परी बिधना बरसात गई बरसाथ नसोई १०१ ॥

क० ॥ ऐहैं कबहूंधों हरिकहो तुम सूधोऊधो ब्रजकी बधूटी जूटी बूझतिहै बेरिबेरि । देहको परस मृदु सरस सनेह वह होयगो दरश घनश्याम को किनाहिं फेरि ॥ आयो यह सावन नआये मनभावन क्यों लगोहै डरावन मनोज जनु फौज घेरि । दूमै द्रुम डार छोर झूमै पिक बरजोर घूमै घन घोर मोर झूमै चहुंओर टेरि १०२ ॥

क० ॥ कारेकारे बदरा पवनलै प्रचण्ड करौ घनकी घनाक नेक चित्तहू न धरिहौं । पापी ये पपीहाके सचान लैके प्राणलेउँ कोकिलाके कण्ठकारे काटिकाटि डरिहौं ॥ झींगुर झँगारको बोलाइ लेउँ नीलकण्ठ शेषको बोलाइ सबै दादुर सँहरिहौं । आवनदे सावनरे मेरे मनभावन को रहुरे अषाढ़ तेरे हाड़हाड़ गढ़िहौं १०३ ॥

क० ॥ कारेकारे बादर डरावने लगत अब दादुरकी धुनि सुनि भूलै दशातनकी । बुन्दकी भकोर झकझोर पुरवाई करै हरै मन मोर शोर चहूं ओर बनकी ॥ हरी हरी लतिका करावैं घरीघरी यादि इन्द्रगोप लखि लाल गुंज माल गनकी । नन्दके कुमार बिन लागै उर आर ऊधो पपिहा पुकार झनकार झींगुरनकी १०४ ॥

क० ॥ कारीअँधियारी रैनि बिजुरी चमंकैऐन दादुर के बैन मेघ बरसैं फुंहूंफुंहूं । पवन झकोरझोर झिल्लिन की घोरशोर चातक चकोर मोर कुहुंकैं कुहूंकुहूं ॥ ताही

समय सुधि मन ठानी मनमोहनकी ढुरैलागे आंशु नेक नयनन से लुहूं लुहूं । मसकिमसकि प्यारो ज्योंज्यों लप टातजात त्योंत्यों मुख मोरिमोरि करत उहूंउहूं १०५ ॥

क० ॥ कलना परै हिये कन्हैया की सुगैया लखे चलन समैया में ललन कह्यो आवनो । औधि आस श्वास रही प्यास अधरामृत को आयो यह सावनो न आयो मन भावनो ॥ पीरे वा दुकूलकी सुरतिआये शूल उठै कूल कालिंदी को हूल लागत डरावनो । पावस रसम देखि दहत असम बाण ऊधो क्यों खसम कह्यो भसम चढ़ावनो १०६ ॥

इति श्री षट्ऋतुहजारा अन्तर्गत
पावस ऋतुवर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ शरदऋतु वर्णन ॥

दोहा ॥

पथिकसुखदविकसितकमलअमलकामआकास ॥
कुमुद बन्धु युत कौमुदी वरनिय शरदविलास १
चन्द्र छत्र धरि शीशपै लहि अनंग उपदेश ॥
कमल शस्त्रगहि जीति जगलीन्होंशरद नरेश २
घन घेरो छुटिगो हरषि चली चहूँ दिशि राह ॥
कियो सुचैनो आइ जग शरद शूर नर नाह ३
दिन सोहत जल अमलहै निरमल कमल अनूप ॥
निशि जोहतही बादबदि हिय मोहत शशि रूप ४
उयो शरद राका शशी क्योंन करत चित चैत ॥

मनहुँ मदन क्षिति पालको छाँह गीर छबिदेत ५
अरुण सरोरुह करचरण दृग खंजन मुखचंद ॥
समय आइ सुंदरि शरद काहिन करति अनंद ६
चंद बदन दरशाइ अरु खंजन चखनि चलाइ ॥
सकल धराको छलत मन शरद अपछरा आइ ७

अभिमन्यु कबि ॥

क० ॥ यमुनाके पुलिन उजेरी निशि शरदकी राका को छपाकर किरण नभ चालकी । नन्दको लड़ैतो तहाँ गोपिका समूहलैकैरचीरासक्रीड़ाबजे बीनाडफतालकी॥ लहा छेह गातनकी कही न परत मोपै द्वैद्वै गोपिकाके मध्य छबि नँदलालकी॥शोभा अवलोकि अभिमन्युकबि बोलिउठ्यो एकबार बोलोप्यारे मदन गोपालकी १ ॥

कालिदास कबि ॥

क० ॥ हिलिमिलि जोखनिमें झांकत झरोखनिमें हियरामें हिलकी दृगन अँशुवारमें ।कालिदास कहैआप कामिनी कुरंगनैनी दामिनीज्यों देखीजबति दमक हुआ-रमें ॥ जोन्हमें दहैगीदुख ऐसेक्यों सहैगीजैसे सीतापार सागरके रघुबर केवारमें । नन्दके कुँवर कान्ह कैसेकहो पैहो जान छांड़ि वृषभान जूकी कुँवरि कुवारमें १ ॥

क० ॥ गचगीरी रावटीके अजिर उजेरेचारु चाँद-नीके औसरमें चंदमुखी पीजिये । कालिदास वाके तन रूपकी मिठाई लाल बासरमें सुधाते सरसमान लीजि-ये ॥ दूनोंदुख सूनोभौन खोजिये परोसी कौन रोजरोज केलिके कलापनमें भीजिये । चोरीराखो द्वारमेंचितैबेको

चहूँघा कान्ह मेरीसों कुवारमें करेरी केलि कीजिये २ ॥

कवींद्र कवि ॥

क० ॥ गगन गयंद पर चढ्यो करि हंकारबंका पिकनाद आगे होत मन भायोहै । भनत कविंद तारे सुभट अमोर जोर पैदर चकोर मोर शोर सरसायोहै ॥ तोर तम अग्ग खग्ग लेकर उदग्गबर मदन हरौल मानगढ़ पर धायोहै । चमू चंद्रिकानके पसारे अवलेश नखतेश आज नवतम नरेश बनि आयोहै १ ॥

क० ॥ शोभाको सदन शशि बदन मदन कर बंदै नर देव कुमलय बलदाई है । पावन पद उदार लसत हंसक माल दीपति जलज़हार दिशि दिशिधाई है ॥ तिलक चिलक चारु लोचन कमल रुचि चतुर चतुर सुखजगजिय भाई है । अमल अम्बरबीचि नीलपीन पयोधर केशोदास शारदाकी शरदसुहाईहै २ ॥

किशोर कवि ॥

क० ॥ राजीजिय करति रसीलिन कीराजी तैसी राजी मुकुलित मालतीकी दरशातियाँ । कुंजकुंज मन्दिरन अलिपुंज गुंजरत मंजु मकरन्द मन्द गतिसी बिभातियाँ ॥ कहत किशोर कोषबद्ध कमनीय महा रमनीय रमन बिनाहू बन जातियाँ । शरद समस्त शोभाशशिमय व्योमकाम बशमय बिठवरंग रसमय रातियाँ १ ॥

क० ॥ हरत किशोरजो चकोरनको तापकिल कुमुद कलाप मुकुलीकर सुछन्द भो । मानिनीनहूँके हियदर्प दलित कर कन्दर्प कन्दलित करिजग बन्दभो ॥ मुदित

कमल अवलीकर तिमिर कवलीकर दिशान धवलीकर अमन्दभो । अम्बुध मितकरि लोकन मुदित करि कोक अमुदितकरि समुदित चन्द भो २ ॥

क० ॥ अतिही अमन्द बन्धु चन्द्रिका सुधाकर की पुंडरीक पथिक पियाको प्रति कूल है । कहत किशोर निशि नारिके हियेकीमणि दरशावै कुँवर किशोरी दिन दूल है ॥ दरद हरनबर परब कोइन्दु स्वच्छ शरद सुइ न्दिशाको मुखसुख मूलहै । तारकान कलित मँझारचारु द्युति फूल्यो अंतरिक्ष कल्प तरोवर सोफूल है ३ ॥

क० ॥ आजु रंगरस भीने रसिक बिहारीबर बिरचि बिचित्र ब्योम चारु चित्त चोरी के । बैठे धीर ध्यासन कलिंद तनयाके तीर सुखमान चाहैआपु रसमानथोरी के ॥ कहत किशोरदीन मंजुकर कंज बीन परम प्रबीन गावै गुणगण गोरीके । छकत प्रभामें लखि अतिअभि रामैश्यामै शरद निशामै श्यामै कुँवरि किशोरी के ४ ॥

कान्ह कबि ॥

क० ॥ मन्द मुसक्यानि चंद ज्योतिमें उदोति होति कुंदमें दिखावै द्युति दशन रसालकी । खंजन लखावैं कान्ह नैनमन रंजनसे पानिलौसुहावै कलाकंजनबिसाल की ॥ भौंरनकी गुंजपुंज मंजुल मँजीरनसीहँसनि चलावैं गति श्याम के सुचालकी । आयोरी शरद काल दरद बढ़ावन को जरद करैहै हमैशोभा धरि लालकी १ ॥

घनानन्द कबि ॥

स० ॥ फैलिरही घरअम्बर पूरमरीचिन बीचिनसंग

हिलोरत। भौंरभरीउफनात खरी सुउपायकी नावतरेरन तोरत ॥ क्यों बचिये भाजिहूघन आनँद बैठि रहे घर पैठि ढिंढोरत। जोन्ह प्रलैके पयोनिधि लौंबढ़ि बैरिनि आज बियोगिनि बोरत १ ॥

जगमोहन कवि ॥

क० ॥ अकल अरील माते मंजुल मलिंद जल अमल अमंद चंद पूरण कदनहै। अधर अनोखेअरुणारे बन्धु जावकसे चाँदनीसे हास त्यों सितारेसे रदन है॥ खंजनसे मातेमन रंजन चकोरसे अञ्जतबनैननैन सुखमा सदनहै। शरद मरालीसी मृगनालीसीमिलीसी आली कैसो जगमोहन सोहावन बदन है १ ॥

क० ॥ दमकि गईरी देह दौरिकै डुरावै कहिजारती जुरासी ज्वाल जालिम जुन्हैयाकी। शीतल सरोजनकी पांखुरी बिछाई सेज लागती अँगारसी अनोखी अंगनैयाकी॥ तीर कैसीतीक्षण समीर सरिताके बरिबीति है नयोंही निशाशरदसमैयाकी। फाँसुरी गरेकीबाजीबाँसुरी बिसासी कैसीविषकी भरीसी जगमोहन कन्हैयाकी २ ॥

जीवन कवि ॥

क० ॥ डोलैनभ बीथिनमें बोलै धरिमौन ब्रत भये सित भूतिलाये रहेतित छजिकै। जीवन द्विजन को दै जीवन मुकुट होय बनेहैं बिमल बाम चपलाको तजिकै॥ दीजै नहिदोष एकऐसे ऑलिऊधवको श्याम भये बाम अब करो योगराजिकै॥ नीरद शरदके दरद दलि देश देश करै उपदेश येऊयतीबेष सजिकै १ ॥

दिवाकर कवि ॥

क० ॥ अम्बर अमल होत चन्दकी बढ़त ज्योति खंजनकी गोतमानों परी आइनाकते । भनत दिवाकर तरंग गंग स्वच्छ भयो ऊग्योहै अगस्त जल सूखे जनु साकते ॥ जहँतहँ पथिक चलनलागे चारोंओर शरद नरेश कियो तियपिय छांकते।दिनतो बितत संगसखिन हितलसत रातिना कटत बिनु श्याम चन्द राकते १ ॥

क० ॥ दीपदान देवन दिवारीको चढ़ाती सब जुवा खेलिदम्पति हियेमें हरषातीहैं।वेश्यागण रसिक रिझावै कैशिंगारदेह सुखमुसक्यातिहरे राग बरषातीहैं ॥ भनत दिवाकर अटापै घाटबाट गेह रोशनी तमाम चहुँ कोन दरशाती है। प्यारे ब्रजराज बिनपापी द्विजराज सखी रातिये दिवारीकी अराति सम जातीहै २ ॥

दिनेश कवि ॥

क० ॥ आयोऋतु शरदबिरोधी चंदमान करु मदन कमान करु कीन्हों दुख दैनको । नान करु प्यारी अप-मान करु सौतिन गुमान करु प्रेमअनुमान करुरैनको॥ कहत दिनेश फूलेपंकज प्रमानकरु कानकरु सूधे सन-मान करु चैनको । हठमन मानकरु दूरिकिन मान करु मानकरु प्यारेको समान करु मैनको १ ॥

क० ॥ आनँदको कंदमुख इंदुअरबिंदु पानिप अमंद तन कीरतिसी कामकी । नासातिल कुसुम प्रकाश हांस कास मानि सकैको वखानि खानि सोहै बिसरामकी ॥ खंजन दिनेश दृग त्रिबली सरित कुचकलस उतंग हरि

छबि कटि छामकी। कीजिये कन्हाई मनभाई आई कुंज बन शरद सुहाई के निकाई वहि बामकी २ ॥

क० ॥ कोकासर मैनसर मैनके निहारियत ह्यारियत तीको ताप जातपैननेरे ते। लागे असुधाकर सुधाकर प्रकाश काश अमल अमल जोर शरद करेरे ते ॥ कहत दिनेश ब्रज बालकी जवालकोजु बिरच्यो रच्योन आन चलै किन येरेते। बारिजात मुखीबैन नीकेनैन बारिजात बारिजात बारिजात वारिजात हेरेते ३ ॥

क० ॥ पूरित सुरस शुभ अतिही सुमन केके मोहत जोरसिक अनेकनिको चित्तुहै। मंजुल मधुरधुनिशकुन सराहि जामै मेचक बरन बहु अरथ निमित्तुहै ॥ कहत दिनेश जो प्रसाद गुन वृत्तिसो है ठामठाम भरो बिसरामनि सो नित्तुहै। देखिये त्रिबिधि बातरीति खटपद रूप आली यह कुंजनही उत्तम कवित्तुहै ४ ॥

क० ॥ शीशनाइ सुमुखी सकोचनि समाइ रही मिस करि प्यारीगयो निकसि अगारते। मौन गुरुजन मुसुक्यानी नंद सौतिनको शूलसम लाग्यो उर अकस अपारते॥कहत दिनेशमिलि सखियाँहँसनलागीं दुचित परोसिनि भईहीभय भारते। पाँइ परियत उठि लागुउर मेरेमन मान तजिप्यारी यह कीरके पुकारते ५ ॥

क० ॥नागप्रिय सुखदानि मण्डित बिभेदनसों दरश पुनीत रसपूरण अमलहै। दण्डनसो वलित बिराजै हरिहीसों कमलासन प्रकाश औअधरजाको दलहै ॥ कहत दिनेश रज रंजित सुभग तन सोहत सरस हित कोष अबिरलहै। तापस बखानै के बखानै कोउ

महीपाल आली उर आनो भलो कोमल कमलहै ६ ॥

देवमणि कवि ॥

क०॥याहीते निपट निरधारि तोहिं नीरसकै छाड़्यो सब सुरन सुधारसको चाखि चाखि। देवमणि वेहीकाज बैर बिरही जनसों बाँध्यो ऐसीबातन कलंकी भयो साखि साखि ॥ शरदकीऋतुमें उचाटचित्तब्रजराज राधेको बिरह ब्याप्यो उठतयों भाखिभाखि।कियोकहा चाहतहैरै निचारीचितचोरयेरेचंद चाँदनीकीचटकहिराखिराखि १ ॥

देवी कवि ॥

क० ॥ निर्मल अकाश ऐसो जल यमुनाको जैसो कठिन प्रकाशशशि सूरज शरदको । उडुगन गनत गने नजातरैन दुख द्योसदेखि देवीकहै मारगगरदको॥ प्रेम की दरद ब्यापी भयो है जरद गात चंपे कैसो पात रंग रात्योहै हरदको । कातिक दिवारी बारि खेलैं सब नाह नारी हों तौ युग फूटी सारि जोके ज्यो नरदको १ ॥

धीर कवि ॥

क० ॥ घाम सम चांदनी वे घेर्यो ब्रज मण्डल है ताती चण्ड करसी मयूषन मचायले । आज अबलनि मारि औरहू कलंक लैके मनके मनोरथ नीके कै रचाय ले ॥ धीर बल बीरके बियोगी नैन नीर भरे प्रेम रस प्यासे प्रेम तिनको जचायले।येरे मन्दचन्द सुनिआवै ब्रजचन्दजौलौ तौलौ तनगोपिनको बिरहतचायले१ ॥

———

नागर कवि ॥

क० ॥ कढ़त निशाकर दिवाकरसे दीठिपस्यो अंध-
कार सोतो एक पल में पलायो है। भोर भयो जानि कै
बिहंगन में शोर मच्यो अवनी अकाश में प्रकाश सर-
सायोहै ॥ परीचल चाल बाल चमू चतुरंगिनीमें नागर
तपततेज ब्रजपर आयोहै। चांदनी नहोय यहमानिनीके
जीतिबे को मैन महा रथी ब्रह्म अस्त्रहिं चलायोहै १ ॥

क० ॥ पूरण शरद शशि उदित प्रकाशमान कैसी
छबिछाई देखो बिमल जुन्हाई है । अवनि अकाश गिरि
कानन औ जलथल व्यापक भईसो जिय लागत सुहा-
ईहै॥ मुकता कपूरचूर पारदरजत आदिउपमाये उज्जल
पै नागरन भाईहै । वृन्दावन चन्दचारु सगुन बिलोकि
बेको निरगुण ज्योति मानों कुंजन में आई है २ ॥

स० ॥ छाई छपा दिन ज्यों दरसी मिलिके चकवान
बियोग बिसास्यो । सौ गुनो बाढ्यो प्रकाश दिशान में
चौगुनो चावन जात उचास्यो ॥ कैसी खिली है अलौ-
किक चांदनी नागर ताको बिचार बिचास्यो । राधे जु
ऊंचे अटा चढ़िकै कहूंआज निलाम्बर घूंघुटटास्यो ३॥

नन्दराम कवि ॥

क० ॥ चन्द्रमा प्रकाशन में चन्द्रमुखी हासन में
अवनि अकाशनमें कासनमें छाईहै । नन्दराम तालनमें
इंदी बनमालनमें चंचरीक जालनमें अधिक अमाईहै ॥
मैत्रकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूलीफुलवारिन
में सौगुनी सोहाई है । कामकैसी खेतिन में बालुका

समेतिन में सूर सुता रेतिन में शरद समाई है १॥

क०॥ छै रही तयारी महा रानी रास मण्डल की मल्लिका व मालती सो अमित अगार हैं। कहै नन्द-राम गई जरी सेत सारी साजि गोपकी कुमारी हिये हीरनके हारहैं॥ षोडश कलासों आजुउदित कला-धरहै चाँदनीके मारनसों छोड़े अभिसार हैं। सेतचाँदनी में सेत चाँदनी चँदोवातने मानों क्षीरसिंधु परे पाराके पहार हैं २॥

क०॥ षोड़शहजार बाल षोडश शृंगारसाजि षोडश बरष बैस मुदित बिहार है। बाहुन सों बाहुजोरि मोरि अंगन सों कीन्हों महा मण्डल अखण्डल अपार है॥ कहै नंदराम तैसेतार औसितार झिलि चूरीखनकार स्वर पंचम उचार है। भूतल दिशान बिदिसान आसमानहू लौं छम छम छाई घुंघुरू की झनकार है ३॥

स०॥ महि मल्लिका मालती जातीजुही शुचिसेवती प्राण पियासी भई। क्षणदाकरकी करकातीभई, बरषानि कितौ बरषाती भई॥ नँदरामजू चाँदनी चौकनमें चहुँ ओरते भानु प्रभाती भई। अँखियाँनमें तौ बरषासी भई बरषान कितौ बरषाती भई ४॥

नाथ कबि॥

क०॥ हारेबल बादर घटनलागे नीर आली अमल अकाश आयो शरद सुहायेहैं। सूखेथल जहाँतहाँ मा-रग बिलोकिपरे गौनके बटोही भौनआप नेरीआये हैं॥ अगर कपूरधूर फूलफल अक्षत लै दशमीकी पूजाकरि

देवन सनाये हैं। रहकिकै नारिन ते करत बधाई नाथ जिनै घर प्राणप्यारे आश्विनमें आये हैं १ ॥

क० ॥ मंजनके मंदिरको सबनि सँवारेसेत राते पीरे रंगनि विचित्र चित्रभरिये। घरघर आँगन अटान वार वारनमें दीपकसे बारि बारि वारपाँति धरिये ॥ ज्योति जगैअवनिपै अधिक अँधेरोनश दरशकी रैनिजामें कला शशि हरिये। शोभा समूहनाथ सबैब्रज देखियत कातिक में आयलाल दीपमाल करिये २ ॥

नवीन कवि ॥

क०॥मोदनीके देखिये कुमोदिनीकेहीके दीह दीपति दिपति दीपद्युति उपटान की। लोक लोक लोकनके थोकन विनोद बाढ़ो शोभा सरसाई स्वच्छ सरित तटान की ॥ रंगभरी राजत नवीनरस राकारम्य शीतल सुगंध गंध रजनी जटान की। नंदित चकोरै छवि छाकि सुख लूटैलेत छूटैचंद्र मण्डलते छहर छटान की १ ॥

क० ॥ ग्रीषमकी घामहै नघाम घनश्यामयाते छ्वैगई सुवान स्वेतह्वैगई जरद की। बीचन दरीचन के आभा है मरीचन की कामने निकारी कोर तीक्षण करद की ॥ फैल फैल गैलनं नवीनविष फैलभरी दोषत दुखीनद्युति पारद बरद की। गरद करीहौ दिन दरद मरीहौ सखी शरद परीहौ लखिचाँदनी शरद की २ ॥

पदमाकर कवि ॥

क० ॥ तालनपै तालपै तमालनपै मालनपै वृंदाबन वीथिनि विहार बंशीबटपै। कहै पदमाकर अखण्ड रास

मण्डल पै मण्डित उमण्ड म्हा कालिंदी के तट पै॥ क्षितिपर छानपर छज्जत छटानपर ललित लतानपर लाड़िलीके लट पै। आईभले छाई यह शरद जुन्हाई जिहिपाई छबि हाजही कन्हाईके मुकुट पै १॥

क०॥ खनक चुरीनकी त्यों ठनक मृदंगनकी रुनुक झुनुक सुर नूपुरके जालको। कहै पद्माकर त्यों बाँसुरी की धुनि मिलिरह्यो बँधिसरस सनाको एकतालको॥ देखत बनत पैन कहत बनैरी कछू विविधि बिलासयों हुलास यह ख्याल को। चंद्रछबि रास चाँदनीको परगास राधिका को मंदहास रास मण्डल गोपालको २॥

प्रबीण कबि॥

क०॥ मालिन ज्योंकरमें कमललिये आगेखरी चौंसर चमेलीके रुचिर राखलाईहै। जौहरीकी युवती ज्यों तेजभरे तारागण हीरनके हारबलि विविधि दिखाई है॥ पश्चिन के ओरकी प्रबीण मृगनैनी अंग ओढ़े चारु चादर ये चाँदनी सुहाई है। लाललखि लीजैआजु रावरे रिझावन खवास ज्यों शरदपास आरसी लियाई है १॥

बलदेव कबि॥

क०॥ सुन्दर सुखद पद भुजमन ताजि मद संद जानि मेरो कहो शरद अनन्द को। द्विज बलदेव कहै दरदर सदन में मदन के दूतभेजि दीन्हों पूतनंदको॥ दलित दुकूल द्रुम कदम कलिंदी के है इंदीबर बदन दुरावना पसंद को। दीपति दुगुण देश दिशि दशहूमें देत दीरघ दराज दिल देखियत चंदको १॥

ब्रजचन्द कवि ॥

क० ॥ शरद निशामें कान्ह बाँसुरी बजाई बेस जल थल व्योम चारीजीव प्रेम भरिगे । कहै ब्रजचंद तजे ध्यानहूं मुनीशनने त्योंही मानिनीनके गुमानमद झरिगे ॥ चकित सचीश रजनीहू थकित भये तुरत स्वयंभू मोह जाल बीच परिगे । शम्भुहू की भूली आधी अंग कीविराजी गौरिगौरिहूके गोदके गजानन विसरिगे १ ॥

बोधा कवि ॥

क० ॥ कोऊ लीन्हें छत्र कोऊ चौरकर लीन्हें कोऊ छाह गिरि लीन्हेंकोऊ दांवन सकेलती । कोऊ पानदान पीकदान कर आरसीलै अतर गुलाबनकी सीसीशीश मेलती ॥ बोधा कवि कोऊ बीन बाँसुरी सितार लीन्हें लाड़िली लड़ावै फूल गेंदनकी झेलती । छोटेब्रजराज छोटी रावटी रंगीन तामें छोटीछोटी छोहरी अहीरन की खेलती १ ॥

बदन कवि ॥

क० ॥ पूरब हरित बनिताको मुखपत्र तामें रचना रुचिर बर मृगमद रंगकी । कैधौं नभसर बर फूल्यो है कमल तामें मेचक प्रभाहै आली अवली उमंगकी ॥ औरो कबि कोबिदन उपमा अनेककही बदन बखानैएक इहिबिधि अंगकी । बिरही निरखि याहि नाखत निसास यातें आगिल दिखात मानो आरसी अनंगकी १ ॥

भोलानाथ कवि ॥

क० ॥ सुन्दर सुधाख्यो सौध सुधासों सुधार सन्यो सौरभ सरस सुरभित आस पाससो । बिमल बिछौने बिछे रजत जुराके चारु जगमग होत भोलानाथ के निवाससो ॥ राकापति छायो तैसोमध्यमें सुमध्य बालबैठी परयंकपै बिराजत सुहाससो । अम्बरमें चंदकी अवनि परचंद चहूं चाहत चकोर शोर पाख्यो है प्रकाशसो १ ॥

मोहन कवि ॥

क० ॥बादलाके बीजना बनाय बर बादलाके बानिक सहेली ज्यों सुरेशके सदनकी । मोतिनके हारऔ हमेल गुलूबँद बेंदी पहिरि खराऊ खरी कुंजर रदनकी ॥ हीरा-हीको चूरा बाजूबंद औतरौना बेना मढ़ा सुखदानी रानी मोहन मदनकी । चाँदनीमें चाँदनीपै चाँदनी बिछौना पर चाँदनीसी फैली चारु चाँदनी बदनकी १ ॥

मोतीराम कवि ॥

क० ॥ नवो खण्ड मण्डित अखण्ड उदोत भयो राकाचंद्र मण्डल दिशान दश दरशात । बिमल बिशाल भये शीतल सरितसर सकल कलित बिलोकियत अव-दात ॥ मोतीराम मंजुल मृदुल मालतीन मिलि मल-यज मलय समीर सीरे सरसात । दरद करत ये भँवर भीर कुंज कुंज बे दरद आलीरी सतावत शरद रात १ ॥

मुरारि कवि ॥

क० ॥ आई ऋतु शरद गगन बिमलाई छाई

खंजनकी राजी कुंज कुंजन बसैलगी। हरित हरित पथ पथिक सिधारे कथ अकथ सुरारी ओप जग बिलसै लगी॥ सुमन शरासन के सुमन सरान ते सुकूटिकै सुमन शरआलीही गसैलगी। तालन कमल फूले कमल बितूले अलि अलिपर प्रीतमा परागकी लसैलगी १॥

मुकुंद कबि॥

स०॥ पिय देखत मानो रमा उझकी मुख कुंकुम रंजित भ्राजत है। रजनी उरको अनुराग यहै किधौं मूरतिवन्त बिराजतहै॥ किधौं पूरणचंद सुछंद उदोत मुकुंदसबै सुखसाजतहै। किधौं प्राचीदिशा नवबाल के भाल गुलाल को बिन्दु बिराजत है १॥

रघुराज कबि॥

स०॥ शरद की रजनी में प्रिया रजनी पति पास जनीनकोप्यारे। सारीमरीचिन बीचिनते नवलाकेनगीचिन को दुखहारे॥ भाषत हैं रघुराज हमैं शरदै सुखदै तऊदीप अगारे। जो बिरहीनन दीननके उर बारिधिमें बड़वानल बारे १॥

रघुनाथ कबि॥

क०॥ प्यारे पास बैठी आनि रूप रास प्राणप्यारी चांदनीके देखिबेको चाव चित्तभरिगो। हीरनके मोतिन के आभूषण संग सखी अंग ते प्रकाश दूनी छबि को पसरिगो॥ उपमा नहैबेकी चलीहै कहा रघुनाथ तारन समेत उभय ताप ताते ठरिगो। प्राचीतेलै गगन प्रती-

चीतक सबरात छबि छपाकर छपाकर छपाकरिगो १ ॥
स० ॥ सिगरे दिनबारि पहारसमेत तचीअति दुस्सह पूषन सों । भई मैली महारघुनाथ कहै बहुछारि बयारि के रूषनसों ॥ पल डीठि लगाइ न जाइ लखी इमि भूरि रही भरि दूषन सों । सोई लीपत सो शशि आवत है दिशि भीजो पियूष मयूषन सों २ ॥

ऋषिनाथ कबि ॥

क० ॥ बन उपबन निरझर सर शोभासने अम्बर अवनि कल बल बरसावनी । हंस जल रंचित खचित थल बनन नितागा पति सरित जुन्हाई सुखदादनी ॥ ऋषिनाथ मालती मुकुंद कुंद कुसुमित बास पारिजात पारिजात बलिपावनी । मन अरुझावनी रसिक रास रस रंग भावनी शरद रैनि शरद सुहावनी १ ॥

लखनेश कबि ॥

क० ॥ रास के बिलास को बिलोकन हुलास भरे बाजे सुनि बिबिध बिमानव्योम आयेहैं । देविन समेत देव बाजने बजावैं त्योहींलखि ब्रजबामे घनश्यामे मोद पायेहैं ॥ पतिकीन मतिकीन गतिकी सम्हार सोहीमोही सुरदार जोही मनको लोभाये हैं । हरिको सुयश गावैं बरषिप्रसून छावैभावै रासआवै लखनेशबेश गायोहैं १ ॥
क० ॥ पायल बजायचाय लैलैगति नाचैकोई कंकण हूं किंकिणि की त्योहीं झनकारीहै । गाय शुभराग सा-नुराग दरशावैं भाय छायकै मधुरसुर मुनिमनहारीहैं ॥ प्यारीबीच प्यारो अरुप्यारे बीच प्यारीलसै लखनेश

ताकी यहउपमा विचारीहै। पुष्प रागमाल मानोबीच-
बीचनीलमणि रचिकै सुभगवृन्दाविपिन सिंगारीहै २ ॥

क० ॥ घूंघुर को शोर कोऊ भेद बहुतोरा लेहिं फेरी
दै उड़ावै पट भावन में भामिनी। मंजु मुसक्याय कै
लजाय कोऊ नावै नैन भृकुटी नचावै कोऊ तान अभि-
रामिनी ॥ लोटतअलख कटि अंचल ओढ़ावै कान्हैं कु-
ण्डल कपोललोल अलकालि गामिनी। चंचल अमित
लसैं श्याम अरु श्यामा पास मानों घनेघन औ दमंकै
घनी दामिनी ३ ॥

सेवक कबि ॥

क० ॥ मोतीमंजु महल बितानतने मोतीमई मोतिन
की झालरै मनोजहि गनैनहीं। सेवक भनत वैसे फरस
फनूस आजसेज सुखमाकीछबिउरसों छनैनहीं॥ चांदनी
चटक इत चमक चुनीन तैसी अंग चारुता सों दोऊ
मोरत मनैनहीं। शरदकोसाज ब्रजराज राधिकाकोआज
चाहत बनैपै त्यों सराहत बनै नहीं १ ॥

क० ॥ कासनके कुसुम बिकासन लगेहै अंग कंज
कंजआसनपै चारुता चढ़ैलगी। सेवकभनत छबि तारन
कतारन त्यों तारन पियाकी पुरहारन मढ़ैलगी॥ अवनि
में अम्बु में अकाशनि में आछी भांति ठौर ठौर दीपन
की दीपत कढ़ैलगी। सेलीको सकेलिकै चमेलीके चलत
चाह बेली सम बनिता नवेलीकी बढ़ै लगी २ ॥

सेनापति कबि ॥

क० ॥ पावस निकासतातेपायो अवकाशभयो जोन्ह

को प्रकाश शोभा शशि रमनीयको । बिमलअकाशभये बारिज बिकास सेनापति फूले कासहितू हंसन के हीय को ॥ क्षितिन गरद मानों रंगेहैं हरदसालिसोहत जरद को मिलावेहरि पीयको । मत्तहैं द्विरदमिट्यो खंजन दरद ऋतु आई है शरद सुखदाई सब जीवको १ ॥

क० ॥ बरण्यो कबिन कलाधरको कलंकतैसो कोसकै बरणि तिनहूंकी मति छीन्हीहै । सेनापति बरणिअपूरब युगति ताहि कोबिद बिचारो कौनभांति बुधि दीन्ही है ॥ मेरे जानि जेतिक सों शोभा होत जान परी तेतिकै कलानि रजनीकी छबि कीन्हीहै । बढ़तीके राखे रैनिहूते दिनह्वैहै याते आगरी मयंकते कलानिकारिलीन्हीहै २॥

क० ॥ बिबिध बरण सुर चापते न देखियत मानो मणि भूषण उतार धरे भेशहै । उन्नत पयोधर बरसिरस गिरिरहे नीकेन लगतफीके शोभाकेनलेशहै ॥ सेनापति आयेते शरद ऋतु फूलिरहे आसपास कासखेत खेत चहुँदेशहै । योवन हरन कुंभ योनिके उदैते भई बरषा बिरध ताके श्वेत मानों केशहै ३ ॥

क० ॥ कातिककीरातिथोरी थोरी सियराति सेनापति को सुहात सुखी जीवनके गनहै । फूलेहैं कुमुद फूली मालती सघन बन फूलिरहे तारेमानो मोती अनगनहैं॥ उदित बिमल चंद चाँदनी छिटिक रही राम कैसो यश अध ऊरध गगनहै । तिमिर हरण भयो श्वेतहै बरण सब मानहुँ जगत क्षीरसागर मगनहै ४ ॥

सरदार कवि ॥

क० ॥ साहिब मनोजको मुसाहिब बसंतअंत मरना गयोरी नाम सुनत नकारेको। ग्रीषम गरूरपूर छायो लै कृशानु भयो भेदते अजान अंग तकत उजारेको ॥ बिन सरदारना उपाय अब एकटेक तरक तलाश लायो अधम अँध्यारे को। देखि जगजीवननि जीवनको नाह हाथ जीवन न देत लेत जीवन हमारे को १ ॥

शोभ कबि ॥

क० ॥ देखिये पियारे कान्ह शरद सुधारे सुधाधाम उजियारे चौकी चामीकर दरसे। चोबे चांदीचमकै चँदोवा गुहे मोतिनके झलकत झालरैं जुन्हाई ज्योति परसे ॥ हीरा सी हँसन हीराहार की लसन सोंधे सारी रही सनकबि शोभछबि सरसे। कोर कोरकला मुखचंदतेसरस प्यारी बादला फरसरूप झलाझल बरसे१॥

श्रीपति कवि ॥

क० ॥ फूले आसपास कास बिमल बिकास वास रहीन निशानीकहूं महीमें गरद की। राजत कमल दल ऊपर मधुपमैन छापसी दिखाई छबि बिरह फरदकी ॥ श्रीपति रसिक लाल आली बनमाली बिन कछू न उपाय मेरे जीय के दरद की। हरद समान तन भयोहै जरद अब करद सी लागतिहै चांदनी शरदकी १ ॥

श्यामसुन्दर कबि ॥

क० ॥ क्षितिपर देखो महासौरभ सरस शुभसौरभ

सरसपर सुरस शरदकी । रसपर कहै श्यामसुन्दर झ-
लक छबि छबिपर मारुत जोजलद शरद की ॥ मारुत
पै राजत गगन सुगगनपर चांदनी बिराजत त्यों शारद
शरद की । चांदनीपै चंदकी मुसाहिबी दुचंद फबी चंद
की मुसाहिबी पै साहिबी शरद की १ ॥

शशिनाथ कबि

स० ॥ चारु निहार तरैयन की द्युति लाग्यो महा-
बिरहा तन तावन । हे शशिनाथ कहा कहिये जिनसों
लगि नैनही कंजसे पावन ॥ बीच दुकूलके फूलनलै अ-
लबेलीके प्रेमको सिंधु बढ़ावन । कान्ह दिवारी कि रैनि
चल्यो बरसाने मनोजको मंत्र जगावन १ ॥

हनूमान कबि ॥

क० ॥ कासको बिकासन सों कासन करैगो नाहिं
घातेहियो त्रासनसों मेरोअति भ्वै रह्यो । धानपान पावै
हेरि हेरि धीर हाकोधरै बाढ़े बिरहाके हाय नैननीर च्वै
रह्यो ॥ कहै हनुमान फूले कंजन पै भौंरनको वृन्द सो
बिलोकिबैसि मानोयम ज्वै रह्यो । जाकरि कहैनयों कृपा
करिके लालनसों शरद निशाकर दिवाकरसो ह्वै रह्यो १॥

हठी कबि ॥

क० ॥ चांदनीके आंगन बिछौनानीके चांदनीके चां-
दनीसीदेखि अँखियान सुख लह्योहै । चांदनीसो चीर
चारु चांदनीके आभूषण चम्पकके गातन बखानोजात
कह्योहै॥हठी आस पास बैठी सुघर सुजान सखी जिन्हैं

देखि रति को गुमान जात वह्यो है । राधे मुखचंद की निकाई ब्रजचंद आज अवनी अकाशलौं प्रकाश फैल रह्यो है १ ॥

क० ॥ सारी जरतारी लगी मणिन किनारी त्योंहीं दामिनी दबाइ लेत दमक रदन की । हीरनके हार हठी गजरा गुलाबदार अंगअंग फैलरही दीपति मदनकी॥ हेमकी छरीसी मानो सुखन जरावजरी सब गुण भरी परी छबि के कदन की । चांदनी बिछौना भाल चंदन लगावें बाल चांदनीमें बैठी लाल चंदसे बदनकी २ ॥

क्षितिपाल कबि ॥

स० ॥ मुखचंद मनोहर हाँस छटा छबिपुंज मिले क्षितिपै छहरै । दृग खंजन खेलै सरोज कलीन उरोजन ओपलखै लहरै ॥ गतिहेरि मरालनकी मनसा हठिमान-सरोवर में हहरै । क्षितिपाल बिकास बनो पटमें घट शारद थान थकी थहरै १ ॥

रसिकबिहारी कबि ॥

क० ॥ सरस सुबासे सुखरासे मासे पुष्पनकी पंकज बिकासे प्रभा परम प्रमोद कर । कुमुद चकोर वहठौर हैं अनन्दभरे उत्तम असल नीरराजै है सरित सर ॥ बि-मल रबि देखो रंच नीरद न लेखो कहूं रसिकबिहारी चहूं पूरण प्रकाश भर । शरद निशामें उन्मत्तकी दशामें माते मैनके नशामें रमे सेजनपै नारि नर १ ॥

क० ॥ दरनपै द्वारनपै कलित किवारन पै द्रुमन पै डारिन पै लोनी लतिकानपै । हाटनपै बाटनपै नीकेनव

घाटनपै गेहनपै सेजन पै अमल अटान पै ॥ बागन पै बनपै निकुंजन पै पत्रनपै फूलन पै कूलन पै सर सरितान पै । रसिकबिहारी सुखदाई चहुँघाई भाई छाई वह शरद जुन्हाई बनितान पै २ ॥

क० ॥ आतपसी चांदनी तपन तनदूनीदेत लागंत हियेमें चंद्रकिरणै करदसी । आवत उसास ऊंची सुखद सुबास लहि त्रिबिध समीर धीर शालत दरद सी ॥ रसिकबिहारीहैं संयोगिनी अनंदसबै बिकल बियोगिनी न लागत शरद सी । ते निराशकै निराशहूते आश पाय पाय मरमर जोवत हैं चोंपर नरद सी ३ ॥

क० ॥ गुंजतमधुप पुंजपुंज नवकुंजनमें छाके मत्तडोलै मकरंदपान करिके । शीतल सुधाकरहू मुदित मयूषन पै श्रवत पियूष सों चकोर हेत धरिके ॥ रसिकबिहारी सुखकारी चंद्रिका अनूप हूदै हुलसात अनुराग राग भरिके । निर्मल सुढंग रस रंग श्याम श्यामा संग अंग अंग मोरत अनंग मान हरिके ४ ॥

लाल बलबीर कबि ॥

क० ॥ फूले अरबिन्दबृन्द बिमल तड़ागनमें बागन चमेली खिली सुखमा अमंद है । शीतल सुगंध मंद चलत समीर बीर प्यारे बलबीर संग राधा सुखकंद है ॥ बहरै छबीले लखै लहरै कलिन्द जाकी देख छबि ताकीहोत उरन अनंदहै । जैसी ये दमंकै आली रेणुब्रन-राजजूकी तैसोही चमंकै चारु शरदको चंद है १ ॥

क० ॥ अमल अकाश देख शशिको प्रकाश देख

मिटोहै चकोरपीर बिरहा दरद की। प्रफुलित कंजन पै गुंजत मधुप पुंज झरत पराग मानों बरषा जरद की॥ लाल बलवीर संग विहरै बिहारी प्यारी रही न निशानी दिशि दशन गरद की। वृन्दावन चंदजूकी देखौरेणु दमदमात चमचमात चारोओर चांदनी शरद की २॥

क० ॥ हंसउर मोदछये खंजन प्रगट भये पंथिन नै पंथनकी ताप विसराई है। पल्लव नवीन भये सुमन रँगीन भये मीनभये मुदित अमल जलपाईहै॥ लाल वलवीर मनमोहन मगन भये जाय वनराजजूमें बांसुरी वजाईहै॥ विमल अकाशभये चंदके प्रकाशभये तिमिर के नाशभये शरदऋतु आई है ३॥

क० ॥ नीर भये अचल सकल नद नद्दिन के थकि रहेपक्षीतन सुधिबिसराईहै। सुरभीसमूहसुनि मोनीनों मगनभये छयेउरमोद नये बैन सुखदाईहै॥ लाल बलवीर थकि रहे चंद तारागन शीतल समीर आय अंग लिपटाईहै। शरदऋतु आई सुखदाई मनभाई माई आज वृजचन्द मिल बांसुरी बजाई है ४॥

क०॥मोरनको शोरगयो घननको घोर गयोझींगुरको जोर गयो भौंरन अनंदहैं। पपिहाकी कूकगई चकोरन हूकगई दादुरकी दूकगई जुगनू गनमंदहैं॥ लाल बलबीरअबै पावसको जोर गयो शरदको शोर छयो बहत सुगंध है। तमको निवास गयो बिज्जुको प्रकाश गयो कैसो ये अमंद आज दमदमात चंदहै ५॥

क० ॥ लाड़िली ललाकीछबि देखरी निराली आली सेत अंग बस्त्रहीर आभूषण धारेहैं। बांसुरी बजावै हर-

पावै मुसिक्यावैगावै सखीसुखपावै हेरशीश चौर ढारेहैं॥ लालबल बीर कर करसों मिलावै उरमोदको बढ़ावै छैल गल भुजडारेहैं । सुखमा अमंद सुखकंद राधिका गोविंद दोऊ ब्रजचंद चंद चाँदनी निहारेहैं ६ ॥

दास कबि ॥

क० ॥ साजे अंगअंग चीर जगत जरीके नीके तैसी हीर हारनकी झलक झलाकी है । जैसेही रँगीले छैल नेह रंगराचे तैसी चाँदनी चटकदार चंदकी कलाकीहै ॥ दासकहै तैसी कटिकिंकिनी कनकराजै तैसीही चटककर करत छलाकीहै।देखदेख आलीनैन करिये निहाली कैसी शरद निशाकी झाँकी लाड़िली ललाकी है १ ॥

क० ॥ हीरनके सदन सजाये हितहीके जीके चाँदनी जरीकी नीकी झालर झलाकी है । कंचन सिंहासनहै खासेसेत आसनहै राजत तहाँहीअलीगनगानताकीहै॥ दासकहै दासीखासी लैलैरी अतर आसी अंगन लगाय चायनेहरंग छाकीहै । देखदेखआली नैनकरिये निहाली कैसी शरद निशाकी झाँकी कृष्ण राधिकाकीहै २ ॥

नीचे लिखे हुये कबित्तोंमें कबियोंके नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ आसपास पुहुमी प्रकाशके अँगारसोहैं बनन अगार दीठि छैरही निवरतें । पारावार पारद अपारदशों दिशिबूड़ी चण्ड ब्रह्मण्ड उतरात बिधिवरतें ॥ शरद जुन्हाईजनुधाई धारसहससुधाई शोभासिंधु नभ शुभ्र

गिरिवरतें। उमड्यो परत ज्योति मण्डल अखण्डसुधा मण्डल महीमें बिधुमण्डल बिवरतें १॥

क०॥ चाँदनी महलबैठी चाँदनीके कौतुकको चाँदनीसी फूलीराधे चाँदनी महालरें। चंदकी कलासी देवतासी देवदासी अंगफूलसे दुकूल गरेफूलनकी मालरें॥ छूटत फुहारेतारे झलके अमल जलचमके चँदोवा मणि माणिक बिशालरें। बीच जरतारनकी हीरनके हारनकी जगमगी ज्योतिनकी मोतिनकी झालरें २॥

क०॥ चंदनिशि ललना बदनलखिआई कैधौं पारदकी खानि फैलिआई आसमानहै। कैधौं सुखके प्रबोध सुखित सकल सुरलोकनके कलहाँस भासै भासमानहै॥ मेरे जान मदन महीप सब जीति क्षिति ऊरध चढ़ाइके तयारीको समानहै। कैधौं तारागन मुकताहलके झूमकन चाँदनी न होय चारुताईको बितानहै ३॥

क०॥ वैसही बिशद क्षीर नदतें शरदशुभ्र शोभित सुसद फैली फेनके फरदकी। उनमद मदमें सुगंधकी बिहद सेनाधाई चहुँ हदतें छपद रुजरदकी॥ तैसोही बिरह बद मारतदै गदबद चूमत करेजो कोर कामके फरदकी। चीरकीने रदरी दरद दैकरी हौंबेपरद बेदरद दैया चाँदनी शरदकी ४॥

क०॥ भूल्यो गति मति चंद चलतन एकपैड़े प्राण प्यारे मुरली मधुर कल गानकी। फूली कुसुमावलि बिबिधनवकुंजनमें सौरभ सुगंधताई जानत बखानकी॥ बाजत मृदंग ताल झांझ मुहचंग बीन उठत सँगीत जहां अतिगति तानकी। आज रसरासमें अनूप रूप

दोऊनचै नंदलाल लाड़िली किशोरी वृषभानकी ५ ॥

क० ॥ तारागण भूषण सघन अंग अंगनमें बसन मयूषनसों रही लोनी लसिकै। दंत कुमुदावली चमक चारु चोरैं चित्त जोरैं मुखचंदको सुमंद मंद हँसिकै॥ मालती सुगंध सनी शालती हियेमें शाल रहै नंदलाल कहूं याके ख्याल फँसिकै। शरद विभावरी न होय सुनि बावरी तू दावरी लियेहै यह सौति श्याम बसिकै ६ ॥

क० ॥ शरद रयन अरु निर्मल प्रकाश जानि कान्ह यमुनाकेतट बाँसुरी बजाईहै। रागरागिनी छतीसों ताहि में प्रवेश करि तालको बँधान सुर तीनलोक छाईहै॥ मोहेशेष औ गनेश बिधि लोकपाल सब षोड़श सहस गोपी सुनि उठिधाईहै। पायके कन्हाई जीने रहसमचाय नित यामिनी बढ़ाई षट्मासको बिताई है ७ ॥

स० ॥ सेत पहार अगारभये अवनी जनुपारदमाहिं पखारी। होतही इंदुउदोत लसै चहुँओरते शोर चको-रको भारी॥ फूली कुमोद कली निकली अवली अलिकी बलिमैं निरधारी। कोपिकै चंद तियानके मानपै आजु सियानते तेग निकारी ८ ॥

स० ॥ मल्लिका मालती जातीजुही अरुसेवती सैन लै जीतन आसी। माधुरी मंजु मरीचिन बानन मारिकै मेघन दीन्हों निकासी॥ चारुचकोरन चैनबढ़ाय बिकास करावत कैरव रासी। रुक्मिणी रावरी कीरति रूप सो आयो मयंक अकाश बिलासी ९ ॥

इतिश्रीषट्ऋतुहजाराअंतर्गतशरदऋतुबर्णनसम्पूर्ण॥

अथ हेमन्तऋतु वर्णन ॥

दोहा ॥

कोक शोकप्रद शीत युत काम केलि अत्यन्त ॥
रजनी दीह अदीह दिन संयुत ऋतुहेमन्त १
कियो सबै जग काम बश जीते जिते अजेय ॥
कुसुम शरहिशर धनुषकर अगहनगहन न देय २
आवत जात न जानियत तेजहि तजिसियरान ॥
घरहि जवाँई लौं घटो खरो पूस दिनमान ३
दिन निशि रवि शशि लहत हैं हेमशीतके योग ॥
भरम चकोरन भोग है कोकन भरम बियोग ४
मिलिबिहरत बिछुरतमरत दम्पतिअतिरतिलीन॥
नूतन विधि हेमंत ऋतु जगत जुराफो कीन ५

आनँद कवि ॥

क० ॥ खासी कोठरीन में सँवारी सेज सौंधेसनी आसपास अगर कपूर बगरे रहै । दरन सुपरदा गली-चन सों झपी भूमि बरेदीप कंचनके अतर धरे रहै ॥ ऐसी समय कंत संग युवती हिमन्तऋतु पौढ़ि पलिकापै दोऊ आनँद भरेरहैं । शीत त्रास दपटेसे झपटे दुकूल दुख लपटे दुशालनसों छपटे परे रहै १ ॥

कालिदास कवि ॥

क० ॥ कामरीकी खोही मोही गोपनकी जाई बाल

आई लाल पामरी रजाई परहरिकै। कहै कालिदास पासभईहै एकंतकल लीजिये लपेटलपटाय अंकभरिकै॥ रैनिमै नगर घोस जनके बगर कीजै जगर मगर ब्रज भूमि केलिकरिकै। पूसमैं कलाधर येधन को न छांडैसंग तातै रंगकीजै हिये प्रेम ध्यानधरिकै १॥

केशवदास कबि॥

क०॥ अमल कमल दललोचनललित गति जरत समीर शीतभीत देहदुखकी। चंद्रकुनखयोजाय चंदन न लायो जाय चंदन चितायो जाय प्रकृति बपुखकी॥ घाट की घटत जात घटना घरीहू घटी क्षण क्षण क्षीण छबि रबि सुखसुखकी। सीकर तुषारस्वेद सोहति हेमंतऋतु कैधौं केशव दास तिय प्रीतम बिमुखकी १॥

गिरिधरदास कबि॥

क०॥ कंजन सुखाये ये सुखाये रंज मनहीके शीतना बढ़ाई नीत प्रकटी समंत है। रातना अधिककरी रति अधिकाई भाई दिनना घटायो कर्म बासना तुरंत है॥ गिरिधरदास पौन शीतल असहहैन प्रेमके प्रबाहजग चलन टरंत है। राधिका के कंतको भगत मतिमंद है कि ब्रज शीतवंत ऋतु प्रकट हिमंतहै १॥

क०॥ अतिही अराम दैन ऐनको अराम अभिराम आठो ओर ओस्यो ऐस अबलनमें। आसन अनूप आप ईशहै अनीश जापै अक्षि अवलोकि है उदासी अम्बजनमें॥ गिरिधर दास एको उपमा न आवतहै ईंगुर सी आछी अरुणाई अधरनमें। अंगधर इन्दु-

मुखी ओजसों अमल ऐसे लसे अनगन से अजब अगहन में २॥

क०॥ सूरऐसे शूरको गरूर रूरो दूरकियो पावक खिलौना करदियोहै सबनको। बातनकी मारहीते गाल कीभुलात सुधि काँपत जगत जाकी भय आनमानको॥ गिरिधरदास रात लागै कालरात कीसी नाहिंसो लगत भामशखत चरन को। आयोहै हिमंत भूमि कंत तेज- वंत दीह दंतन पिसात तोदिगंतके नरनको ३॥

गिरिधारन कबि॥

स०॥ नील निकुंज बनो रसपुंज चहूं दिशि हेम बितान है तानो। आछे परे परदा मखतूल के तूलको चारु बिछायो बिछानो। केलि करै गिरिधारन जू सँग लैतियको मध आतस खानो। पावकही की सिखानके संग अनंगहि पावक पूजत मानो १॥

गोबिन्द कबि॥

क०॥ दावे चारोंकोर राजे नूपुर निशान बाजेछाजे छबिकर कुच भट भिरिबो करै। सिंहासन सेज सोहै शीश शीशफूल छत्र अलक अनोखेचारु चौर ढरिबो करै॥ मैनमंत्री मंत्रदेत भायन बढ़त भूरबंदीजन भूषण बिरद ररिबो करै। हिमकी हिमाई सुखदाईसी गोबिन्द दोऊ एकही रजाईमें रजाई करिबो करै १॥

घनश्याम कबि॥

क०॥ चारोंओर मोरबैठे दावचारों ओरनलौंज्योंहीं

मनमथ राखो हिमन दुहाई में । जावक अरगजा के तिलक बिराजिरहे भागभरे भागनकी जगमगताईमें ॥ अलक चमर घनश्याम वाजे नूपुरादि वटत हंसन अवलोकन बधाई में । थिरचर ऐसो राज देखो देखो सखी आज दुहुंन रजाई पाई एकही रजाईमें १ ॥

क्षितिपाल कवि ॥

स० ॥ चन्द्रक चंदन चारुचितै चख नीचीकरैन बयारि सोहाई । आनन पानिप रूखेभये दिनते अति होतिनिशा अधिकाई ॥ फूलनसेज बिभूषण जाल चहै क्षितिपाल नहीं नियराई । बाहेर भावतहै न भटू बनि बाल बियोगिनि सी हिमआई १ ॥

जगमोहन कवि ॥

क० ॥ चारोंओर चरचा चलीहै चपरालिनकी दीरघ दरेरो द्वार द्वार दुलहिन के । लागेलोग लालेपीले बसन रँगीले लेन देन त्यों किवार कम्पि कोठेंपै रहन के ॥ त्योंही जगमोहन तलाश अबलाको होन तरुणी तमूल तूल तीषन दहन के । आछे मृगमदके अमोद उदगारे त्यों बहारदार मंजुल महीना अगहन के १ ॥

क० ॥ आवत बधूके चहुँघा रहे ढुकहूं आयगयो उहां हरि हिमवन्त हमराही में । ज्यों ज्यों जगमोहन जू नाहक निहोरी करी बसन बिथोरी कै न रसना बनाही में ॥ त्यों त्यों मतवारो पौन बसिकै करेजोभरै छोर सिसिकीनमें समेटि अधराही में । दीपक बुझाइदेरी दीरघ दुशालन के दबकि दबाईरही दवकि दवाही में २ ॥

क० ॥ तलपतन ओना अतूल मखतूलन सों तोशक दुलाई तूल तूननके तागैना। लागत चहूँघा ताप तीक्षण तपक तेज ज्वालाभरे ज्वालन जगावै जुरि जागैना ॥ तौलौं जगमोहन हमारो हरवासे हारकाहू हिमवन्तहीमें काहूभांति भागैना। सारीकरि अलग सकोचि सुकुमारी जौलौ उन्नत उरोजवारि प्यारीउर लागैना ३ ॥

क० ॥ छाईहै धरापै सियराई चहूँओरन ते पलटि गईहै पूरीप्रकृति अनंत की। पानी पौन पुहुमी पराग अंग रागन की अंगन अँगार दिशि विदिशि दिगंत की ॥ कम्पि कम्पि आवत करेजो जगमोहन जू कामिनी छोड़ाये हिये छोड़त न कंतकी। हरषि हजारै कल काउत कजाके छाके बाढ़त निशाके अंग ढाकत हेमंतकी ४ ॥

क० ॥ झांपनसों झापैलगी तापन तनून पद्द कांपन करेजा लागे अदना औ आला के। आँगन अगेलिनमें आतप अतियेतो कछू छूटैना पछेवा पछैह्यां यो न पाला के ॥ देवकी दोहाई महा दम्पति दिनोंमें झरै दावन दवाईदेरी दीरघ दुशाला के। दैदै उरउरज उतंग जगमोहन जू रंगरससराते माते मादिक मशाला के ५ ॥

तोष कबि ॥

क० ॥ भावन लगीहै अंशु पावन प्रभाकरकी छावन लगीहै गति शीतकी दिगंत मैं। राग अधिकानी दिन हानी त्यों प्रतच्छ भई सृष्टि सियरानी है गरम सलतन्त मैं ॥ कहै तोषहरि साजिसूहे रंग अंगपट चाहत उ-

संग कन्त कामिनी यकन्त मैं । सेवै भागवन्त मद मादक छकन्त सुखश्यामाको अनंत छबिवंत याहिमंतमैं १ ॥

स० ॥ सेज सजाई रजाई समेत जहाँ तहँ आई प्रिया जो सु अन्तकी । गाढ़ सुराहै तुरंत अँची तबकीनी शुरू कछुबात इकंतकी ॥ त्यों हरितोषजू सों हँसि कै रसिकै चसकै सिसकै छबिवंत की । हूलै हिये झुकि झूलै सुमूरति भूलैनहीं हमैं केलि हिमंत की २ ॥

तुलसी कबि ॥

क० ॥ पीय पीय रटतरहत आठहूंपहर रसना भई रहत ज्यों पपीहा पावसी । घरी घरी दहैमैन चितकोन कहूंचैन रह्योन परतऐन बूड़ेबैन नावसी ॥ तुलसी कहत पियप्यारेके समीपबिनाभूषणकी कहाभौनभोजन न भाव सी । पीउबिन पूसमास पैयत न चैन आली बुंदऐसो दिन होतरैनि दरियाव सी १ ॥

देव कबि ॥

स० ॥ मेरे मिलाये मिलीदिन द्वैक दुरे दुरे आनँद ओघ अघाती । त्यों चसको चितयेचित चाहिये शोच सकोचन सों लचिजाती ॥ देव कहांते बनै बिधि दोऊ इते मुखदेखि ललाको लजाती । हैं उत शीतमैं संगलहै उत सोइबे को अतिशय ललचाती १ ॥

क० ॥ कंपतु हियो नहियो कंपतु हिये क्यों हँसी तुम्हैंसी अनोखी नेक शीतमैं ससनदेहुँ । अम्बर हेरैया हरि अवर उज्यारो होतु हेरिकै हँसौनकोईहँसै तौ हँसन देहुँ ॥ देवद्युति देखिबेको लोइन में लागीरहै लोइन में

लाजलागै लोहन ललन देहुँ । हलरे बसन देह देखत हमारी कान्ह अबहूं बसन देहु ब्रजमें बसन देहुँ २ ॥

दीनदयाल कवि ॥

क० ॥ तुलसीलसी सुअंगअतिसे उमंग देतिजासु लैन बालयोगी जनबिलसंतहैं । शीतल सवाँर उरकला दरसाय करि जातन बिलोकि शोकशोक बिलपंतहै ॥ जासुकी बिभावरी बिशाल लखौ दीनदयाल मित्ररूप लखही के सुखद बसन्तहैं । कैधौंहै हिमंत कैसुतंत सित संत सभाकैधौ सुखमाल संत कमला के कंतहैं १ ॥

दिवाकर कवि ॥

क० ॥ ओकओक लोक सब करत कलोल निशि कोकनको शोकभो कलानिधिको काफासो । भनत दिवाकर लगावत अतर अंग बारत हुताशन डरपके दराफासो ॥ राजाऔ अमीर पशमीनाकेवहारेलतमोजरा बरंगना करावत इजाफासो । आयोये हेमंतकंत लहत अनंत सुख संतजड़ सैनलेत जगत जुराफासो १ ॥

क० ॥ पलपल दिनदिन यामिनि घटनलागी भामिनी जगन लागी यामिनी यकंतमें । भनत दिवाकर संयोगिनी सुखीनीकीनी दुःखिनी वियोगिनी लगीनी हँसि हंतमें ॥ धरधर धरधर बाजत कपाट फट सटपट सेजपै मजेज छबिवंतमें । सखीयह पाखमें जो आयोन हमारो कंत होंगे प्राण अंतनहिं पायके हेमंतमें २ ॥

दिनेश कवि ॥

क० ॥ कंज गिरिगये परिगये बन बेलिवृंद पल्लव सिहरिगये पापशील सियको। जानी ब्रजकंतरति कंतको समंतयह प्रगटे हिमंतजन ऐसोजोर कियको ॥ तेलतूल अम्बर तमोर येनरति सेवै सेवैनर भानुही दिनेश हित जियको। भानुसेवै अनल छिशाको नित नेमकिये सेवत अनलवा बियोगिनके हियको १ ॥

क० ॥ पाईनिशि दीरघ अघाईचितै मुखचंद दूनऊ चकोरिनि चकोरलों जियोकरै। दूरिकरि शीतचूरि ऋतु को प्रताप पूरि बसन चहूंघा भूरि आनँद लियो करै ॥ दूनऊ दुहूनके अमा परसपर ह्वैके कंदर परस्पर शीतल हियो करै। सरस परसपर दम्पति दिनेश ह्वै परस्पर केलिकल कौतुक कियो करै २ ॥

नंदराम कवि ॥

क० ॥ आयोहै हिमंत जोरजाड़े के प्रसंगनसों रेशम के भंगनमें अंगन दुराये देत। कहै नंदराम त्यों हमाम हूंन कामसरै धामधाम आलापौन पालाको उसाये देत॥ तूलपेट पीठिन अँगीठिनमें डीठिलगी तरुणी-बिहीन तन कम्प सरसाये देत। दोगुनो कहातौ चित चौगुनो चुरात हेरि नौगुनो न सौगुनो समीर शीतनाये देत १॥

क० ॥ आसव निराला मलभौन कि निकाला देत प्याला पर प्याला तौहूंशीत सरपेटे लेत। कहै नंदराम जरै दीपनकी माला लगे पेचिया बिशाला धूमधाला अरपेटे लेत॥ दोहरे दुशाला ऊनशाला छौनशाला पट्ट-

शाला कीटशाला छीटशाला गरपेटेलेतानंदकिये ताला तोपे तोलके मशाला उरलागै वेशवाला तोनपाला ऋर पेटेलेत २ ॥

पद्माकर कवि ॥

क० ॥ अगरकी धूप मृगमद की सुगंध वर वसन बिशालजाल अंग ढाकियतुहै । कहै पदमाकर सुपौनको न गौन जहाँ ऐसे भौन उमग उमँगि छाकियतुहै ॥ भोग औ सँयोग हितसुऋतु हिमंतहीमें एतेसब सुखदसुहाये वाकियतुहै । तानकी तरंग तरुणापन तरणितेज तेल तूल तरुणि तमूल ताकियतुहै १ ॥

स० ॥ पूस निशामें सुवारुणीले बनिबैठे दुहूँके दुहूं मतवाले । त्यों पदमाकर झूमै झुकै घन घूमिरचै रस रंगरसाले ॥ शीतको जीत अभीत भये सुगनेन सखी कछु शाल दुशाले । छाकछका छबिहीकी पिये मद नैन नकेकिये प्रेमके प्याले २ ॥

बलदेवकवि ॥

क० ॥ छाईहै हिमन्तवात तन्तकी बतायदेत अंतको जराय जिय अंतको न जाइये । द्विज बलदेव कहै कस कहि दूर करिकामकी कलोल कान्ह कामद मचाइये ॥ अतर तमोल तेल तूलनके तंगु साजि तातीसी सोहाती सेजतापै इत आइये । करतहैं आनतजि मानको समान नेक मानिये प्रमाण निशि भान उर लाइये १ ॥

क० ॥ तरुणि तमोल रचिअंगरंग राजतहै उमंग अनंगसंग साजे निजकंतको । द्विज बलदेव कहै हरषि

हिये अपार प्रमुदित वाद्य कार सुरताल तंतको॥ शीत सरसात तूल सेवत त्यों जातनेह उदित है बात सुख शोभित सिमंतको। मोद अनुराग मन रंगछबि वागम लखात बल भागम भो आगम हिमंतको २॥

स०॥ देखभटू दिनरैन दशा यहमैन सदाशर तानत तंतरी। शीतसों भीत भयो हियरा जियरा गति कौन लखैबिन कंतरी॥ कीजैकहा बलदेव रहै तनप्राण प्रबीन लहै गतिसंतरी। अंतरी जायकहौं किहिसों गतिकीन्ही कछूयश आये हिमंतरी ३॥

बल्लभ कबि॥

स०॥ सुंदर मंदिर अंदरमें बहु बंदनवार बितान अडोलैं। है परदा मख तूलनके तिहिमूल बिछी गिलमै गुल गोलैं॥ बल्लभ दीपत दीपतिहै मणि त्यों शुकसारिकाके गनबोलैं। एरी हिमंत में राधिका श्याम करैं बहु रंग उमंगकलोलैं १॥

बंशीधर कबि॥

क०॥ एकओर वानपंचवान को गहाइ दीन्हों एक ओर रण अति कठिन लखावतो। दोषाकर बीचदोष आकर बसाई शीतभीत करैजेतेप्रीति बाहिरनिबाहतो॥ बंशीधर कहै घर डगर नगर बीरलै करि समीर रोम रोमनि बसावतो। छूटतोन मानमंत्र तंत्रअरुयंत्र कीन्हे जोनहि हिमंत दूती कंत बनि आवतो १॥

बीठल कवि ॥

क० ॥ परत तुषार झार उठल अपार भार द्वार भो पहार पूस आंगन सुहात है। वीछी कैसे छौना भरे मानहुं विछौना मांझ दिशिहूं बिदिशि लगि घेरे घर घात है॥ बीठल सुहित अति गति मति भूलि जात चातिका करात जब बोले अधरात है। बिरह ते रहीं राति पिया बिन रही राति आवे नियरात तिय जात पिय रात है १॥

मणिदेव कवि ॥

क० ॥ नर कहा नारीकहा पशु कहा पक्षी मन काहू केन होत घर छोड़ि निकरन की। अंगन अंगोंछि करे जप तप होम दान जातन कहीहै कछूकरनी करनकी॥ कहें मणिदेव जुगनू लौ कढ़ि जात आसु चरचानहोत कहूं भानु के करन की॥ घरीघरी बोलैं जन घरी जौन होती कहूं घरी तौन होती संध्या वंदन करन की १॥

मोहन कवि ॥

क० ॥ प्यारी पिया पौढ़े परयंक पर सोहतहैं मोहन परस्पर रस बतियानि करि। आपस में बंधे मननेह शरासन चढ़े तीक्षण कटाक्षणसों भौंहें धनुतानि करि॥ राधा मन मोहन जू अंगनिके संगनि सों पुलकित होय रहे लपटि भुजानि करि। सुखकोन अंतलह्यो रजनी हिमंतऋतु कियो गुनवंत कंतकामकी कलानि करि१॥

राम कबि ॥

क० ॥ परत तुषार भार कांपै हिय हार हार रजनी पहार दिन आगजैसे फूसकी । द्वारद्वार परदे परेहैं भरे तूलन के भीतर सँवारि धरे पलँग जलूस की ॥ राम कबि कहत हनत शीत अब तव आवरे सुजान तेरी छाती आवनूस की । जैसे तैसे कान्ह षट् मास लौं ब्यतीत कस्यो निपट जुबाल भई काल रैनि पूसकी १॥

रघुराज कबि ॥

स० ॥ हरु हिमंत हुलासिन हाल हिमाकर हेलिन को हरषाइ कै । हारन हारन हीरन हार से हीरो हरो हिमबिंदु बिछाइकै ॥ श्रीरघुराजनऊषम शस्यो हिमारि उराइ सिखी दिशि जाइ कै । जाय पराय लुकाय रही तब हेलिन के हियरेमें हेराइकै १ ॥

स० ॥ अभिराम हमामकेधामनमे चहैकेतो अराम लपेटिपटै । बिरचे बिधिकेते दुशाले बिशाले धरे तनमें नहिं पाले कटै । रघुराज कहै सखी सूरज हूंन निवारि सकै हिय हारि हटै । क्षिति में क्षणदामें छबीली बिना छतियां छपटै हिमकी दपटै २ ॥

रसिकबिहारी कबि ॥

क० । दर दर ढँपे जऊ थर थर काँपे अंग अंग नवलान के अनंग रस राचै है । बिबिधि बिलास के अबास सुखरास जहाँ मृगमद धूम औअगीठिन में आचै है । वारवधू नितत सुढंगते उमंग भरी अमिल

अलापनमें सप्तसुर साचे है । रसिकबिहारी हितकारी प्राणप्यारी मुखदेखके हिमंतमें अनंत मोदमाचेहै १ ॥

क० ॥ तेल औ तमोल पुन तरुन तुराई तूल जेते सुखसाज तेते सबही पुरेरहें । असन बसन उष्ण कोटिन बिधानन के ठौरठौर द्वारन किवारहू मुरे रहे ॥ रसना अधर नैन कण्ठ उरबाहुसबै नवरस अंग तिय अंगसों जुरेरहे । रसिकबिहारी तऊ व्यापत हिमंतशीत यद्यपि घनेरे भले भौनमें दुरेरहै २ ॥

क० ॥ अमल अनोखे अति चोखे भरे प्यालन में अमित मसालनकी गिनती गिनावेंक्यों । गिलमें गलीचनकी परदादरीचनकी सेजनकी सुखमा अनूपकविगावें क्यों ॥ शाल औ दुशालन में रेशमी रुमालन में लोने दीप जालनमें सोहिमंत पावें क्यों । रसिकबिहारी नव बाला अंगमाला किये मदन बिहाला तिन्हें शीत भीत पावें क्यों ३ ॥

स० ॥ शीत अनीतकरै अतिभीत जिन्हें निजमीत मिलो कपटी हैं । तीरसी लागे समीर हिये रहती जो दुशालन में लपटी हैं ॥ हैरसिकेशसुखी तियसो बिरची सरमें जुनहीं रपटी हैं । काह हिमंतकरै तिनको रहै कंत की जो छतियाँ छपटी हैं ४ ॥

स० ॥ सुनिकै सखियानपै साईं सवार चले इतपूस को मास जुलाग्यो । रसिकेश रहेसुखहोय महा अबकीजे कहा सुमनोभव जाग्यों ॥ कछुठानी उपाय दईको मनाय पसारिकै अंचलसो बरमांग्यो । गहिकै बरबीन प्रबीन तिया तबहीं तहाँ रागमलार सुराग्यो ५ ॥

सेवक कवि ॥

क० ॥ छोट दिनछैगो दुख ओट छुटिबेको भयो मोट सुख लूटि मैं निशाको बड़ी जोरैना। तैसे तेल तूलनि तमोलनिके रंगभरे पामरीदुकूलनि ओढ़ायमुखमोरैना॥ सेवक रसालन मसालनके माचेमोद आगिहूकी सालन बिसालन को दौरैना। खाय कामतंतके अनंत सरसंत मोकों पायपाय हरषि हिमंत कंत छोरैना १॥

सेनापति कबि ॥

क० ॥ पूसके महीना कामबेदन सहीनाजाय भोगही केद्योसनहीं बिरह अधीनके। भोरहीके शीतसों न पावक छुटत त्योंही रातिआई जानिहै दुखित गनदीन के॥ दिनकी छोटाई सेनापति बरणी न जाय रंचक जताई मनआवै परबीन के। दामिनी ज्यों भानु ऐसे जातुहै चमकदेखो फूलैनहीं पावतसरोज सरसीनके १॥

क० ॥ आयो सखि पूसौ भूलिकंत सोंन रूसोंकेलिहीसों मनमूसौ जीउ ज्यों सुख लहतुहै। दिनकी घटाई रजनीकी अघटाई शीततांईहूको सेनापति बरणि कहतु है॥ याहीते निदान प्रात बेगि उदैहोत नाहिं द्रौपदीके चीर कैसो रातिको महतुहै। मेरेजान सूरज पताल तपे तालैं माँझ शीत को सतायो कहलायके रहतुहै २॥

क० ॥ बरसै तुषार बहै शीतलसमीरनीर कम्पमान उरक्योंहूं धीरन धरतहै। राति न सिराति सरसाति ब्यथा बिरहकी मदन अराति जोर योबन करत हैं॥ सेनापति श्यामहो अधीनहौ तिहारी सौंह मिलो बिन मिले शीत

पारन्द सरत है। औरकी कहाहै सबिताहू शीत ऋतु जानि शीतको सतायो धनराशि में परतहै ३॥

क०॥ शीतको प्रबल सेनापति कोपि चढ्यो दल निबल अनल गयो सूर सियराय के। हिमके समीर तेई बरषै विषमनीर रहीहै गरम भौनकोनहीमें जायके॥ धूम नैन बहे लोग होत है अचैन तऊ हियसों लगाय रहैं नेकुसुलगायके। मानोभीत जानि महाशीतते पसारि पानि छतियोंकी छाँह राख्यो पावक छिपायके ४॥

क०॥ हिमके तुषारके बुखारसे उखारतहैं पूसमास होत सुनहाथ पाँयठरके। दिनकी छुटाईओबगई बरणी न जाय सेनापति रहोजिय शोचको सुमिरिके॥ शीतते सहस कर सहस चरण होके ऐसे जातभाज तमआवत हैघिरके। जौलों कोक कोकी सों मिलनकहै तौलौरात कोक अधबीचहीते आवतहैं फिरके ५॥

क०॥ सूरे तज भाजी बात कातिक में जब सुनी हिमकी हिमाचल ते चमू उतरति है। आये अगहन कीन्हो गहन दहनहू को तितहू ते चली कहूं धीर न धरति है॥ हिममें परीहै हूल दौरिगाहि तजी तूल अब निज मूल सेनापति सुमिरति है। पूसमें तियाके उच कुच कनकाचलमें गढ़वै गरमभई शीतसों लरतिहै ६॥

सरदार कवि॥

क०॥ ब्रह्म यंत्र वारे भारे लपकै सुगंध तैसे आल दीप माल लाल जालन जरे रहैं। परम प्रवीण बीण लैलै सुखकार सरदार चीनचीन रंग रागन भरे रहैं॥

चूमि चंद बदन चपाय पाइँपाइँ मेलि उरज उतंग अंग अंगन अरे रहै । करदे करनहारे सरदे समीरनके जरदे दुशालन के परदे परे रहै १

सुमेरहरी कबि ॥

स० ॥ बैरी बयार लगै बरछीसी अँगार लगै हिम मैन मसूस में । पान सुगंध सनेह सुरंग सुमेरहरी सजी सेज अदूस में ॥ जायनहीं रबिहूंके तपे बिनकंत हिमंत के जोर जलूस में । कीरति लाड़िली प्रेमकी माड़िली बावरी रूसत है कोऊ पूस में १ ॥

श्याम कबि ॥

क० ॥ औनिते अकाशते अवासनते उदकते इंदुके उदैते आसुदैते उमड़ोपरै । श्यामकबि मालनते मनते मनीते मनमोहनके मोहते मनोजते मड़ोपरै ॥ झाँकती झरोखनते झंझानके झकोरनते झाड़नते झारनते झूमि झुमड़ोपरै । पानते प्रसूनते परागते पहारनते हारनते हेमते हिमंत हुमड़ो परै १ ॥

नीचे लिखेहुये कबित्तोंमें कबियोंके नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ छाई शीतलाई मुरझाई कला कुंजन की मानों मन रंजन की पाइकै जुदाई है । कापै कहिजाई दिनहू की लघुताई जनु रही छलताई लखि प्रीति सकुचाई है ॥ रैनि अधिकाई भयो बिरह सहाई तासु

शीत चहुंघाई बिनु सीत मति धाईहै। पीर सरसाई फूले सरसों सरस भाई हेमऋतु आई न कन्हाई सुधि पाई है १॥

क०॥ बैठत उठत जात आवत सकारे सांझ कामके ...रे बाण हिये डोलियतु है। देखै बन बाग भले लागत भयावन से खान पान माहिं मानो बिष घोरियतु है॥ धाय कै हिमंत वाय बेधत दुखद काय छायके करेजो क्षणमाहिं छोलियतु है। लखे क्यों न जाय ताहि बिरह सताय तायो तोबिन सहाय हाय हाय बोलियतु है २॥

क०॥ बास पिय पास जाको अतिही हुलास ताको भोगन रसाल रासरस रससायोहै। चकचौंधि देखिदेखि चकित चकोर चाहै शशिके समान सर शीतल सोहायोहै॥ वहत समीर सीरी दहत हमारो अंग रहत न धीर यों अनंग उमगायोहै। छलसों धरयोनाम अगहन गहन सम बिरही गहन प्राण अगहन आयो है ३॥

क०॥ अंग सुखराय औ उसासन थकाय नेक हियको हिमंत ...य बेधै चहुंघाय जूटि। तासु दरशाय दशा तोबिन मलीन अब सब सुखचायन को लीन्हों कामदेव लूटि॥ खान पान को नशाय डोलै तो बिरह पाय मूंदि पलकों को रहै लोगन ते दूरि छूटि। भूलि भूलिकै कुपन्थ जाय सुनि प्यारी ताके कांटो गड़िजाय पै न जाय तेरो ध्यान टूटि ४॥

स०॥ कामिनि काढ़ दई कर कंकण अंगदनाकर संगत है। जोसन जोरिन बाजु बहोरि धरी तबहूं कर

रंगतहै ॥ पीननितंबन नूतन अम्बर कम्बरमाहुं असंग-तहै । झीनदुकूलन पीन पयोधर हेतुहिमंत प्रसंगतहै५॥

स० ॥ कंचन रत्न बिचित्रित गूनि गही रसनान नितंबन में । भूषित भूरिन भूलिहुं भामिनि भाविनि केलि बिलंबन में ॥ हंससि बोलनि ना पद नूपुर तौ झुलनी मुख चुंबन में । शीत हिमंत के भीत बढ़ी बड़ चाह बढ़ी पिय रंभन में ६ ॥

स० ॥ कामिनि देखति है दुसरी तनु प्रीतम भोग से अंकित है । हर्षित गात भई लखि ओठ कपोल सुदंत कलंकित है ॥ पैन्हति है सुरखी चुनरी धनुसी भृकुटी निलबंकित है । सोहत है मुख ऊपर सांवर बार से नयन बिशंकित है ७ ॥

स० ॥ अंगन लेपि लई बर अंगनि मंगनि कामिनि केसर की । अंबुज आनन में बरपत्र रची नवनारि नरेश्वर की ॥ गंधन से शिरकेश बिभूपित नाम उचारि रमेश्वर की । यंग रची रति रंग हिमंत हनी मदलै मदनेश्वर की ८ ॥

स० ॥ आलि कि भौन में कामिनियां पथयान कि हेत निरेखति हैं । बारिबिहीन सधूरित जो मगुशीत समय समदेखतिहैं ॥ मानो प्रवास परिश्रम खीन पती ढिग पाय परेखतिहैं । दीननकी दिलकी बतियां रतियां मनुसारि सरेखति हैं ९ ॥

स० ॥ आलि हिमंतसमय हिम संगत बातबहै जग शीत करै । पांकति कंपित कोमल कामिनि शीत समा-कुल कोर भरै ॥ मानहुं कामिनि प्रीतम के बिनु बारि

समय नहिं धीर धरे। शोचकरे पियरी तन में दुबरी नित नैनन नीर ढरे १० ॥

स० ॥ ओठन में छबि देत छबीलि के दंतके छाप छटा छटकी । भेदित हैं नकशे कुच कुंभ फटी आँगिया उर में लटकी ॥ शीतसमय रति होत प्रकाशित निर्दय प्रीतम के हटकी । नूतन योवन काम बली तनु छीन मलीन प्रभा मटकी ११ ॥

स० ॥ आनन वेलि प्रिया सिगरी रजनी रति-केलि परीश्रम से। तोड़ित अंग उरोज सुपीड़ित चुंबित आनन हैं क्रमसे ॥ आरत खेद भरी सुकुमारि सुलाज करी गुरु उत्तम से । भोर हिमंत समय तनु मंजित अंजित नयन भरी श्रमसे १२ ॥

स० ॥ जो गुण आगर नागर से वनिता गण चित्त निचोरि हरे । जासु नवे बहुसालि सुमंजरि आमसि मान कहा खान फरे ॥ रैन तुरंग गिरे जहँ खाँसर हंस सुवादनि नाद करे । सो हिमयुक्त समय सुरनन्दन मानस मध्य अनंद भरे १३ ॥

स० ॥ मंजुमनोहर शीत सुगंध सुँधे प्रियरैन सचैन रमै। सो घननील सरोरुहसे निरमाल दुरावति भोरसमै॥ पनिउतंग उरोजके भारन गौनसमय मृदुगातनमैं। नूतनगंध रचीकचमें कितनीतरुणी तनुमैनजमैं १४ ॥

क० ॥ सारि निशा रतिके श्रम खिन्न शरीर हिमंत समय मसकी । जागरनाकरि नयन सरोजनि पाटलरं-गलसी चसकी ॥ छूटि सटा छिटकैसे जिया परभात

जनावतिहै रसकी । सोइतिहै रबिकेमृदुकी रनतापित पुंज लुटी जसकी १५ ॥

स० ॥ गेहूँ चना जव आदि जमैं तब सोहत भूमि सिमानन में । मंजु मृगीगन मंगलमूरति मण्डितमण्डल काननमें॥सारसके सरसात सुनादसे नादितहै बहुतानन में।सूनतचित्तमें चोपचढ़ै चहुँओर चिकार उचारनमें १६

स० ॥ फूलनि कालित आसवको छबिछैल छबीलि केअंग जुटै । श्वास समीर सुगन्ध करै युगअंग सुगंध अनंदलुटै ॥ अंगन अंग प्रसंग परै दृढ़बंद छुटावतहूँ न छुटै । सोवत सारि निशा सितमें नर मन्मथके शर अंग टुटै १७ ॥

स० ॥ पीन पयोधर पट्टनकोटमें पैठिपरी दल ग्रीषमकी। पीड़ति सर्बयुवाजनके उरखेदभई सितसूषमकी ॥ प्रात पला तृणलीन गिरै मनुआपपरी पर भूषम की । हारिहिमंतसमय गिरिरोवत हालकहै नितदूषमकी १८॥

स० ॥ चन्दन राग उजागर से बहुराजितहार मनो रमकै । कुन्द तुषार कलानिधि कान्ति रची उरहार महोत्तमकै ॥ सोरति कामिनि कुंभ उरोजनि भूषति नासँग प्रीतम कै । हेतु हिमंत अपूरब है गरमी कमनी कुच में दमकै १९ ॥

स० ॥ राति रची रति रंग की राशि रसीली सबै श्रमकेलि पगै । पावति है बहुमोद तबौ मुख पांडु भयो छबि दूनि लगै ॥ हासकरै न निरेखतही पिय दंत केदागन ओठ दगै । रागमिटै मुख चंद्र लसै मनुउग्रह भौसुर भानु भगै २० ॥

स० ॥ एक सँवारति दर्पण लेकर कामिनि आनन आंगन में । कंजमुखी मुख कंज निरेखति भानु प्रभापर- कासन में ॥ खैंचि भली बिधिसे चुटुकी धरिओठ परे- खति रंगन में । दंत के घातन भिन्न भयो रद नच्छद है रति जंगन में २१ ॥

स० ॥ नील सरोरुह से सर सोहत वारि सिवार सुसोहनके । बत्तक नीरमें फीरहैं बकधीररहैं मिनजोह- नके । उज्ज्वलके जलतासुमिलोहिमबासकरै अतिसोहन कैजानिशुबाजनअंगसकाम करैबलसे मनमोहनके २२ ॥

स० ॥ नूतनु पल्लव में कुसुमावलि राजितसे रम- णीय बने । फूलत लोध्र महीरुहलो पुनि धान सुपाक कहै न बने ॥ कंज बिदीन बिलीनभयो भुमि गीरत चारु तुषार घने। देखु प्रियाअब आगत है सिनिमंत हिमंत हसंत सने २३ ॥

इतिश्री षट्ऋतु हजारा अन्तर्गत
हेमन्तऋतु वर्णन सम्पूर्ण ॥

अथ शिशिरऋतु वर्णन ॥

दोहा ॥

मान न काहू को रहत ल्याइ दूतिका घात ॥
सिखैदेतिया शिशिर की सी सी सी की बात १
लगतसुभगशीतलकिरण निशिसुखदिनअवगाहि ॥

माह शशीभ्रम सूरत्यों रहति चकोरी चाहि २
रहि न सकी सब जगतमें शिशिर शीतके त्रास ॥
गरमभाजि गढ़वै भई तियकुच अचलमवास ३
तपन तेज तपता तपत तूल तुलाई माह ॥
शिशिरशीत केहुंन मिटै बिन लिपटे तियनाह ४

इन्द्र कबि ॥

क० ॥ हरत तपन तप ठरत करत जप उठत अंग न कप लखत जलनको । परत अधरछत अंगनअंगन खत करत सुरत रत जगत जननको ॥ अनल अनल त्रशि करत अनल नर ठरत तुहिन कर तुहिन गणन को । डग डग डगत चिबुक द्विज इन्द्र कबि कहत थकत ऋतु शिशिर बलन को १ ॥

कालिदास कबि ॥

क० ॥ चिड़ियां चुहुचुहानी रजनी बिहानी जानी प्रगटी प्रभात बानी गोपिन के गीत मैं । कालिदास औचकसी सेजते उतरि प्यारी अनललगाई चलीचितै नवनीतमैं ॥ गात अँगरात अलसात अलबेली भांत भावतो तजो न जात शिशिर के शीतमैं । फेर परयंक पर ओठ भर ओढ़ि पट पीतमें लपटि लपिटाय रही पीतमैं १ ॥

गंग कबि ॥

क० ॥ कोपि कशमीर ते चल्यो है दल साजि बीर धीरना धरत गल गाजिबेको भीमहै । सुन्नहोत सांझही

बजत दन्त आधीरात तीसरे पहरमें दहलदे आसीम है ॥ कहेकविगंग चौथेपहर सतावे आनि निपट निगोरो मुहिंजानिके अतीम है। बाढ़ी शीत शंका कांपै उर छै अदंका लघुशंकाके लगेतेहोत लंकाकी मुहीमहे १ ॥

गोकुल कबि ॥

स० ॥ वारुनी ओरकी बायुबहे यहशीतकी ईतिहै बीस बिसा में। रातिबड़ी युगसी नसिराति रह्यो हिम पूरिदिशा बिदिशामें॥ गोकुल डारिहै मैनमरोरि कहोव कहा कहे मानकिशा में। कौन की छाँह छिपैगी तिया छतियाँ तजि नाहकी माह निशामें १ ॥

गिरिधरदास कबि ॥

क० ॥ बिश्वना कँपावत है काँपति घनीसी आय सीसीन करावती करत अतिदीना है। रदना बुलावत हैंरदनिज पीसे सोई चंदना स्रवत मुखचंद को पसीना है॥ गिरिधरदास पीरो खेतन शरीर यहकञ्ज मुरझायेन निगाह भूमिलीनाहै। लेतसीरी सांसेकर श्यामसों प्रथम रति शिशिर न एरी यहनागरी नवीनाहै १ ॥

ग्वाल कबि ॥

क० ॥ सोनेकी अँगीठिनमें अगिन अधूम होयहोय धूमधारहूतो मृगमद आलाकी। पौनको न गौन होय भरक्यो सुभौन होय मेवनके खौन होय डिबिया मसालाकी ॥ ग्वालकबि कहै दूरपरीसो सुरंगवारी नाचतीं उमंगसों तरंगतान तालाकी। बालाकी बहार औ दुशा-

लाकी बहारआईपालाकी बहारमेंबहारबड़ीप्यालाकी १॥

क० ॥ भरभर झाँपे बड़े दरदर ढाँपे तऊ थरथर काँपे मुख बजत बतीसी जात । फेर पशमीननके चौहरे गलीचा तापै सेज मखमली बिछी सोऊ सरदीसी जा... ग्वालकबि तैसे मृगमदसों धुकायेभौन ओढ़िओढ़ि छार भारआगिहू छपीसी जात । छाकेसुरासीसीतौलौंसीसीन मिटैगीजौलौंउरउकर्सासिछातीछातीसोंनमीसीजात२॥

क० ॥ बाहरगयेते घरआवन लगेहैंलोग घरकेबसे-यन पयानकियो साफ़ासो । ज्ञानिनको ज्ञानअरु ध्यानि-नको ध्यानमान मानिनको मानफाख्यो मृगमद नाफ़ासो॥ ग्वालकबि कहैप्याला बालाये दुहूँनहीमें सबहीने जान्यो ठीक आनँद इजाफ़ासो । जोमदार जीवनको जोमको जगैया बड़ो आयो अबजाड़ो जग करन जुराफ़ासो ३॥

क० ॥ गाले अतिअमल भराले तोशकोंमें फेरऊपर गलीचे जालडाले बिछवाले अब । सेजपर सेजबंद खूब सींचवाले खाले पानरसवाले ओगजकसजवाले सब॥ ग्वालकबि प्यारीको लगाले लिपटाले अंग ओढ़िकैदु-शालेमेंमजाले सिसिकाले जब । मंजुल मसालेमिलेसुरा केरसालेपीले प्यालेपरप्याले मिटेशीतके कसालेतब ४॥

क० ॥ बिबिध बनातै कीमखाबकी कनातैतामें दीरघ दुचोवैहैं सिचोवे हकहद्दीमें।चाँदनीहै चोवनपैपरदे दरी-चनमें दोहरे दुलीचेहै गलीचे गोलगद्दीमें ॥ ग्वालकबि भांतिभांति भोजनहै भामिनीहै दीपहै दुशालाहै मसाले मैन मद्दीमें । चापकै चुहद्दी साज सेजपै बिहद्दीवै सक सीत रद्दी तब डूब्यो जाय नद्दीमें ५ ॥

गनेश कबि ॥

क० ॥ शीशाके महलबीच कहल हिमाचलकी पहल मलाई बर्फ चहल कसालामैं।चंदनसो लागत कुरंग सार बेर्पगन में अगिन अँगीठी जिमिवारी हौजशाला में ॥ लागत गलीचा उनशीतल सिवार तूल दीपक नक्षत्रसे गनेश रसिथालामैं ॥ बालाउरबीच शीतमालासी जुड़ात जात पालासम लागत दुशाला शीतकालामैं १ ॥

जगमोहन कबि ॥

क० ॥ असन मैं आसन मैं अमल अवासन मैं साँसनमैं कछुक हुतासन मैं आइगो। फूलनमैं तूलनमैं मंजु मखतूलनमैं दोहरे दुकूलनमें कूलन अघाइगो ॥ सेजन मैं तीखे सुर तेजन उताजनमै मदन मजेजन करेजन कँपाइगो । नीरनमैं त्योंही जगमोहन समीरन में जहाँ जहाँ देखोतहाँ शिशिर समाइगो १ ॥

क० ॥ परेकोऊ पछाह् पिछौना करतेई रह्यो प्यारी कहूं पुहुमीपै पालापरि जावैना । मीरन कपारसी परेखो इन नैननसों सारी दुनियांकी सियराई सरसावैना ॥देखो जगमोहनजू बावरी बियोगिनिको काहू अवलित करे-जो कपि आवैना । हाय नवबाला बिन निपटि निराला परेदशमें पराला शीतकाला कहूं आवैना २ ॥

क० ॥ मीननके चौंके चुने चमकै नगीननके झीने पलमाने कैसी गहब गहीलेहैं । तूलनके तागेधागे मंजु मखतूलनके रेशम दुकूलन के परदे रँगीले हैं ॥ नीचे नये खासे जगमोहन गलीचे यों सो सेजके नगीचही

चिराग चटकीले हैं। लपटे सुआसन में छपटे दुशालनमें सोये शीतकालन में छपके छबीलेहैं ३॥

ठाकुर कबि॥

क०॥ आड़े न रहत रोमठाढ़ेही रहतसदा पच्छूको पवनफेरि पालासों कटतहै। कम्पत करेज सेज सोइये सुखत अरु गब्बर गरीबनकी गरुता घटतहै॥ ठाकुर कहत फेरि पानीते परस होत होततन पीर नेमनाहीं निपटत है। ओढ़िये दुशाला तरे तोशक बिशाला बिना लागे अंगबाला शीतकाला न कटतहै १॥

द्विज कबि॥

क०॥ पटुसों छपावे परछिद्रन को आठोंयाम अति अभिराम जग पूरे जनकामरी। जासुसंग पायके उमंग माहँराते सब माते गुणगावें शुभ राग रंग बामरी॥ लखोंया सुमनरहे हरि अनुरागिरटे द्विज शाखाबरबाग जासु धाम धामरी। शीतल सुभाय चित्तयाके मित्रहूको ध्याय शिशिर मे सज्जन न सज्जन मे श्यामरी १॥

दीनद्याल कबि॥

क०॥ सोहैं सरसोहैं सरसो हैं करिडारे नैन लगैं सरसोहैं बिरहीकोदिनरातिहै। अम्बर सुहावें औ प्रभावें बरहीकी बर सीकर परत निशि सबको सिरातिहै॥ गावतहिंडोलै गरनागरी गरीय गिरा कहूंकहूं कोकिला की काकली सुनातिहै। चंदन दिखात कहूं दीनद्याल बंदनमें निंदतिहै पावसके शिशिर सोहातिहै १॥

दिवाकर कबि ॥

क० ॥ गिरेव्योम बरफ झरफके सनाका चले मख-शाली गादीचाँदी पेचुवालगेरहै । भनतदिवाकर दुशाला दै विशाला आला हरत कशाला रस ख्यालाते परे रहै ॥ छातीसे लगाय छाती ताती कुचथाती मिसि मैने मदमाती करमातीमें जगेरहै । शिशिरके शीतके तभीत समशीतचीत जीतलेत पाला जो सुबालाके सँगेरहै १॥

क० ॥ सीरीभयो जल सुसमीर थल सीरीभयो सीरी आसमानबान पानसीरी परिगे। भनत दिवाकर बसन वो दसनसीरी बदन मदन बनसीरी सब करिगे ॥ सुंदर दुकूल सीरी तूल फूलमूलसीरी पूलधूल राहवाह सीरी सम ठरिगे । शिशिरके शीत यह कीन्हों है अनीत इत थीत है उरोज एकसीर संग लरिगे २ ॥

दयानिधि कबि ॥

स० ॥ रैनि मैं प्रीतिकी रीतिनके रतकैके निचीत झपे यह कोये । नैनसों नैन मिलाय लिये मुखसों मुख छाय महारस छोये ॥ मेलि हियासों हिया भुजबाहु दुहूं कटिमें पगमें पग पोये । शीतकी भीत ते दोऊ दया-निधि खोय मनोज व्यथान को सोये १ ॥

नाथ कबि ॥

क० ॥ सुघर सजाई कोठरीन में बिछाई सेज छत पिछवाईछाई गमक कहाकहों। मृगमद कुम्कुम सिंचाई बीरी कीचभाई नशाकी पिलाई इनहूंते शीत नादहों ॥

कहीं धधकाईं कहींमीठी अँगीठीकी आंच कहीतोउढ़ाई दुशालाते कसाला लहों । कहै नाथ होईहै जाड़ाको भजाई जबै तेरी या रजाई मैं रजाई ते दबकिरहों १ ॥

पद्माकर कबि ॥

क० ॥ गिल गिली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजनहैं चाँदनी हैं चिकै हैं चिरागनकी मालाहैं । कहै पदमाकर त्यों गजक गिजाहैं सजी सेजहैं सुराहीहैं सुराहैं अरु प्यालाहैं ॥ शिशिरके पालाको न ब्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एतेउदित मसालाहैं । तानतुक तालाहैं बिनोदके रसाला हैं सुबाला हैं दुशाला हैं बिशाला चित्रशाला हैं १ ॥

बेनी कबि ॥

क० ॥ नारी बिन होत नर नारी बिन होत नर राति सियराति उर लाये पयोधरमैं । बेनीकबि शीतल समीर को सनाका सुनि सोवै सब सांझते कपाटदै शहरमैं ॥ पक्षी पक्ष जोरे रहैं फूल फल थोरे रहैं पाला के प्रकाश आस पास धराधरमैं । बसन लपेटेरहैं तऊ जानु फेटे रहैं शीत के ससेटे लाग लेटे रहैं घरमैं १ ॥

बलदेव कबि ॥

क० ॥ माणिक महल में प्रमाणिक बिछाई सेज हीरनके हार तेज सेजपै धरे भले । द्विज बलदेव त्योंही कंचन लतासी बाल पूर मन माद कैं कपूर पगमें मले॥ अमित अरामै भोग देत बसुयामै अरु शीतके तमामे

ते समामे जायके जले। शिशिर की सीकरन सोई है वशीकरन हीकरन हेतु पिया तोकरत है गले १॥

क०॥ दुसह दुशाला होत जन बिनबाला होत शोच अति आला होत मैन मन जागे ते। द्विजबलदेव तूल मूलकै न सेव सब पावकको भेव जानि लीन्हों जग आगे ते॥ प्रचुर पदारथ प्रसिद्ध पुहुमी पै प्रियपरस प्रसन्न मन तासों प्रेम पागेते। बीतिजात बैसनमनोज मनजीतिजात शीतजातउन्नत उरोजउरलागेते२॥

क०॥ चित्र छबि धामे रूप राशि बसुधा मे अनुराग बलतामे सो सुधामे हेरि खायोहै। देतमन कामे वलदेव कहों कामे बाल कामे की कटाक्ष करि कामेको लजायो है॥ सेवत सुवामे ते तमामे है समा मे जानि हरष हमामे भोर सामे ना जनायो है। शिशिर अरामे रस रस रस रामे कसि जामे गज जामे हित जामे चित लायो है ३॥

बल्लभ कबि॥

स०॥ राजतहै इहि भांति बन्यो गृह बात न बाति जहां बिन काजे। है हँसती हँसती चहुंघा अरु त्यों हँसती ब्रजबाल बिराजे॥ पानन को सनमान महा बहुतान तरंगन की धुनि गाजै। वल्लभ राधिका श्याम तहांलखु सैसिर के सुख में शुभ आजे १॥

बंशरूप कबि॥

क०॥कंचनके पलँग बिछाये शीशमहलमेंचहलसुपेदी सनी सौरभ रसाला में। ओढ़े ऊन अंबर सकल नख

शिख तऊ नेकहू न मानै मन रहत कसाला मैं॥ कवि बंश रूप साजे दीपगण माला स्वच्छ अधिक उतंग त्यों अनंग चित्त शालानैं। मदति मशाला हैं बिशाला जे दुशाला आला पाला सम लागे वाला बिन शीत काला मैं १॥

मंजु कवि॥

क०॥ रतन जटित त्यों घटित घर चारों ओर दरन दिवारन किवारन मुदायेहैं। परदा पसमके असम के पड़े हैं गोल गेंदवा गलीचन गिलम गुदवाये हैं॥ मंजुकवि आतश अँगीठी धूप धूम धूम धूम झूम झूम शुचि सौरभ सुहाये हैं। केलि कल क्रीड़ा बीड़ा हँसन बसन द्युति दंपति दिपति दिव्य शीत सिसिरायेहैं १॥

क०॥ आले रंग रंगके तनाले दरवाजन में परदे मुंदाले वे झरोखे ज्यों न आवै पौन। चारों ओर गरम गुदाले बिछवाले गाले छाले धूप अगर अँगीठी दहका लेभौन॥ मंजुकवि खाले जरा गजक चढ़ाले मद बीड़ियां चबाले भरी बिबिध मसाले जौन। भुजन फँसाले तिय उर लिपटाले अरे दुबकि दुशाले ये कसाले तू मिटाले क्यौंन २॥

रघुनाथ कवि॥

क०॥ देतहै न कल एको पल एहो रघुनाथ पौन पछिवांही बहै अंगन छिलत सो। पानी की कहानी सोतौ जाति न बखानी कछू नेक परसत पानि पाय पघिलत सो॥ कैसे कै हिमंत अंत शिशिर को कैहै

पल पटके टरत पेट पीठसों मिलत सो। जबसों उयो है आज तब सों देखिसखी तरणि को तेज शीत आवत गिलत सो १॥

रसिकबिहारी कबि॥

क०॥ डोलत चहूंघा मतवारे सम बोलतहै सबै नर नारी सुध भूले है सदन की। केसरके रंग बीच भीजे अंगराजत हैं सहित गुलाल शोभा साजत बदनकी॥ काहू के बिशेष नखरेख हैं उरोजन पै काहूके कपोलन निशानो है रदनकी। रसिकबिहारी हिय सोहनीबिलोको घनी शिशिरहै कैधों यह मोहनी मदनकी १॥

क०॥ भावै न सरितसरतीर नीर बीर और आतप हुताशन की तपनि सुहावै हैं। शिशिर की शंक बंक अधिक उतंग परयंकपै छबीली संग सुख उमगावै हैं॥ अंग अंग झंपै तऊ मिटत न शंकै पै उर सीसी करि रदन बतीसी बँधि जावै हैं। रसिकबिहारी राग रंगमें अभंग मोद तन पुलकावै घनो मदन जगावैहैं २॥

क०॥ कहूं बौरे सरस रसाल बन बागन में सुखद सुगंध चाह अमित बढ़ावै हैं। कहूं नव नागरी अनंग रंग छाकी हिय हुलसि बहार ते बहार सुरगावैहैं॥ रसिकबिहारी कहूं संग निज प्रीतमके नागरी छबीली बिपरीत रीत छावैहैं। शिशिर की शीत कहूं मीत सों मिलत कोऊ कहूं निजप्यारेको बसंतलै बधावैहैं ३॥

राय कबि॥

क०॥ शीतलसमीर आयउरन दुशाल होत जगत

बिहाल होत बचत न भागेते । हाथ पायँ कंपे जायँ बसन न धेरे रहैं रैन कंप जाय न रजाई तन त्यागेते ॥ राय कबि दंपति बिनोद चहूं कोद करे शिशिरमें होत घर बाहर सभागेते । अगिनि के आगे ते न जागेते न बागेते सुशीत जात उन्नत उरोज उर लागेते १ ॥

लाल बलबीर कबि ॥

क० ॥ बैठी चित्रशालामें बिलोकत पिया की बाट होयगो कहारी खाय गरम मसालातें । शीतल समीर अंग तीरसी लगे हैं बीर मानों ये लिपट आई बरफ़ हिमालातें ॥ लाल बलबीर पीर कबलौं सहूं मैं बीर कीजिये उपायरी बचाओ कामज्वालातें। भई मैं बिहाला बिन एरी नंदलाला नहीं शिशिरकी शीत जाय शाल औ दुशाला तें १ ॥

क० ॥ चमचमात चांदनी चँदोवा लगे चंद्रमासे राजे तसवीरें बिपरीति रति बालाकी । चौलंग दिवालगिरी सोहत फनूस झाड़ चहके चिराक छबि छाई दीपमालाकी ॥ लाल बलबीर सजी सुंदर सजीली सेज गिलम गलीचे गादी सुरुख दुशालाकी । शिशिर के पालाके कसाला काटबेके हेत रचीहै बिशाला चित्र शाला नंदलाला की २ ॥

क० ॥ कौने बिरमाये छैल अजहूं न आये अबैमैन लेत दाये को बचावै शीतकालातें । दौर दौर आली झुक झांकत झरोखन में लगन लगी है मेरी मदनगुपाला तें ॥ लाल बलबीर बिन जागी बिरहाकी पीर

जाइये जरूर दौर लाइये उताला तें। भई मैं बिहाला बिन ऐरी नंदलाला नाहिं शिशिर को शीत जाय शाल औ दुशाला तें ३ ॥

क० ॥ शोभित सखीन मध्य सुंदर नवेली बाल ऐसी छबि देत है अनूप तिहिकालामें। जैसे उडुगण मध्य राजत सुधाधर जू फैल रही जगा ज्योति योबन उजाला में ॥ लाल बलबीर अंग भूषण नवीन राजें जड़ित जवाहिर अमोल हेम मालामें। सजा सेज आला आमें मदन गोपाला आज ओढ़के दुशाला बाला बैठी चित्रशाला मैं ४ ॥

क० ॥ राजै आसपास दासी खासी कर बीन लैलै गावत सुहावनी अनूप तान ताला मैं। चारों ओर द्वारन में परदे पशमीनन के राखे भर अतर अमोल दीपमाला मैं ॥ लाल बलबीर प्याला भरे खीर पन्नन के पानन के बीरे भर राखे हैं मसाला मैं। सजा सेज आला आमैं मदन गोपाला आज ओढ़के दुशाला बाला बैठी चित्र शाला मैं ५ ॥

क० ॥ आज रंगमहल बिराजै श्रीश्यामा श्याम जग मग चारोंओर दीपकउजालेहैं। बिबिध बनातनकेपरदे परे द्वारन में लाल बलबीर झब्बा झूमत निराले हैं ॥ विद्रुम पलंग तापे गादी मखमली जापै बसन रँगीले तर अतर समाले हैं। कहाशीतपाले खायगरम मसालेपियें प्रेम मधु प्याले ओढ़ै चौहरे दुशाले हैं ६ ॥

क० ॥ गरम गिलोरी हैं नकुल नोंनी नेजन की ब्यंजन अनेकनमें गरम मसाला हैं। सुन्दर मधुर मीठे

मेवा धरे थारन में पराके सुधासे भरे कंचन के प्याला हैं ॥ लाल बलबीर जूके पाला के कसाला कहा आय आय लागत नवीन उरवाला हैं । जरे दीपमाला सेज सुन्दर बिशाला जाके शाल है दुशाला हैं बिशाला चित्रशाला हैं ७ ॥

क० ॥ बैठी केलिमंदिरमें सुन्दर सिंगार साज आगम बिलोकि रही प्यारे नंदलाला के । द्वारनमें परदे परे हैं मखतूलनके तूलभरे दमदमात लालरंग गालाके ॥ लाल बलबीरके रिझावन बिचित्र चित्र रचेचित्रशाला में अनेक केल माला के । पाला के कसाला के न सामनबिशाला जहाँराजत अनेकबस्त्ररेशमी दुशालाके ८॥

क० ॥ बैठे चित्रशालामें बिशाला रूपवाला लाल एक बैसवाला उमै अंग उजयाला हैं । दीन्हें गलबाहीं तन मन सों लगाईं मानो सुन्दर अमोल कंठ मेली बनवाला हैं ॥ लाल बलबीर ब्यापै हिमकी न पीर बीर प्रेम रणधीर पियै रूपरस प्याला हैं । देखिछबि आला बाला होतहैं निहाला संग राजै प्रतिपाला राधेछैल नन्दलाला है ९ ॥

क० ॥ बिहरति रहैं बनराजजू मैं आठोयाम और सों न काम गान गावै नन्दलालाके। फाटीसी पिछौरियामें राजत हजार चीर दिपत अनूप रूप छीनें मृगछाला के ॥ लाल बलबीर श्यामा श्याम जूके रंग भरे तिन को न ब्यापतक साला भूल पालाके । ओढ़ओढ़ साधु प्रेमकुटी में निवास करें गूदरी गुंथेमा मानमारत दुशाला के १० ॥

शालग्राम कवि ॥

क० ॥ चित्तन की छावनी बिराजे दिन प्यादे पुनि नायक दिशाहू भोर थानेदार पालाहे । ओसहै सूबेहू-दार जलहे निरुपेक्टर कपतान शीत बातको कसाला है ॥ जनरलआदि सब बादर औ बूंदी ठानो शीतला के अस्त्र घोर अश्वहू सुचालाहै । धनकेरे पंचदशमकर पचीस अंशतेईचीफ शालग्राम शीतको रसालाहै १ ॥

सेवक कबि ॥

क० ॥ पौन प्रबिसैन परे परदे दिये हैं पट आतसी अवास आस पासके भरे रहैं। दिपै दीप झुण्डन दिवा-लन दिवालगीर फरशी फनूस चहूँ रोसन धरे रहे॥ अगर की धूप सेज अम्बर अतर रूप सेवक मसाले मौजमन के करे रहे । दपटे मनोज तेऊ झपटे शिशिर शीत छपटे दुशालन में लपटे परे रहे १ ॥

क० ॥ भानुशीत भानुकी समान लघुमान भयो वारी बरसान सों कृशानहू की शालामें। दीपगण बारनभयो है पौनबारनके सेवक सितारन सुतारन की माला मैं ॥ माच्यो फूलफूलके अतूल तूलहूको तूल तैसो मखतूल भोग लोचनके जालामें । मदत मसालाकी नवाला बिन बालाहोति पालासम लागत दुशाला शीतकालामैं २ ॥

क० ॥ चन्द छबि पागि आँगि औरैचले भानुभागि शीत जागि जागि जग ऐसे गरसत है । रदन सों बोलै रद बदन बिकासै कौन नदन की गौन रौन सूधो सर-सत है ॥ लागी जऊझाँपै मचीं झरकी झरापैतऊ सेवक

जू काँपै न दुराव दरसत है । दृढ़ बरसाला फोरि शालहू दुशाला फोरि सकल मसाला फोरि पाला बरसतहै ३ ॥

सेनापति कवि ॥

क० ॥ शिशिर तुषारके बुखारसे उखारतहै पूसबीते होत सुने हाथपाँव ठरिकै । द्योसकी छोटाई की बड़ाई बरणी न जाइ सेनापति गाई कछु सोचकै सुमिरिकै ॥ शीततै सहस कर सहस चरण ह्वैकै ऐसे जात भाजि तम आवतु है घिरिकै । जौलौं कोक कोकीको मिलत तौलौंहोत रात कोक अधबीचहिते आवतुहै फिरिकै १॥

क० ॥ शिशिर में शशि को सरूप पावै सबिताहू घामहू में चाँदनी की द्युति दमकति है । सेनापति होत शीतलता है सहस गुनी रजनीकी झाँई बासर में झमकतिहै ॥ चाहत चकोर सूर ओर दृगछोरकरि चकवाकी छाती तजि धीर धसकतिहै । चन्दके भरम होत मोदकै कुमोदिनि को शशि शंक पंक जनी फूलि नासकति है २ ॥

क० ॥ धायो हिमदल हिम भूधरते सेनापति अंग अंग जगथिर जंगम ठिरतहै । पैये न बताई भाजिगई हैतताई शीतआयो आतताई क्षिति अम्बर घिरतहै ॥ करतहै त्यारी भेषकरिकै उजारीहीको घाम बारबारबैरी बैर सुमिरत है । उत्तर ते भाजि सूरशशि को सरूप करि दक्षिन के छोर छिन आधक फिरत है ३ ॥

क० ॥ अब आयो माह प्यारो लागतहै नाहिंरवि करत न दाह जैसो अवरेखियुत है । जानिये न जात

बात कहत बिलात दिन छिन लौंन ताते तनको विशे-
खियतु है ॥ कलपसी रात सोतो सोये न सिरात केहूं
सोइसोइ जागेपैन प्रात पेखियतु है। सेनापति मेरेजान
दिनहूंते रात भई दिनमेरें जान सपनेमें देखियतु है ४॥

शिवराम कबि ॥

क० ॥ जायो कन्यकाको धायो आयो है हिमालय
तेसंगमें सहाई ले सुरभि भयकारीके। कहै शिवरामया
कँपायेहैं सुतीनों लोक ओकओक आपने प्रताप जोर
जारी के ॥ तेल तूल तपन सूउनहूंन जेरकीने येईदोऊ
वीर रहे जगकी जिवारी के । सुन्दर सुव्रत ऊँचे आड़े
येअचलसूर जाड़ेको सुआड़ेगाढ़े ठाढ़ेकुच प्यारीके१॥
क० ॥ खंभेदार रावटी बनाती लाल डेरनमें अग-
र अँगीठी करी शीतकी भजाई है ॥ कहै शिवराम
पशमीनेकी बिछाइतपै तखतके रूप सेज सरस सजा-
ईहै ॥ मोरछली अलकै अनूपशीश फूलछत्र संजितको
शोर काम नौबत बजाईहै। प्यारेको मिलापप्यारी पात-
शाही पाईरीझि सौतिनको शालैदई सखिन रजाईहै२॥

श्यामसुंदर कबि ॥

क० ॥ बरु अति रुचिर बिचित्र चित्रशाला बीच
आनँद दुशाला सों बिशाला लह लैसहू । दीपन की
बस्तु जे उदीपन की दिब्य दिब्य लीजिये मँगाय कै
सजाय रोज ऐसहू ॥ कहै श्यामसुंदर सुजान सुनो शोच
तऊ फीकेहि लगैंगे फाग फरश मुकेसहू । उरज

कसी सी बाल ताकी रति सीसी बिना शिशिरके शीत की न सीसी मिटै कैसहू १ ॥

शोभन कबि ॥

क० ॥ बेरबेर ढांकै बड़े डरडर झांकै तऊ कड़कड़ दांत बाज बाज जुरि जुरि जात । नेक होत न्यारे तोपै थर थर कांपै प्यारे ओढ़ ओढ़ शाल मालहूते लुरि लुरि जात ॥ शोभन भनत भाग भाग आग आगे जात लखि छार भार पुनि पुनि मुरि मुरि जात । शिशिर के शीत में अनीत शीत मान भीत सज म पुनीत भीत दोऊ दुरि दुरि जात १ ॥

क० ॥ सुभग पलंग पै बिराजै नाथ साथ सब बिबिध सिंगार साजि जेती पुरबालाहैं । ओढ़िकै दुशाला उर कंचुकी बिशाला ओढ़ि मोतिनकी माला हीर हारहू बिशाला हैं ॥ कंचन अंगीठी सों सुमीठी मीठी धूम उठै मन काम श्याम हेतु रच्यो धूमजालाहैं। शोभन भनत येते उदित मसाला जामें तामें बिच केलिकरै ओढ़िकै दुशाला हैं २ ॥

नीचे लिखेहुये कबित्तों में कबियोंके नाम नहीं मालूम होते ॥

क० ॥ थिरचल सकल प्रबल भयभीत ह्वैकै जगत जुराफा सम गति दरसत है । ठौरठौर बरषा ज्यों बरषै बरफ पुंज आलय हिमालय चहूँघा सरसतहै ॥ उदित

सुधाकर की मुदित सरूपै पुर पुहुमी पियूष धर कैसी परसतहै। सोचित सरोजनको पोचित बदनपेखि रोचित कुमोदिनिके मोद बरसतहै १ ॥

स० ॥शीतसमय परदेशकोपीयपयान सुनोवहरोवन लागी। याऋतुमें हरि क्योंहूं रहै घर देवतापूजि मनावन लागी ॥ और उपाय तक्यो न कछू तब साजिके बीण बजावन लागी। प्यारी प्रवीण भरेसुर मेघ मलार अलापिके गावन लागी २ ॥

क० ॥ गुणके निधानदोऊ रूपके निधानदोऊ परम सुजान दोऊ मिलि बतरावहीं। प्रीतिरीति देखेदोऊ रहै अनमेखे दोऊ मुदित अलेखे दोऊ रस बरसावहीं ॥ श्यामनमोहन अनंगकी तरंगनिसों शिशिरकी रजनीमें सुख सरसावहीं। अंगिनि परसरे पुलकित गात धरें प्रेमसें विवश पर दोऊ लपटावहीं ३ ॥

स० ॥ पूसको मास सुप्रीति गयो हिय जोश भरी विरहागिन पैठी। दोषकहौं किहिको कहिये अबतोसन होतहै जाडमें कैठी॥ यादिकै बोल मसोसतहै जिय होश धरीरहै तास अँगैठी। नेकतजे अफसोस कियो जिहि हायसो तीनसौ कोसपै बैठी ४ ॥

इतिश्री षट्ऋतु हजारा अंतर्गत शिशिरऋतु वर्णन सम्पूर्ण ॥

दोहा ॥

षट्ऋतु यह पूरण भयो कृष्ण कृपाते आज ॥
दीन बचन सुनके प्रभू राखलई मम लाज १
शुभ सम्बत उन्निस सदा तापै ज्ञान पचास ॥
कातिक शुक्ल एकादशी भयो ग्रंथ परकास २

इतिश्री षट्ऋतुहजारा परमानंदसुहाने संग्रहीत सम्पूर्णम् ॥

मुन्शी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
फ़रवरी सन् १८९४ ई० ॥